## सिंघी जैन ग्रन्थमाला

जैन कारामिक, दारोनिक, साहितिक, पेतिहासिक, कथान्यक-इत्यादि विविधविषयपुरिकत प्राकृत, संस्कृत, अपभंत, प्राचीनमूर्जेन, राजस्थानी कादि नामा भाषानिबद बहु उपपुक्त पुरातस्याध्य तथा नवीन संशोधनात्यक स्पाहत्यकाशियों जैन प्रस्थाविष्ठ।

कडकत्तानियांक्ष स्थांस्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी का पुण्यस्यतिनिधत्त तत्त्वपुत्र श्रीमाच् चहादुरसिंहजी सिंघी कर्टक संस्थापित तथा प्रकाशित

मध्यदक्ष तथा सञ्जनक

### जिन विजय मुनि

[ सम्मान्य समास्य-भाष्टास्वर प्राप्तविद्या सहीयान मन्दिर पूना, तथा तुष्तरान साहित्यसमा वहन्यसमाह मृत्यूर्वाचार्य-ग्रमाह पुरातत्वमान्देर व्यवसायाद, केनवादामाव्यापक विकासाती, ग्राप्तिनिकेतनः, भारताभाषी-प्राप्तानामक सम्प्रतीय महत्त्व प्राप्तानामक प्रमुक्त प्राप्तानामक सम्प्रतीय प्राप्तानामक सम्प्रतानिक प्राप्तानामक सम्प्रतानिक । ]

यन्थांक ३

म्राप्तिस्थान

### व्यवस्थापक - सिंघी जैन ग्रन्थमाला

अने कान्त थि है। र, स्वीहरू सिंधीसद न, सिंधीसद न, ९, शान्तिनगर; पी० सायरमतीं, अहमदायाद कळकत्ता कळकत्ता

स्थापनाब्द रे

मर्वाधिकार संरक्षित

िविक सक १९८६

### श्री मेरूतुङ्गाचार्यविरचित

## प्रबन्धचिन्तामणि

संस्कृत प्रन्यका हिन्दी भाषान्तर

यनुवादक

CC81965

पं॰ हजारीप्रसादजी द्विवेदी आचार्थ-हिन्दी शिक्षापीठ, विश्वमारती, शान्तिनिकेतन ]

### जिन विजय मुनि

ि प्राकृत भाषादि प्रधानाध्यापक-भारतीय विद्या भवन, बम्बई: सम्पादक-भारतीय विद्या-त्रेमासिक पत्रिका-इत्यादि ]

# संचालक-सिंघी जैन ग्रन्थमाला

अहमदाघाद-कलकत्ता

#### प्रबन्धचिन्तामणिकी संकलना ।

इस ग्रन्थका संकलन और प्रकाशन निम्न प्रकारसे, ५ भागों में, पूर्ण होगा।

#### (१) प्रथम भाग-

मिन्न मिन्न प्रतियोंके आवारपर संशोगित — निविध पाठान्तर समवेत — मूळ प्रन्य; १ परिशिष्ट; मूळ्यन्य और परिशिष्टमें आये हुये संस्कृत, प्राकृत और अपभंश मारामय पर्योक्षी अकारादिकमानुसार स्वि; पाठ संशोधनके िळ्ये कार्यमें छाई गई पुरातन प्रतियोंका सचित्र वर्णन । (छप गया)

#### (२) द्वितीय भाग-

प्रवन्यिन्तामिणातः प्रवन्योंके साथ सम्बन्य और समानता रखनेवाङे अनेकानेक पुरातन प्रवन्योंका संग्रह; प्रचानुकमस्चि; विशेपनामानुकम; विस्तृत प्रस्तावना और प्रवन्य संग्रहोंकी मूछ प्रतियोंका सचित्र परिचय । ( छप गया )

#### (३) तृतीय भाग-

प्रबन्ध चिन्तामणिके गृज संस्कृतका शुद्ध और सरज संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर, विशिष्ट आस्ताविक वक्तव्यके साथ । ( प्रस्तुत प्रन्थ )

#### (४) चतुर्य भाग-

पुरातन-प्रबन्ध-संप्रह नामक द्वितीय भागका संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर । ( छए रहा है )

#### (५) पञ्चम भाग-दो विभागींमें

- (१) पृष्ठके विभागमें —शिकाकेख, ताघपन, पुस्तक प्रशस्ति आदि जितने समकाकान साधन और ऐतिहा प्रमाण उपक्रम्य होते हैं उनका एकत्र संग्रह और सत्विश्वायक उपप्रक विस्तृत विश्वनम; प्राकृताकान और पश्चात्काकान अन्यान्य प्रन्योगें उपकृष्य प्रमाणभूत प्रकरणों, उद्देशों और अवराणोंका संग्रह; कुक शिकाकेख, तासपत्र और प्राचीन ताहपत्रोंके चित्र — इत्यादि ।
- (२) दूसरे विमागर्मे प्रवश्विष्तामणिप्रयित सब विषयोंका विवेचन करनेवाडी विस्तृत प्रस्तावना — तिसमें तत्काडीन पेतिहासिक, भौरोखिक, सामाविक, धार्मिक और राजकीय परिश्यितिका संविशेष उद्यागेह और सिंहावडोकन किया जायगा । सायमें प्राचीन मन्दिर, मुर्तियों, पोथियां इत्यादिक जनेक चित्र भी दिये जायेंग ।

### समर्पण

परमधामप्रस्थित पितृपादकी पुण्यप्रतिमाको प्रणति पूर्वक



## प्रवन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

			-			,
	प्रास्ताविक वक्तव्य		****	****	****	पृ. क-ट
	— प्रय	म प्रकाश –				
	प्रारंभिक मंगलादि कथन	••••	****	****	***	१-२
१	विक्रमार्क राजाका प्रवन्ध	á		****	**** 3	३–११
	(१) महाकवि काछिदास	की उत्पत्तिका प्र	<b>र</b> च	****	****	4
	(२) सुवर्णपुरुषकी सिदि	देका प्रबन्ध	****	****		49
	(३) विक्रमादित्यके सत्त्व		****		****	4
	( ४ ) सत्त्वपरीक्षाका प्रवन	ਖ	••••	****	****	11
	(५) विद्यासिद्धिका प्रवन	ਬ	****	****	****	33
	(६) निर्मर्वताका प्रवन्ध		****	****	••••	१०
2	सातवाहन राजाका प्रव	च	****	****	8:	<b>२</b> –१३
\$	द्गीलवतके विषयमें भूय			****	****	१४
8	वनराजादि प्रवन्ध		****	****	\$0	4-86
	चावडा वंशकी राज्यसंकत्सरा	ব <b>ি</b>	****	****	****	_
	-	चौलुक्य बंद	का प्रारंभ	T -		•
G <sub>4</sub>	मूलराजका प्रयन्ध		****	****	\$4	२–२४
	छाखाकी उत्पत्ति और विपत्ति		****	****	२३-	-38
	मूळराजके वंशजोंकी राज्यसं	वत्स <b>राच</b> ि	****	****	****	२५
Ę	मुंजराज प्रयन्ध		****	****	36	9–३२
		- दूसरा प्र	स्राद्य —			
9	भोज और भीमका प्रव	न्ध <sup>े</sup>	****	****	3	३−६३
	(१) मोजका विद्याविष्ट	गस	****	****	33	–३६
	(२) भोजकी गुजरातवे	ते राजा भीमके प्र	ते प्रतिस्पर्द्धा	****	****	হও
		जरातपर आऋमण		छा	****	३९
	(४) दिगंबर कुळचन्द्रः		स	••••	****	8 8
	(५) कुलचन्द्रकी गुजर		****		****	33
	(६) महाकवि माघका		****	****	****	8.5
	(७) महाकवि धनपाट		****	****	84-	-43 4
	(८) सक्दर्शनोंसे सत्य		****	****	****	72
	(९) शीता पण्डिताका	प्रबन्ध	****	****	****	33

#### प्रवन्धचिन्सामणि

	(8 o)	मयूर, बाण और मानतुङ्गाचार्यका प्र०	••••	****	****	48
	(88)	गूर्जर देशकी विदग्धताका प्र	****	••••		५६
	(११)	अनित्यता संबंधी ४ श्लोकोंका प्र०				40
	(₹₹)	भोजका भीमके पास ४ वस्तुयें माँगन।	****	••••	****	91
	(38)	विजीरे नीवृका प्र॰			****	40
	(24)	'एक अच्छानहीं है' प्र०	****	****	****	48
	(१६)	इक्षुरसका प्रबन्ध	****	****	,,,,	,,
	(80)	घुडसवारीका प्रबन्ध	****	****	****	"
	(36)	गोपगृहिणीका प्रबन्ध	****	****	****	80
	(१९)	भोज और कर्णका संघर्ष	****	****	****	99
	(२०)	कर्णसे भीमका आधा भाग लेना	••••	****	4000	83
		– तीसरा प्रव	तज —			
	•		-4-74			
૮	सिद्धरा	जादि प्रवन्ध	****	****	d	8-68
	( ? )	मूलराज कुमारकी प्रजावत्सलताका प्रव		****	****	8 8
	(२)	कर्णराजा और मयणङ्घा देशीका शृतान	त	****	****	६५
	(३)	सिद्धराज जयसिंहका जन्म	****	****	*4**	<b>६</b> ६
	(8)	सिद्धराजका राज्य-वर्णन – छीछा वैयव	त अवन्ध	****		80
	(4)	•	****	****	*4**	11
	(٤)	सान्त् मंत्रीका प्रवन्य	***	****	****	86
	(0)	मयणञ्जा देवीका सोमेश्वरकी यात्रा कर	ना	****	****	53
	(2)	सिद्धराजका माल्याके साथ संघर्ष	****	****	***	46
	(९)	सिद्धराज और हेमचन्द्राचार्यका मीलन		***	****	७१
	(१०)	सिद्धराजका सिद्धपुरमें रुद्रमहाख्य वन		****	****	७२
	(\$ \$)	,, पाटनमें सहस्रलिंग सरी			****	७३
	(१२)	» सौराष्टके राजा खंगारको			****	જ દુ
	(\$\$)	,, शत्रुंजयकी यात्रा करना वादी श्रीदेवसुरिका चरित्र वर्णन		****	****	99
	(१४) (१५)	वादा श्रादयसूरका चारत्र वणन पत्तनके बसाइ आमडका वृत्तान्त	****	****		-८२
	(१५) (१६)		····		****	८२
	(१५) (१७)				****	८३
	(१८)		વ્યવહાર	****	****	ς8
	(१९)				****	" C4
	(30)			****	****	
	(3 8)		****	****	****	13
				-,	***	27

#### प्रवन्धचिन्तामणि विषयानुकम

	(२२)	द्याटासामन्त मांगूकी श्र्रताका वर्णन	****	<b>ر</b> قر
	(२३)	सिद्धराजकी समामें म्लेच्छराजके दूतोंका आगमन		20
	(38)	सिद्धराजका कोल्हापुरके राजाको चमत्कारके भगमें डाटना		,,
	(२५)	कीतुकी सीटणकी वाक्चातुरी		"
	(२६)	काशीराज जयचन्द्रकी समामें सिद्धराजके दूतकी वाक्पट्रता		66
	(२७)	मयणञ्जादेवीके पिताकी मृत्युवार्ता		**
	(२८)	पिताके पुण्यार्थ मयणहादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना		૮૧
	(२९)	सान्त् भंत्रीकी बुद्धिमचाका एक प्रसंग		
	(३०)	सिद्धराजके एक सेवकके माग्यका वृत्तान्त		;,
	(₹3)	सिद्धराजकी स्तृतिके कुछ पुरुकर पद्य	****	90
	(31)		****	10
		−चतुर्य प्रकाश −		
9	कुमारपाल	ादि प्रवन्ध		<b>२३-१२</b> १
	(8)	कुमारपालके पूर्वजादि	****	९३
	(२)	सिद्धराजके मयसे कुमारपाछका मारे मारे फिरना	****	9.8
	(३)	कुमारपालका राजगादीपर बैठना	****	94
	(8)	कुमारपाटने राजदोहियोंका उच्छेद किया	****	**
	(4)	कुमारपालका चाहमान राजा आनाकके साथ युद्ध्य	***	77
	(६)	कुमारपालका उपकारियोंको सत्कृत करना	****	९६
	(७)	गायक सोलाककी कलाप्रश्रीणता	****	80
	(2)	कौंकणके राजा मिळ्ळकार्जुनका मंत्री आंवड द्वारा उच्छेद	****	"
	(9)	कुमारपालके साथ हेमचन्द्राचार्यके समागमका प्रसंग	****	96
	(80)	हेमाचार्यके समागमसे कुमारपाटके पुरोहितका विदेप	****	९९
	(88)	कुमारपाळका सोमेश्वर तीर्थके जीर्णोद्वारका प्रारंभ करवाना	***	800
	(१२)	,, उदयनमंत्रीसे हेमाचार्यका जीवनवृत्तान्त पूछना	****	808
	(₹\$)	,, सोमस्याके उद्घारकी समाप्तिके निमित्त नियम छ		१०२
	(\$8)	द्देमचन्द्राचार्यका सोमेश्वरकी यात्रानिभित्त कुमारपाळके साय ज	ाना	91
	(84)	हेमाचार्यका शिवकी स्तुति-पूजा करना	****	91
	(१६)	कुमारपाछकी तत्त्रजिङ्गासा और हेमाचार्यका शिवको प्रत्यक्ष व	स्ना	१०३
	(80)	कुमारपाछका परमाईत श्रावक बनना	****	808
	(१८)	मंत्री वदयनका सौराष्ट्रके युद्धमें मारा जाना	••••	**
	(१९)	मंत्री बाहडका शत्रुंजयतीर्योद्धार करवाना	•••	१०५
	(२०)	मंत्री आध्रभटका शकुनिकाविहारका उद्घार करवाना	****	१०६
	(२१)	आधमटका शाकिनीप्रस्त होना	•	"

#### प्रवन्धविन्तामणि

(२२)	कुमारपाळका विद्याध्ययन करना	****	••••		१०७
(२३)	बनारसके विश्वेश्वर कविका पत्तनमें आ	रा .		****	33
(38)	हेमचन्द्रसृरिका समस्यापूरण करना	••••	****	•••	308
(34)	आचार्य और मंत्रीके बीचमें ' हरडह '	का वाम्विङ	ास		**
(२६)	उर्वशी शब्दकी ब्युत्पत्ति				808
(२७)	सपादलक्षके राजाके नामका अर्थखंडन		****	***	803
(24)		•••	****	****	808
(29)	कुमारपाछका अमस्य मक्षणके निमित्त		<b>हरना</b>	****	११०
(20)	कुमारपालका अन्यान्य विहारीका बनवा	ना	****	****	91
(38)	यूकाविहारका प्रबन्ध	****	****	****	17
(32)	सारिगवसहिकाके उद्घारका प्रवन्ध	****	****	****	888
(३३)	मठपति बृहस्पतिका अविनय	•••	****	****	1)
(\$8)	मंत्री आलिगकी स्पष्टवादिता	••••	****	****	73
(३५)	पं• वामराशिको क्षमाप्रदान करना	****	****		3)
(३६)	सोरठके दो चारणोंकी कविताबिपयक	स्पर्धा	***	••••	285
(২৩)	कुमारपालका तीर्थयात्रा करना	****	****	****	११३
(34)	,, स्वर्णसिदिकी इच्छा करन	T	****	****	"
(३९)	मंत्री चाइडका दानीपना	****	****	****	\$ \$ 8
(80)	कुमारपाळ द्वारा राणा लवणत्रसादका व	मविष्यकथन		****	११५
(8 \$)		****	****	****	११६
(84)	हेमचन्द्रसूरि और कुमारपालका स्वर्गबा	स	****	****	,,
(8 ≴)	अजयपालका राज्याभिषेक	***	****	****	११७
(88)	, जैन मन्दिरोंका नाश कर		****	****	31
(84)	<ol> <li>कपदी मंत्रीको मरवा बार</li> </ol>	श्ना	****	****	११८
(84)	महाकवि रामचन्द्रकी इत्या	****	****	****	११९
(80)	मंत्री आम्रमटका छडते हुए मरना	***	2001	****	99
(85)	अजयपाडकी सन्तानीका उल्लेख	****	****	****	33
(83)	बीरधवलका प्रादुर्भाव	•••	****	****	१२०
	स्तुपाल-तेजपालका प्रयन्ध	****	****	१३	<b>१−१३</b> ०
( ? )	बस्तुपाछ-तेजपाछकी जन्मवार्ता	****	****		१२१
(२)	वीरघवडका तेजपाडकी अपना मंत्री व		****	****	97
(₹)		****	****	****	53
(೪) (૫)	बस्तुपाउकी तीर्थयात्राका वर्णन	****	****	****	१२३
(٩)	मंत्री तेजपालका आवृपर मन्दिर बनवा		•••	****	१२५
(4)	वस्तुपालका शंखराजके साथ युद्ध करन	TI .	****	****	१२६

30

#### प्रयन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

(৩)	मंत्रीका मुसलमान सुलत	ानके साथ	मेत्रीका सम्ब	ध बान्धन	ı	१२७
(2)	अनुपमाकी दानशीलता		****	•••		१२८
(9)	वीरधवळकी रणशूरता			••••		73
(30)	वीरधवळकी मृत्यु		***	****		१२९
(88)	अनुपमाकी मृत्यु	****		••••		"
(११)	वस्तुपाछकी मृत्यु		****	•••	****	,,
	_	पंचम प्र	काश –			
प्रकीर्णक प्रव	न्ध			****	१३	११५२
(8)	विक्रमादित्यकी पात्र परीक्ष	gi	****	****	****	१३१
(२)	मरे हुए नन्दका पुनर्जीव			****	****	11
(३)	राजा शिलादित्य और म	_		****	****	१३२
(8)	बौद्ध और जैनोंमें वाद-ि	-	****			"
(4)	वलभी नगरीके विनाशय				****	" १३३
(६)	श्री पुंजराजकी उत्पत्ति					१३४
(0)	श्रीमाताकी उत्पत्तिका व	บ์ส	••••	****	****	१३५
(4)	चोड देशके मोवर्धन स					१३६
(9)	पुण्यसार शजाका बृत्तान्त		****	(146.1-1		१३७
(१०)	कर्मसार राजाका प्रबन्ध		****			
(११)	राजा छक्ष्मणसेन और उ	 चात्रस्थितस्य			****	" १३८
(१२)	काशीके जयचन्द्र राजाव		1 77.4	••••	****	१३९
(१३)	जगदेव क्षत्रियका प्रबन्ध	11 24 4	****	••••	****	888
(88)	पृथ्वीराजके तुंग सुभटक	ग गर्म		****	****	१४३
(१५)	पृथ्वीराजका म्छेच्छोंके हा		 EET	****	****	\$88 64
(१५)	कींकण देशकी उत्पत्ति है			***	****	१४५
(१७)	ज्योतिपी वराहमिहिस्का				****	-
(१८)	सिद्धयोगी नागार्जुनका इ		****		****	68.00 l
(88)	स्तंमनक पार्श्वनाथका प्र		****	****		585
(२०)	कवि भर्तृहरिकी उत्पत्तिव		****	****	****	-
(₹१)	वाग्भट वैद्यका प्रबन्ध		****	****	****	886 31
(२२)	गिरनार तीर्थके निमित्त	 Danner 6	गानमें जन		****	840
(२३)	सोमेखरका अपने मक्तें			-		१५१
(38)	पूर्वजन्मका किया भोगन		4441	****	****	
(२५)	जिन पूजाका माहात्म्य		•••	****		१५२
(( )	- ग्रन्थकारकी प्रशा			****	***	१५३
परिशिष्ट-	कुमारपालका अर्हिसाके साथ				१५३–	

११

#### प्रास्ताविक वक्तब्य।

श्री मेरुतुङ्गाचार्यरित प्रवन्धिचन्तापाण नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक-प्रवन्ध-संप्रहात्मक संस्कृत प्रन्यका यह हिन्दा मापान्तर, आज सहर्ष हम हिन्दी मापामापियोंकी सेनामें उपस्थित करते हैं ।

#### १. प्रवन्धचिन्तामणिका महत्त्व और प्रामाण्य।

गुजरातके प्राचीन इतिहासकी विशिष्ट श्रुति और स्मृतिके आधारमूत जितने मी प्रवन्धामक और चिर्यात्मक प्रन्य-निवन्थ इत्यादि प्राकृत, सत्कृत या प्राचीन देशी भाषामें रचे हुए उपख्य्य होते हैं, उन सबमें इस् प्रवन्यचिम्तामणिका स्थान सबसे विशिष्ट और अधिक महत्त्वका है ।

उस प्राचीन समयसे ही - जबसे इसकी रचना हुई है तबसे ही - इस प्रन्थकी प्रतिष्ठा निद्वानोंने खुब अच्छी तरह हो गई थी और जिनको कुछ ऐतिहासिक बृत्तान्तोंके जाननेकी उरक्रण्ठा होती थी वे प्राय: इसका वाचन और अध्ययन किया करते थे। पिछले कई प्रन्यकारोंने इस प्रत्यका अपनी रचनाओंमें अच्छा उपयोग भी किया है. और आइरएर्नेक इसका उद्धेख भी किया है। इन प्रन्यकारोंमें, सबसे पहले जायद जिनस्रभ सरि हैं जो प्राय, इनके समकाछीन थे। यद्यपि उन्होंने इनका कहीं नामोक्षेख नहीं किया है तथापि अपने महत्त्वके प्रत्य, निरिधतीर्थकपमें, जैसा कि इमने उसकी प्रस्ताननामें (पृ० ३, पक्ति ४-५ पर ) सचित किया है, इस प्रथका सर्व प्रथम उपयोग किया है। इसके बाद, इन जिनप्रम सुरिके उत्तरावस्थाके सप्रकालीन और इन्हींके पास कुछ गहन शाखोंका अध्ययन भी करनेवाले मलवारी राजशेखर सारिने. अपने व्यवन्धकोषमें. इस प्रत्यका जैसा उपयोग किया है, उसका परिचय हमने, प्रवत्यकोपकी प्रस्तायनामें, ' प्रवत्य-चिन्तामणि और प्रबन्धकोप ' इस शीर्षकके नीचे ( प्र० २, कण्डिका ४ में ) कराया है। राजशेखर सिने तो प्रकट रूपसे इस प्रन्थका नामोल्लेख भी किया है । हेमचन्द्र सुरिके वृत्तान्द्रमें उन्होंने कहा है कि-' इन आचार्यके जीवनके सम्बन्धमें जो जो बातें प्रबन्धचिन्तामणि प्रन्थमें लिखी गई हैं. तनका वर्णन हम यहा पर नहीं करना चाहते । ऐसा करना चर्बित-चर्रण मात्र होगा । '-इत्यादि । (देखो, प्र० को० पृ० ४७, प्रकरण ५७, पक्ति १२-१६ ). सनत् १४२२ में समाप्त होनेवाले जयसिंह-सरि-रचित क्रमारपालचरितमें, तथा संतत् १४६४ के पूर्वमें लिखे गये कुमारपालमबोधमबन्धमें (-यह प्रन्थ शीव ही प्रस्तुत प्रन्थमालामें प्रकाशित होनेवाला है ), और सतत् १४९२ में सकलित, जिनमण्डनोपाच्यायके सुमार्पालमवन्धमें, इस प्रत्यका खुब उपयोग किया गया है। स॰ १४९७ में परिपूर्ण होनेवाळे जिनहर्पगणीकृत चस्तपाळचरित्रमें भी इसका यथेष्ट आधार लिया गया है। स० १५०० के बाद, प्राय १०-१५ वर्षके वीचमें जिसकी रचना हुई जान पड़ती है, उस उपदेशतरंगिणी नामक प्रत्यमें तो इस प्रन्थमेंसे प्राय: सैंकडों ही पद्य उद्धत किये गये हैं और इसके अने प्रवाधोंका बहुत कुछ सार लिया गया है। एक जगह तो प्रन्थकारने इसका प्रकट नामनिर्देश भी कर दिया है और लिख दिया है कि-' सर्वेऽपि प्रवन्धाः प्रवन्धचिन्तामणितो होयाः ।' ( बनारस आवृत्ति, प्र. ५८ ). इसके वादके श्राद्धविधि, उपदेशसमृतिका आदि १६ वी शतान्दीमें बने हुए प्रन्योंमें, उनके कर्ताओंने भी अपने अपने प्रन्योंमें इस प्रन्यका जहा-तहा आधार छिया है और इसमें वर्णित ऐतिहासिक उल्लेबोंका सार उद्धत किया है। १७ वीं सदीमें, अकबरके समयमें होनेवाले हीरिविजय सूरिके प्रसिद्ध सहपाठी और अनुगामी त्रिद्वान महोपाध्याय धर्मसागर गणीने अपनी सुप्रचलित तपागच्छपद्वाबळि और अन्य प्रन्योंमें भी

इस प्रथके कई उद्घेलांका आचार लिया है । इसी तरह १८ वी शतान्दीमें बते हुए वस्तुपालपास, कुमारपाल-सस आदि भाषा प्रत्योक्त रचयिताओंने सी अपनी अपनी क्रतियोमें इस प्रन्यका बहुत कुछ अपग्रीग किया है, कितका निरोण वर्णन करना आवश्यक नहीं है ।

इस स्थनसे ज्ञात होता है कि उस पुरातन समयसे ही मेरुवुद्ध सुरिके इस महत्त्वके प्रन्थकी अच्छी रूपाति

और उपयोगिता स्थापित हो गई थी ।

२. प्रबन्धविन्तामणिकी वर्तमान नवीन युगमें प्रसिद्धि और उपयोगिता।

प्रवर्तमान नवीन कालके प्रारममें, सबसे पहले झोज विद्वान श्री एलेक्ब्रेंटर किन्लॉक फॉर्बेस साहबको इसका परिचय हुआ और उन्होंने गुजरातके इतिहास विषयकी अपना सुप्रसिद्ध पुस्तक ' रासमाछा ' में इसका सर्विधम तपयोग किया । अपने मन्यमें लिखे गये गुजरातके प्राचीन इतिहासका मुख्य दाचा उन्होंने इसी प्रस्थ परसे तैयार किया। ये अपने प्रन्थमे, इस अध्यक्त पर पर पर उक्लेख करते हैं और इसमें छिखी गई बातोंका सपूर्ण अपयोग करते हैं। उनके पीछे, भारतीय प्रशास्त्रके प्रखर पण्डित, जर्मन निदान, डॉ॰ व्यहल्डरने ईस धारका लब बारीकोके साथ अध्ययन किया और इसमें बर्णित ऐतिहासिक तथ्योंका सविशेष ऊहापोड किया। <sup>6</sup> इन्दियन केन्ट्रांकेरी <sup>9</sup> नामक भारतीय-विद्या निषयक सुप्रसिद्ध पत्रिकाके सन् १८७७ के जुलाई मासके अफर्ने उन्होंने 'अनुद्विख्याडके चालक्योंके ११ दानपत्र' (Eleven land grants of the Chalukyas of Anhilvad) इस इर्विक मीचे, अमहिलपुरके राजकीय इतिहास पर प्रकाश डालनेवाला एक महत्वका लेख लिखा जिसमें इस प्रबन्धिवन्तामणि कथित बातोंका अच्छा अपछोकन किया । फिर उसके बादमें, बाँ० ब्युहरूरमे, जर्मन भाषामें Uber das Leben des Jama Monches Hemacandra इस नामसे, आचार्य हेसचन्द्रका महिस्तर जीवनचरित्र किला, जिसमें उन्होंने प्राप्तत प्रवन्यचिन्तामणिका पूरा पूरा उपयोग किया । इसके बाद, बवर्ड सरकारने, बॉम्बे रोक्षेटियरके छिये जब गुजरातका प्राचीन इतिहास तैबार करवाया, सो उसके सक्छनकर्ता प्रसिद्ध गुजराती पुरातत्त्वह डॉ.० मगबानलाल इन्द्रजीने, ३स मन्यका बहुत सरमताके साथ सागोपाग निरीक्षण किया और गुजरातके एजकीय इतिहासके साथ सक्य रखने वाळी प्राय सारी ऐतिहा उक्तियों और श्रतियोंका जी जी इसमें निर्देश मिलता है उन सबका ठीक ठीक पर्यालीचन कर, यथापोग्प उनका उपयोग किया । तदुपरान्त, गुजरातके इतिहास नियमक भिन्न प्रकारके पुस्तकों और निवन्धोंके रचयित। एतदेशीय और विदेशीय सैंकडों ही विदानीने जहा-तहा इस प्रन्थका अनेकश आधार छिया है और उद्धेख किया है ।

इस प्रथमी ऐसी सार्वजनिक उपयोगिताको छद्य कर, रास्त्रास्त्राक्ष कर्ता विद्वान् सार्विस् साह्वक्की, और तत्रतुवार बाँच व्युक्टरको भी, यह बाल इन्छा रही कि विद्युत टांक-ट्रियायियों साय इस प्रयक्ता सुर्ग्य होनी असुन्तर बाँच युक्करको भी, यह बाल इन्छा रही कि विद्युत टांक-ट्रियायियों साय इस प्रयक्ता सुर्ग्य होनी असुन्तर किया जाय । डॉ॰ व्युक्करको दिसहार क्रियों असुन्तर किया जाय । डॉ॰ व्युक्करको दिसहार क्रियों असुन्तर होने विद्या है जो असुन्तर किया निसनो किया है विद्युक्त होने असुन्तर किया निसनो किया है कि विद्युक्त होने असुन्तर किया निसनो किया निसनो क्रियों के व्युक्करको उसक्तर की कि वे टांनीके इस भाषान्तरके साथ, ऐतिहासिक और मीगोजिक विद्योंको परिचायक ऐसी असने टीका-ट्रियायियों दे कर, इस प्रयक्ती उपारेनाका महरून ब्यूक्ते होने सह स्वारके पूर्ण होनेके पहले ही उनका सर्गाय हो स्वार और उनकी यह स्वार में हो हिसान् टॉनोने अनुन्तरको प्रदानानके प्रारम्भे, जो इस वार्षे हुक छिला है, उसका मानाये यह है-

<sup>॰</sup> डॉ॰ मुस्त्रका वह बोर महत्त्वका प्रत्य है। इसका होती अनुवाद The Lato of Hemacandracarya इव नामहे, एमने अपने वहकारी नित्र डॉ स्वीवशाव परेख Ph. D. ( पारवुर्ग-अपनी ) द्वारा करना कर, इसी तिपी जैन प्रयम् मानके दर वे नवस्त्रे प्रवाधिव किया है। इसेनी कावा विद्वानीके विवे यह क्रम्य अवस्त्र पटनीय है।

" राजतरिगणीके अकेले अपवादको बाद किया जाय तो, सरकृत साहित्यमें ऐतिहासिक कहलाने लायक एक भी कोई ग्रन्य नहीं है-ऐसा जो आक्षेत्र वारवार किया जाता है, वह इस प्रवन्धचिन्तामांत्र जैस अन्यके अस्तित्वसे, किसी अशमें भीटा पाड़ा जा सकता है। इस आक्षेपका नि सार सिद्ध करना यह स्वर्गगत हो माथ प्रोपेसर ब्याइलरकी जीवन भरकी अभिलापा भी। ग्रन्डरिस्स डेर इन्डो-आरिशेन फिरोलोगी (Grundriss der Indo-Arischen Philologie) नामक शन्य-मालाके लिये. हॉ० ब्यहलरकी रसप्रद जीवन कथाका आलेखन करनेवाले प्रो॰ जोलीने ( Jolly ), ई॰ स॰ १८७७ में श्रीयत न्योल्डेके ( Noldeke ) नामक विद्वान पर लिखे हुए ब्यहलरके एक पत्रमेंसे अवतरण दिया है, जिसमें उन्होंने लिखा था कि-भारतयाधियोंके पास कुछ भी एतिहासिक साहित्य नहीं है इस प्रकारनी मान्यता रखनेमें आपलेग, वर्तमान समयसे कुछ योहेस पिछड़े हुए मालम दे रहे हैं । पिउले बीस वर्षोंमें ठीक ठीक विरात ऐसे पाँच ऐतिहासिक ग्रन्य मिल आपे हैं, जो उनमें विधित घटनाओं के समनालीन प्रन्यकारों के बनाये हुए हैं। इनमेंसे ४ तो, जिनके नाम विक्रमाकचरित, गउडवही, प्रधाराज-विशिवजय और की ति हो मदी है, खद मैंन खोज निकाले हैं। और एक इसनेसे भी अधिक अन्य और ग्रन्थ खोज निकालनेकी तलावामें हैं । 'यह प्रोपेसर स्पहलर ही-के असका फल है कि जो हतने सारे ऐतिहासिक क्सात, इतने ऐतिहासिक काव्य और इतनी ऐतिहासिक कथार्ये सपादित हो सकीं । इस अन्यके हमेजी अनुवादके करनेका काम जो मैंने हाथमें लिया वह भी हों। ब्याइलर-ही-की सचनाका परिणाम है, और जो कोई पाठक मेरी टिप्नणियों के पढ़नेका कर उठायेगा उसे सर शात हो जायाग कि उन्होंक उत्तेजन और सहाय्यके बिना मेरा यह काम अपने अन्तको न प्राप्त कर सकता । इस अनुवादके साथ पेतिहासिक और मौगोलिक विषयोंकी पूर्ति करनेवाली टिप्पणियाँ जिलनेका उनका खास इसदा था । अगर यह बन पाता तो इस प्रत्यक्की उपयोगितामें खब महरवनी शुद्धि हो शती, पर इस विचारके, कार्यरूपमें परिणत होनेके पहले ही, दुर्देवसे उनका अवसान हो गया और अब यह बात ' मतकी बात मनमें ही रही ' जैसी कहाबतके योग्य हो गई । भारतके इतिहास विपयक साहित्यके बारेमें और जसमें भी खास करके राजरातक इतिहासक साथ सबढ़ साहित्यके सक्चमें, हरएक हमेज विद्यार्थीको एक और नामका स्मरण हो आता चाहिए और वह नाम है रासमालांक कर्ता श्री एलेक्सेंडर किल्लॉक फॉर्बरका । मि. ए. जे. नैनें. बी. सी. एस. ( Mr. A. J. Nairne, B. C. B ) ने पॉर्बस् साइवका जीवनचरित लिखा है, जो कर्नल बॉटसन् द्वारा स्पादित और सन् १८७८ में प्रकाशित, रासमास्त्रकी आवृत्तिक प्रारममें मुद्रित है। श्री पाँचन साहच एक एसे इन्डियन सिवीलियन थे, जिनको अपन मान्यका पासा किन लोगोंके साथ डाला गया है। उन लोगोंक इतिहास, बाहुमय और पुरातत्वके विषयमें पूरा रस रहता है। इस विययकी उनकी, उत्कच्ठा और सत्यनिद्यापूर्ण अध्ययनशीलताकी प्रतीति, रासमालाके प्रत्येक पृष्ठ पर होती रहती है। जिन अनेक महस्यत आधारोंके जगरेंचे उन्होंन अपना प्रन्य तैयार किया. उनमेंका यह एक प्रवस्थिननायाण है। इस प्रेनिहासिक प्रन्यक्ष उन्होंने इतना तो एएणे उपयोग किया है कि जिले देख कर मेरे मनमें, अपने इस अनुवादके करते समय, वारवार यह उठ आशा था कि मैं निरर्यक ही यह अम कर रहा हैं । किन्तु प्रो॰ न्युहलरने मुझसे कहा था कि इस प्रत्यका सपूर्ण इपनी अनुवाद हो ऐसी इच्छा स्वय फॉर्बरन अनेक बार प्रदर्शित की थी\* । और यही मेरे इस परिश्रमकी उपयोगिताका आधार है । लेकिन, मैं अपने मनको इस तरह भी प्रोत्साहित रखना चाहता है कि-भष्यकालीन इस केन यतिने लिख रखी हुई इन अतुपरपत्रओं में, जिनका विवरण या चित्रतिकरण करनेते इनके मुलमें रही हुई आधी मोइकता नष्ट हो जाती है, न केवल सारतके इतिहासके अस्थातियों, ही हो, हिन्तु तदुरपन्त लोककयाओं के शावाओं को और मानव-नीति-शास्त्रके विद्वानों को भी, रच प्राप्त होगा। प्रत्यकार स्वय भी कहता है कि-इस रचनाके करनेमें मेरा उदेश जनमन रहन करनेका है। " इत्यादि।

प्रबन्धविन्तामणिके मूळ संस्कृत ग्रन्थका प्रथम प्रकाशन और गुजराती भाषान्तर ।

जैसा कि इमने, अपनी मूळ बाग्रसिके प्रारम्भों दिये हुए 'किंपित प्रास्ताबिक ' शीर्षक वक्तस्यमें किंजा है. इस प्रत्यके संस्कृत मुख्का प्रयम प्रकाशन, गुनरातके शाखी ग्रमचन्द्र दीनानाय नामक विद्वानने, सबक

<sup>\*</sup> कॉर्स्स् साइवर्ष पेटी इच्छा हो नहीं थी, बिल्क उन्होंने तो इवरा पूरा इमबी अनुबाद खुद ही वबवे वहले कर लिया या और रित्र उचका उपयोग रामालामें किया था, ऐसा वबहुंकी कॉर्स्स् हामां को उनका अन्यवाह दियमान है उनके माद्रम हिता है। वमर्युंक इक नम्म मंगिता हो कि से उनके माद्रम हिता है। वमर्युंक इक नम्म मंगिता लिखा हुआ है। पढ़े दी प्रकारोंका मापानत, बाबद कियी दूवरी नीट्युक्म लिखा हुआ होगा जो अब उपलब्ध नहीं है। भी टॉनीको इचकी खब्द न होनेले, शायद उन्होंने बैला किया होगा। अथवा यह भाषानत बैला पूर्ण और ग्रद्ध न होगा किया विकार के स्वतिक विकार के स्वतिक होगा हो कि स्वतिक स्वत

१९२४ में, बम्बर्स किया था। उसीके साथ उन्होंने, इसका गुजराती भाषामें अनुमार भी छपना कर प्रकाशित किया था। जार्बाजीका यह अनुमार — जिसे अनुमार नहीं जेकिन एक तरहका निम्मण कहना चाहिए — पुराने दमसे और पुरानी शैडीकी भाषामें किया गया था और इसमें उन्होंने अपनी तरफ़्ते भी बहुतसे वानय और निचार, जो मूटमें सर्वेषा नहीं थे, खूब फेळा फेळा कर टिख दिये थे। परन्तु सायों कोई ऐसिहासिक पर्याजीवनकी दिखे उपयुक्त ऐसा कुठ भी नहीं टिखा गया था। अनुमार्ग — खास करके प्राकृत गायाओं और पुमापित रूपसे उद्धृत पर्योके भाषान्तरमें — सो अनेकानक बड़ी बढ़ी मही मुंठ भी को गई हैं, जिनका यहाँ पर दिख्दान कराना निर्थक है। पहाँ पर इतना यह अम्बन कहना चाहिये कि इस उपयोगी प्रचक्ते सर्वता पर्योक्त किया अस्य कन्दी शाबीबोंने किया और तदर्य उनकी स्तृति सर्देव आइरको दृष्टिसे की जानी चाहिए।

जैसा कि, प्रथम आगल्य मूळ अयको प्रस्ताउनामें स्चित किया है, गुजरावके इतिहासकी रहिसे इस स्वयक्त महरूर छश्यमें एक कर, हमने अहमदाबारके गुजरात प्रराद्ध अधिसे— निसंक्ष कि हम सर्वे प्रधान सचाठक और निवायक थे—इसकी एक सर्वोतपूर्ण झुविस्तृत आहति, रिशुद्ध सूळ और वतन गुजराती प्रधान सचाठक और निवायक थे—इसकी एक सर्वेग प्रयत्न का गायान्तर आदिक साथ, प्रकट करनेका प्रयत्न करना छुक किया था। यथानुकम, मूळका छुठ आग सशीवित और साधारित कर, बन्देके झुप्तसिद कणांदक प्रेममें छण्येको भी भेज दिया था और वह कार्य पुछ समयके छिर प्रकार तितना साग उम भी जुक्त था। उसी बीचमें हमारा प्रपोप आन्त हुआ और वह कार्य पुछ समयके छिर स्थागित हम। उसी बीचमें हमारा प्रपोप आन्त हुआ और वह कार्य पुछ समयके छिर स्थागित हम। वित्त वो वर्गके बाद, बहाँसे हम जब वापस आये तो, देशमें राष्ट्रीय आन्दोखन बके जोरोंसे छुक हुआ और हम भी उसमें स्वया हम गाया साम स्वया सम्भित्त हमें अपने हम भी उसमें स्वया हम पर अस्थान स्थागित स्थाप हमें स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

इयर पछिसे, गुजरात प्रसारच मन्दिरको थी—गुजरात निवासीको साथ — सरकारने कन्जे कर, उसके निशाल प्रमासहको जनक उर दिया और उसकी यह वस विशित क्षिमिल हो गई। इस तरह प्रमायिक निरात प्रकार उसके निरात प्रकार का आयोजन हमने गुजरात पुरातर मन्दिरको ओरसे किया था, यह एक प्रकार उन्मुक्ति हो गया। इस परिस्थितको जान कर, वर्व्यक्षेत 'क्षांवृद्ध गुजराती साहिरय सभार'ने, जिसका भी प्रधान प्रेय गुजराती प्राचीन सहितको जान कर, वर्व्यक्षेत 'क्षांवृद्ध गुजराती साहिरय सभार'ने, जिसका भी प्रधान प्रेय गुजराती प्राचीन सहितको जान कर, वर्व्यक्षेत्र मानिक के विशेष अप्यासी, साक्षर श्रीहर्गाशकर के करवाम हालको वह सारिक अप्यासी, साक्षर श्रीहर्गाशकर के करवाम हालको वह सारिक अप्यासी, साक्षर श्रीहर्गाशकर के करवाम हालको वह सार्थ सीया गया। यह जान कर हमने शालीजीको हमारे एक छे हुए उनत जन दी प्रकासोके एकामस सार्भ भी उनके उपयोगके छिपे भेज दिये। शालीजीन यावाशिस परित्रम कर, पहले प्रथमा गुजरात स्थार उस उसे प्रकट करवामा और किर उसका गुज शुजराती आपान्तर, किरानीक ऐतिहासिक टीका-टिप्पणियोके साथ सार्थित कर, उनत समाजी ही औरसे प्रकाशित कराया।

#### ४. प्रयन्धचिन्तामणिका हमारा प्रकाशन i

जेव्हिनाससे मुक्त होने पर कैसे दाननीर बाबू थी बहादुरसिंहजीकी विषक्तर प्रेरणासे हमारा जाना शान्ति-निकेतन — तिक्रमारतीमें हुआ और वहाँ पर रहते हुए कैसे इस ' सिंगी जैन अन्यपाला' के प्रकाशनका कार्य प्रारम किया गया—इयादि वार्ते हमने, सन्नेपमें, इसके पहले आगर्भ उद्धिक्ति कर दों हैं जिनको महाँ पर दुहरानेकी आवश्यकता नहीं है । उक्त रािसिस कॉर्नस् समानी ओरसे इस प्रत्यका, गुजरावी भाषान्तर समेत, प्रकाशन होना चाळ् था, तब भी हमारे मनमें इसके प्रकाशनकी वह जो पूर्व कल्पना थी और इसके लिये जो साधन-सामग्री हमने वीसों वर्षोसे इक्त इंग्लिश इसका गुजराती साधान्तर, हमारे लाया ने उसी ढंगसे, इस प्रत्यका पुनः संपादन करना प्रारम्भ किया । और चूंकि इसका गुजराती भाषान्तर, हमारे साक्षरिमित्र श्री दुर्गाशंकर रक्षली कर चुके हैं, इसलिये हमने इसका हिन्दी भाषान्तर प्रकट करनेका मनोरय किया । हिन्दी भाषा, यों भी सबसे अधिक ज्यापक भाषा है और किर अब तो यह राष्ट्रकी सर्व प्रधान भाषा बन रही है, इसलिये सिंघी जैन प्रन्यमालके कार्यका लक्ष्य हिन्दीको ओर ही अधिक रखा गया है ।

इंग्रेजी और गुजरातांमें एकसे अधिक मापान्तर होने पर भी हिन्दीमें इसका कोई मापान्तर आज तक नहीं हुआ था; और इसकी कमी कई हिन्दी मापामापी विद्यलमोंको बहुत अर्थेसे खटक भी रही थी। हिन्दीके स्वर्गयासी प्रसिद्ध एष्डित और पुरातत्वह विद्यान, चन्द्रभर रामी गुजेरीने बहुत वर्ष पहले हमसे अनुरोध किया था, और शायद नागरीप्रचारिणी पत्रिकाके एक लेखमें उन्होंने लिखा भी था, कि इस प्रन्यका हिन्दी अनुवाद होना आवश्यक है। आशा है गुलेरीजीकी स्वर्गस्थित आस्मा जाज इसे देल कर प्रसन्न होगी।

#### ५. प्रस्तुत हिन्दी भाषान्तर।

पाठकोंके हाथमें जो हिन्दी भाषन्तर उपस्थित किया जा रहा है, इसका प्राथमिक कहा खरी, जब हम सान्तिनिकतनमें ये तब ( सन् १९३२ में), बहाँके हिन्दी शिक्षापीठके विद्वान आचार्य जीर हमारे सहदय मित्र पंठ श्रीहजारी प्रसादजी दिवेदीने किया था, जिसको हमने अपने उंगसे यथेह रूपमें संशोधित-परिवर्तित कर बतेमान रूप दिया है। इससे संग्र है कि जिड़ पाठकोंको इसमें कहीं कहीं भाषाविषयन रैठिका दुख्य सूक्ष्म मिलल माइम दे। हमारा प्रयत्न इस बातको और रहा है कि भाषा जहाँ तक हो, सरक और सबको सूक्ष्म मिलल माइम दे। हमारा प्रयत्न इस बातको और रहा है कि भाषा जहाँ तक हो, सरक और सबको सूक्ष्म देश जैनको मानुमापा खास हिन्दी न हो उनको भी इसके समझनेमें कोई किटिनाई न हो। इसिकेंय हमने इसमें ऐसे बन्दीका बहुत ही कम प्रयोग किया है कि जो खास हिंदीका विशेष परिचय न रखनेवाले— राज्यासानी या गुजराती भाषाभाषी— जनोंको वित्रुख्य अपरिचित माहम दे।

इस प्रम्थके संस्कृत मूळको छेखतेछी कुछ संक्षीर्ण और समास-बहुछ है । याक्य बहे छंबे छंते और कुछ जाटिछसे हैं । क्रियापदोंका व्यवहार इसमें बहुत कम किया गया है । रचना कहीं तो शिषिछसी और कहीं निविद्य कथवाड़ी है । इसिछये भाषान्तरमें भी हमें कहीं कहीं, मूळके अनुसार, कुछ छंबे वावय रखने पढ़े हैं । भाषान्तरको हमने प्राय: संवृर्ण मूळानुसारी बनानेका छश्य रखा है । गुरुका कोई एक शब्द मी प्राय: छोड़ा नहीं गया है लोर ना-ही विशेष स्पर्धाकरणको दृष्टिसे कोई अधिक शब्द या वाक्यांश बढ़ाया गया है । जहाँ कहीं गुष्के संक्षित्त स्चित्त वाक्य शाक्य कार्यकर्ता मार्या है । जहाँ कहीं एक सिक्त विद्य आवश्यकर्ता मार्या है । कहाँ उसे हि । ऐसे प्रका वेकेटमें समाविष्ट किया गया है । किसी खास शब्दका पर्योध वाचक दूसरा विशेष परिचित शब्द या समक्त व्यवहानेकी कहीं जरूरत दिखाई दो उसे ( ) ऐसे गोठ कैकेटमें दिया गया है । अकराजेंकी कण्डिकाओंके प्रारममें जो ' १२ २२ २) ' ऐसे इसेर गोठ कैकेटके साथ कर्माक हिये गये हैं वे, हमारी मूळ प्रम्यकी आव्यवित्र हान प्रमाय क्रायानेका क्रायान वराणनेका अध्वक्ताओंके जो क्रमांक हमने दिये हैं, उसाकी बोधक हैं । मूळमें जो संस्कृत, प्राष्टत और अपरांत्र मार्याके अनेकानेक प्राचीन पर उदत किये गये हैं उनका इसने दो मार्गोमें विक्त किया है । एक ये जो प्राय: सब प्रतियोगें समान संस्थाने कियते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकार ही एक ये जो प्राय: सब प्रतियोगें समान संस्थानें कियते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं भीर दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं भीर दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं भीर दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं भीर दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं भीर दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतियोगें समान संस्थानें कियते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतियोगें समान संस्थानें कियते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं और हमरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हैं और हमरे वे जो खास कोई एकार ही प्रतिये हमारे के स्वर्य हमें किया हमारे किया हमारे हमारे हमारे हमें स्वर्य हमारे हम

भिन्नते हैं। इस पिउन्ने प्रकारको पर्योको हमने पाँउसे निन्ने वार्य व्याद् प्रशिक्ष माना है; और वार्याको स्नित्त हैं वे ' १ . २. ३. ' इस प्रकारको चान्न जान किये हमने दो प्रकारको कमाक दिये हैं। जो मीटिक हैं वे ' १ . २. ३. ' इस प्रकार चान्न जान्य जनतेंसे स्वित किये गाये हैं और जो प्रशिक्ष हैं वे ' [१]-[२]-[२]' इस प्रकार चोकीनी इवक क्रैकेटबाने अनोंसे वताये गाये हैं। पर्योक्षी तरह, पूर्व प्रथमें, पुत्र गाय प्रकारण क्षण्डकारों भी प्रशिक्ष हैं, जिनको हमने अपनी उस मूलाइचिमें तो हुरा तरहके टाईपोंमें और के क्षण्य हिं अथवा [ ] ऐसे क्षेत्रेटोंके बोचमें मुद्रित क्षी हैं। पर्योक्ष हम गायान्तरमें वे क्षण्डकार्य जुद्रा हम हमें अपने क्षण्य कर, शीर्क उनके कपर, ॰लेक टाईपोंमें () ऐसे गोल क्षेत्रेटमें, अपना चान्न टाईपोंमें न हम्रप कर, शीर्क उनके कपर, ॰लेक टाईपों () ऐसे गोल क्षेत्रेटमें, अपना चान्न टाईपोंमें [] ऐसे चोबीनी क्षेत्रेटमें, उसकी ज्ञापक प्रक्तियों लिख कर, उद्घिष्टत कर दी हैं। (-रेखो, पृष्ठ १६, २०, ४८, ४९ इत्यादि।).

इस प्रत्यमें नहीं-नहीं, जो असक्रीजित पय उद्दृत किये गये हैं उनमेंसे कुछ तो ऐतिहासिक घटना बताने-बाठे हैं और वुछ सुमापित रज्ञकर हैं । इनमेंके वुछ पच दिवायों जयाँत् रहेपार्थक हैं जिनका स्वास्त्य सरक्षत या प्राकृत भाषा-ही में ठीक आस्त्रादित हो सकता है । दिन्दों में उसका अर्थ ठीक अन्तिदेत नहीं हो पाता | ऐसे प्रयोक्ते अर्थके रिक्यमें नहीं तक हो सका, तदन्तर्गत सुख्य मागार्थ बतलानेका ही प्रयत्न किया गया है । कोई कोई पद्य ऐसे भी दुस्त्रगोष माद्यम देते हैं जिनका तार्थ्य ठीक ठीक समझमें नहीं आता । ऐसे स्थानोंमें जो अर्थ दिये गये हैं ये शक्ति ही समन्ते जायें — जैसा कि ष्ट ७७० आदि पर स्वित किया गया है ।

कहीं कहीं गध कथनेंभं भी ऐसी दुरम्बोधता और खरपथार्थता प्रतीत होती है और उसका ठीक ठीक सापर्य नहीं जाना जा सकता—जैसा कि पृ ९४ परकी टिप्पणीमें स्चित किया गया है !

प्रन्य कारने कहीं करी ऐसे अपिधित शब्दोंका प्रयोग किया है जो शुद्ध सरक्रतके न हो कर देश्य भाषाके हैं और जिनका अर्थ ठीक ठीक समझमें नहीं आता। ऐसे शब्दोंके दिय गये क्ये भी सर्वया निर्वान्त नहीं कहे जा सकते। इन सब शकित स्थानों और अर्थीके विपयमें पाटक हमें कोई दोप न दें ऐसी विश्वास है।

丣

जब यह भाषा तर छपाना छुक्ष किया गया तब हमारी इच्छा थी, कि हम इसके साथ, इस प्रचमें बर्धित विशेष पिरोध पिरोधिक जीर भोगीछिक नामीके वारेमें, अन्यान्य साधनोद्धारा उपख्य्य या हात बातोंका परिश्वय करानेनावी निस्तृत टिप्पणियों हें, और इसमें जो कुळ पारिमापिक सन्दसमूह और छोकोक्तिक्स पान्य-निन्यास उपख्य होते हैं उनको सुठ करने नछ हम के उठ ऐसी टिप्पणियों और पित्यों छिखनी प्राप्त की तो उनका करूंगर इनना बहता हुआ दिखाई देने खगा जो पूछ प्रव्यक्त भी कहीं अधिक बढ़ जानेकी आसाक करान हुआ। और ये सब टिप्पणियों छिखनेका तो हमारा उपकट छोने हैं। वस्पा कि इन टिप्पणियों बारा तो इस प्राप्त सारा महस्त प्रकट होने ग्राप्त है। इसिछिये किर हमने यह निया किया कि इन टिप्पणियों आदिका सकटनाडा एक पर्याखनात्मक पूरा माग ही अख्या निकाल जाप, निससे मागरातरसङ्घ यह माग अन्यिक्त रूपति सिरह तुन हो, और जिनको केवल प्रयन्धित तामिणका मुख्यत प्रयास साम ही पदना-समझना अधित हो उनमें सह स्वित कर दिया है कि इन बातोंका निरोध सिरह व वारेस कर हिससे करने साम ही अख्याद कर होने ग्राप्त स्वास कर होने हिस हमने पुर ३, ११, १८ आदे पर जो टिप्पणियों ही है उनमें यह स्वित कर दिया है कि इन बातोंका निरोध सिर्म या उद्योग हु इसके अपने प्राप्त में स्वास कर हिया है कि इन बातोंका निरोध सिर्म या उद्योग हु इसके अपने प्राप्त करने प्रस्त कर दिया है कि इन बातोंका निरोध सिर्म या उद्योग हु इसके अपने प्रमुत्त स्वास हु सिर्म कर हिससे सिर्म का प्रमुत्त स्वास सिर्म करने हु उनमें यह स्वित कर दिया है कि इन बातोंका निरोध सिर्म या उद्योग हु इसके अपने प्राप्त किया जाया। — इत्यादि ।

यह अगटा भाग, पुरातनप्रनम्भसंप्रह नामक, मूल प्रथके प्रकालमक द्वितीय मागके, इसी तरहके

हिन्दी भाषान्तरके प्रकट होनेके बाद, ( जो अब शीव ही प्रेसमें जानेपाटा है ) प्रकट होगा — अर्थात् हमारी सक्तित्वत योजनाके अनुसार, वह इस प्रबन्धिनन्तामणका ५ वाँ भाग होगा ।

- 3

#### ६. प्रयन्धचिन्तामणि वर्णित ऐतिहासिक तथ्योंके विषयमें कुछ खाभिप्राय ज्ञापन ।

इस प्रथके पढ़नेवाछे पाठकोंको यह बात छड़्यमें रखनी चाहिये कि — यदिष प्रत्य प्रधानतया ऐतिहासिक प्रवन्धोंका मप्रदालक है, तथापि इसके सब-के-सब प्रवन्थ ऐतिहासिक नहीं हैं । खास करके अन्तिम प्रकाशमें जो पुण्यसार, कर्मसार, वासना, छपाणिका इत्यादि शीर्पक ५-७ प्रवन्य हैं वे पीराणिक ढंगके कथाएक रूप हैं । उनमें ऐतिहासिकता खोज निकालना निर्श्यक है । बाकीके अन्य बहुतसे — प्राय सब ही — ऐतिहासिक माने जा सकते हैं, पर इनमेंसे भी बुछ प्रवन्धोंमें विणित ब्यक्तियोंके निययमें, अभी तक इतिहासिकों यो इा बहुत मतभेद अप्रय है। इप्रान्तके तौरपर, प्रथम प्रकाशमें प्रारम-ही-में दिये गये निकामके राजाके व्यक्तिलके निययमें निकानोंमें अभी तक कोई एक निर्णयाक्षक नियार स्थिर नहीं हो पाया । वह राजा कीन या और कब हो गया इसके निययमें अभी तक अनेक तर्क-नितर्क किये जा रहे हैं । नामके अतिरिक्त प्रजन्ध कथित और सब बोतें तो एक कहानीका अयेका अन्य कोई अधिक महर्च नहीं रखतीं।

यही बात सात्रग्रहनगाळे प्रवन्धके विषयमें कही जा सकती है। सात्रग्रहन राजाका नाम यद्यपि शिळळेखें वरीरहमें उपक्रव्य होता है, पर इस नामके कई राजा हो जानेसे और प्रवन्धमें वर्णित घटनाका कोई ऐतिहासिक्त्य प्रतीत न होनेसे उसके विषयमें भी नामके अतिरिक्त प्रवन्धकथित समृज्य वर्णन कल्पनात्मक ही मानना चाहिए।

सातग्रहनके वाद मूयराजका जो प्रबन्ध है, उसके अस्तित्वके निषयका अमीतक अन्य कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपरूप नहीं हुआ है, पर उसके ऐतिहासिक पुरुप होनेका समर माना जा सकता है।

इस तरह इन सुठ दो चार नामोंकी व्यक्तियोंको छोड़ कर, बाकी जितने यी नाम इस प्रयमें आये हुए हैं व सब प्राय ऐतिहासिक पुरुष हैं। हाँ उनमेंसे कुठ कुठ व्यक्तियोंका सबन्ध, परस्प एक दूसरेके साथ, इस तरह जोड़ दिया गया हे जो अमात्मक है। उदाहरणिक तीरपर, भोज-मीमके वर्णनाले दूसरे प्रकाशमें, धाराके प्रसार राजा मीजदेवके साथ खास करके महाकित बाण, मयूर, मानतुङ्ग और माथ आदिका जो परस्पर सम्बन्ध और समकालेनात वर्णन किया गया है वह सर्या। आत और निराधार है। प्रस्थकारके पूर्वतीं और प्रसिद्ध निद्धार प्रभावन्द्र स्थित, अपने प्रमावक्विरिमें, इन व्यक्तियोंका और ही राजाओंके समयमें दिया है और वह कुठ प्रमाणभूत मी सिद्ध होताहै। तब किर न मालूम मैहतुङ्ग स्थिन किस आधार पर, ऐसा आन्तिपूर्ण यह वर्णन अपने इस महर्दिक प्रस्था मियत कर हाळा है, सी समझमें नहीं आता। मोजप्रवयकों ये बहुतसी बात कल्पनामस्त और लोककार्यों जैसी प्रतीत होती हैं। प्रस्थकारने ये बातें किसी सुरातन प्रक्ष्य आदिके आधार पर खिखी हैं या किसीके मुखसे सुब सन कर खिखी हैं इसके जाननेका कोई साधन जमीतक हात नहीं हुआ।

सिद्धराज और कुमारपाछके समयके जितने वर्णन इसमें प्राधित हैं ने प्राय सत्र-के-सउ ऐतिहासिक और आधारमूत हैं। उनके घटनाक्रममें दुऊ आगे-पीछे पनका समन हो सकता है पर उनमेंका कोई वर्णन सर्नया निर्मृछ हो ऐसा नहीं माना जा सकता।

मेरुतुङ्ग स्रिके इस प्रथमें, ऐतिहासिक दृष्टिसे, जो सबसे अधिक निरोप महत्त्वका उद्घेख पाया गया है

चह है अणहिल्पुरके राजाओंक समयका कालकम-ज्ञापक निश्चित निर्देश । अणहिल्पुरके राज्यसिंहासन पर, कीन राजा कर गरीपर बैठा और उसने कियो वर्ष किया इसका जो उल्लेख इस प्रत्यमें किया गया है वैसा उल्लेख पूर्विक अन्य किसी प्रत्यमें नहीं मिलता । यचिए इस उल्लेख मानडा (चाणेक्ट) वशके जो सकस्तर निर्दिष्ट किये गये हैं उनकी निश्चितिक निर्णायक और समर्थक अन्य कोई वैसे प्रमाण अमीतक उपल्य्य नहीं हो पाये, तथापि उनके वायक भी वैसे कोई प्रमाण अमीतक उपस्थित नहीं हुए । और चीलुक्य वशके राजाओंके राज्यकालको जो सरस्तरानिल इसमें दी गई है वह तो शिल्लोल्ड लादि अन्यान्य अनेक प्रमाणींसे प्राय: सर्पधा निर्मान सिद्ध हो चुकी है । इसलिये इसमें दी गई यह राजसम्सरानिल वहे ही महत्वकी और एक अदितीय ऐतिहा वस्तु सावित हुई है ।

#### ७. प्रबन्धचिन्तामणिकी रचना कव और क्यों की गई।

मेरुतुद्ध सुरिने यह प्रत्य कव और कहा बनाया इसका उल्लेख उन्होंने प्रत्यक्र अन्तमें स्पष्ट कर ही दिया है। इस उद्धेखते ज्ञात होता है, कि वि॰ स॰ १३६१ में, काठियाजाके वर्तमान बढवान शहरमें उन्होंने इस प्रयक्ती पूर्ण किया । यह यह समय है, जब गुजरातके स्तावीनत और स्वराज्यका सर्वनाश हुआ और निवर्मी यननराज्य और पारवश्यका प्रादुर्भान हुआ। मेहनुद्रके सामने ही अणाहिलपुरका वह चौलुन्य वरा नामरीय हुआ, जिसके स्थापक प्रस्पते हे कर अन्तिम पुरुषके समय तककी गुजरात के राजकीय, सामाजिक और धार्मिक जीवनकी काउ विशिष्ट स्मृतिया लिपिक्द करनेका उन्होंने इस प्रत्यमें मीलिक प्रयत्न किया है । मेहतुङ्ग सूरिके विचारसे, गजरातमें - अगडिलपर पाटनमें - वीरप्रकृति राजा थीरघवल और उसके निचक्षण मंत्री बस्तुपाल-तेजपालके बाद और कोई वैसा स्मरणीय पुरुष पैदा नहीं हुआ जिसका नामनिर्देश वे अपने इस प्राथमें करते । यदापि गरिधवलके बाद उसके बराजोंने प्रायः ५०-५५ बर्पतक अमहिलपुरमें राज्यसिंहासनका उपमोग किया, पर उनका शासन प्रायः निष्प्राण और निस्तेजसा ही रहा । मेरतङ सरिको उस शासनकालमें कोई महस्त नहीं मालम दिया और इसल्पि उन्होंने उस समयकी किसी भी घटनाका उल्लेख अपने प्रन्थमें नहीं आने दिया । उनके अभिप्रायमें, धीरधन्छ और वस्तुपाल-तेजपालके साथ गुजरातके ज्योतिर्मय जीननकी समाप्ति हो गई। चाहे मेहतूह सुरिकी, इतिहासके आत्माका दिल्य दर्शन हुआ है। या न हुआ हो, पर इसमें कोई शक नहीं कि उनका यह प्रत्यलेखन, सचमुच, . इतिहासररीनको एक अस्पष्ट पर सूक्ष्म कलके आमासका उत्तम सुबन करता है। जब हम गुजरातके सूरकालीन राष्ट्रीय जीवन पर एक गहरी दृष्टि डाखते हैं, तब हमें यह बहुत रुप्टताके साथ दिखाई देता है, कि यथार्थ ही. गुजरात के भाग्याकारामें वीरधवल और वस्तुपाल-रीजपालके बाद, अब तक, वैसा कोई व्योतिर्धर रोजस्वी सारक उदित नहीं हुआ। और जब तक गुबरातमें पुन वैसा पूर्ण स्वराज्य स्थापित नहीं हो पाता तब तक हम इस अन्तर्दाहरू अनुभृतिको मिटा नहीं सकते ।

मेरुद्वह सूरिन इस मधकी रचना किस लिये की सह भी उन्होंने प्रत्यके प्रारम्भवें और अताने, सिक्ष रूपमें सूचित किया है। ने कहते हैं कि—" वारवार सुनी जानेके कारण पुरानी कथायें बुद्धिमानीके मनको वैसा प्रसन्न नहीं कर पातीं। इसलिये में निकटवर्ती सुपुरुषों के सुन्तासि [ सक्तित ऐसे ] इस प्रवन्ध-चितामि प्रत्यक्ष रचना कर रहा हू।" ( —देखो यु० २, प्रच ६ का अनुसद् ), इस क्यनके मानको स्पष्ट परनेके ठिये, इसके भीचे एक टिप्पणी दे कर हमने उसमें कहा है कि—" पुराने जमानेमें ज्याच्यानकार और क्याकार प्रायः सदा उन्हीं कथा-बार्तीओंको सुनाया करते थे जो महामारत और रामायण आदि पुराण प्रयोगें

प्रसिद्ध हैं। एक-की-एक ही कथा वार्तार सुननेमें निज्ञ मनुष्योंके मनको निशेष आनन्द नहीं आता यह सर्रातुमन्न सिद्ध बात है। मेरुतुङ्ग सूरिने इस वातका विचार कर, छोगोंका मनर्रजन करनेके छिप, कथाकारोंको, कुछ नई सामग्री ग्रात हो इस उदेशसे, कितनेएक इतिहास-वृत्तान्तोंसे अञ्कृत ऐसे इस प्रवन्यचिन्तामणि नामक प्रन्यकी रचना की ।"

प्रत्यक्ते अन्तर्भे वे, इस रचनाकें करनेमें एक दूसरा भी कारण वतलाते हुए लिखते हैं कि—'' बहुशुन और गुणपान् ऐसे चुद्धननोंकी प्राप्ति प्राप्तः चुर्लम हो रही है और शिष्योंमें भी प्रतिमाका वैसा योग न होनेसे शाल प्राप्तः नष्ट हो रहे हैं। इस कारणांसे तथा मानी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इच्छासे, छुपासके जैसा, सप्पुरुपोंके प्रवन्धोंका संघटन रूप यह प्रत्य भैने बनाया है। '' मेरुतुक्त स्ट्रिस यह कपन बहुत अनुप्तरपूर्ण और सािव परिस्थितिका योतक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि मेरुतुक्त स्ट्रिस इस प्रत्यकी रचना हारा, इन पुरातन ऐतिहा श्रुतियोंका, यह विशिष्ट समह न कर जाते तो, आज हमें, उस जमानेकी इन इनीगिनी वातोंके जाननेका भी और कोई सावन उपलब्ध नहीं होता। यह सव-किसीको मनद करना पड़ेगा कि जैन वर्मके उस प्रत्यक्तालान वितहासको जो अनेकानेक विश्वसमीय और प्रमाणमूत वार्ते, इस प्रत्यमें उपलब्ध होती हैं और उसके साथ ही गुजरातके समुचे राष्ट्रीय इतिहासको भी बहुत आधारमूत जो कथार्थ इसमें दृष्टिगोचर होती हैं, वैसी और किसी प्रत्यति समुचे राष्ट्रीय इतिहासको भी बहुत आधारमूत जो कथार्थ इसमें दृष्टिगोचर होती हैं, वैसी और किसी प्रत्यति समान नहीं हैं।

#### ८. प्रयन्यचिन्तामणिके उहेलों पर कुछ विद्वानोंके मिथ्या आक्षेप।

कुछ निद्वानोंका खराल है कि - मन्यकार जैनधर्मी होनेसे, उसने इस प्रन्यमें अपने धर्मका प्रभाव बतुलानेकी दृष्टिसे, बहुत कुछ अतिरायोक्तिपूर्ण कयन किया है; और उसके साथ अन्य धर्मकी - खास करके हीउधर्म और माखण संप्रदायकी – छपुता बतानेका भी प्रयत्न किया है। इस प्रन्यके उक्त इमेजी अनुरादक मि. टॉनीने अपनी प्रस्तारनामें, इस बारेमें टिखा है कि - विस तरह, एक्झीटर स्टीटके एक उपरके नीचेके कोनेमें बैठ कर, पार्टियामेंटके संमापणोंको छेखबद्ध करते समय, डॉ० ब्होनसन् इम बातकी पूरी सावचेती राजा था कि ' व्हीगर्फ प्रतिपक्षी उसमेंसे किसी तरहका कोई छात्र न उठा पार्ने !-इसी तरह समी हाजास्पट स्थानोंमें, यह अमर्पशील जैन मन्यकार, स्पष्ट रूपसे महाबारके धर्मके दढ श्रदाल अनुवारियों ( अर्घात् जैनों ) के पक्षकी और हकता है; और जैन छोक, शैनोंकी तुछनामें कहीं नीचे न दिखाई दें इमकी साम्पानी रखता है। ' इत्यादि। इसमें कोई शक नहीं कि → प्रत्यकार जैन धर्मका एक निहान् धर्माचार्य है और इस प्रत्यकी रचनामें उसका प्रधान उदेश जैन धर्मकी पुरातन महत्ता और गीरन गाथाको, कालके बुटिल और प्रगल प्रगहके कारण मुष्ट होनेसे बचा रखनेका है । जतएव यह इसमें अपने धर्मका उत्कर्प बताने गाडी श्रुतियों और उक्तियों का यथेष्ट उपयोग करे, यह स्वामानिक ही है। उस पुराने जमानेमें, जब धार्मिक बाद-निवादकी बडी प्रतिया थी और उसका लून जोरदार प्रचार था; एवं सभी धर्मीके और सप्रदायोंके अप्रणी विद्वान गण अपनी अपनी विघाका प्रमात और पराक्रम वतटानेके डिये, राजसमाओंमें, नामी पइट्यानोंके मुटि-प्रहारोंकी नाई, बाक्प्र-हारोंकी वहीं सस्त कुरती किया करते थे, तब उन विद्वान् प्रन्यकारोंकी तदिष्यक रचनाओंने, ऐसी अमर्पशांट भारता और टेस्पन-रीटीका दृष्टिगोचर होना नितान्त स्वामानिक ही है । केरल जैन प्रत्यकार ही इसमें अधिक उद्धेयनीय हैं सो बात नहीं है । ससारके सभी धर्मी, संप्रदायों, मतों और मंनव्योंके छेएक इससे मुक्त नहीं हैं । मेर्नुह सूरि भी उन्होंमेंका एक स्वर्गप्रिय देखक है, अतः उसके देखमें, अपने धर्मको नीचा दिखाने-

वाली किसी उक्तिके न आने देनेकी सावचेतीका रखना, उसका कर्तव्य है। बाहाण और शेर प्रन्यकारोंने भी वैसा हो किया है; मुसलमान और ईसाई इतिहास-लेखकोंने भी वैसा ही किया है – और अब भी सब वैसा ही करते रहते हैं । इसल्पिये इसमें जैनधर्मके महश्यके प्रतिपादनका होना कोई खास दूषण नहीं है । रही बात अति-श्योकिको - सो निश्रद्ध इतिहासकी दाप्टेस किमी मी प्रकारको अतिशयोक्ति अरस्य ही आलोचनीय है और उसकी प्रामाणिकता विचारणीय है। पर जैसा कि हमने पहले ही सूचित कर दिया है, यह प्रन्थ कोई निशुद्ध इतिहास प्रत्थ नहीं है। यह तो कुछ पुरातन प्रकीर्ण पोधियोंमें यत्र तत्र छिखित और कुछ कुछ वृद्ध जनोंके मुखसे यथा-सथा श्रुन ऐसी इतिहासविषयक कथा-वार्ताओंका एकत्र सक्छनगढा एक सम्रह मात्र है। अतः इसमें ती कर उक्तियाँ अथना घटनाएँ, निखद इतिहासकी दृष्टिसे, यदि भान्तिपूर्ण, अतिशयोक्तिपूर्ण अथना निर्मल्याय मी सिद्ध हो तो उसमें कोई आर्थ्यकी वाल नहीं है । और खुद प्रन्थकारको भी इस निपयमें कुछ आहांका हुई है, कि उनके इस सकलनमें, निहानोंको कुछ बातें सदिग्ध या भिन्नभावनाली माखूम दें। इसिंहपे उन्होंने प्रत्थारभमें यह बात भी इस तरह कह दी है कि न्ध यचिप निद्वानों द्वारा अपनी बुद्धि [ सकछना ] से महे गये प्रबन्ध [ कुछ कुछ ] भिन्न भिन्न मार्वो गले अपस्य होते हैं, तथापि इस प्रन्थकी रचना सुसंप्रदाप ( गोध्य परपरा ) के आधार पर की गई हे; इसलिये चतुर जनोंको [ इसके विषयमें ] वैसी चर्चा न करनी चाहिए। " इस कथनको स्पष्ट करनेके इरादेसे इसके नीचे जो टिप्पणी हमने दी है उसमें छिला है कि -'' मेहतुद्ध सरिने इस प्रत्यकी सफलना करनेमें कुछ तो पुराने प्रबन्ध-प्रत्योंकी सहायता की और वुछ परंपरासे चले आती हुई मौखिक बातोंका आधार लिया । इस प्रकार परपरासे सुनी हुई बातोंका परस्पर मिलान करनेमें विदानोंको अनस्य ही उनमें चुछ-न-चुछ भिल भाग माञ्चम पडता रहता है । मेरुतुङ्ग स्रिको भी अपनी इस रचनामें कहीं कहीं ऐसा मिल भाग मालूम हुआ है । इस भिन्न भावके निराकरण करनेका या खुछासा करनेका उनके पास न तो कोई साधन था और न कोई उनको उसकी वैसी आउर्वकता थी । उन्होंने सिर्फ इतना ही कहना पर्यात समझा कि हमने जो बातें इस अन्धमें सकलित की हैं वे एक ससप्रदाय दारा प्राप्त की हुई हैं। इसिंटपे इनके तप्पातध्यके बारेमें चतुर मनुष्पोंको चर्चा करनेसे कोई छाम नहीं। प्रबन्धिनतामणिकी बुछ बातें . ऐतिहासिक दृष्टिसे सर्वथा आन्त भी माञ्चम होती हैं छेकिन मेरतुङ्क सार उनके छिये नियास और निरामह हैं।"

यद्यि यह बात ठीक है कि मेरतुक्त सुरिका मुख्य छ्रय जैन धर्मके महत्त्वकी ओर रहा है; तथािय उन्होंने अन्य धर्मोको निन्दा करनेकी दृष्टिसे या अन्य धार्मिक जनोंकी हीनता बतानेकी भावनासे इसमें इन्छे भी नहीं छ्वा है। बिल्क प्रसिद्धान अन्य धार्मिक जनोंकी हीनता बतानेकी भावनासे इसमें इन्छे भी नहीं छ्वा है। बेरिक प्रसिद्धान अन्य धार्मिक उन्होंने उसी आदरको दृष्टिसे छिखी हैं, जैसी अपने धर्मकी छिखी हैं। उदाइएगके तिरपर, मृख्यबक्त प्रक्र-धर्मे जो धिन्द्रकाका प्रमान और होगाचार्य कपार्थे नामक तपस्यीक तपस्ती महिभाका वर्णन किया है, वह सन्ध्रेय वेसा हो आदरचुक्त पिक्तामों छिखा गया है, वेसा जिनपुका या किसी जैन आचार्येके वारेमें छिखा गया है। इसी तरह सिक्टाजकी माता भगणहाती धिनमफिकी नियमें जो उछेख किया गया है वह भी वैसा ही निप्पक्ष भावते भरा हुआ है।अनम मेरदाह सुरिकी विनयमेंकी महत्त्वकी बारोर्से अनादर होता तो थे इन उछेखोंकी इसपें स्थान ही क्यों देते।

मुख्यतमा जैन श्रोताजों (श्रान्कों) के सन्धुल, व्याख्यान समामें, जैन साधुओं-यतियोक्त वाचने निमित्त, द्वस प्रत्यका रचना की गई हे, इसिटिये इसमें जैन व्यक्तियांका और उनके कार्यकटायोका ही अनिक वर्णन होना स्वामान्य प्रताकोय और राष्ट्रीय जीवनकी उत्तायक इतर व्यक्तियों और उनकी कार्य स्पृतियोंके तरफ भी अनुराग है, और इसिटिये उन्होंने अपने इस समझ्में, उन इतर व्यक्तियों और उनकी कार्य स्पृतियोंके तरफ भी अनुराग है, और इसिटिये उन्होंने अपने इस समझ्में, उन इतर व्यक्तियोंकी जीवन-स्पृतियोंके भी, यथाश्रुत और यथाञ्चात चुत्तान्तोंको, जहाँ-वहाँ प्रथित

कर छेनेमें कोई सकोच नहीं किया। मोज-मीमप्रवन्यको बहुतसी स्मृतियाँ इसी दृष्टिसे सगृष्टीत की गईँ हैं। सिद्धराजके प्रवन्थमेंकी मी बहुतसी बार्ते इसी बारायसे लिखी गईँ हैं।

#### ९. मेरुतुद्ग सूरिकी इतिहास-प्रियता।

माद्रम देता है कि मेरुतुङ्ग सूरिको ऐतिहासिक बार्तोमें कुठ अधिक रस या और ऐतिहासिक तथ्यार पक्षपात या। इहिंछये उन्होंने सिद्धराज आर कुमारपाल्के जीवन निषयकी वैसी भी तुळ तथ्यमूत वार्ते उद्घिखित कर दी हैं जिससे उन व्यक्तियोंके, कुठ चरित्र दुर्बलता और स्वमाव-कृषणता आदि दोषोंकी भी, हमको हाकी हो जाती है। हेमचन्द्र सूरि आदि विद्वानोंने अपनी रचनाओंमें ऐसे दोषोंका विल्कुल भी आमास नहीं आने दिया है।

इस विषयमें. मेरुतद्व सुरिने सबसे अधिक महत्त्रकों जो सत्य ऐतिहासिक बात छिल डाठी है वह हे मत्रीयर वस्तुपाछ-तेजपाछकी माता कुमारदेवींके पुनर्छम्रर्जा । तत्कालीन सामाजिक और वार्मिक नीतिकी भाय-नाती दृष्टिसे बुमारदेवीका वह पुनर्छम्न अपस्य निन्दनीय और हीन कार्य सबझा जाता था । वेसे कार्यको समाज बड़ी इलकी दृष्टिसे देखता था और उस कार्यके करने गाली न्यक्ति को बड़े कठोर भागसे समाजसे बहिष्कृत और तिरस्त्रत किये करता था। यह तो उस एक-अदितीय माग्यपती कुमारदेवीका छोकोचर पुण्यकर्म ही था, जिस्के प्रभावसे उसकी बुश्वीमें ऐसे प्रभावशाछी पुत्ररत पैदा हुए जिनकी समता रखनेवाले पुरुप, सारे ससारके इतिहासमें भी इने गिने ही दिखाई देंगे। इन पत्र-पहारोंके प्रतापके कारण कमारदेवी तरकाठीन समाजमें बडी भारी प्रतिष्ठाकी पुण्यभूमि बन सकी और सारे देशके जनोंसे बड़ी श्रद्धिक साथ पूजी और प्रशसी गई। बड़े-से-बड़े धर्माचार्यीके. बड़े-से-बड़े करियोंने, बड़े-से-बड़े राष्ट्रपरपोंने उसकी प्रतिमाकी पूजा की और उसके नामकी स्तृतियाँ गाई। परं उसके जीवनका वह महत् प्रेमकार्य, जिसके वश हो कर उसने, अणहिलपुरके एक वडे खानदानके प्राप्ताह कुदबके पराजनी सुरक ठकुर आसराजके साथ पुनर्छन्न किया था, उसकी स्पृतिका किंचित् आमास भी उन समकाछीन कवियों और प्रन्यकरोंने अपनी कृतियोंमें न आने दिया। क्यों कि वह कार्य समाज और धर्मक्ते नापसन्द था । उसकी स्पृतिको जोनित रखना अप्रिय था। श्रद्धेय और पूजनीय माता कुमारदेनीके पुण्य जीननक्ष तम मानी गई कृष्णकलाका सचन करना उन कवियोंके लिये बडा पातक कार्य था । महामास्य बस्पपाल-तेजपाठ जैसे जगद्शेष्ट, पुण्यप्रभावक और धर्मानतार नरशिरोमाणि निधना-निनाहसे प्रसृत पुत्ररत्न थे, इस विचारको स्पृतिमें लाना भी उन प्रयकारोंके लिये, शायद बढा दु खद और दुर्भिचारक कर्तव्य था। इसलिये उन्होंने अपनी कृतियोंमें इसकी कहीं भी स्पृति नहीं होने दी। उन्हींका अनुगमन करनेवाले, बस्तुपाल-तेजपालके अन्यान्य पिठल प्रसिद्ध चरित्रतारोंने भी उस बातका कहीं सचन नहीं होने दिया। परत मेरुनक्रने अपने प्राथमें इस बातका बहरू ही सक्षेपमें पर वहे स्पष्ट रूपसे उल्लेख कर दिया । ऐसा ही एक दूसरा स्पष्ट उल्लेख उन्होंने राणा वीरधवरको माताके निपर्यमें भी किया है, जो भी इसी तरहका एक सामाजिक अपनादका ज्ञापक हो कर भी ऐतिहासिक तथ्य था । इन उल्लेबोंसे मेरुतुङ्क सुरिकी सबी इतिहास प्रियताका हमको अच्छा आमास हो जाता है ।

वाकी उस समयके मयकारोंके नियममें, इससे अनिक निश्चद्ध इतिहास-दृष्टिकी अपेक्षाकी कन्यना करना और उनमें धार्मिक या साप्रदायिक मारनाके पोषक निचारोंका दोपारोष कर, उनके अवानित कपनोंको भी उपेक्षा, की दृष्टिसे देखना, एक प्रकारकी निजकी ऐतिहासिक दृष्टिकी निपर्यासताका बोन कराना है।

#### १०. ग्रन्थकारके जीवनके विषयमें !

प्रत्यकार भेरतह सूरिके जीवन आदिके विषयों कोई निक्षेप वस्तु जात नहीं होती ! ये नागेन्द्र गच्छके आचार्य ये और इनके गुरुका नाम चन्द्रप्रम सूरिःया ! धर्मदेव नामक निहान् — जो शायद इनके हृद्ध गुरुआता या अन्य कोई गच्छनासी स्वित साधु-पुरुष ये — वनके पाससे इन्होंने, इस प्रन्यकी रचनामें बहुत हुछ ऐतिहा सामग्री प्राप्त की थी ! गुणवन्द्र नामक इनका प्रचान शिष्य था जिसने इस प्रन्यकी पृष्टणी सपूर्ण प्राप्तीकिपि लिख कर तैयार की थी !

इनकी एक और प्रन्यकृति चपळच्य होती है जिसका नाम सहायुक्यचित है। इस प्रन्थमें अध्ययदेव, शान्तिनाय, नेमिनाय, पार्श्वनाय और महावीर—इस प्रकार पाँच तीर्यकरोका सिक्षा चरित वर्णन है। इसके अतिरिक्त और कोई इनकी कृति हमें जन्मीतक ज्ञात नहीं हुई।

अन्तर्मे इस आशा करते हैं कि हिन्दी-भाषा-माणी निकास जन, इस प्रन्यके वाचन-मननसे अपने प्राचीन इतिहास विषयक हानमें उचित वृद्धि करेंगे; और खुट प्रन्यकारने, प्रन्यान्तर्मे जो नल निवेदन किया है उसकी तरफ छश्य रखनेकी सूचना कर, उसी कथनको उद्धृत करते हुए, हम अपना यह प्रास्ताविक वक्तव्य समार करते हैं।

> यवाशुर्तं सङ्ग्रलितः त्रव्न्धेर्प्रन्यो यया मन्द्धियापि यस्तात् । मारसर्यमुत्सार्ये सुधीभिरेष महोङ्गीरूवृतियेष नेयः ॥

मार्गशीर्पपूर्णिमा, वि० स॰ १९९७ } भारतीय विद्या भवन आन्प्रगिरि ( अत्येरी ), बम्बई, }

− जिन विजय

### श्रीमेरुतुङ्गाचार्यविराचित

## प्रबन्धाचिन्तामणि

#### ॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

श्रीनाभिभूर्जिनः पातु परमेष्टी भवान्तकृत् । श्रीभारत्योश्रतृद्वीरम्वितं यद्यतृर्म्वती ॥ १ ॥ हृणामुपलतृन्यानां यस्य द्रावकरः करः । ध्यायामि तं कलावन्तं ग्रुकं चन्द्रभभं प्रभ्रम् ॥ २ ॥ ग्रुक्कान् विभूय विविधान् मुलेवायाय धीमतास् । श्रीमेरुतृङ्गस्तद्रवयन्याद् ग्रन्थं तनोत्यमुम् ॥३॥ रत्नाकरात् सद्गुरुक्तस्यदायात् प्रवन्यचिन्तामणिमुहियोषों ः ।

श्रीधर्मदेवः शतधोदितेतिवृत्तीश्र साहाय्यमिव व्यथत्त ॥ ४ ॥

श्रीगुणचन्द्रगणेशः प्रयन्धचिन्तामणि नवं ग्रन्थम् ।

भारतिमवाभिरामं त्रथमादर्शेऽत्र दर्शितवान् ॥ ५ ॥

भृत्रं श्रुतत्वान्न कथाः पुराणाः शीणन्ति चेतांसि तथा बुधानाम् ।

वृत्तैस्तदासन्नसतां प्रवन्यचिन्तामणिग्रन्थमहं तनोमि ॥ ६ ॥

बुँधः प्रवन्थाः स्विधयोच्यमाना भवन्त्यवद्यं यदि भिन्नभावाः ।

ग्रन्थे तथाप्यत्र सुसम्प्रदायाद् दृब्धे न चर्चा चर्तुरविधेया ॥७॥

#### ॥ ॐ सर्वज्ञको नमस्कार हो ॥

जिनकी चतुर्मुखी (चार मुख) छऱ्मी और सरस्वतीका उचित द्वार है, और जो भनका अन्त करनेनाले हैं ऐसे श्रीना भिभू, परमेष्टी जिन (ऋष भना थ) रक्षा करें ॥ १ ॥

' उस कलारान् प्रमु चन्द्रम भ नोमक गुरुका मैं ध्यान करता हूं जिनका कर (≔हाथ, किरण) पृथ्यके समान मनर्पोको भी द्रतित करनेवाल हैं ॥ २ ॥

र इस क्षेत्रकों प्रत्यकारों बाता और किनदेन ऋष मा ना यथी एक साथ स्तृति थी है। ब्रह्मांक चार मुक्त होनेसे बे चतु में तर के नामसे प्रतिद्ध है। जैन शास्त्रोंमें वर्णन है कि प्रत्यावान ऋष मदेव जब चर्मापरेश देन वर व वे भी भोताओं नो चार मुख्याको दिसाई देते में 1 इस दिये किन प्रभावानकों भी चार मुंख का विशेषण दिया जाता है। बाता भी पर में श्री परसे प्रतिद्ध हैं और जिन भागाना भी पर में श्री कल्टाते हैं। बस्ति शिक्तु के गारिक्तमच्चे पित हुए सी पुराणों में श्रीदि है इस किये बे ना मिभू बहे जाते हैं और जिनदेव ऋगमनायके तिवाका नाम ना मिग्र व था इस लिये वे भी ना मिभू बहे जाते हैं।

२ इंड क्षेत्रको मन्पकारो अपने गुएको नामकार किया है जिनका जास चन्द्रप्र में या । चन्द्रपम राज्यको क्षेत्रपं करते दुए गुफ्ती तुळ्ना चन्द्रमाके छाप की है। चन्द्रमा अपनी १६ कराओं के कारण करनारत कहराता है, प्रत्यकारके गुफ्क भी विद्या-कराओंसे अरुकृत होनेके कारण करनावत थे। चन्द्रमाके कर याने किरण चन्द्रकान मणिको—जो एक प्रकारका पत्यर ही है-द्रीत (जनपन्दु युक्त) करते हैं। बेले ही चन्द्रमम गुफ्के कर याने हाथ यदि एक्सतुत्य मनुष्यके मस्तिक उत्तर भी पदते

हैं तो उसको भी ये द्रवित ( आर्ड़,-कोमल्वित ) बनाते हैं ।

निवित्र प्रकारके प्रन्यों और प्रक्रचोंको छोड़ कर चुद्धिमानोंको सुखरी जिनका बीच हो सके इसिंटिये गहरचना द्वारा ही में मेरु हो म इस प्रन्यको रचना करना चाहता हु<sup>3</sup> ॥ ३ ॥

रानाकर ( समुद्र ) समान सहुक सम्प्रदायसे, जब मेरी इस प्रवंषरूप विन्तामणि (रान) के उद्धार करनेको इच्छा हुई तो श्री धर्म देव ने सेंकडो बार इतिहासकी वार्ते कह कहकर मानों मेरी सहायता को साशा

जिस प्रकार महा मार त प्रत्यका प्रयस आदर्श (पहुटी नकुट ) गणेश ( गजाननने ) तैयार किया, इसी प्रकार इस प्रवच्यचिन्तामणि नामक नये अयका प्रयम आदर्श गुण चन्द्र नामक गणेश ( गण्डपति ) ने सन्दर रितिसे तैयार किया" ॥ ५ ॥

वारंतार हुन्। आनेके कारण पुरानी कथायें झुदिरामनोंके मनको वैसा प्रसल नहीं कर पाती । इस छिये मैं निकटनतीं सत्पुरुपोंके इतान्तोंसे [संकलित ऐसे ] इस प्रवधिकतामणि प्रत्यक्षी रचना कर रहा हूं '॥ ६॥

यदापि निहानों हारा अपनी सुद्धि [ संकलना ] से कहे गये प्रवण [ कुछ कुछ ] भिन्न भिन्न मार्गो वाले अनस्य होते हैं; तथापि इस मंद्रकी रचना सुसम्प्रदाय ( योग्य परंपरा ) के आघारपर की गई है; इसलिये चतुर जर्नोकी [ इसके विषयमें ] वैसी चर्चा न करनी चाहियेँ ॥ ७॥

रै से बहु ग सुरिने हुए अपकी रचना की उत्तक पूर्व, बुछ गवा और कुछ पवाँ, कुछ प्राकृत और कुछ सरक्रतें, कुछ पुरावन अपक्रय और कुछ अर्वाचीन देश्य भाषामें, इस प्रकारक कई छोटे बडे प्रवन्धात्मक प्रग्य विद्यानार में । उन प्रग्योंमेंटे अपनी बनोसियेक अनुसार विराने एक विषय चुनवर बेठ तुशने सरल सरकृत गय रचना द्वास इस प्रग्यता सकटन विद्या ।

४ प्राप्तकार मेन्द्रात्त्रिके धर्मदेव नामक कोई इद गुरुआता अधवा गुवकन ये जिहाँने समय समय पर इतिहासनी वैषकों पुरानी नातें सुना सुनावर इस प्राथमी रक्ता सामग्रीमें बचेट सहावता सी । इस किये प्राप्यकारने आपने गुवके बाद उनका भी सम्मान्यर्वक इस शोक द्वारा स्माप और उपकृत मान प्रदर्शित किया है।

<sup>्</sup> जैन मन्यों में बात मुनियोंके चमुदायको राण नामके भी उपित्तित किया बारता है। राणका नायक जो द्विन्काचार्य होता है उन्हें मनेदा-गणरादी-गणरादी-पणनाम्य कादि राम्प्रींच सम्मीचित किया जाता है। प्रकाशित नामक मार्थी देवार करते काद उनके पद उनके पद प्रकाशित मार्या किया हो और उनके बाद उनके पद प्रमाणनायक के हो। क्लोजिय प्रमाण, प्रवासने पुराण प्रसिद्ध कर वाचार किया हो और उनके बाद उनके पद प्रमाणनायक के हो। क्लोजिय प्रमाण मार्या प्रकाशित प्रवास किया हो किया हो कि होने वेद व्याच करित प्रशासतकी प्रधास नक्ष्म कि उनके काद पहा पर क्षेत्र कर अर्थ पदमा कादि है।

<sup>्</sup>षे पुराने जमानेमें स्यास्त्यानकार और कपाकार प्राय शहा उन्हें कथा-मानीओं को मुनाया करते थे जो महामारत और यमापण आदि पुराण प्रप्तिमें प्रिवेद हैं । एक्की एककी का वास्तार मुनकर विका मनुष्यों मनको विवेध आनन्द नहीं आता यह वर्षोद्धानन दिन बात है। मेन्युगायूनि हव बातका विकार कर, कथाकारीको, लेगों का मनोराजन करतेके लिए सुरू नर्द हामग्री भार से १६ उरेएयंथे, किनने एक इविहास प्रविद्ध और निकट समयवार्ती अंद्र पुरुषों के प्रतिशासिक जुपानीसे अलकृत देशे १६ प्रविप्तिमानि नामक प्रमानी स्वाम की। प्रस्वदाका यह कमत साम व्यान देने योग्य है।

ण मेरनुगद्धिने इस स बढी सहस्ता करनेते तुन से चुन का पुणने प्रकार मिना सी कीर कुन परापांध वर्ण मार्थी हुँ मेरिक सामेदा सामार िया। इस प्रकार परायं पुनी दूर कार्येक परायं किया करनेने विद्वानी कार्ययं दे उनने इस ने इस मिनाय मार्यम पडता रहता है। मेरनुगद्धिको भी सर्का इस रकार्य और सूचरी अन्यकृत रक्तारें में इस पद प्रवार परायं परायं

### १. विक्रमार्क राजाका प्रवन्ध ।

- १. इस पृथ्वीतल पर विक्रमा दिल्य [काल्क्रमसे] अन्तिम राजा होते हुए भी, अपने शीर्थ औदार्य आदि गुणोसे वह प्रयम और अदितीय राजा हुआ । श्रीताओं के कानोमें अप्रतकाक्षा आसिचन करनेवाला उस राजाका इतिकृत वहुत कुल विस्तृत है। हम यहा पर, प्रंयक्री आदिमें उसीका सेक्षेपर्म कुल वर्णन करते हैं \*।
- १) वह इस प्रकार है—अय ित देश के सुप्र ति छान नामक नगरमें असम साहसका एक मान निवि; दिज्य क्काणों ( चिहां ) से किसत; सक्तर्भ, पराक्रम इत्यादि गुणोंसे सरपूर ऐसा एक निक्रम नामक राज पूत ( राजपुत्र ) था। आजन्म दरिद्रतासे तंग होता हुआ मां वह अति नीति-परायण था; सैंकहों तपाय करके मां जब धन नहीं प्राप्त कर सका तो एक बार मह मात्र नामक नित्र के साथ रोह ण पर्यंत को चढा। उसके निकटनतीं प्रय र नामक नगरमें [ एक ] कुम्हारके घर रिप्राप्त करके प्रातःकाळ उस कुम्हारते महमात्र ने दुराळ गागा। उसने कहा—इस जगह खानके मीतर जाकर प्रातःकाळ पुज्यानक नामका अपण करके, कळाटको हथेकी सर्वा कर 'हा देव!' ऐसा कहकर चोट मारनेते, दुर्माणी मनुस्पकों मी अपनी प्राप्तिक कनुसार राज निकते हैं। उस महमात्र ने कुम्हारसे इस इत्तानको मकी माँति सुन किया पर विक्रम से इस प्रकारको दीनता करानेमें वह असमर्थ था। उन साथनोंको साथ केतर सिक्रम जब उस्पानमें कुताका प्रहार करनेको उसत हुआ तो उस उसम उसने [ अकस्मात् ] निक्रमसे इस प्रकार कहा स्थानमें इत्रारक्त प्रहार करनेको उसत हुआ तो उस उसम उसने ( किस अस्मात ) निक्रमसे इस प्रकार कहा स्थान है।' इस तत वम-राची ( हीरा छेदनेकी सुई—हीराकणी के समान वचनको सुनकर विक्रम ने हथेकी माया ठोंककर 'हा देव!' ऐसा कहा और दुनावको हायसे केंक दिया। उस कुनावके अपमागार फरी हुई ज़र्मानमेंसे समा वा उसे केंकर

२ यर्गमान मारुवेदा प्राचीन नाम अवन्ती या ।

्रे मा तथा याने अवनीमें मु प्रति द्वान नामक कोई नगरका उद्देश्य कहीं नहीं मिन्द्रा। अवनीकी स्वापनी माचीन कान ही से उज्जयिनी प्रस्पाद है और विकासी राजवानी यही उज्जयिनी थी। इतिषये संगर है कि प्रवस्तों की प्रति वजियनी को मुम्र निश्चन-निक्का प्रतिप्रत=स्थान नह हट है-इस निश्चाम उत्तिपत्र किया हो। उज्जयिनीक विद्यान आदि और भी उत्तान थे, इसिन्ये यह भी कमत है कि यह सुप्रति द्वान भी उत्तान एक उत्तान हो। दिख्य अवाद् महास पृक्षी पूर्वनी सक्यानी प्रति द्वान नगर्य थी—जो वर्गन्यनमें निजान सन्त्रमें नोदास शके कोंद्रेसर बेटण नामक कनत्रेत्र प्रीप्त है— उनकी प्रतिदर्शामें भी सामद उज्यभिनीको सुप्त दिखान नाम पदान किया गया है।

र मध्यकालीन मनग्यकार्येकी यह मान्यता थी कि विजयादित्यके बाद उसके जैवा पराज्ञमी, ग्रा, बीर, उदार चेता कीर कोई राजा नहीं हुआ। उसके पहलेक सुगमें बची पुराणशिक्त अनेक राजा हुए जो इस गुणति यदेव अकड़त में, वसारी मंत्री निकास के जैवे कपूर्ण आदर्श उपकित नहीं थे। इसकिय इस गुणति हिस्स उन वाजार्गों भी वर्ष प्रमार स्थान नाम करता है और इसीक्यें एवं पर्यों, मध्यक्रियं उसके अन्यक क्षेत्रमा करता है और इसीक्यें एवं पर्यों, मध्यक्रियं उसके अन्यक क्षेत्रमा के लिए में गुणतक्रमें यह सर्य प्रमास था, देवा कहा है। प्रकाशिक्त प्रमास के स्थान अन्यक्ष कार्याय कार्य कार

इस प्रक्यियनामणियाँ रचनाके पूर्व, पिक्रमिययक कई चरित और प्रक्य बने हुए विद्यमान ये। ये वरित्र प्रक्य बहुत बुछ स्थित और विविध बननमाठे थे। उनमेंसे बुछ बोडेसे वर्गन, सोडा करने, मेस्त्रुवसूरिने यहारर प्रीयत किये हैं। विक्रम विश्वक हम विविध मारित्यका विवेश परिचय हम ययात्यान अगले क्रम्बम लिखेंगे।

विक्रमके साथ छोट आया। फिर उसके दोकस्पी शंकुको शंकाको दूर करनेके छिये, भट्टमात्रने जानका इत्तान्त बताते हुए, तत्काछ ही उसकी माताका दुश्चछ समाचार कहा। विक्रमने इसे भट्टमात्रकी सहज छोडुपता समझकर उसके हाथसे रन्न छीन छिया, और फिर खानके पास पहुँचा और बोडा—

२. गृशकों हे दरिहतारूप धानको अस्तेवाले इस रोहणगिरिको धिकार है जो [इस प्रकार] अर्धिकारों [यानकों] से 'हा देन !' ऐसा कहलाकर फिर रूल देता है।

यह कह कर उसने सब छोगोंके सामने उस रतनको वहीं फेंक दिया । फिर देशान्तर अमण करता इआ अवन्ती की सीमामें पहुँचा। बहा पर, नगारेकी मनोरम ध्वनि सुनकर और उसके कारणका वृत्तान्त जानकर उसका स्पर्श किया । फिर उस भट्टमात्र के साथ यह राजमन्दिरमें आया । [ ज्योतिपीसे ] निना पूछे हुए उसी मुहूर्तमें दिनमरके छिये मंत्रियोंने उसे राज-पद्पर अमिपिक किया । उसने अपनी दूरदर्शितासे समझ लिया कि इस राज्यपर कोई प्रवल राक्षस या देवता कुद होकर प्रतिदिन एक एक राजाका संहार करता है और राजाके अमार्गे देशका विनाश करता है। इसलिये मक्ति या शक्तिसे उसका अनुनय करना उचित है। यह मीच, नाना प्रकारके अध्य-मोध्य आदि वनवाकर, सार्यकाल चढ़शाला (राजमहलका ऊपरी हिस्सा ) में सब कुछ सजा कर रखा । रासकी आरती हो जानेके बाद, अगरक्षकोंसे भारश्यत्वर्णमें छटकते द्वए पर्छंगपर अपने पर-दक्तल आदिते आच्छादित तकियाको रखपाकर, स्वयं प्रदीपच्छायामें-अर्थात ऐसी जगहपर जहाँ प्रदीपका प्रकाश नहीं पहला था,-जाकर बैठ गया । हाथोंमें तलबार धारण किये हुए, और धैर्यमें जिसने तीनों लोकको जीत किया वैसा वह चारों ओर [ तीक्ण दृष्टिसे ] देखता रहा । एकाएक घोर अर्द्धरात्रिको खिदकाँके रास्ते पहुछे पुञा उठा, फिर ब्नाला निकर्ण और बादकी साक्षात ब्रेतकी प्रतिस्तिके समान एक निकराल नेतालकी उसने आते देखा । भूखसे उस वेतालका पेट फक हो रहा था, [ इसलिये पहले ] उसने खूब इच्छापूर्वक उन भीज्य दर्जीको लागा, फिर गध दर्जीको शरीरमें लगाया और पान खाकर सन्तुष्ट होकर फिर वहीं पर्छगपर वह वैठ गया और विक्रमादित्य से बोला—' अरे मनुष्य 1 मेरा नाम अग्निवेत्ता ल है, देवराज ( इन्द्र ) के प्रतीहार रूपसे में प्रसिद्ध हू । में प्रतिदिन एक एक राजाको मारता हू । पर िआज ] तुम्हारी इस प्रक्रिसे संतुष्ट होकर मैंने तुम्हें अभयदानपूर्वक यह राज्य दे दिया है। पर इतना अश्य-भोज्य मुझे सदैव देना ! इस प्रकार दीनों में ते होनेके बाद, इन्छ काछ बीतनेपर, निक्रम रा जाने [उसमे] अपनी आयु पूछी । तब वह यह कहकर चला गया कि-' में तो नहीं जानता पर स्तामी ( इन्द्र ) से जानकर तुम्हें बताऊँगा । ' फिर दूसरी रातको यह आपा और विकास से बोळा कि-' इन्द्रने तुम्हारी आयु सी साळकी बताई है । ' राजाने अपने मित्रधर्मका अधिक आरोप करके इस प्रकार अनुरोव किया कि-'इन्द्रसे मेरी आय सी वर्षसे एक वर्ष अधिक या कम करा दी ! ' उसने यह अंगीकार किया और किर दूसरे दिन आकर यह बात कहीं—' महेन्द्रके किये भी [ तुम्हारी आयु ] निन्यानदे या एक सी एक वर्ष नहीं होगी।' इस निर्णयके जान छेनेपर, राजा दूसरे दिन उसके छिये मध्य-मोज्य न बन्माकरके. छहाईके लिये सम्जित होकर रातमें तैयार रहा । वह वैताल मी यथाराति आकर उन मस्य-मीम्पोंको न पाकर कुद हुआ और उसने राजा ऊपर आक्रमण किया। बड़ी देरतक उन दोनोंने युद्ध होता

१ प्राचीन शालमें यह मया थी कि सम्बन्धी ओस्ते तिसी साहत या दुल्बर कार्यक्रे करले-करसालेकी घोषणा जब कराई जाती थी, तब एक विद्यार राजपुरुग, क्षुठ अन्य याजनमंचारियों-कैनिकों आदिकों साथ लेकर, नगरके प्रधान प्रधान राजमामित दोल या नगराय बजतात दुज्ञा पुमता विद्या और सुख्य मुख्य स्थानीयर खड़ा होकर जो कार्य करना करवाना हो उत्तरी उद्योगराय करना । जिस मृत्युयको यह कार्य करना जमीत्र होता यह उत्तर घोषणाके बाद उत्त दोल या नगावि अपना हाप क्यारा, निक्य के प्रकान समझ लेकर कि हम मृत्युकों यह आप लेकर के प्रधान के स्वाप्त के स्थान के स्थान के साथ प्रधान या राजपे पात क्षेत्र पात क्षार के स्थान के साथ प्रधान या राजपे पात क्षेत्र पात क्षार करना ।

रहा। बादको पुण्यवळके सहायसे राजाने उसे पृथ्वी तळपर पटक दिया, और उसकी छातीपर पैर रखकर कहा कि—' इष्ट देवताका स्मरण करो।' तब वह बोळा कि—' मैं तुम्हारे अद्भुत साहससे संतुष्ट हूँ। तुम जो करनेको कहो उस आदेशका पाळन करनेवाळा मैं अभि नामक बेताळ तुम्हें सिद्ध हुआ।' ऐसा होनेपर उसका राज्य निष्कंटक हुआ। इसी तरह अपने पराजामें दिम्मण्डळको आक्षान्त करनेवाळे उस राजाने छानचे प्रतिहन्द्री राजाओंके राज्यको अपने अधिकारमें किया।

१. जंगछी हाथी, तुम्हारे शत्रुओंकि [ उजड पड़े हुए ] घरोंकी स्कटिक निर्मित दीवाल्पर दूरसे अपनी परहाई देखकर, उसे प्रतिद्वंही हाथी समझकर, क्रोथसे आधात करता है । [ उस आधातक करण ] फिर जब उसका दाँत टूट जाता है तो उसे ही हथिनी समझकर धीरे धीरे साह सै के साथ उसका सर्श करता है ।

ें इसे प्रकार, का लिया सादि महाजियों द्वारा की हुई खुति ( प्रशंसा )े से अलंकत होते हुए उसने चिरकाल तक विशाल साम्राज्यका उपभोग किया ।

#### अय यहाँपर प्रसंगसे महाकवि का लिंदा सकी उत्पत्ति संक्षेपमें कहते हैं-

२) अपवन्ती नामक नगरीमें राजा विक्र मादित्यकी उड़की प्रियंगु मंज रीधी। वह अध्ययनके लिये व र रुचि नामक पंडितको समर्पण की गई। खुद्धिमती होनेके कारण सभी शाखोंको उसने उस पंडितके कुछ ही दिनोंमें पढ़ लिया । यह पूर्ण यीवनावस्था प्राप्त कर चुकी थी, और नित्य अपने पिताकी सेवा करसी थी । किसी समय, वसन्त कालमें दोपहरको-जब कि सूर्य सिरपर आगया था, वह खिड़कीके सामने एक . सुखासन ( सोफा ) पर बैठी हुई थी: इसी समय उपाध्याय ( वर रुचि ) रास्तेमें चळते हुए खिड़कीकी छायाँने कुछ विश्राम छेने खडे रहे । कुमारीने उन्हें देखा और खुब पके हुए आमके फलोंको दिखाया । उसने समक्षा कि थे ( उपाध्याय ) उन फलोंके लोलप हैं. और बोली- आपको ये फल ठंडे रुचेंगे या गरम ! ' उसकी इस बातकी चातुरीको न समझते हुए उस ( उपाध्याय ) ने कहा कि- गरम ही चाहते हैं ' इस प्रकार कह कर, उस उपाध्यायने अपना वस फैछाया जिसमें उसने ऊपरसे वे फल नीचे फेंके । लेकिन फल प्रध्यीपर गिर पढे और उससे उनमें भूळ लग गई। वरह चिहाय में लेकर मुँहसे फुंक फूंक कर उस भूलको झाइने छगा । राजकत्याने उपदासके साथ कहा-' क्या ये बहुत गरम हैं कि जिससे मुंहसे फूंक कर ठेंडा कर रहे हो ! ' उसकी इस बातसे चिदकर उस बाह्मणने कहा- ' ऐ अपनेको चतुर समझनेवाळी अभिमानिति ! दं गुरुके साथ ऐसा मजाक कर रही है: जा तशको पशुपाल पति मिलो 1 । इस प्रकार उनका शाप सुनकर उसने कहा--4 आप तो त्रीरिय हैं, लेकिन में तो, आपसे अविक विद्यावान होनेके कारण जो आदमी आपका भी गुरु होगा, उसीसे विवाह करूंगी। ' उसने इस प्रकार प्रतिज्ञा की। इसके बाद विकामा दित्य जब करपाके छिपे उचित श्रेष्ठ वर पाने की चिन्तारूपी समुद्रमें डून रहे थे, तो वह पंडित जिसे राजाने अभिकपित वर की खोज करनेका आप्रहपूर्वक आदेश कर रखा था, एक बार एक जंगलमें घुमता हुआ विपासासे व्याकुल हुआ। जब

१ मुटमें यहापर 'साहराइ:' ऐसा सबिभिक्तिक पाठ है इसिलेये इसे हागीका विशेषण मान कर यह अर्थ किया गया है। प्रसंतरोंमें 'साहराइ,' ऐसा निर्विभक्तिक पाठ भी मिलता है जो अर्थहाहित सबोधनात्मक हो सकता है। उस अर्थमें यह 'हे साहसाइ,!' ऐसा विक्रमका विशेषण हो सकता है। विक्रम का उपनाम सा ह सा इ. या, इसके यथेट प्रमाण मिलते हैं।

२ यह जो राजाकी स्तुतिका पत्र उद्भृत किया गया है वह महात्रवि का लिदाय का बनाया हुआ है, ऐखा मेस्तुगका मतव्य माञ्चम देता है।

चारों ओर कहां जल नहीं किटा तो एक प्रमुपालको देखकर उससे जल समा। उससे जल्के अभानमें दूप पीनेको कहा और बोला कि—' करचढी ' करो । उसके ऐसा कहने पर वर र वि वही चिन्तामें पढ़ गया, क्यों कि उसने इसके पहले पढ़ शन्द किसी भी कोप प्रवर्ष नहीं पढ़ा सुना था। उस प्रमुपालने उसके मस्तक पर हाथ स्वकर और मैंसके नीचे विठाकर, दोनों हथेलियों को जोड़कर 'करचढी' नामक मुदा बताकर, उसे पेंट मर कर दूप शिलाया। उस ( उपाध्याय )ने अपने मस्तक पर हाथ रखनेके कारण और एक ' करचढी' इस विशेष शब्दके कारण और एक ' करचढी' शस विशेष शब्दके कारण और एक ' करचढी' शस पति निध्यत किया। मैंसेंसे हटाकर उसे अपने महल्यों ले आया और द महिने तक उसके श्रारिको शुक्रमा करते हुए '' ऑ नम शिलाय '' इस आशीर्वादको पढ़ाया। द महिने बाद जल पण्डितने समझ लिया कि ये अक्षर उसे कप्टरक हो गये हैं तो एक दिन शुम मुहत्ते उसको अच्छी तरह श्रारा कराके उसे रामकानों के मा। । राजको आशीर्वाद देते समय, बहुत बारका अन्यस्त वह आशीर्वाद सी, समाक्षोमके कारण ''उ शर हं प्रकार कर प्रवर्श के गया। उसकी इस उन्दरण बातसे राज विस्तत हुआ। यर र चिने व सिकी [ मूर्बता छिपाने और ] चतुरता बसानेके लिये राजके सामने कहा—

उमाके साथ रुद्र जो, श्वाहर और शूलपाणि है ।
 रक्षा करें तुम्हारी हे राजन, टंकारके बछसे जो गर्वित है ॥

इस प्रसिद्ध श्लीकद्वारा [ जिसके चारों चरणोंके प्रथमक्षरासें से उरास्ट ' शब्द बनता है ] बर इचि ने उसके पाणिउत्पक्ष गंभीरताका विस्तारणूर्वक विवेचन किया । उसकी बातसे प्रसन्त होकर, राजाने उस मेंस चरानेवालेंसे अपनी पुत्रीका विशाह कर दिया । पर पण्डितके सिखानेसे वह सदा मीन ही रहा करता । राजकर्त्याने उसकी चतुरता जाननेके लिय, कोई नई लिखी हुई सुस्तकके स्वयोचनका उससे अनुरोध किया । उसने उस पुस्तकको हथेखीपर रखकर, जहरूनी लेखर हुई सुस्तकके स्वयोचनका उससे अनुरोध किया । उसने उस पुस्तकको हथेखीपर रखकर, जहरूनी लेखर किया । उसने उस पुस्तकको हथेखीपर रखकर, जहरूनी लेकर हो ति स्वर्ध स्वर्ध ' जा मा तृ हु हि '' को कहायत प्रस्ति देख राजपुत्रीने निर्णय किया । उस उपलुक्तराने ति होकर, जह अपनी प्रतिष्ठा पुरु गया और उनके युजनेकी विकल बोली बोलने लगा । तह राजकुलराने निष्यप किया कि यह निरा पशुपाल-भैतीका चराहा है । किर यह ( चरवाहा ) राजक याकी अजहा देखकर, बिह्नचाके लिये कालिकाको आराधना करने जगा अपनी पुत्रीके वैध्यसी शक्ति होकर राजाने रातके समय गुत्र वेशमें दासीको भेजा ! उसने यह कहकर कि—'मैं सुझे सुरुमात हुई हूँ ' अयों ही उठाने जगी राज है विल्यको आराधाले, स्वय कालिका देपीने ही प्रत्यह होजर उसे अनुराहीत किया । इस इजनतको सुनकर राजकुमारी प्रमुदित हुई और आकर बोली कि—' क्या इज्ज विशेष वाणी प्राप्त हुई हूँ ' उसों ही उठाने जगी राज होजरी साम कालिया साम प्रति इसके उपार से मा प्रमुख है है ' उसके ऐसा कहनेयर यह तमीसे कालिया नामसे प्रतिहर हुआ और उत्तर होगा र से मध प्रमुख देश है व उत्तर के प्रता कहनेयर वाणी प्रता होते हैं है ' उसके ऐसा कहनेयर यह तमीसे कालिया नामसे प्रतिहर हुआ और उत्तर होगे र सम य प्रमुख देश है व प्रता कालिय वाणी प्रता होते हैं सम समय प्रमुख देश है है अर सहाकार और दिन्त कालिय वाणी मा इसके स्वरत्व देश है सुकत वालिय कालिय वाणी मा सुकी है सुकत होते हैं सुकत कालिय वालिय वाणी सा सुकी है सुकत होते हैं सुकत कालिय वालिय वाणी सा सुकी है है व सुकत होते हैं सुकत होते होते होते हैं सुकत होते होते हैं सुकत होते हैं सुकत होते होते हैं सुकत होते हैं सुकत होते हैं सुकत होते हैं सुकत ह

-इस मकार यह कालिदासकी उत्पत्तिका प्रवंध है ॥ १ ॥

र 'जामानु ग्रादि 'की बहाबत हिंदीमें या गुजराती माधामें प्रचलित हा ऐखा शात नहीं हुआ, लेकिन संपाटी भाषामें 'जबाद चोज' नामकी कहाबत प्रचलित है। विकासकी और जीर कपाओंमें भी हरका उलेखा भित्रता है हरके शात होता है पुपने सम्पन्न यह कहाबत गुजराज आदि देशोंमें भी प्रचलित होगी।

र पुषीका वेचना भात होनेकी यात्रा राजायों इसिन्ये हुई कि वह पहुलान जामरणात उपवाल करनेकी प्रतिज्ञा करके देवीकी आरापना करने बैठा था। केदनुगद्धिका यह अन्य बहुत ही अखिता शैलीमें लिखा हुआ है, इसलिय इसमें बहुतसी सार्ते अभ्यादन रहती हैं। दुसरे त्रिक जीमें में बार्ते खलासेके साथ लिखी हुई मिलता हैं।

दे) एक बार, उस नगरका निवासी दा ता नामक सेठ, हायमें मेंट टेकर आया और समामें वैठे हुए दिक मा दित्य को प्रणाम करके कहने लगा—' महाराज, मैंने शुम मुहूर्तमें प्रधान वदृश्योंसे एक धनलगृह ( महल ) बनवाया, और उसमें वहे उत्तरके साथ प्रनेश किया । में जब रातको उसमें प्रलॅग-पर पड़ा हुआ, आधा-सोया, आधा-जागा वाली अनस्थामें या उस समय ' गिरता हूँ ' इस प्रकारकी मैंने आकृतिक वाणो सुनी । में मारे उरके ' मत गिरो ' यह कहता हुआ उसी समय वहाँसे माग निकला । उस मकानके बननानेके संवपमें ज्योतिथियों और कारीगरींको समय समय पर जो घम दान किया गया है वह मेरे उत्तर हुया दण्ड ही हुआ ! अब इस निययमें महाराज जो उचित समझें करें ! ' राजाने उस सेठकी बात मल मौंति सुनकर, उस धनलगृहका मृत्य जो तीन लाल उसने बताया, वह उसे खुकात, उसको स्वायत कर लिया । सायंकाल होनेपर, सर्गनसर ' यानि राजसमामें बैठकर, तरसंवंधी सब कार्योंदे निकृत होकर, उस घर स्वरंध स्वारंध स्वरंध सम स्वरंध निकृत होकर, उस घर सुख दी ' गिरता हूँ ' इस वाणीको सुनकर वह असम साहसी राजा बोल कि ' जस्दी गिरो !' और उसके ऐसा कहते ही पास हो गिरे हुए सुनर्ग पुरुषको उसने प्राप्त किया ।

#### -इस तरह यह भ्रवर्ण पुरुपकी सिद्धिका भवन्ध है ॥ २ ॥

४) एक दसरे अपसरपर कोई अमागा पुरुष, अपने हायसे वर्नाये हुए एक छोडेका दुबला पतला दिदि मामक पत्रका केकर द्वारपर आया । जब द्वारपाठ उसे राजाके पास के गया तो उसने कहा कि-' महाराज. आप जैसे स्त्रामीसे शासित इस अवन्ती पूरी में सभी चीज़ें जल्दी विक जाती हैं और मिळ जाती हैं. ऐसी प्रसिद्धि जानकर मैंने चौरासी चौहटोंपर निकयके लिये इस दिख-पुतलेको घुमाया, लेकिन किसीने इसे नहीं खरीदा और उट्टी मेरी मर्सना की गई। आपकी इस नगरीका यह कटंक ययार्थ रीतिसे आपको बताकर, क्या में जैसे आया था वैसे ही चला जाऊं ? यह आपसे पूलने आया हूँ । ' उसकी इस घटनाको प्रीका एक महान करंक समझकर राजाने उसी समय उसे एक लाख दीनार देकर, लोहेके उस दरिद-पतलेको खरीद लिया और अपने खजानेमें रखना दिया । ऐसा करनेपर उसी रातको, झख पूर्नक सीये इए राजाके निकट, एडछे पडरमें हाथियोंकी अधिष्ठात्री देवता. दसरेमें घोडोंकी अधिष्ठात्री देवता और तीसरेमें छत्रमीने आदिर्मत होकर कहा कि -' महाराजने जब दरिद-पतलेको खरीद लिया है तो, फिर हमारा यहाँ रहना उचित नहीं है '-यह कह, अनुज्ञा छेकर वे चले जानेको पूछने आये. तो राजाने अपना साहस भग न हो इसलिये उनको जानेकी अनमति दे दी ! चीये पहरमें कोई दिव्य तेज:सम्पन्न उदार पुरुप प्रकट हुआ और बोला कि-' मैं सत्त्र (साइस) हैं. जानेके लिये आपकी अनुजा चाहता हैं । उसके ऐसा पूछनेपर राजा द्वायमें तळगर छेकर जब आत्मधात करनेको उचत हुआ तो फिर उसने हाथ प्रकृषकर कहा कि- में तुष्टमान हुआ ' और राजाको उस इत्यसे रोका । सत्त्रके वहीं रहनेपर हाथी आदिकी तीनों अधिष्ठात्री देवतायें छीटकर राजासे बोर्छी-'जानेके सकेतको नष्ट करके सस्त्रने हमें धोखा दिया है। इसिलिये राजाको छोड़कर हम लोगोंका जाना अब उचित नहीं है। इस प्रकार वे भी बिना किसी यहके ही स्थिर होकर रह गई।

[१] तमीतक घन है, तमीतक गुण है, और तमीतक समुग्ग्ग्छ कीर्ति है, जवतक हे सस्व (साइस )। ग्रुप चिचल्पी नगरमें खेळ रहे हो।

१ सर्वायसर उस जगहना नाम है जहा राजा अपने मुख्य सिंहासन पर बैठनर सब कोई प्रवाजन और राजधीय पुरुरोंकी मुणावत देता देता है और राज्यके सब कार्योंका विचार करता है। दिवान-ए-आम या दरवार-ए-आम यह उर्दु राज्य हसका माया समानार्थक हो सकता है।

[२] राज्य भी जाय, स्त्रियां भी जाय और इस ठोकसे यश भी चळा जाय; किन्तु हे सत्य ! हम तुम्हारे जानेकी अनुगति आजीवन महीं दे सकते !

-इस प्रकार यह विक्रमादित्यके सत्त्वका प्रवंध है ॥ ३ ॥

५) प्रक दूसरे अवसरपर, कोई विदेशी सामुद्रिक-शाखब हारपालके हारा समामें बैठे हुए विक मा दिख्य के पास ले जाया गया। प्रवेश करते ही राजाके लक्षणींको देखकर वह सिर पीटने लगा। राजाने विपादका कारण पूला, तो बोला—' महाराज, हमी लप्एल्युणोंके नियान होनेपर मी तुम्हें छानते देशोंकी साम्राज्य लक्ष्मीको भोगते हुए देखकर, सामुद्रिक शाखके लपर मेरा विराग हो गया है। मैं तुम्हारे अग्दर ऐसी कोई काबरी (चितकवरी) लांत नहीं देख रहा हूं जिसके प्रमायसे तुम मी कोई राज्यकर्ता बनो। उसके इस पानपिक सुनते ही विक्र सादित्य तल्लार लींचकर जब अपने पेटमें मारने लगा तो उस (सामुद्रिकज्ञ) ने पूछा कि ' यह बया ! ' इस पर विक्र मने कहा—' पेट फाइकर तुम्हें उसी प्रकारकी (काबरी) आत दिखाता हूं। तब उसने कहा कि—' मैंने पहले नहीं समझा था कि, तुम्हारा यह सरप्रकर्षा महालक्षण बत्तीस लक्षणोंसे मी बदकर है। इसपर राजाने उसे पारितारिक देकर विदा किया।

-- इस प्रकार यह सत्त्वपरीक्षाका प्रवंध है ॥ ४॥

६) इसके बाद एक अवसरपा, विक म ने सुना कि इसरेके शरीरमें प्रवेश करनेवाड़ी विधासे तिर-स्कृत होकर अन्य सारी कछार्य निष्फल-सी हैं। यह सुनकर उस विधानी प्राप्तिके छिये और वंत पर मैर या-म न्द्र योगीके पास जाकर उसने चिरकाड़ तक उस (योगी) की सेवा करनी शुरू की। योगीके पूर्वेश्वक किसी म्राक्षणने [ राजासे यह कहा कि—तुन ] मुखे छोड़कर (अकेडे) गुरुसे एर-काय-प्रवेश विधा न डेना। राजाने उसका अनुरीय मान छिया। जब गुरु विधा देनेको उद्यत हुए तो उनसे कहा कि—'पहडे इस म्राह्मणको विधा दीजिये, नादको मुखे '। 'राजन् ! यह (म्राह्मण) विधासे सर्वधा अयोग्य है 'ऐसा गुरुके कहनेपर मी बार बार विक म अनुरीय करता रहा। तब गुरुके पहुंच । वहा प्रक्रांके सर जानेसे राज्यस्वीयोंकी उस्त माह्मणको भी विधा दी। वादमें छोठकर दोनों उज्जयिन पहुंच । वहा प्रक्रांके सर जानेसे राजपुरुगोंकी उदास देखकर और स्वयं परकाय-प्रवेश विधाका अनुसब करनेके निचित्त, राजाने उस हाराकि शरीरमें अपनी श्राह्माका प्रवेश कराया। हिस प्रसंगका वर्णन करनेवाच यह एक एव है — 1

५. जासणको अंगरसक बनाकर राजा ( परकाय-प्रवेश ) विधाके द्वारा अपने हाथीके शरीरमें प्रविष्ट हुआ ! [ बादमें ] क्रांसण राजाके शरीरमें पैठ गया ! तब राजा क्रांडा-शुक ( महरुके पीनिर्मेका सोता ) हुआ । बादमें ( शुकरूपी ) राजाने छिपकलों के शरीरमें प्रवेश किया सो रागीने उसकी मृख समझी । ( इस पर ) क्रांसणने ( जो राजाके शरीरमें प्रविष्ट हुआ बैठा या ) शुक्को जिलाया और वि क्रम ने फिर अपना शरीर पाया ॥ ५ ॥ इस तरह वि क्रम को परकाय प्रवेश विधा सिन्द हुई !

~इस मकार यह विद्यासिद्धिका प्रवंध है ॥ ५ ॥

७) फिर एक दूसरे अवसरपर, विक्रमादित्य राजपाटिका (बिह्म्प्रीण) में जा रहा था तब मार्गमें सिह्रसेन स्रिको आहे देखा। उस नगरका (जैन) संघ उनके पीछे पीछे आरहा था और बन्दी जन

५ ' राजविता' यह प्राकृत ' व्यवाहिया' और देख ' रहनाडी' शब्दका सहक्रव भाषतर है। पुरने समयों राजा जादि राजनामक पुरुष प्राव: मन्पानोचर वीचिर प्रहर्क जंदमें या चतुर्य प्रहर्ते, राजमहल्खे अनुचर आदिके लास परिवारके साथ निकल पर, प्रपान वाजमार्थि होते हुए नाम या गायके बाहर जो राजधीर उत्तानादि हमान होते ये उनमें जाते ये और बहारर परेट्रों परेट हरूर पर, राज्यानक होते वाचन वाचल निवासपान पर आते थे। राजाजींका यह इस प्रकार टहलने या हवास्तानेके लिये जो महल बाहर जाना होता या उसकी घा ड्या दिन कहते थे।

'सर्वज्ञ पुत्र' कह कर उनकी स्तृति कर रहे थे। 'सर्वज्ञ पुत्र' इस विरुद्धे कुपित होकर विक्र मादित्य ने उनकी सर्वज्ञताकी परीक्षाके लिये मन-ही-मन प्रणाम किया। सिद्ध सेन ने भी पूर्वगत श्रुतज्ञानके द्वारा राजाका मनोगत भाव समझकर, दाहिना हाय उठाकर धर्मेछा भ का आशीर्वाद दिया। राजाने जब आशीर्वाद देनेका कारण पूछा, तो महर्षिने कहा कि — सुम्हारे मानस नमस्कारके लिये यह आशीर्वाद दिया गया है। इस पर उनके श्वानसे चिकत होकर राजाने उनके पारितोषिक निमित्त एक करोह सुवर्ण वितरण किया।

८) एक बार, एक दूसरे अवसरपर, राजाने कोशाध्यक्षसे अपने दिलाए हुए सुवर्णका बृत्तान्त पृछा,
 तो बह बोला कि – धर्मकी बहीमें मैंने श्लोक बनाकर सुवर्णका बृत्तान्त लिखा है; जो इस प्रकार है –

६. दूर-ही-से हाथ उठाकर 'ध में लाम हो ' इस प्रकार कहनेवाले सिद्ध सेन स्थिको राजाने एक कोटि

['सुवर्ण ] दिया ।

इसके बाद श्री सिन्ध सेन स्रिको समामें बुळाकर राजाने जब कहा कि—उस सुवर्णको प्रहण कांजिये। तो उन्होंने कहा कि—खाये हुए को खिळाना च्या है। उसी सुवर्णसे ऋणमस्ता पृथ्वीको ऋणमुक्त कीजिये। इस प्रकारका उपदेश मिळनेपर, स्रिके सन्तोपसे सन्तुष्ट होकर राजाने उस बासको स्त्रीकार किया।

९) उसी रातको राजा बीरचर्यों निमित्त नगरमें घूम रहा था, उस समय एक तेछीको बारबार

इस (श्लोकार्ध) को पढ़ते सुना-

७. ' हमारा संदेश नारद ! कृष्णको कहना । '

राजा सेवेरा होनेतक रुका रहा पर उत्तरार्ध न सुन सक्ता । उदास होकर राजमहर्जमें आकर सो गया । सेवेरे सामयिक कृत्य करके राजाने उस तेलोको बुलाकर उत्तरार्ध पृछा । उसने कहा-

' जगत् दारिह्रयसे दुःखित है [ इस लिये ] बलिके बन्धनको छोडो ॥ ७ ॥ '

यह सुनकर सि द से न स्रिके उपदेशको किरसे कहा हुआ समझकर पूटगीको कणमुक्त करना हुक किया।

[ उ ज िया नो में राजा वि क्र मा दिग्य मह मा त्र के साथ ग्रुत वेश घारण करके महाकाल के मंदिरमें

माटक देखने गया। कुछ समयके बाद नागरिक के लड़के हारा कराये जानेवाल नाटक में सुत्रशारके सुखसे उसका
वर्णन सुनकर राजाने भी उस नागरिकका थन ले लेनेके लिये मन-ही-मन लोम किया। बादको कुछ समय
वीतनेपर वह प्यासा होकर मुख्य बेहयाके घर परसे भहके पाससे पानी मंगवाय। बहा बुढ़िया बेहया प्रधान
पुरुपोंसे कह कर उसके लिये ईखका रस लेनेके लिये उपवनमें गई। काटनेवालोंसे ईख कटयाकर उसका रस
निकल्यापा पर उससे धिवया विल्कुल नहीं भरी तो मनमें दुखी होकर उपरक्ता शकोरा मर कर ही बहुत देरसे
आई। राजाके रस पी लेनेपर मह मा त्र ने उसकी देरी और उदाशीका कारण पुरु । बह बोली—ओर और
दिन तो एक ही ईखसे घड़ा और शकोरा दोनों भर जाते थे लेकिन आज तो घड़ा भी नहीं भरा। इसका कार
समझमें नहीं जाता। मह मा त्र ने दिस् पुल कि-द्युम लोग तो वहीं पक्ती बुद्धिवाली होती हो इसलिय इसका
समसमें नहीं जाता। मह मात्र ने किर पुल कि-द्युम लोग तो वहीं पक्ती बुद्धिवाली होती हो इसलिय इसका
समसा जानकर और विचारकरके बताओं। किर वेश्या बोली कि-पुर्ट्याके मालिक ( राजा ) का मन मनाके
प्रति विद्य होगया है, इसलिये पुल्वीका रस भी क्षीण होगमा है। यह कारण उसने निवेदन किया तो
राजा मी उसके बुद्धिकीशल्ये चिकता हुआ। वह किर अपने घरकी शब्यापर सोया हुआ इस प्रकार विचार
करने लगा कि — प्रजा-पीवन किये विना, केवल विद्य विन्ता मात्रसे ही प्रयोग सरकी इस प्रकार हानि हुई। तो

१ वी र च याँ – उस जमानेके राजा अपनी प्रचाके सुख दुःखींकी बातें स्वय चानने—सुननेके लिये कभी कभी रातके समय, प्रकारी गुरतेयामें महलेंसे बाहर निकल जाते ये और दो चार घटे इचर उपर धूम फिर कर नगर चर्चाका प्रत्युश अर्नुमव करते ये। इसका नाम बीरचर्या है।

में अब प्रजाको पीझा नहीं पहुँचाउंगा । ऐसा निश्चय करके राजा दूसरी रातको व्यासका बहाना करके परीक्षाफे छिये किर उसके घर गया । वह शीघ ही ईखका रस छे आई और राजाको दिया जिसे पीकर वह [ अपने महलमें आया और ] इाय्यापर सी गया । महना त्रके पूंछनेपर बेश्याने भी [ उसी तरह ] निवेदन किया ( क्ताया ) कि — [ आज ] राजाका मन प्रजापर प्रस्त है । राजाने भी रातवाओं अपनी बात बताकर, परके विस्तको इस प्रकार पहुंचान छेनेके कारण, सन्तुष्ट होकर उस वृद्ध वेश्याको [ पारितोपिकके ढंगपर ] हार दिया । — इस प्रकार यह राजाके भनके अनुसार होनेवाल प्रभीसका प्रवष्ट है । ]

१०) इसके बाद एक बार श्री सिद्ध सेन सूरिने, यह पूछे जानेपर कि- मुद्दा (विक्रम ) के समान क्या

कोई [और मी] जैन राजा होगा 2 3 कहा-

८. एक हजार एक सो निन्यानने वर्ष पूर्ण होनेपर तुझ विक्रमादित्य के समान एक कुमार [पाट] नामक राजा होगा।

११) इसके वाद, एक दूसरे अवसरपर, जब राजा जगत्को ऋणमुक्त कर रहा था, अपने औदार्य गुणका अर्हकार करसे हुए उसने सोचा कि—' प्रातःकाल एक कीर्ति-सन्ध बमवाऊँगा । [ उसी दिन ] रातको बीरचर्यो निनित्त चतुष्पयमें यून रहा या कि दो सह उहते हुए सामने आये । उनसे डर कर राजा किसी दारिहामस्त माह्मणकी पुरानी गोझालके एक खमेपर चढ़ गया । वे दोनों साह भी सीगसे बारबार उसी खमेपर महार करने लगे । इसी बीच उस माह्मणने अकसमात् जग कर, आकाशमें शुक्त और बृहस्पतिसे अन्दर्व चन्द्र-मण्डलको देखकर, गृहिणीको उठाया और चन्द्रमण्डलको स्वित होनेवाल राजाका प्राणमय जान कर कहा कि— इसकी शानिके लिये हवनीय इन्यंको तो ऋण्युक्त किया है, लेकिन मेरी सात कर्न्या जाम है ! गृहिणीन उससे कहा—' इस राजाने सारी पृथ्योको तो ऋण्युक्त किया है, लेकिन मेरी सात कर्न्य जाम है ! शह प्रकार वास की दिया । तो किर शान्तिकर्म करके उसे व्यसन ( संकट ) से मुक्त करने बन्या लाम है ! शह प्रकार वासकी यात सुन कर वह सभैया गर्भसे रिहत हुआ और उस सकरसे झुटकर और उस क्षांतिस्वम्यको बातको पुरुकर पिकाल कर राज्य करता रहा ।

#### -इस मकार यह विक्रमा दि स्यकी निर्गर्वताका प्रबन्ध है ॥ ६ ॥

[ इसके बाद एक दूसरी धतको एक भोविनसे राजाने पूछा कि—' क्लोर्स बाद क्यों लगी रहती है और में गादे क्यों हैं ! ' उसके कहा—

- [ व ] हे महारान, यह जो दक्षिण समुद्ररूपी दक्षिण नायककी वश्च, रेवाको प्रीतस्पिहेंनी, गो ा व री नामक प्रसिद्ध नदी, जिसका तट गोनिन्दके प्रिय गोकुळोंसे आकुळ हे, उसका जल, वर्षाकाल श्रीत जानेपर मी आपकी सेगके हाथियोंके दाँतरूपी मुसल्स प्रक्षीभित घ्लिके कारण, स्वच्छ नहीं हुआ।
- [ १ ] उस राजाओंके राजाने घोतिनकी वह बात सुन कर मूझेए मात्रमें अपने शरीरके आमूपणोंके साप एक छाख [ का दान ] दे दिया |
- [ ५ ] राजा विकसादित्य ने चोर, मागध ( भाट ), ब्राह्मण और धोबिनसे करिता सुन कर [ रातके ] चारों पहर दान दिया । ]
- इस प्रकार यहापर क्रिक्सके सबंधके [ और सी ] विविध प्रबंध, परएश द्वारा जानलेने चाहिए ।

र इस पतिके छेलते से सद्धानाही यह साचित करना चाहते हैं कि विक्रमके विषयके तैसे ये प्रकार इसने नहा िल्हें हैं, बैंगे और भी अनेक प्रकार हैं, जिनका शान अन्यान्य प्रायों प्रकारों द्वारा आहा करना चाहिए। इसने तो यहा गर कुछ दिन्दर्यन करानेके लिये ही ये मोहोसे प्रकार लिला दिने हैं।

१२) एक बार, आयुक्ते अन्तमें निकामादित्य का शरीर कुछ कमजोर हुआ तो एक वैद्यने उपदेश दिया कि, कौनेका मास खानेसे रोगकी शान्ति होगी । जब राजा उसे पकनाने छगा तो इससे वैद्यने राजाका प्रकृति-व्यत्यय देखकर कहा-इस समय धर्मीषघ ही बळ्यान है । क्यों कि प्रकृतिकी विकृति होनेसे उत्पात होता है। जीवनके छोभसे छोकोत्तर सत्त्र-प्रकृतिका त्याग करके काकमास खाकर आप किसी तरह भी न जियेंगे । वैद्यके ऐसा कहनेपर उसको 'परमार्थबान्धव' कह कर राजाने उसकी प्रशसा की और पारितोपिक देनेके लिये कहा । क्तिर और द्वायी, घोड़ा, कोश इत्यादि सर्वस्व याचकोंको देकर, राजपुरुषों और नागरिकोंसे विदा लेकर, धवल गृहके किसी निर्जन प्रान्तमें तत्कालीचित दान और देव पूजन करके कुशासनपर बैठ गया और सोच ही रहा था कि ब्रह्मद्वारसे प्राणें(को निकाल दू, अकस्मात् आनिर्भृत अप्सराओंक समूहको देखा । राजाने हाथ जोडकर प्रणाम करके उनसे पूछा कि-'तुम छोग कौन है '' इस पर अप्सराओंने कहा कि-विस्तारके साथ कुछ कहनेका यह अवसर नहीं है. हम तो बिदा छेनेके छिये ही यहा आई हैं। इस प्रकार कहकर जाती हुई अप्सराओं से राजाने फिर कहा- निवान ब्रह्माने आप लोगोंको एक अदितीय रूप दे कर बनाया है। फिर भी जानना चाहता ह कि. यह अदितीय रूप नासिकाहीन क्यों है <sup>2 3</sup> इस पर वे ताली बजाकर हँसती हुई बोर्छा—'अपने ही अपराधको हमारे ऊपर दाल रहे हो 27 ऐसा कह कर वे खप हो गई। तब राजाने फहा-आप छोग तो स्वर्ग छोकमें रहती हैं। आपके ऊपर मेरे अपराधकी सम्भावना कैसे हो सकती है <sup>ह</sup> इस तरह राजाका यचन समाप्त होनेपर उनमें की मुख्य सुमुखीने कहा- हे राजन्, पूर्वतन पुण्यके प्रभावक्षे नव निधियोंने तस्हारे महलमें अपतार प्रहण किया था. हम लोग उन्होंकी अधिवासी देवतायें हैं 1 जापने जन्मसे महादान देते हुए भी एक ही निधिमेंसे इतना ही मात्र दिया है कि जिससे आप नासाप्र देख नहीं सकते । ' इस प्रकारका उनका कथन सुनकर हाथसे सिर ठोकते हुए राजाने कहा कि-' यदि मैं जानता कि नव निधिया अवतीर्ण हुई हैं तो उन्हें नो ही पुरुपोंको दे देता । दैवने अज्ञान मावसे मुझे बाबित किया । ' उसके ऐसा कहते समय उन्होंने यह कह कर आश्वासित किया, कि-किल्यमें वो आप ही एकमात्र उदार हैं। भीर यह परलोक माप्त हुआ । उसी दिनसे उस विकमादित्यका सक्सर प्रश्च हुआ जो आज भी जगतमें वर्तमान है ।

॥ श्रीविक्रमादित्यके दान विषयक ये विविध प्रबंध पूरे हुए ॥

### २. सातवाहन राजाका प्रवन्ध I

१३) दान और विद्वांके विषयमें श्री सात वाह न की कथा परण्यामत ययाश्रितिक अनुसार जानना चाहिये। ' उसके पूर्व जनमकी कथा इस प्रकार है—प्रतिश न पुर्र में सात वाह न राजा जब राजपाटिका (बिहर्ममण) करने जा रहा था तो नगरके निकट नर्मि एक मछलांको हँसते देखा, जिसे लहरोंने पानीके किनारे फेंक दिया था। इस अस्तामानिक बातको देखकर राजाको मय हुआ। उसने सभी पंडितींसे इस सम्देहको पूछते हुए एक ज्ञान सागर नायक जैन सुनिसे भी पूछा। अपने अतिशय ज्ञानके बछसे उसने राजाके पूर्वजनको जानकर इस प्रकार उपदेश दिया कि—' पिछले जन्ममें तुम इसी नगरमें रहते थे। तुम्हारे कुल-वंदामें कोई नहीं था। और तुम्हारी जीवनहींच एकतात्र लक्षात्र बोह्म दोना या। तुन तिथ हो मोजनके अवसर पर इसी नदींच निकटवर्सा शिलानव्य वेलका एतनीसे सन् सानकर खाया करते थे। किसी दिन, 'एक महीनके उपवासकी पारणाके लिये नगरमें जात हुए एक जैन मुनिको छुलाकर वह सन्तुका विंद उनको दानकर दिया। उस पात्रवाक्त काहाल्यसे तुम तात्रवाह न नगक राजा हुए और वह मुनि देवता हुआ! बढ़ी देवता अपने अधिग्रन बच होकर, उस काश्रमायाही खीवकी तुसे इस राजाकै रुपमें एहचानकर, प्रमोदके कारण ईस पदा। ' इस कथागत क्रमुका छंग्र छंग्र स्वक काश्रमायाही खीवकी तुसे इस राजाकै रूपमें एहचानकर, प्रमोदके कारण ईस पदा। ' इस कथागत क्रमुका छंग्र छंग्र संस्वक यह [ पुरातन ] काल्य है—

९. मछडीक मुँहके हँसनेपर जो सात बाहन राजा मयमीत होगया था उससे मुनिने कहा कि जिसने सन्ति मुनिको पूर्व जनमें जो पारणा कराया या यही आप हैं और दैवाद मछडीने आपकी पहचान जिया हरिष्ठिय वह हँस रही।

वह सात वाह न उस पूर्व जनमके बुचान्तको जातिस्त्रुतिसे प्रत्यक्ष करके उस दिनसे दान-र्मको भाराधना करता हुआ सब महाकवियों और विदानोंका संग्रह करता रहा । उसने चार करोड़ सुवर्णसे चार गायाओंको खरीदा और सात सी गायाओंवाला 'सातवाहन 'नामक संग्रह गाया कोश शास्त्र निर्माण कराया । इस प्रकार यह नाना सट्गुणोंका निधि बनकर चिरकाल तक राज्य करता रहा । वे चारों गायायें ये हैं । जैसे—

१० 'हार, ' "वेणोर्दंड, ' 'खर्बोर्गालि ' और 'ताल ' इन ४' बस्तुओंका वर्णन करनेवाली ४ गायार्थे सालाहन राजाने दसकीढि [सुवर्ण ] दे कर प्रदृण की ॥ १ ॥

दे निक्रमकी स्वर् छा त वा इ न राजाकी भी बहुतशी क्यांवें पंत्यांचे चली जाती हैं। विक्र स च रित के समान सात बा इन चरित की बता हुआ है। संस्तृतके कथानस्तियागर नामक प्रशिद्ध अपमें खा त वा इन भी बहुतशी क्यांवें पूपी हुई हैं। वे इव बचाये मेल्ट्राव्यिक प्रमान कहता प्रचारित भी बीर लोक-प्रशिद भी इंडिंग उन्होंने उन कथा शोको एक प्रमान सक्तित नहीं किया। निक्र म के बार खा त वा इन प्रशिद्ध ऐतिहासिक द्यानगील याता हो गया और उसने भी विद्वानोंको स्वयं पर दान किया, इसरिये किन उसने क्यांवें के स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं प्रमान की स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं प्रमान की स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं प्रमान की स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं मेल्ट्रायांकी स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं में मेल्ट्रायांकी स्वयं माल्ट्रायांकी स्वयं मेल्ट्रायांकी स्वयं मेल्ट्रायांकी

[ हारका वर्णन करनेवाली गायाका अर्थ इस प्रकार है-]

११. ख्व पुष्ट और ऊंचे ऊठे हुए स्तानेंबाओ खोंके वश्वस्थलपर रहा हुआ [मोतीयोंका] हार स्थिर होकर रहनेकी ठीक जगह न मिल्नेसे छातीपर उद्विग्न अथवा उन्मुख होकर इथर उधर किरता रहता है—जैसे यमुना नदीके प्रवाहमें पानीके फेनके बुद्बुदे इथर उधर फिरते रहते हैं।

[ 'बेणीदण्ड 'का वर्णन करनेवाली गायाका अर्थ इस पकार है-]

१२. हे सुन्दरि, तेरा यह कृष्णकांति वेणीदण्ड नितम्ब-विम्वपर जो शोम रहा है वह मानों ऐसा लगता है कि सुरतस्थानरूप महानिधिकी रक्षा करनेवाला कोई सुनंग है।

[ 'खट्टबोदगाछि'के वर्णनवास्त्री गाथाका अर्थ इस मकार है—]

२३. सुत्त-संभोगके समय जो संतोपदायक झंदर झुखानुभव हुआ, उसका विरह होनेसे, है प्रिय सिखि । यह खाट जूं जूं ऐसा शब्द कर रही है ।

[ 'ताल' का वर्णन करनेवाली गाथाका अर्थ इस प्रकार है-

१८. हे शुक्त । तुं इसे चांचके छगाने-ही-से गिर जानेवाला पका हुआ, आवफ्तल मत समझ । यह ती जरह हो जानेसे वेस्वादवाला और उमहा हुआ तालफल है ।

[ दूतरा गाया-पंकक है उसमें 'कदली इस्त ', 'किन्य गिरी', 'रनेहाचार' और 'चन्दन इस्त 'हन ४ बस्तुर्जीका अन्योक्तियर वर्णन है। इसकी आलियी १० चीं गायामें कहा गया है कि सालीवाइन राजाने ये गायामें ९ कोडि (प्रायतरमें ४ कोडि) रेकर प्रहण की। इनकी अर्थ क्रमशः इस प्रकार है-]

१५. जो पुरुष, केलके झाडके समान, दूसरोंको फल देते हुए अपना विनाशका मी विचार नहीं

करते, उनके सामने मरना भी वाछनीय है ।

- १६. जिस तरह विन्याचल पर्वत सदा सरस ( हरे भरे ) वृक्षोंको धारण करता है वैसे ही शुक्क-( तिक्रम्मे ) कृकोंको भी धारण करता है । उसी तरह बड़े पुरुष अपने उत्संगवर्ती—समीपवर्ती निर्पु-णोंका भी त्याग नहीं करते ।
- . १७. वे मुज्हार किटोंने तृपित होकर प्रथम ही प्रथम जो स्नेहाचार(जलघारा)का जैसे तैसे करके पान किया है वे फिर आजन्म अन्य पानकी इच्छा नहीं करते।
  - २८. हाष्क्र हो जानेपर भी जिस चन्दमके बुक्षका, सब जनोंको आनन्द देनेवाळा ऐसा सुरिभ गन्ध है बह जब सरस भाववाळा ( हरा फूळा ) होगा तब तो किर कैसा ही होगा ।

र यह ' मुज्जार ' क्या करत है इसका अर्थ हमें राष्ट्र नहीं हुआ। यह शब्द भी शुद्ध है या नहीं इसकी हमें शंका है। कोश कीराह अंगोंने यह शब्द हमें नहीं मिळा।

### ३. शीलवतके विषयमें भूयराजका प्रवंध ।

१४) यह प्रबंध इस प्रकार है-का न्य कु न्ज देशमें, जी छत्तीस लाख माँगोंका प्रमणा है, ' क ल्या ण कटक नामक राजधानीमें मूच राज नामक राजा राज्य कर रहा था। किसी दिन धमात काल्में जब कि वह राजपादिका करनेके लिये जा रहा था, उस समय खिड़की पर वेठी हुई किसी मूग-नयनीकी देखता हुआ त्मका अण्डरण करनेके लिये अपने पानीयके अधिकारी प्ररूपको आदेश किया । उसने उसे राज-मवनमें लाकर किमी मेकेत स्थलपर रखकर राजाको निवेदन किया । वहां आकर राजाने उसका हाथ एकडकर खींचना चाहा सो इसपर वह राजारे बोटी- व्यापित . आप तो सर्व देवता है अपनार हैं: अफसोस कि आपका इस मीच नारी में क्यों अभिजाय है ! ' उसके इस बाक्यसे राजाकी कामाप्ति कुछ शान्त हुई, और वह बोजा कि-' तम कीन हो !' समके यह कहनेपर कि 'में आपकी दासी हूं '-राजाने कहा कि 'यह बात क्या ठीक कह रही हो !' तो उसने वताया कि 'आपका दास जो पानीयका अधिकारी है, मैं उसकी जी, और आपकी दासानदासी हं ! ' उसकी बातसे राजा चिकत हुआ और उसकी कामपीडा सर्वया विलीन हो गयी। उसकी अपनी पूर्वा मानकर उसे विदा किया । उस ( सी ) के शरीरमें हमारे हाथ उमे हैं, यह सोचकर उनके निग्रह ( नष्ट करने ) की इच्छासे रातको यह ज्ञान्ति जन्माकर कि खिड़काँके रास्ते कोई प्रवेश कर रहा है, अपने ही पहरेदारोंसे अपने दोनों ही हाथ कटवा डाउँ । सेवेरे पहरेदारोंको मंत्रीलोग दण्ड देने छगे तो उन्हें रोककर मालव मण्डल में महाकाल देवके प्रासाद ( मन्दिर ) में जाकर उनकी आराधना करता रहा । देवताके आदेशसे जब दोनों सुजायें छग गई तो अपने अन्तः पुरके साथ सारा माळवदेश उसी देवको समर्पण कर दिया और परमार [जातिके] राजपूरोंको उसकी रक्षाके अधिकारी नियुक्त करके स्वयं तापसी दीक्षा बहुण की ।

-इस मकार बीखबत विषयक यह भूपराजका भवन्य है ॥ ९ ॥

### ४. वनराजादि प्रवन्ध ।

१५) उसी कान्य कुन्ज देशके [ अधिकारमें ] गुर्ज र घरित्री (गुजरात) भी एक प्रातंरूप है । उस गुजरात के बढ़ी या र नामक देशके पश्चा रा र प्राममें चा पोल्कट वशमें जन्म टेनेवाले एक वालकको उसकी माता होलों र एकर और उसे 'वण' नामक दक्षमें लटकाकर लक्की चुन रही थी। कार्यनश वहा आये हुये श्री शी ल्या गुण सूरि नामक जैनाचार्यने यह देखकर कि, अपराहमें (दोपहरके वाद) भी उस वृक्षको छाया नहीं हुक रही है, सोचा कि इस होलीगाले वालकके पुण्यका हैं। यह प्रमान है; और इस आशासे कि [मिन्यमें] यह जैन धर्मका प्रमानक पुरुप होगा, उसकी भाताकी इचिका जित्रत प्रवत्म करवाकर उस वालकको उससे अपने अथीन ले लिया। वी र मती गिंग नी नामक एक आर्या वालकका पालन करने लगी। गुरुने उसका नाम व न राज रखा। जब यह आठ वर्षका हुआ तो गुरुने देवपूजाके हच्योंकी नष्ट करनेगले चूहोंसे उस हज्यती रक्षा करनेक काममें उसे नियुक्त किया। वह तो उन्हें वाणोंसे मारने लगा! गुरुके निपेष करने पर उसने कहा कि—' ये चूहे तो चीय उपाय यानि दण्यसे ही साय्य हैं।' उसके जातक (जनम्बुण्डल)) में राजयोग देखकर और यह निर्णय करके कि यह महा हपति होनेवाल है, गुरुने उसे कि पत्त वालको सांप तिया। यह माताके साथ किसी पहीं (गाँउ) में रहने लगा। वहा उसका माना रहता या जो बहैती करता सा, उसका वह आदरपात वन गया और उसके साथ गाँनों और नगरोंमें, अपने पौरुपका आतक वतलता हुआ, चारों और लुट-पाट करने लगा।

१६) एकचार का कर नामके गाँवमें किसी व्यवहारीके घरमें सेंध मारा और धन चुराते समय उसका हाथ दहीके माण्डमें पढ़ गया। तब यह सीचकर कि मेंने इस घरमें खाया है, सन कुछ गई। छोड़कर निकल गया। दूसरे दिन उस व्यवहारीकी वहन श्रीदेवी ने, रातकी ग्राक्एसे, उसे भाईके समान स्नेह बतला-कर अपने यहाँ युज्या और पूछा—' मेरे घरमें प्रनेश करके तुमने सन्न सार प्रहण करके भी इस तरह क्यों स्रोह दिया!' उसने कहा—

२०. कोए करनेका निमित्त मिल्ने पर भी उस मनुष्यंके प्रति कैसे पापिवचार किया जाय जिसके घरमें उत्पन्नदर्भ (कमल्पर) के समान सकुमार हाथको योला≉ बनाया हो ।

उस सीने भी उसकी बात सुनकर और उसके चरित्रसे चमल्कत होकर भोजन और यक आदिसे उसका उपकार किया। यन राजने उसके बदछेमें प्रतिका की कि—भेरे पृश्वभिषेकके समय सुन्ही बहन होकर टोका देना।

१७) इसके बाद, एक दूसरे अम्सरपर जब वह इकैती करने जा रहा था उस समय [ उसके साथी ] चोरोंने किसी एक जंगडमें जा म्वा नामक बनियेको जा घरा ! वे चोर जो तीन ये उनको देखकर विभियेक अपने पासके पाच वाणोंमेंसे दोको तोक हाड़े ! चोरोंके पूरुनेपर बोड़ा कि—तुम तो तीन ही जन हो, इसडिये उससे अधिक दो बाण व्यर्थ हैं । ऐसा कहकर उसने उनके बताए हुए एक चड़ते उसको अपने बाणसे बाँध दियावा । उसके इस उस्प्रेयोसे सन्तुष्ट होकर, वे उसे अपने साथ छे गये ! उसकी ऐसी पुद-विवासे चिकत होकर थ्री बन राजने यह आदेश देकर निदा किन पित होकर थ्री बन राजने यह आदेश देकर निदा किया कि—मेरे पदाभिषेकके समय तुम महामन्त्री होंगे !

- १८) बादमें का न्यकु म्ब देशसे एक पश्चकुळ (कर बस्टू करनेवाळा) गुजरात देश हा। कर उगाहने आया। यह गुजरात देश उस का न्यकु म्ब देशके राजाने अपनी 'महण का ' नामक कन्याको दहेजमें दे दिया था। इस पश्चकुळने उस थन राज नामक पुरुपको अपना सेक्टफ़्ट् (शक्षाधिकारी) काया । छ महीने तक देशसे कर बस्टू कर २६ ठाख पह्स्पक हम (चौदीके सिके !) और ४ हमार अच्छी नस्टके निवसान योहे टेकर जन बद पश्चकुळ अपने देशकी चळा तो यन राजाने सी राष्ट्र नामक घाटपर उसे भार हाला और पिर उस राजाके मणसे साळ मर तक किसी वनमें जाकर दिया रहा।
- १९) इसके बाद, अपने राज्याप्रियेकके िये राज्यानिका नगर बसानेकी इच्छासे एक अच्छी भूमि छोजने छात्रा। पीप छुछा सरीवरके किलारे, अण हिंछ नामका मारू या इ साख इ का छड़का जो सुखर्रक हैता था, उसने पूछा कि—'तुम पहापर क्या देख रहे हो हैं' उसके प्रधानोंके यह कहनेपर कि नगर समानेका योग्य अच्छी भूमि देखी जा रही हैं। वह बोछा कि—'यदि उस नगरको नेरे नामपर बसाओ तो मैं वैदी भूमि बताऊँ।' यह कहकर वह जाछि इक्षके पास गया और वहां जितनी भूमिमें खरगोशके हाण कुक्ता प्रास्तित होता रहता था जतनी भूमिको उसने बताया। उसी भूमिमें बनराजने अप हिछ पुर इस नामसे नया नगर बताया।

[ यहांपर, एक 12 नामक प्रतिमें भणाहिस्तुपरकी प्रशंसा बतलानेवाले निक्षलिखत पद्य लिखे हुए निल्ते हैं—] [ ६ ] जो ( नगर ) हारका अनुकरण करनेवाले प्राकार ( बाई ) से प्रकाशित हो रहा है, वह ऐसा कर पता है मानों सलसम् प्रचानार झोकर कलिस उसकी रक्षा कर रहा है ।

[ ७ ] निस नगरमें रादके आरंपमें चन्द्रशाला ( ऊप्ध तल ) में खेलती हुई सियोंके मुखकी शोमांसे आफाश ऐसा जान पहला है कि उसमें सैकड़ों चन्द्रमा उदय हुए हैं !

- [८-९] जिस नगरीके विजयो गुणके सामने छंका को शंका हो गई, व म्या कापने छगी, विदिशा कृत हो गई, का शोकी सम्याने नष्ट हो गई, निधि छा आदर क्षियिछ हो गया, त्रिपुरीकी शोमा विपरीत हो गई, मधुराकी आकृति सन्यर (सुस्त, प्रीकी) पद गई और घारा मी निराधार हो गई।
- [ १० ] जिस नगरफे बीजन और कीरवेश्यरके सैन्यमें हम कोई अन्तर नहीं देखते क्यों कि दोनों ही 'गामैय-कर्ण' (बी-पक्षमें सोना है कानमें जिनके; और सेना-पक्षमें मीप्य और कर्ण हैं जिनमें) हैं ।
- [११] निषक निर्म भी भीद शोभागां निर्माण के प्राप्त की पुल्क नहीं होता (आनंदित नहीं होती), लंका अति शंकानुत्य हो उठती है, उजि मिनी की भी कभी जीत नहीं होती, चन्या अति कायती रहती है, का नित्त पुरी कानितीभूमिता नहीं होती, अयो ध्या अतियोग्या हो जाती है, ऐसा यह अद्मुत पत्त न (अजिहिह्मुर) नगर है जिसमें लक्ष्मी सदा गांच करती रहती है। इस मगरकी जय हो।
- २०) श्री विक्रमा दित्य के संबद् ८०२ आठ ही दोमें-प्रशंतरमें, संबद् ८०२ के वैशाल सुद्री रूज, सीमारको-चस जाठि पृथके नीचे वहा मारी राजप्रासाद बनाकर राज्याभिषेक छक्के समय श्री वन राज ने का कर प्रमुद्री रहने उन्हें अर्थ प्रतिश्वात प्रसून श्री देवी को सुरुक्तर उसके हामसे तिरुक्त करवाया। उस समय उसके शतु प्रचास वर्षकी थी। बह जांवा नामक र्याष्ट्रक महार्थन वाया याया। यूबा सर प्राप्तसे श्रीशी छुत्रा सुर्दिको भिक्ते साथ के आकर पश्चक मृहमें अपने सिंहासनपर वैशया और इतकों ने यह होनेक कारण समक्र राज्य उन्हें समर्पण किया। उन निरुद्ध सुरिने उसका बार बार निष्य किया। कियु उसके

उनके प्रत्युपर्तारकी दृद्धिने उन्हींकी आज्ञासे श्री पार्श्वनायकी प्रतिमासे अल्कृत पश्चा सर नामक चैत्य वनवाया और उसमें देवकी आरायना करती हुई अपनी निजकी मूर्ति भी स्थापित की । धवल गृहमें कण्टेरतरी देवीका मी मन्दिर वनवाया ।

- २१. वन राज के समयसे ही गूर्जेरोंका यह राज्य जैन मंत्रों हास स्थापित हुआ है इसा∂ये इसका हेपी कभी भी आनंद प्राप्त नहीं कर सकता ।
- २१) संबद् ८०२ से टेकर ५९ वर्ष २ मास २१ दिन तक श्रीवन राजने राज्य किया। श्रीवॅन रांक की पूरी आयु १०९ वर्ष २ मास २१ दिन की थी।

संबद् ८६२ की आपाद सुदी तृतीयाको अधिनी नक्षत्र और सिंह छक्के बीतते समय श्री वन राजके पुत्र श्री योग राजका राज्यभिषेक हुआ ।

[ B.P. प्रतिमें म संवत् ८०२ से ठेकर ६० वर्ष तक श्री वनराजने राज्य किया। संवत् ८६२ वर्षमे श्री योगराजका राज्यभिषेक हुआ ( P. प्रतिमें श्री योगराजने राज्य अल्कृत किया )," इतना ही पाट है । ]

२२) उस राजा (योगराज) के तीन छड़के हुए । किसी समय क्षेत्र राज नामक कुमारने राजाको इस प्रकार स्वित किया कि एक अन्य देशीय राजाको प्रवहण (जहाज) ववंडरमें पड़कर तितर वितर हो गये हैं। ये अन्यान्य वंदरगाहोंसे हटकर श्री सो मे स्वर पण्य न में आ छगे हैं। उनमें १० हजार तेजस्वी घोड़े और १८ सी (१) हायी, तथा एक करोड किंमतग़ और और चीजे हैं। यह सब संपित हमारे देशसे होकर अपने देशको जायगी। यदि महाराजको आज्ञा हो तो उसे छे आया जाय। उसके ऐसी निज्ञमी करने पर राजाने वैसा करनेका निपंत्र किया।

उसने बाद जब वह सब स्वरंशनी अतिम सीमाने प्रान्तमें पहुँचा, तो इद्वानस्थाने सारण राजानी निकलताना विचार कर, तीनों दुमार अपनी सेना सजानर उसपर टूट पड़े, और अद्यात चौर इिसे, उसने पाससे सन दुन छीनकर अपने पिताने पास के आये। भीतर-ही-मीतर दुपित किन्तु उपरसे मीन धारण निये इए राजाने उनसे हुन नहीं कहा। वह सब हुज राजाने मेंटकर जन पूजा गया कि—के म राज हुमारने यह अच्छा किया ता युरा? तो राजा बोज्य—पदि कहूं नि अच्छा किया तो दूसरेने चल खटनेका पाप छगता है शिर पित कहूं नि अच्छा किया तो दूसरेने चल खटनेका पाप छगता है शिर पित कहूं नि अच्छा किया तो हुमारे प्रथम प्रश्न सन देश सहस होता है नि भीन ही रहम अच्छा है। किर और सुनों हुमारे प्रथम प्रसन्ते उत्तरों, दूसरेने धनने हरण करनेका जो मेंने नियेप निया या उसम कारण यह है कि—और और देशोंमें राजगण, अन्यान्य राजाओंनी जब अससा करते हैं, तन मू र्जर देश में चोरोंना राग्य है ऐसा कहकर वे नित्य उपहास किया करते हैं। जन हमारे स्थान पुरुप (मितिनिप) इन वातोंने सामाचार हमें देते हैं तो हमें सुनकर हु ख होता है और हमारे पूर्वनोंने कुछ इन तरहक्षी वातों की थी, इसनी हमें स्वानि होती है। पूर्वनोंना यह कछड़ यदि लोगोंने हस्यमें मूळ जाय तो, अन्य सन राजाओंनी पीनिन हम भी राज शान्द्रका सम्मान पारे। कियत चन छोमसे छन्य होनर तुम छोगोंने पूर्वनोंने सह सक्तको। माज-मूनकर किरसे ताजा बना दिया। इसने बाद राजाने शब्दामारमें अपना धार प्रश्न की हम स्वान होगोंने के जा दि आ तुम छोगोंनेसे जो बच्चान हों यह इस धनुप्यको चन्ना । ययात्रम सभी उठे पर जब की है न चन्ना सन तो राजाने बेटकी मीति उने चटा रिया; और कहा—

 राजाकी आज्ञाका भग करना, नीकरोंका बेतन काट टेना और वियोंकी अउग शाया देना-निता शक हो से हत्या करना यहणता है। इस प्रकार नीतिशाखके उपदेवातुसार, मेरी आजा भंग करके बिना शबके वय करनेनाछे तुम पुत्रीको में क्या दंड दूं ! इसके बाद राजाने आयुके १२० वें वर्षमें प्रायोपवेशन (अज जलका त्याग) कर चितामें प्रवेश किया। इस राजाने भद्यारिका श्री यो गी भारी का मन्दिर चनाया।

- २३) इस [योगराज नामक] राजाने ३५ वर्ष राज्य किया।
- सं० ८९७ से डेकर २५ वर्ष श्री क्षेत्र राजने राज्य किया।
- सं० ९२२ से ठेकर २९ वर्ष तक श्री भूय इने राज्य किया। इसने श्री पत्त न नगरमें भूय देख रका मन्दिर बनवाया।
- सं ० ९५१ से छेकर २५ वर्ष तक श्री वैरसिंह ने राज्य किया।
- सं ० ९७६ से छकर १५ वर्ष तक श्री रज्ञादित्य ने राज्य किया |
- सं० ९९१ से लेकर ७ वर्ष तक श्री सामन्त सिंह ने राज्य किया।

इस प्रकार चापै। कट बंश में सात राजा हुए । निक्रमादित्य संस्त् ९९८ वर्ष तक [इस वंशका राज्य रहा।

- [ A प्रति और उसके साथ प्रायः मिलती हुई D प्रतिमें यह राजारली निम्नलिखित रूपसे मिलती है । ]
- सै० \*८...(१) श्रापण सुदी ४ से १० वर्ष १ मास १ दिन श्रीयोगराज ने राज्य किया।
- स० ८....शापण सुदी ५ उत्तरापादा नक्षत्र और वनुत्र छम्नमें रस्ना दिख का राज्यामिपेक हुआ ।
- सं० ८...कार्तिक सरी ९ से छेकर ३ वर्ष ३ मास ४ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।
- सं ८....कार्तिक झदी ९ रिनारको भवा नक्षत्र और वपलममें स्रीवैर सिंह राज्यपर बैठा।
- सं ८ ..... ज्येष्ट सदी १० ज्ञक्त गरसे लेकर ११ वर्ष ७ मास २ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।
- सं०८....ज्येष्ट सदी १३ को इस्त नक्षत्र और सिंह ब्यूगों श्रीक्षेत्र राजदेवका राज्यामिपेक हआ।
- सं ९३....मार्डी सुदी १५ शीरमाको, इस शजाको राज्य करते, ३८ वर्ष ३ मधीना १० दिन व्यतीत हुए थे।
- सं० ९३५ वर्षमें आदिन सुदी १ सोमनारकी रीडिणी नक्षत्र और कुल्म छन्नमें श्रीचामुण्डराज देवका पद्मभिषेक हुआ ।
- सं॰ ९....माघ पदी ३ सोमनारसे छेतर १३ वर्ष ४ मास १७ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।
- स॰ ९३८ (!) माच यदी छ गगलवारको स्वाती नक्षत्र और सिंह छम्में श्री आ ग इ देव राज्यपर वैठा। इसने कर्कराप रीमें आ ग हे हुर और काम्द्र के हुर रीके मदिर बनवाये।
- सं० ९६५ पीप सुरी ९ सुधवारसे छेकर २६ वर्ष १ मास २० दिनतक इसने राज्य किया ।
- सं० ९....पीप झुदी १० गुरुनारको आर्झनक्षत्र और कुष्म ब्यूम म्यगद्देव राज्यपर बैठा। इस रामाने सुयम बेदन रका मंदिर और श्रीयचन में प्रकार बननाया।
- सं॰ ९....वर्षसे आवाह सदी १५ से टेकर २७ वर्ष ६ महिने ५ दिनतक इसने राज्य किया।
- इस प्रकार चापीक्कर वंदामें ८ पुरुष हुए। १९० वर्ष, २ मास, सात दिनतक इस वंदाके राजाओंने सम्य किया। ]

किन प्रतियोग यह पाठ मिलता है उनमें इन सकत खुनक अक्रीके निष्यमें नहीं गढराई है। कहीं कोई अक्रिक्त मिलता है और कहीं वाई। पाले मोर्स में अक्ष मात्र आदि दिये को हैं उनका इन अव्होंके साथ नोई मेल नहीं निल्हा। इगिन्द इनमें इन अव्होंके स्थान ग्रह्य है। अपेके म्यामें जो ऐतिहासिक विवेचन किया गया है उससे इन अव्होंके एक इन इन अव्होंके स्थान ग्रह्य है। अपेके म्यामें जो ऐतिहासिक विवेचन किया गया है उससे इन अव्होंके । निर्माण का प्रतिकृति का विवेचन किया गया है उससे इन अव्होंके । निर्माण का प्रतिकृति का विवेचन किया गया है उससे इन अव्होंके । निर्माण का प्रतिकृति का प्रतिकृति

# चौलुक्यवंशका प्रारंभ।

२३. हापी (मातह होनेके कारण) सेवाजे योग्य नहीं रहे, पहाईकि पर गिर गये, कच्छप जब् ग्रीतिराटा है, शेपनागको दो जीमें हैं, इसिटेय प्रध्मीको कीन धारण करने योग्य है—इस सरह चिन्ता करनेराटे निधाताकी सायकाटीन सध्याके चुल्ट्से कोई तळगरधारी वह सुभट उत्पन्न हुआं [जिससे बीट्सचर्यशका प्रारम हुआं]

### ५. मूलराजका प्रबंध ।

१ यह पत्र चीतुस्य बराकी आय उरातिका सूचक है। किसी कोई शिल्लेखमेंस वह िया गया मादम देता है। इसके चुल्लेमेंसे इन बराका मूल पुरुष पैरा हुआ और इसी लिये इस बरावा नाम जीवृत्त्व हुआ, यह परिप्रेड माट लेगोंकी बराना है और इसका कोई पेनिसप्तिक महत्त्व नहीं है यह अगले भागते सार हो जायगा।

होशमें आकर करा देता था। तमीक्षे चापो करों का दान उपद्यक्ति रूपमें मशहूर हुआं। बह इस प्रकार बार बार चिद्राया जानेपर एक दिन उसने अपने नौकरोंको तैयार किया और जब मामाने बेहोशीमें राग्यासनपर विठाया तो उसे मारकर सच्युच ही वह राजा बन गया।

२५) स॰ ९९३ के आपाद सुदी १५ वृहस्पति बास्को, अभिनी नक्षत्र और सिंह टरमें, जन्मसे इक्रांसरें वर्षमें मूट राज का राज्याभिषेक हुआ।

- [BP आदर्शमें 'स॰ ९९८ में श्री मूळराजका राज्याभिषेक हुआ ' ऐसा पाठ मिळता है । ]
- २ ९२. रेशासमें तो सुना जाता है कि मूलाई ( यूल नक्षत्रका सूर्य ) सब प्रकारका करवाण करता है । लेकिन आधर्य है कि वर्तमानमें तो मूलराज ही ने ऐसा योग कर दिया है ।
- [ १२ ] \*उस रिमुने स्वप्नमें आकर कहा कि चापो कट वशके राजा है हम सूपितेके वशों वशो-जगल फत्या है । अगर तुमको वह दान की जाय ता नि शक भावसे उसके साथ विवाह कर देना क्यों कि वह मुगाक्षी अपने उदरमें सार्रमीय ( चक्रवर्ता) राजाको घारण करेगी ।
- [१२] श्री गुर्जर मण्डलमें उसकी दुक्षिते श्री राजिराजका पुत्र राजा श्री मूलराज पैदा हुआ। अपने अञ्चल महाप्रमारसे, जब वह दिग्विजयके लिथे उदाम करता पा तो उस समय केरल पूर्णी ही नहीं कींप उठती थी परतु उसके साथ उसके स्वाभी राजाओं के दिल भी कींप तठते थे।
  - [ श्रीसौराष्ट्र मण्डलमें श्री सा....सिंहके साथ गुद्ध हुआ यह प्रवध प्रसिद्ध है× 1]
  - [ १४ ] जिसने अपने शतुओंको और डिया ऐसे उस राजाको गूर्जरे वारोंको राज्यश्री, उसके गुणोंसे आयर्जित होकर बाणरिषु (जिया ) को उदमीको सरह, स्वय बरनेको आई।
  - [१५] उस महा इन्छात्राले राजाने क च्छ के राजा लक्ष को, शत्रुको बुधी तरह घायल करनेवाले अपने वाणोंका रुख्य वर्ताचा ।
  - [ १६ ] उस असामान्य पराक्रमीन ठाटेश्वरके दुर्वीरणीय सेनानायक वाण (र')पको मारकर शांटियोंको प्रहण किया था।

र गुरारावमें, उस जमानेमें शायद यह एक लाकोर्क प्रजलित थी कि—'यह वो जाउ है का बान है') किया हुआ दान मिलेगा या नहीं और निर्नेषद भी वह स्थिर रूपने रहेगा या नहीं—परेशा जिस दान पर विश्वास नहीं किया जाता उसे लाग चाउकोंका दान कहकर उसका दशहास किया करते था।

र मूलराज राज्य पर वर १०० है। इतका वृत्य अर्थ मूलराव गानि मूलजह यह निवाल गया। राज राज्य जदमाना मी वाजक है। वेगोलिए शाक्षव विधानात्त्वस सूर्य अब मूल नखरमें आगा है तब बद मूलाके वोग कहलता है। यह बोग खनेक तारहक दाम वस्यागांता करोताल गाना जाता है। लेकिन यह राजा तो मूलके नहीं है मूल्यान (स्मृत्यह) है, तो भी एपने जपने उदस्वनस्ये बेठे ही अर्थन कस्याणहारक योग कर बतलाए हैं, हसालिय यह लाख आसर्यत्री गात है।

११२ और १३ अक बाले वे होनों पत्र क्लिं। पुराती प्रचासिसेंसे उद्भुत किये यव साद्म देते हैं। पहले पर्यम यह काला गया है कि-धायद प्राप्त या अप किसी देवने मूलराज के लिग सामिश्र जना स्वस्त आनर यह कहा कि-सार्थ तरह कि स्वाप्त प्रमात के किया सामिश्र के लिये त्रसम कहा जाय तो उसे नि शक होकर महा देना। वसें कि उसकी सीलर्स देशा में उसका होता जो सर्वीम ग्रा बनेगा। यह पत्र देविसारिक दक्षिम महस्वत है। इस मिनी प्रमात के मिनी है इस बहा की पाय प्रमात के मानिक के किया के प्रमात के मानिक के सिलर्स के स्वाप्त के सामिश्र के मिनी प्रमात के मानिक के सिलर्स के सिल्स्य के सिलर्स के सिल्स्य के सिलर्स के सिल्स के सिलर्स के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स्य के सिल्स्य के सिल्स के सिल्स्य के सिल्स क

<sup>×</sup> यह पनिन, मूल प्रतिये अपूर्ण है। बाल दुई है। इसका रूट कम्बन क्या है को काल नहीं होता। सौराहुके किसी प्रमाक साथ मूल्याकके मुद्र सौनेका इसमें उद्देशत किया गया मानुस देता है। यह पहित दूसरी दूसरी प्रतियोग नहीं मिनती।

[ १७ ] जिसने दानसे दारियको नष्ट किया, शीर्थेस दुर्चनोंका दमन किया और कीर्तिसे रामचंद्रको मी म्टानकर दिया ऐसे उस राजाने चिरकाळ तक राज्यका उपमोग किया।

इत्यादि स्तुतियों द्वारा पढित लोगोंसे प्रशसित होता हुआ वह इस प्रकार साम्राज्य कर रहा था, तव किसी
अपसर्पर संपाद लक्ष देशका राजा, मूल राज पर चहाई करनेके लिये गूर्ज रदेश की सीमापर आया । दूसरी
ओर, वसी समय तिल्या देश के राजाका वार प नामक सेनापित भी चढ़ आया । इन रोगोंमेंसे किसी एकके
साथ जब युद्ध शुरू होगा, तब दूसरी ओरसे दूसरा शु आक्रमण कर बैटेगा; ऐसी परिस्थितिमें क्या करना
चाहिए इसका विचार मूल राज अपने मित्रपोंके साथ करने लगा, तो उन्होंने कहा कि दुन्ध समय कन्या दुर्ग में
कैठकर व्यतीत कर देना अच्छा है; और जब नगरात्र आनेपर संपाद लक्ष का राजा अपनी कुल्डेरीकी आराधनाके किये चला जाय, तब अनसर पाकर वार प नामक सेनापितको जीत लिया जाय । और इसके बाद
वापस आनेगले संपाद लक्ष के राजाका भी परानय किया जाय । उनके इस प्रकारके निचार सुनकर राजा
बीला कि ऐसा करनेपर क्या लेगोंमें मेरे भाग निकल्नेकी निंदा न होगी। । इसपर वे मंत्री बोले—

२५. [ प्रस्परके इन्द्र-युद्धें ] भेडा जो पीठे हटता है वह प्रहार करनेके लिये है, और सिंह भी आफ्रमण करते समय फ्रोधसे मनुचित होता है । हदयमें वैरमामको भर रखनेगाठे और गृढ यंत्र चलानेगले खुद्धिमान लोग किसी अप्रणणनाकी परना न करके [ सब बुळ ] सह लेते हैं ।

इस प्रकार उनकी बात सुनकर मूळराजने कन्यादुर्गमें जाकर आश्रय छिया। इपर सपाद छक्ष के राजाने गुर्ज र देशमें ही सारा वर्षाकाल विताया और जब नगरायके दिन आए तो उस रणमूमिमें ही शा करम री नगरकी स्थापना कर गोतदेत्री भी वहीं मँगा छी और वहीं नजरात्रकी पूजाका समारम्भ किया । मूछ राज ने यह हाल सनकर मित्रयोके बतलाए हुए उपायको निर्धक समझा । उसको तत्काल एक मीत सह आई । राजकीय भेट-सीगाइ भेजनेके बहाने उसने अपने सब आसपासके सामतोंको युख्या भेजा और फिर जाससी काम करनेनाले अधिकारियों के पासले सभी राजपूतों और सैनिकों को, वहा और चरित्रसे, पहचान कर उन्हें यथीचित दान आदिसे सम्मानित किया और समयका सकेत बताकर उन सबको संपाद छक्ष देशके राजाके शिविरके आसपास तैनात पर दिया । निश्चित दिनपर स्वयः अपनी प्रधान साँढनीपर बैठकर उसके पाछकके साथ बहुत सी भूमि पार करके, प्रात काल निसकी कोई कन्पना भी नहीं कर सके उस तरह, सपाद लक्ष स्पतिकी छात्रणीमें जा पहुँचा । सादनी परसे उतरकर हाथमें तल्यार छेनर मू छ राजने अने छे ही वहाँ पहुँचकर द्वारपाटसे कहा-इस समय राजा किस काममें होते हैं । जाकर अपने स्वामीको कहो कि मूळराज राजदारमें प्रनेश पर रहा है। यह कहता हुआ ( हारपाटने कुछ आनाकानी की तो ) अपने मुजदण्डके बटसे उसे द्वारपरसे हटा दिया । किर जब वह 'यह श्री मूळ राज द्वारमें प्रदेश कर रहे हैं '-इस प्रकार पुकार ही रहा था कि उतनेमें तो वह, उस रानाके तबके मीटर प्रवेश करके, राजाके पळग पर ही स्वय जा बैठा। यह देखकर क्षणभर तो वह राजा भयभीत होकर मीन ही रहा । किर कुछ भय दूर करके उसने पूछा कि-'क्या आप ही श्रीमू छ राज हैं।'। मू छ राज के मुँहसे 'हाँ' यह शब्द सुन कर जितने में यह कुछ समयोचित बोळना चाहता था, वतनेमें तो पूर्व संकेतित चार हजार सैनिकोंने उस राजाके बढे डेरे (तर्) को चारों ओरसे धेर छिया। इसके बाद मूछ राजने उस राजासे इस प्रकार कहा-इस भुमण्डलमें, ऐसा कोई युद्धवीर राजा, जो मेरे सामने लड़ाईमें टिक सके, है या नहीं-इसका में सोच किया करता था और कोई वैसा बीर निकल आवे उसके लिये में सैंग्रडों मिलते मनाता था। भाग्ययोगसे आप

उपस्थित हुए हैं । किन्तु मोजनके समय मनकी पढ़ जानके समान, इस ति छ ह दे राके तै छिप नामक राजाके सेनापतिको, जो मुद्रे जीतनेके छिप आया है, जब तक शिक्षा न दे छूं तब तक आप पीड़ेसे हमछा इत्यादि न करके काइपे, पढ़ी अनुरोध करने में आपके पास आया हूं । मूळ राजाने जब ऐसा कहा तो उस राजाने इस प्रकार कहा—राजा होकर भी अपने प्राणाँकी परवा न करके, सामान्य सैनिककी माँति अकेछे ही इस प्रकार शत्रुगहमें प्रवेश करके चछे आये इतिछये [ में तुम्हारे साहसारे मुख्य हूँ और ] जब तक जीऊंगा तब तक तुम्हारे साथ हमारी सिच्य बनी रहेगी । उस राजाने ऐसा कहने पर 'ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो रे इस प्रकार निवारण करता हुआ, उसले हारा मोजनार्थ नियंत्रिक होनेपर, अवश्वापूर्वक अश्वीकार करके, वह हाथमें सल्यार छेकर उठ च्या और उसी साहनीपर स्वार होकर, अपनी वस सेनारे परिवृत्त होकर उस वार परिवृत्त होकर उस वार परिवृत्त होकर उस वार परिवृत्त होकर जिस मारकर उसके इस हज़ार धोड़े और १८ सो हाथी छीन कर, जितनेमें पहाब बढ़ीकरी तैयारी कर रहा था, उतनेमें तो अपने गुत्रचरोंसे यह सब हाळ सुनकर वह सपाद छ सका राजा बढ़ीसे मान निकला।

२६) उस ्राजाने पत्त न में थी मूळराज यस हिका [ नामक जैन मन्दिर ] और थी मुझा छ दे व स्थानी ( शिन ) का प्रासाद बनवाया । वह प्रति सोमवारको शिनको मिकि करनेके निमित्त सो में बर पत्तन ( सोमनाय पाटन ) की यात्राको जाता था । उसकी इस प्रकारको मिकिसे सन्तुष्ट होकर सो मना य उपदेश देकर मण्ड हो न गंधों में आये । उस ग्राजाने वहाँ ' मूळे बर' नामका मन्दिर बनवाया । नमस्कार करनेको इच्छासे हिनित होकर होता नित्य आने गाले उस राजाको, उस प्रकारको मिकिसे सन्तुष्ट होकर, तो मना मने यह कहा कि —मैं समुद्रके साथ तुम्होर न गर्म अवतीर्ण हूँगा । यह कहकर सोमेबर अणा हिन्छ पर में अत्रीर्ण हुए। आये हुए समुद्रको स्वच्या निर्मे इस्टिये नगरके सभी जळाशर्यों का पानी खारा होगया । उस राजाने वहाँ पर त्रिपुरुष प्रासाद नामक शिवका मन्दिर वननाया ।

२७) इसके बाद, यह उस प्रासारक प्रबंधक होने योग्य किसी उचित तपस्तीको लोज करते हुए उसने एक कान्य दी नायक रापस्यीका नाम सुना, जो स रस्त ती नरीके कियारे, एकान्तर दिनको उपरास किया करता या और पारणाके दिन अनिर्दिध भिक्षाके पाँच प्रास्का आहार किया करता या | जब राजा उसकी बच्दना बरने गया, तो उस समय उसे तीन दिनका उनर था | उसने अपने जनरको कंपामें संक्रा मित कर दिया | राजाने उसे देखकर पूजा कि—यह कन्या ( गुदही ) काँच क्यों रही है ! | राजाके साथ बात करनेमें असमर्थ होनेके कारण मैंने जनरको उसमें संक्रामित किया है—ऐसा कहनेपर, राजा बोळा—यदि इतनी हारित है तो किर जनरको सर्था दूर क्यों नहीं कर देते ! राजाके यों कहनेपर उसने—

२६. पूर्वजन्मके सक्षित हमारे जो कोई भी रोग हों वे अब उपस्थित हों। मैं उनसे अन्नण होकर शिरके उस परम परको प्राप्त होना चाहता हूँ।

शियपुराणके इस वचनको कह कर बताया कि—'कर्म भोगे निना क्षय नहीं होते' यह जानते हुए मैं इसे कैसे दूर कर सकूँ !। राजने किर त्रिपुरुष घर्म स्थान कके प्रवधक होनेके छिये उससे प्रार्थना की ।

२०. अधिकार मिटनेते तीन महीनोमें, और मठका महत्त्व बननेसे तीन दिनोमें [नरक प्राप्त होता है]; और अगर तीत्र हो नरकपातिकी इच्छा हो तो एक दिन पुरोहित बन जाओ।

इस स्मृति-बास्यके तत्त्रको जानते हुए, तपरूपी नीकासे संसार सागरको पार करके में फिर इस गोय्य-दमें कैसे इक्ता चाहूं। इस बास्यसे निषद्ध होकर राजाने [और कोई उपाय न सोच कर ] ताप्र-शासनको मण्डक (परिंट) में विष्टित करके मिक्षाने छिये आये हुए उस तपस्थीने पर्युटमें छोड़ दिया। वह उसे म जानता हुआ छेनर वहाँसे छीट गया। यपि सर खती नदीने पहले तो उसे मार्ग दे दिया था, पर इस वार वह जानेसे जब उसे मार्ग नहीं भिठा, तो वह जन्मकालसे छेकर अपने दोयोंका निचार करने छमा। ताक्तालिक मिक्षा समर्था दोपको जाननेके छिये जन उसे देखता है, तो उसमें उस राजान दिया हुआ ताफ़-शासन माइम दिया। इससे तपस्थीको मुद्ध जानकर, राजा वहाँ आया और उसकी सान्यनाके छिये वह जब अनुनय निनय करने छमा, तो उसने वह कह कर कि—मेरी स्वय जो दाहिने हायसे दान प्रहण किया है वह अन्यया किसे हमा, अपने दिया ब वज छुदे व को राजा के से हम हमारी उपदार के से हम हमारी उस विकास करने छमा, तो उसने वह जह उस की सान्यनाके छिये हम का प्रविद्ध समक्षेत्र करने कार पछ उत्तम जातिका चंदन, चार एछ कस्पूरी, एक पण कपूर तथा वजीस वारामा-नाएँ, और जागीरके साय क्षेत्र हम प्रवास करने, तो मैं प्रवक्त पद स्थीकार करूँगा। राजाने सब देनेका स्थीकार कर, नियु इस ध में स्थान में उसे 'तपश्चियोंना राजा' के पद्मर अभिविक्त किया। वह 'कं कू छो छ' इस नामसे प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकारके भोगोंको भोगते हुए भी यह अनुन्धिण भारसे महत्वर्ष मत्तमें निरत रहा। एक बार रातको मू छ॥ जी राजा उसकी परीक्षा छेने छमी तो उसे पानका बीडा मार कर दुष्टिनी बना दिया और किर अनुनीत होकर उसे अपने जनवनके छेपसे और स्नानके भेळ जलते सनाव करवा,कर नीरोग किया।

### यहांपर लाखाकरी उत्पत्ति और विपत्तिका मबंध भी दिया जाता है-

२८) प्राचीन काल्में, किसी पर मार यशमें, राजा की ति राज देरकी का गल ता नामकी लड़की थी। यह बान्यकाल्में, सिखयोंके साथ, किसी महल्के आगनमें खेल रही थी। सिखयोंने कहा कि अपना अपना यर बरण करों। घीर अन्यकारमें उस का मल ता की ऑखोंका मार्ग वर हो जानेसे, उसने फूल ह नामक पद्यापका, जो उस महल्के एक खमेंकी ओटमें खड़ा हुआ या और जिसे यह कुछ भी हत्तान्त माइन नहीं था, यरण कर लिया। इसके अननत्तर, युज वर्षोंके बाद, जब किसी अच्छे वर्षोंकी खोज उसके लिये की जाने खा, तो पतिव्रतान्त्रके निर्मेहके विचारसे, उसने अपने माता पितासे अनुज लेकर उसी (पद्युपाल )ते निर्माह किया। उन दोनोंका पुत्र लाखा हुआ। वह कष्ण्य देश का राजा बना। यशो राज को उसने लिये की निर्माह किया। उन दोनोंका पुत्र लाखा कहुआ। वह कष्ण्य देश का राजा बना। यशो राज को उसने लिये का सम्माह वार मूल-राज की सेनाकी प्राप्तित किया था। एक बार, जब कि यह खाला, कि विज को टक्ते क्योर हा पर मूल-राज की सेनाकी प्राप्तित किया था। एक बार, जब कि यह लाखा, कि विच को टक्ते किये राज उसी समय, राजा (मूल्य जा) ने स्थय जाकर उसे हेर लिया। यह लक्ष (लाखा का अपने मार्ह च नामक एक परम साहसी झमटके आनेकी प्रतिक्षा करने लगा-जिसको कि उसने किया था। यह बात जानकर मूल राज ने उसके आगमनके जागमकी किया की किये किये उसने वैसा हो करके प्रत्य सम्वत करके आहे हुए उस मृत्यसे प्राप्तिन कहा 'हिप्यार रख दी 1'। अपने काशीक कार्यकी सिद्धिक लिये उसने वैसा हो करके प्रत्ये प्रत्ये प्रत्य खाक के पास आहर प्राप्त किया। विच स्वार्यक करिय स्वार के पर साम किया। इसने बार स्वार का किये पर समें विसाह के उसने विसाह करके प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रता लाखा के पास आहर प्राप्त किया। इसने बार सम्राप्ति अपन्त प्रत्ये प्रता हा बात का कर पर आहर प्राप्त किया।

२८. 'करी हुए सूपेने जो प्रताप नहीं बताया तो है व्याखा l वह दिन निकृष्ट कहा जाता है। गिनती करनेसे तो आठ कि इस टिन गिछ सकते हैं ।

१ इस वचनका मावार्य यह माञ्चम देता है कि सुर्वेका उदम होनेपर भी यदि जिल दिन उसका तेज नहीं दिखाई देता—अर्थात् इहाला छावा पहता है तो लोक उस दिनको निकृष्ट≔दुर्दिन मानते हैं। बीर पुरुष या वेजस्वी पुरुप उत्पन्न होकर भी यदि अपना कोई तेज नहीं बनलोंने तो उसका उत्पन्न होकर भी यदि अपना कोई तेज नहीं बनलोंने तो उसका उत्पन्न होता निर्मेक ही समझा जाता है।

२ इस दूसरे बचनका मार्वाध यह शत होता है कि-बीर पुरुषको समय प्राप्त होनेपर श्रीप्र ही अपना प्रयक्तम बतलानेके खिये उद्यत हो जाना चाहिए, l दिनोंकी गिनती करते पहनेसे तो कुछ छाम नहीं होता l

्र ह्यादि प्रकारके बहुतसे बीध-मान्य उस मृत्यके सुनकर और उसकी उत्कट धीरता देखकर अस्ता । सहस खूड बड़ा और उसने मृज्या ज के साथ बराबर तीन दिन तक इन्द्र-मुद्ध किया । मृज्या ज ने उसकी अजेयता देखकर चींचे दिन सो मेश्वरका स्मरण 'किया । रुदकी कठा जब उसके अन्दर अवतीण हुई, तो [ उसके ममानसे ] उसने जा खा को मार हाजा । बादमें छा खा की देह जब पृथ्वीपर निरी हुई एड़ी थी तब हवाके संचारसे उसकी हिज्यों हुई दाड़ीको मृज्या ज ने पैरसे छुआ । इसपर छक्ष की माताने कृति होकर यह शाप दिया कि तुम्हारा बंश खीत (कुछ ) रोगसे मरा करेगा ।

- २९. म् छराज मे अपने प्रतापाप्तिमुं छक्ष को होम करके उसकी खिर्योकी आँस्ऑकी धाराकी उन्सक किया ।
- ३०. सहता छवे जाछमें आये हुए छक्ष रूपी कच्छप (कहुआ और कच्छका राजा ) को मास्कर जिसने ,संप्रामरूपी सागरमें अपनी धी-चरताका परिचय दिया 🕂 ।
- , 2१. हे मूछ गुज ! दानरूपी छता, बिछ के समयमें पूछीमें पैदा हुई, द थी चिके समय उसकी जब जमी, राम के होनेपर उसमें अकुर उगे, कांगे के समय उसमें बाछ और टहनिया निकर्छों, मा मा र्जुन के समय कछियों प्रकट हुई, विक्र मा दित्य के समय कछी और तुम्हारे समयमें आमूछ फछनती हुई।
  - ३२. कुम्हारे राष्ट्रअभिके [सूचे] महरू, जो वर्षाकाल्यों, वादलीके पानीसे झान करते हैं, उनके जगर जो रूण लग आये हैं उसके बहाने मानों वे क्वा लिये हुए हैं, नालाके पानीसे मानों प्रादको अञ्चलि दे रहे हैं, और दीनालके ढोंकांके गिरनेके मिससे पिण्डदान करते हैं, इस प्रकार अपने स्वामीके मेतके लिये ये प्रतिदिन ब्राह्म कर रहे हैं।

-इस मकार लाला फुछोतकी उत्पत्ति और विपत्ति का यह मबंध है ॥ ११ ॥

२९) इस प्रकार उस राजांन पचपन वर्ष तक निष्यष्टक राज्य किया । एक बार सायकालकी कारसीके ' अनन्तर राजांने एक दासको इनाममें पानका बांडा दिया। उसने द्वायमें छेकर देखा तो उसमें कृमि दिखाई दिये। राजांके आमद पूर्वक पूछनेपर उसने यह बास कही। इससे राजांको वैराग्य आया और उसने सन्यास महण किया और दाहिने पैरके अंगुटेमें अग्नि प्रमालित कर, बाट दिनसक गन दान इन्सादि महादान देता यहां।

१६. एकमान विनय भावके बच्ची भूत होकर उसने पैसों छमा हुई उप्यूमकेश आप्रिको सहन किया। छन्य प्रतापियोंकी तो बात ही क्या है, उसने सुर्थके मण्डलको भी भेद दिया।

इस प्रकारकी स्तुतियोंसे स्तृत होते हुए उसने स्वर्गारोहण किया।

स॰ ९९८ से लेकर ५५ वर्ष श्री मूखराजने सन्य किया।

#### ॥ श्रीमूलराज प्रबंध समाप्त ॥

रे यह कोफ केपार्थवाण है-जय हो स के दो अर्थ होते हैं-रख-राला समाज होत, और रख-यक राख बार होता। आहारामें बादरांची मुक्ति। निषी अरापके जब रुकार हो जाता है तो उसके महितराखें किये एक लाल आहुतियों मारान होता वर्षान वेदिक द्यार्कोंने विधान है। इसर, भारताली स्वित्या, जो कभी बदन नहीं करती थी, उनके आदारूनी दृष्टिका सवाह चार, करनके लिए, मूरपार्कने अपने प्रवास्थ्यी अग्निमें राखाकों होता दिया-स्थान कर दिया।

<sup>+</sup> इस स्त्रेडमें ' इच्छान्छ ' और ' धीवस्ता ' ग्रन्ट पर न्हेर है । मूल्याने क्रन्डप=वन्छपति रुपतानको मास्तर धारनी धीवरताच्येत्र पुद्धिमताका परिचय दिया । दूतरा अर्थ वन्छपन्छ यानि एक छरा व्ह्यूप, और उस अर्थमें धीवरका अर्थ मन्त्रीमार ऐसा किया गया है ।

#### मृलराजके वंशज।

- [ १८ ] अपने सार शञ्जुजोंको समप्त करके जब वह—( मृ.ङ्गाज )—कयाशेप द्वोगया ( मृत्युंको प्राप्त हुआ ) तो उसके बाद पृथ्वीमण्डङका आमूपण ऐसा चा मुण्ड राज राजा हुआ ।
- [ १९ ] उसकी सेनाका साज, शतुओंकी क्षियोंके मनको संतह होनेकी विद्या सिखानेमें निपुण पण्डित या और उसके सैन्यने इन्द्रको भी मयमीत कर दिया था ।
- [२०] उसके हाथरुपा कॉर्यलं रहूँनेवाली, कोश (१ म्यान; २ कमळ)में विठास करनेसे चमकता हुई तळवार रूपा मौरोंकी श्रेणीन राजाओंके वंशोंको भिन्न कर दिया।
- ३०) संबद् १०५३ से छेकर १३ वर्षतक चामुण्ड राजने राज्य किया।
  - [ २१ ] जिसकी कीर्ति तानों छोकोंमें प्रकाशित हो रही है, और जो महीपतियों में श्रेष्ट माना जाता है ऐसा वक्ष मराज नामक उसका पुत्र राजा हुआ।
  - [२२] बह छ, पौरुपवाला राजा शतुओं को नगरियों को वेरे रहता या इसल्ये विशेषक्षोंने उसके। नाम 'जगत्-झम्पन 'रक्का था।
- ३१) सं० १०६६ से छेकर ६ महीने तक राजा व छ म राज ने राज्य किया।
  - [ २३ ] जिसमें रजोगुण और तमोगुणका जमार्च या और मिसके जैसा यश प्राप्त करना औरोंके छिय अर्थत दुर्छम था, ऐसा दुर्छ म राज नामका उसका छोटा माई [उसके बाद ] राजा हुआ।
  - [२२] सॉपकी मॉित, काल करवाल ( कठिन तलवार ) से सुरक्षित होकर उसका राज्य, निधानके समान, अन्यों ( शतुओं )का भोग न हो सका।
  - [२५] सीभाग्यसे प्रकाशमान उस राजाका कर (१ हाथ; और २ मालगुजारा ) सर्वथा अनुपमीत्य ऐसी परजी पर और मासर्णोको प्रदान की हुई भूमिपर, कमी नहीं पड़ा ।
- ३२) सं० १०६६ से लेकर ११ साल ६ महीने तक श्रीदुर्लम राजने राज्य किया। इस राजा दुर्लम ने पत्तन में 'दुर्लम सर 'नामक सरोवर बनवाया।
  - [२६] फिर, उसके माईका छड़का 'भांम ' नामक राजा हुआ विसकी प्रवृत्ति तांनों जगत्की अमीष्ट फछ देनेवाछी हुई।

[ यहाँ 🗛 आदर्शका अनुसरण करनेवाली मुद्रित पुस्तकर्मे, यह समय-सूचक पाट इस मकार है- 🕽

[ इसके बाद सं० १५० (१ १०५२) श्रायण हुदी ११ शुक्रचारको पुष्पं नक्षत्र और इप कक्ष्में श्रीचासुण्डराजका राज्यारोहण हुआ। इसने पचनमें चन्द्रनाय देव और चाचिणे सरके मन्दिरवनाये।

सं० ५५ (११०६५) आश्विन सुदी ५से ठेकर १३ वर्ष १ मास २४ दिन राज्य किया।

सं० १०५५ (११०६५) आधिन शुदी ६ संगळवार, ज्येष्टा नक्षत्र, मिथुन उप्नमें श्रीबञ्च ५ राजदेव गरी पर बैठा।

इस रागने जन माल ना देशकी धारान गरी के प्राकार (किल्को) घर रक्षा या उसी समय शीली, रोगोस इसकी गृत्यु हुई । इसके दो निरुद थे- 'राज मदन शंकर' (राजास्पी कामदेशके लिये दिन) और 'जगण्डास्पन'। सं० १० (११०६६) चैत्र सुदी ५ से लेकर ५ महीने २९ दिन सक इक्ष राजाने राज्य किया। सं० १५५ (१०६६) चैत्र सुदी ६ गुरुवारको, उत्तरापादा नक्षत्र और मकर छप्नमें, दुर्छ भरा ज नामक उसका भाई राज्यपर अभिपिक हुआ । इसने पत्त नमें व्ययकरण (कचहरी), हस्तिराज्य और घटी-गृह युक्त सात तल्लेगाला घवळगृह (राजप्रासाद) बनवाया । अपने भाई वल्लभरा ज के कल्याणार्थ मदनशङ्कर प्रासाद बनवाया और दुर्छ भूसर नामक सरोजर भी बनवाया । इस तरह बारह वर्ष इसने राज्य किया।

३३) इसके बाद [AD प्रतिके अनुसार 'सं० १०५ (१०७८) ज्येष्ठ सुदी १२ मंगच्यारको अस्तिनी नक्षत्र, मकर लक्ष्में '] श्री भी म मामक अपने पुत्रका राज्याभिषेक करके स्वयं तीर्भोपासनाको यास-मासे नाणा र सी के प्रति प्रश्यान किया । मा छ य क म ण्ड छ में पहुँचनेषर बहाके महाराजा सु छ ने रेकि कर इत प्रकार कहा कि—' छत्रचामरादि राज-चिन्होंका परित्याग करके कापेटिक (संन्यासी) की मीति आगे जाओ, नहीं तो सुद्ध करी '। बीच ही में उपका ऐसा इसे चार्मिक निन्न समझकर, यह चुक्तान्त मीम राज को कहळाणा और स्तर्य कापेटिकका येश पहन कर तीर्थयात्रा औ: और बहाँगर परलोक सायन किया ।

३१) इसीके बाद मालवाके राजाओंके साथ गूज रात के राजाओंका रहमूल ऐसा विरोधका बंधन कंध गया।

## - ६. मुञ्जराज प्रवन्ध ।

३५) अब यहांवर प्रसिद्ध आया हुआ, माळवा मण्डळ के मण्डनस्थ श्री सुझरा ज का चिरित्र वर्णन किया जाता है — प्राचीन कालमें, उस मण्डलका पर मार वं श्री राजा, जिसका नाम श्री सिंह मट था, राजपाटी निमित्त परिक्षमण करते हुए, उसने सुंजके ननमें एक सप्यःजात अति रूपमान् नालकको देखा और स्वकाय पुत्रके समान बात्सस्य मान घारण करके उसे उठा लिया और महल्में बातर रानीको समर्थण किया। सुंजके बनमें प्राप्त होनेके कारण उसका नाम सुझ रक्षां। बादमें उसके एक सीन्य ल नामक ओरस पुत्र मी पैदा हुआ। [ एक समय ] निःशेष राजगुणोंके समृहसे भूषित ऐसे उस मुझका राज्याभिषेक करनेको इच्छासे राजा उसके महल्में गया। मुझ अपनी कीको, जो उस समय वहां उपस्थित थी, किसी एक वेत्रासनकी कोटमें विदाकर, प्रणाम पूर्वक राजाकी सेवा करने लगा। राजाने उस प्रदेशको निर्जन देखकर प्रारंगसे लेकर उसके जन्म आदिका हत्तान्त कह सुनाथा और फिर कहा कि—सुन्हारी मिलने सन्तुष्ट होकर अपने ओरस पुत्रको छोड़कर, तुग्हें राज्य दे रहा हूँ, पर इस सीन्य ल नामक माईके साथ पूरे प्रेमके व्यवहारके साथ वर्तना। इस प्रकारकी आद्वासे उसके अपने उसके राजाने उसका अमिपेक किया। कहीं, अपने जन्मका यह गुन्न वाहर न फैल जाय इस आदिकासे उसने अपने जनका सार सार जसे के अपने जाक सिंप और समस्त निद्धलाों के कक्षारों जैसे इदा दिग्य नामक पंडितको महामंत्री वनाकर अपने राज्यकी किया और समस्त निद्धलानोंके चक्रवारों जैसे इदा दिग्य नामक पंडितको महामंत्री बनाकर अपने राज्यकी विन्ताका समस्त भार उसे सीणा। उस सीन्य ल नामक माईको, जिसने अपने उरस्ट स्वायक्षेत कारण राजाका कर आज्ञानी तिया था, खोरहोते निर्मीसित कर, विष्पालक किया निर्माक राज्य सरता रहा।

३६) यह सीन्य छ गुजरात देश में आकर, अर्थेद पर्यतकी तल्डटांगें का शहद नगरके निकट अपना एक छोटा सा गाँउ वसा कर रहने लगा। दीवार्शकी सतको शिकार खेलने निकला। चोरोंको वध करमेशाटी भूमिके निकट एक सूअरको चारते 'देख, उसने सूटीपरसे गिरे इए एक चोरके शबको न देख कर, उसे घुटनोंसे द्वा कर, जब वह अपना बाण चटाने टगा, तो उस शबने [ मारनेका ] संकेत किया । वसे हाय लगा कर मना करते हुए, वस बाणसे सुअरको मार गिराया। बादमें जब सुअरको अपनी और खींचने छगा तो यह दात्र जोरोंका अइहास करके वठ खड़ा हुआ । इस पर सीन्धु छने कहा-तुम्हारे किये हुए संकेतके समय सुअरपर प्रहार करना उचित था. या समझ बहाकर जो मैंने प्रहार किया वह ठीक था ? वसके इस वाक्यके पूरा होनेपर, वह छिदान्वेपी प्रेत, उसके ऐसे निःसीम साहससे सन्तुष्ट होकर बोजा कि 'बरदान माँगो ।' ऐसा फहनेपर-' मेरे वाण जमीनपर न गिरें ' ऐसा माँगा; उस शबने कहा ' और मी कुछ माँगो।'इसपर उसने फहा कि-'भेरी सुजाओंमें सारी छक्षी स्वाधीन हो।' उसके साइससे चिकित हो कर उस प्रेतने कहा कि-तुम मा छ व म ण्ड क में जाओ। वहाँ मु ख राजाका विनाश निकट है, इस्टिये तुम वहीं जाकर रहो। तुम्हारे ही वंदामें यहाँ राज्य रहेगा । इस प्रकार उसके कथनानसार वह वहाँ गया और मश्च राजाने कोई एक संपत्त शाडी प्रदेश प्राप कर, कुछ काछ बाद, किर उसी प्रकार उद्धत भावसे वर्तने छगा । एक बार एक तेडीसे कुश माँगी । उसने नहीं दी । इसपर लुपित होकर, बलाकार पूर्वक लीन कर, और उसे मरोड कर उसके गरेमें डाल दी । तेलीने राजाके आगे पुकार की । राजाने समझा बुझाकर उसे सीची करवाई । उसके ऐसे उस्कट बटसे राजा मुख भयमीत हो। गया । इसके बाद, मालिस करनेमें बढ़े कुराल ऐसे कुछ कलावन्त विदेशमें वहाँपर आये । वे राजांसे मिछे ! राजा जनसे अपने दारीरमें मालिदा कराने लगा । वे मो अपनी कलासे हाथ पैर आदि अंग

उतार कर फिरसे थेसे चढा देते थे। इस प्रकार दो तीन बार करायां। प्रसन्न होकर राजा सीन्य छ का भी इसी प्रकारका प्रदेन करवाने छगा। उसके अंगोंके उतार छेनेपर जब बह निश्चेष्ट हो गया तो आंखें निकछवा छी। [वर्षों कि ] सुसजित अनस्थामें तो उसकी आँख निकछनेंमें कौन समर्थ हो सकता था!। अतः इस प्रकार मुझने उसकी आँखें निकछना छी और फिर उसे काठके पींजरेंमें बंद करा दिया। उसके भी ज नामक पुत्रका जन्म हुआ। उस पुत्रकें सभी शालोंका खुन अन्यास किया। छत्तीस प्रकारके आयुर्धोंका आकछन कर, बहत्तर कछाल्यों समुद्रका प्रारामी बना। इस तरह सभी छन्नणींसे युक्त होकर बह बढा होने छमा। उसके जन्म समय किसी निभिन्छ ज्योतियोंने जन्म पुण्डणी वना कर दी [जिसमें छिखा था कि—]

इ.थ. प्रचपन वर्ष, सात मास, तीन दिनतम भी ज रा जा गीड़ देशके साथ दक्षिणाययका भोका होगा ! इस क्षेत्रके अर्थको जब मुझ रा ज ने समझा, ती सीचा कि इसके रहनेपर भेरे छड़केको राज्य नहीं होगा; इस आर्शकासे उसने भी जको, अध करनेके छिये अन्य जॉके झुपुरे किया ! उन्होंने रातको उसकी मधूर मूर्ति देखकर, अनुक्रमाने साथ कापते हुए कहा कि अपने इष्ट देवताको याद करी ! इसपर भी ज ने निम्नछिखित काय, प्रमुप्त छिखकर, सुझ रा ज को देनेक छिये समर्पण किया !

६५. सययुगके अळकातके समान वह राजा मान्या ता चला गया। जिस रावण के राजु राम चन्द्र ने महासागरमें सेतु बाधा था वह भी आज कहा है! और फिर युधि शिर प्रमृति अनेक राजा जो आएके समय तक हो गये हैं, सब चले गये; पर बह पृथ्वी किसीके भी साथ नहीं गई। पर मैं समसता हं, तम्हार साथ तो जायगी।

राना उसे पटकर मनमें अवन्त खिन हुआ और बायदत्या करनेवाचे अपने आपनी निन्दा करने छगा। [ २७ ] हाय, हे भोज ] मरण कालमें कहा हुआ तुम्हारा काल्य हुद्व क्षेत्र रहा है । दीर्भाग्यके स्थान समान मुझ पायी, इष्टको तुम्ही शरण है। !

[२८] हे गुणागार भोज ! तुझ निना इस राध्यसे मुझे वया काम है ! और कोई चिता सजा दो, ता-कि मैं मरफर जाकर भोजसे मिद्रं।

तत्र मित्रपेंनि राजाकी प्रजीधित करते हुए यह वाक्य कहा-

[२९] हे स्त्रामित् ! यह अति अज्ञान स्चक है जो इस तरह अब आप बोल रहे हैं। जानना यही प्रमाण है जो ऐसी कदर्थनाका कारण न हो ।

#### -इस प्रकार वार्रवार विद्याप करने हमा l l

- ६७) वादमें, उनके पासी अस्यन्त आदरके साथ बुल्याकर उसे युवराककी पदयी देकर सम्मानित किया। तैलिप देव नामक तिल्ड देशके राजाने सेना भेज कर उस (सुख) पर आक्रमण किया। उस समय रुद्यादित्य नामक महामंत्री रोगमस्त था; उसके वारवार निपेष करनेपर भी सुक्षाने उसके ऊपर चड़ी करना चाहा। [मंत्रीने कहा--
  - [ २० ] हे महाराज ! हमारी शीख मान शिकिये, अवशेख न कीजिये | तुम्हारे उधर 'चळे जानेपर इस ( सुझ ) मंत्रीको भीख माँगनी पडेगी |
  - [ २१ ] तुम्हारे बैठ रहनेपर और मेरे टाँच ( बळे ) जानेपर राजाका राज्य रूट जायगा। ऐसा होनेपर बढा ही अकाज होगा और उसकेंटिये तुम माटरके धनी जाने।

[ ३२ ] हे स्वामित् ! यह महेता ( महत्तम=महामा'य ) निनीत करता है कि –अत्र हमारा यह आखिरी जुहार ( नमस्कार ) हो । हमें [ जानेका ] आदेश हो । क्यों कि हम तुम्हारे सिरपर राख पड़ती देख रहे हैं ।

इस प्रकार मंत्रीके निषेत्र करने पर भी वह सेनाके साथ चला ।]

[ मर्राने आखिरमें कहा कि—] गो दा व श नदीको सीमा मान उसे लॉधकर आगे प्रयाण न की जियेगा । इस प्रकार मर्राने दापघ देकर आगे न जानेके लिये रोका था; तथापि मुझ ने यह निचार कर कि पहले छ बार उसे जीता है, जोरामें आकर उस नदीको पार करके, सामने किनारे जाकर पढ़ा र हाजा । र दा दिख ने जब राजा के उस इसारको सुना, तो उसकी अनिनयशीलता के कारण को है मार्गी निपद आने गाली है, यह सोचकर लगे विवासिमें प्रनेश निया । इसके अनन्तर ते लिय ने उल और बलसे उसकी सेनाको विवर-विवर कर मुझ राजा को गिरफ्तार कर लिया और मूजकी रस्सीसे बॉथ उसे कारागारमें बन्द कर दिया । काठके रिजहें उसे उसका पारागारमें बन्द कर दिया । काठके रिजहें उसे उसका या था और राजा ते लिय पत्नी बहुत गुणाल न तो उसकी परिचर्या करती रहती यी । मुझ का उसके साथ पनीका-सा स्नेह सम्बन्ध हो गया । वस्त पीड रहे हुए उसके मंत्रियोंने एक सुस रसुराई और उसके जिरेथे मुझ को सकेत कराया । इतनेमें, एक बार जब बह दर्पणमें अपना प्रतिबंब देख रहा था, तो उसी समय हुणाल वती, अनजानमें, पीड आ बढ़ी हुई। उसने भी दर्पणमें अपने मुझपेके जर्नर मुखको देखा और दिर हैं हैं हुए विवर्ध हैं र हा है सहिल्ये उसे उदाह हीते देख मुझ राज के मुँहके पास उसका मुँह अपनन्त महा दिखाई दे रहा है। इसिल्ये उसे उदाह हीते देख मुझ ने कहा—

३६. मुख फहता है कि-ऐ खुणाञ्चती ! गये हुए बीजनको हुतो मत; यदि सक्तरकी ढंडी पीसी जा कर सैंकहों टुकहोंमें ठिन मिल हो जाय, तो भी यह मीठी चूर ही टगती है ।

इस प्रकार कह कर [ उसे 'शान्त बनानेका प्रयत्न किया ], बादमें अपने स्थानको जानेकी इच्छान बाडा होते हुए भी मुणा छ ब ती का निरह बहु नहीं , तह सकता था, और सबसे उसे वह बृद्धान्त भी कह नहीं सकता था । बार बार [मुणा छ ब ती के ] पुठनेपर भी, अपनी चिन्ता न कह सका । बिना नमककी और अधिक नमक दी हुई रसीई खाकर भी जब बह उसका हमाद नहीं जान सका तो, मुणा छ ब ती ने अपंत आग्रह और प्रेमपूर्वक पूठा; तब बोटा कि में इस सुरक्ष के रास्ते अपने धर जानेमाटा हूँ । यदि तुम भी बहाँ चले तो में मुखें पटरानीके पदपर अभिविक करके अपने प्रसादका कल दिखाऊं । इसपर उसने कहा कि क्षणमर प्रतीक्षा करी; तब तक में अपने गहनोंकी सन्द्रक छे आक्र । यह कहकर कम कारपायिमी ( उछती उमस्की निषया ) ने सीचा कि यह बहाँ जाकर भुत्ते छोड़ देगा, अपने भाई राजासे बह बृद्धान्त जाकर कह दिया । इस पर बह राजा, उसकी निरोध निक्षना करनेके छिये, उसकी बन्धनमें बाँधकर प्रतिदिन भिक्षाटन कराने छगा । नह पर पर पुनता हुआ, खिल होकर उदासीके इन बचनोंको जोड़ा करता । जैसे कि-

३७. वे नर मूर्च है जो खीपर तिश्वास करते हैं; जिस खीके चित्तमें सी, मनमें साठ, और हदयमें बत्तीस आदमी बसा करते हैं।

और भी-

1

३८. यह मुख जो इस प्रकार रासीमें बन्या हुआ बंदरकी तरह धुमाया जा रहा है, यह बचपन-दी-में होडीके टूट जानेसे मिरकर क्यों न मर गया, या आगमें जब कर राख क्यों न हो गया । तब किन्दी सजन पुरुषीने दिखारा देते हुए कहा किन्त

[३३] हे स्त्राकर, हे गुण्एछ मुख! चित्तों इस प्रकार निपाद न करो। क्यों कि जिस प्रकार रिपाता ढोल बनाता है उसी तरह मनुष्यको नाचना पहता है।

फिर किसी और दयाईचित्त सजनने कहा-

[ ३२ ] हे मुझ ! इस प्रकार खंद न करो |। क्यों कि भाग्यक्षय होनेपर वह रागण भी नष्ट हो गया, जिसका गद तो छंका था और जिस गढ़को खाई खुद समुद्र था और उस गढ़का माछिक खुद राजण दस माधेनाछा था ।

इसी प्रकार-

. २९. हाथी गये, रख गये, बोड़े गये, पायक और शृत्य भी चले गये। महता ( महामात्य ) रुद्रा दिल्य मी स्वर्गोमें बैठा आमत्रण कर रहा है !

बादमें, एक अमसरपर, किसी मृहस्यके घरपर वह भिक्षाके छिये छे जाया गया । उसकी छी उस समय छोटे पाईको छास पिछा रही थी । उसने उसको भिक्षाके छिये खड़ा देख कर गर्वसे करवा ऊँचा किया `और भीख देनका इन्कार किया । इसपर मुझ बोछा⇒

१०. हे मोटी मुम्बे । इन छोटेसे पार्डो ( भैंसके बबों ) को देख कर ऐसा गर्व न कर । मुझ के ती बौदद सी और छहतर हाथी थे, पर वे मी बळे गये ।

उसने इस प्रकार उत्तर दिया—

[ १५ ] जिसके घर चार बैछ हैं, दो गायें हैं और गौठा बोछने वाछी ऐसी [ मैं } सी हूँ, उस फुटुंबी (कणबी=किसान) को अपने घरपर हाथी वाँगनेकी क्या जरूरत है !

एक दूसरी बार जब कि मुझ को इस प्रकार इचर उचर घुमाया जा रहा था, तब, राजा किसी बाबडी पर बैठा हुआ उसे देख कर हँसने छगा। इस पर बह बोछा—

[ इ६ ] ऐ धनके अन्ये मृह 1 मुझे विपत्तिमस्त देखकर हैंसता क्या है !—छस्मी कभी कहीं स्थिर-होती देखी है ! यू क्या इस जल्यश-चक्र (अरहंट ) की चटियोंको नहीं देखना जो कमसे खाड़ी होती हैं, मरती हैं और फिर खाड़ी होती हैं !

इसी तरह पीठे छगकर चिदानेवाले आदमियोंको देखकर उसने यहा-

[ ३७ ] में उन पर वारी जाता हूँ जो गोदावरी नदीने उत्पर ही अटक गये ( पर गये ), जिन्होंने न इन दुर्जनोंका ऋदि देखी और न इस विह्नल मुझको देखा ।

फिर अपनी मन्दबंदिताका स्मरण करता हुआ इस प्रकार बोळा-

[ ३८ ] दासीको कमी प्रेम नहीं होता यह निश्चित जानना चाहिए । देखो, दासीने राजा मुझे स्वरको यर घर मीख काँगता करनाया ।

[ ३९.] और जो छोम अपना बडपन छोड़कर वेश्या और दाक्षियोंमें राचसे हैं वे मुझ रा जा के समान बहुत ही अनादर सहन करते हैं।

[ 80 ] हे \* मर्फेट ( बदर ) 1 इसलिये तुम अफसोस न करो कि मैं इस क्षांके द्वारा खँडित किया जा रहा हूँ । राम, रावण, और मुख शादि कैसे कैसे लोग क्षियोंसे खडित नहीं हए !

<sup>#</sup> मदारी लोग बदर और बदियाना जब खेळ बस्ते हैं तब, बदिया रूजनर बदरबा अपमान करती है और बदरछे पानी मावाना चाड़ी चळवाना आदि हाम बरवाती है। बदर अपमानित होकर गुँह पेर बेठ जाता है और हायते अपने मिरको दीटता है। इच हस्यपर विशीनी यह जिक्क है।

- [ ११ ] ऐ यन्त्र, 4-चरखा ! तुम इसिटिये न रोओ कि मैं इस खी द्वारा ममाया ( भ्रुमाया ) जा रहा हूँ l' ये तो कटाक्ष फेंक कर ही ( मनुष्योंको ) धुमाया करती हैं, तो फिर हायसे खींचने पर की वातका तो कहना ही क्या है ई
- [ १२ ] मुझ फहता है कि, हे गुणाठवती ! जो बुद्धि पीछे उत्पन्न होती है, वह अगर पहले ही हो जाय तो कोई विघ्र आकर घेर नहीं सकता।
- ैं ( प्रश्नी जो राजा दशरप देवताओं के राजा ( इन्द्र ) के तो नित्र थे, और यह पुरुपके तेजःअंशकें समान रामके पिता थे, यही पुत्रविरहके दुःखसे शय्यापर ही पडे पडे मर गये. उनका शरीरं जलते हुए तेलके मटकेमें रक्खा गया और बहुत दिनोंके बाद उसका संस्कार हुआ । हाय, कर्मकी गति टेडी है !
  - ीं 88 ो सिरपर विध् × ( चंद्रमा और विधाता ) के वक्त हो कर आ बैठने पर, शिवके सदश जो सब देवताओं के गुरु हैं उनका भी कैसाँ हाल हो गया है सो तो देखो। उनके पास अलंकारमें तो मात्र ' नर-कपाछ है जिसे देखते ही डर खगता है. परिवारमें जिसका सारा शरीर छित्र भिन्न है ऐसा एक मंगी है, और सम्पत्तिमें एक दलती कमरका बुढ़ा बैल है | फिर हम लोगोंके सिरपर जो विधि यानि त्रिधाता वेक हो कर बा बैठे तो क्या क्या हाल न हो।

इस प्रकार चिरकाल तक भिक्षा मँगवाने बाद राजाकी आज्ञासे मुख को वच्य-मुनिमें के गये। वहाँ पहले पहनेनका उसका बख हे हिया गया । तब वह बोहा-

ि ४५ वह कमर जो हमेशां मतवाले हाथींके ऊपर ही बैठकर चलनेवाली थी, जो सदा विचिन्न सिंहासनपर ही बैठती थी और जो अनेक रमणियोंके जघनस्थल पर लालित होती थी: वह आज इस प्रकार विधियश विना यखकी कर दी गई र

तब मुझने पूछा कि-' किस प्रकार मुझे मारोगे हैं ' [ उत्तर मिळा ] ' बुसकी शोखामें छटका कर ।' त्तव वह बोल-

[ ४६ ] कहाँ तो यह महाधनमें रहा हुआ बृक्ष है और कहाँ हम संसारका पाउन करनेवाठे राजाओंके पुत्र ! अहो, कमी न घट सकनेवाटी बातको घटानेमें पुटु ऐसा यह विधिका चरित्र बहा दरबोध है !

उन्होंने कहा कि ' इप्ट देवताको याद करो ' इस पर वह बोला-

४१. इस यहाके पुंजके समान मुख के गत होनेपर, उदमी है सो तो विष्पुके पास चठी नापगी और वीरश्री है वह वीर मन्दिरमें चली जायगी; किन्तु [ और कोई माश्रयस्थान न मिलनेसे ] सरस्वती है सो निगधित हो जावती ।

× यहापर ' विघी वक्ते मुधि ' इस बान्यांश पर क्षेत्र है। संस्कृतमें ' विघु ' शब्द चंद्रका बाचक है और ' विधि ' विधाताना । इन दोनें। रान्योंका सप्तमी विधासिक एक बचनमें 'विधारे ' ऐसा रूप बनता है । धिवके पश्चमें ' विधके नक होनेपर;' और दूसरे पश्चमें ' विधिके वक होनेपर ' ऐसा अर्थ घटाया गया है ।

<sup>+</sup> स्त्री जब चरला चलाती है तब उसमेंते हैं...हैं...इस प्रकारकी अवाज निकस्त्री है। उस अवाजार यह फिरीकी अन्योकि है। स्त्री अपने हायसे चरलेको खुब धुमा रही है इसलिये मानों चरला से रहा है। कवि कहता है कि, माई चरला तुं से मत ! स्नीके तो कटाश मानसे भी मनुष्य धूमने ख्यते हैं, तो किर तुहे तो यह अपने हायसे किस रही है ।

इस तरहके उसके अन्य बहुत वाक्य हैं जो प्रस्पराके अनुसार जानने चाहिये\* ।

बादमें उस मुख को भारकर उसका सिर स्टामें पिरोकर अपने आँगनमें रखवाया और उसमें रोन दहीं रुगवा रुगवाकर श्रेपने अमर्पका पोषण करता रहा ।

९२. जो मुख यहाका पुत्र था, हाथियोंका पति था, अव नती का खाभी था, सरस्वतीका पुत्र था, माचीन कालके जैसा कृती पुरुष था; वही कर्णाट देश के राजांके द्वारा अपने मंत्रीकी बुखुद्धिसे पक्षद्वा गया और स्कीपर चढ़ा दिया गया। हाय, कर्मकी गति कैसी निवम है!

३८) उसके बाद, मालया मण्डलके मंत्रियोंने जब यह कृतान्त सुन। तो, उन्होंने किर उसके भरीजे भोजको राज्य पदपर अभिनिक्त किया।

इल प्रकार अंभिरुतुङ्गावार्य रावित अवंधविन्ताम्णि प्रन्यका 'राजा अंधिकमाहित्य प्रभूति महासाहितक और परोपकार-मादि शुणक्रपी रानेंसि वर्छहत राजाओंके वरित्र' नामक यह पहला प्रकाश समात हुगा।

<sup>•</sup> माह्य शेला है धुनारी यह फरण वाया उस समाने बहुत लोक प्रतिद्व और लोक साहित्यकी विशिष्ट वस्तु बनी हुई थी। मेराइस्तिनि जो यहाँ पर ये इस्त सस्त्रा, प्राइत लोव देशर एवा दिन है वे या तो तिल निम्न कर्नृक पुत्र विश्वत्व प्रविधित उद्धात किये गये हैं; या एपपासे पुत्रन लिख लेखे गये हैं। पुत्रा है हम क्यामें एक तो स्वत्ति जीशियता और दूसी मीती जीवित स्वति क्यामें प्राइत स्वत्ति क्षांत्र स्वति क्यामें आहे आहे आहे अहिस्ता के स्वत्ति हम क्यामें क्यामें व्यव्दात के स्वत्ता क्यामें स्वत्ति हम क्यामें मेराइत स्वत्ति हम क्यामें प्रतिस्वति क्याम है और - अस्पनात्र क्याम ही मिल गया। जभी तक निम्नय नहीं हो एका कि इस क्यामें ऐतिस्वति क्याम है और - अस्पनात्र क्यामें क्याम ही मिल गया। जभी तक निम्नय नहीं हो ऐका कि इस क्यामें ऐतिस्वति क्याम है और - अस्पनात्र क्यामें क्याम है और अस्पनात्र क्याम है और अस्पनात्र क्याम है और अस्पनात्र क्यामें भी क्याम क्यामें है। यह एक्यामें भी क्याम क्यामें है। यह एक्यामें भी क्यामें क्यामें है। यह एक्यामें क्यामें क्यामें

र. दरी लगवानेका मतल्य यह कि उसे देखकर कीए आउँ और उस मस्तकार कैटें। निजी हुस्माका कटून ही सुरा चाहना होता है वन लोग वोशा करते हैं कि-उसके सिरार दो कीए बैटेंगे। उसी छोकोत्तिका सुचक यह कपन है।

# ७. भोज और भीमका प्रवन्ध ।

३९) इसके बाद [स॰ १०७८ के साउ ] जब माउव मण्डल में श्री भो जरा ज राज्य करता था, तब इसर गर्जर भिमें ची छक्य चरनार्ति भी म पृथिनाका शासन करता था।

्फ्त रात्रिके अतमें राना मोजने, अपने चिचमें छत्मीकी अस्परताको निचारते हुए और अपने जीउमको मी तरगढ़ी माँति चब्रछ समझते हुए, प्रात इत्यक्ते बाद, दानमण्डपमें बैठकर नौकरीके द्वारा याचकोंको चला, यथेच्छ सुप्रणें टकोंका (सोनेकी मोहरोंका) दान देना प्रारम किया।

४०) इस पर, रोह क नामक उसके मधीने, खजानेका नाश होता देख, राजाके आंदार्य गुणको दोप समझते हुए उसे रोक्तनेके लिये अन्य उपायोंसे समर्थ न होकर, एक दिन सर्गासर (न्याय समा) के उठ जाने बाद समामण्डपके मार्पण पर खिइयासे इन अक्षरोंको लिख दिया—आपित्त कालके लिये घनकी रक्षा करनी चाहिए।

प्रात काळ यथा समय राजाने उन अक्षरींको पड़ा | सभी परिजनोंमेंसे किसीने भी जन उस कार्यके करनेका स्थानार नहीं किया तो राजाने उसके साथ यह ळिख दिया—भाग्यवानको आपत्ति कहा है।

इस पर महीने जवापमें लिखा कि-कभी देव क्रापित हो जाय तो १।

इस पर राजाने फिर उसके सामने लिख दिया नि—[तब तो] सश्चित भी विनष्ट हो जायगा। इससे निरक्तर होकर उस मजीने अभय बचन भाँगकर उस कपनको अपना लिखा बताया। बादमें राजाने कहा, कि मेरे मनरूपी हाथीको ज्ञानरूप अदुशसे बदामें रखनेके लिये महामानके समान ५०० \* पण्डिलोंका यह समुद्द यथेष्ट रूपसे अपना अपना मास प्राप्त किया करें ।

रानाने अपने जीननका ध्येय स्चित करनेनाळी ऐसी चार आर्याओंको अपने कह्रणपर खुदवाई र निनका अर्थ यह है—

- 88. यहां उपकार करनेका अत्रसर है, जंत्र तक कि स्वसात्रत ही चश्रल ऐसी यह सम्पत्ति तियमान है। फिर वह निपत्ति कि जिसका उदय भी निश्चित है, उसके आनेपर उपकार करनेका अवसर कहाँ हिंगा ।
- 8५. हे पूर्णिमाने चत्रमा ! अपने किरण-समृहकी समृद्धिसे अभी आज इस सारे शुत्रनको उज्ज्ञाल कर दे। [ फिर यह मीना न मिल्रेगा, क्यों कि ] निर्दय निवाता चिरकाल तक किसीका सुस्थिर होना सह नहीं सकता।
- १६, ऐ स्रोत्रः ! दिन और रात याचकोंका उपकार करनेका यही अत्रसर है ! यह जल तो उन पराने बादलोंके उदय होनपर किर सर्व सल्य ही है ।
- ४७. ऐ किनारेके कुर्कोंको गिरा देनेनाछा नदी ! यह सुदूर तक उनत दिर्लाई देनेनाछा पानीका पूर ती कुछ ही दिनों तक ठहरेगा, पर यह एक पातक (पड़का गिरा देना) तो चिरस्याया होकर रहेगा । और फिर-

र इसका सतल्य यह है कि राना भोजने अपन पास ८०० पड़ित रक्के य जिनके निवाहरे लिय रान्यकी आरंधे स्थापी प्राप्तका प्रताच कर दिया गया या ।

र पुपन जमानेमें यह एक प्रया थी कि-विचारशील लोग, िख विची खद्दिचारने। लगना जीवन प्येय बना। होते ये उत्तवा बतत समल रहा बरे इस्तिये उस विचारके सुनको अपने हायक वक्षणपर उत्त्वीण क्या (खुदा) रुदे य और उसका सुदेव अवलोकन किया करते थे। बस्तुपाल आदि अन्य भी महापुरुगोन अपने जीवनसुन वक्षणपर खुदवा रुस्ते थ।

8८. स्र्येक अस्त होनेक पहले जो धन याचकोंको नहीं दे दिया गया, मैं नहीं जानता, वह धन प्रातःकाट किसका होगा ।

इस प्रकार अपना ही बनाया हुजा यह रहोक जो मेरे कण्ठका आमरण-सा होगया है उसकी हुट मंत्रकी सरह जपता हुआ, हे मंत्रिन् ! में आप जैसे प्रेतके सवान [ छोमी ] पुरुपसे कैसे ठगा जा सकता हूँ ।

४१) एक दूसरे अवसरपर, राजा राजपादिकार्षे चूमता हुआ नदीके किनारे जा खडा हुआ। वहाँ सिरदर काठका भारा उठाए हुए और पानीकी आँच कर आते हुए किसी दिखी शालगको देखा। उससे उससे पूछा कि--

४९. ' कितना है पानी ब्राह्मण ! ' उसने कहा-' घुटने तक हे राजा । '

राजाने फिर पूछा-' तेरी अवस्था ऐसी क्यों ? ' वह बोजा-' आप जैसे सब फहीं नहीं ! ' उसके इस वाक्यको सुनकर राजाने जो पारितोचिक उसे दिया, मंत्रीने धर्म-खारोमें इस प्रकार डिख रखा-

५०. " जानुरम " ( जानुतक ) कहनेवाने बाहाणको सन्तुष्ट होकर भोजने एक छाख, किर एक छाख, किर एक छाख; और उसपर दस मतवाने हाथी; इस प्रकार दान दिया।

४२) एक दूतरी बार रातमें, आधीरातको राजाकी अचानक माँद खुजी। उस समय आकाशमण्डलमें चंदमा नया हो। उदित हुआ था। उसे देखकर यह अपने निघारकी समुद्रकी उठते हुए तरंगके जैसा यह काव्यार्थ बोलने लगा—

५१. यह चदमाने भीतर, बादको टुकहेकी-सी जो छीछा कर रहा ह छोग उसे शशक (खर-गोश) कहते हैं, किन्तु मुझे वह ऐसा नहीं माइन देता।

राजाके बारबार ऐसा कहनेपर, कोई चोर जो उसी समय सेंथ मारकर, कोशगृहमें घुसा था, अपने प्रतिमाके वेगको रोकनेमें असमर्थ होकर बोळ उठा--

ं मैं तो चदमाको ऐसा समझता हूँ कि तुम्हारे शतुओंकी विरद्धाकान्त तरुणियों (कियों) के कटाक्षरूपी जरुरापातके सेनहीं मणके चिन्हसे वह अकित हो रहा है। '

उसके ऐसा बोल पडने पर, अगरक्षकोंने उसे एकड िया और कारागार्मि बद कर दिया। इसके बाद प्रातःकाल, समामें ले आये इए उस चोरको राजाने जिस पारितोपिकसे पुरस्कृत किया, उसे धर्म-खाताकै काममें नियुक्त अधिकारीने इस प्रकार लिखा—

५२. उस चोरको, जिसे मुखुका अय छगा हुआ था, राजाने ऊपर लिखे दो चरणोंक लिये प्रसम होकर यह दान दिया—दस करोड़ सुवर्ण सुवाय और ऊपर शाठ हाथी, जो दाँतीके आयातसे पर्नेतका सेदन करते थे और जिनके सदसे मुदित हो कर साँहे गुजारब किया करते थे।

फिर एक वार खिड़कीकी जालीसे आते हुए चहमाको देख कर बोळा—

[ 89 ] हे सुम्नु ! खिड़कीकी जाओमेंसे प्रदेश करनेके कारण निसकी चाँदनी खड खंड हो गई है, वह चंद्रमा, राष्ट्रारे यदा,स्थल पर आकर निराज रहा है ।

उसी समय घरमें प्रवेश करनेवाळे चीरने कहा-

' यह चन्द्रमा मार्को तुम्हारे स्तनके संगकी आंसक्तिके वश होकर आकाशमेंते श्रंपायात कर नीचे कूदा है और दूरते गिरनेके कारण खड खंड हो गया है । '

इस भोरको मी उसी तरहका दान दिया गया और उसे धर्म-बहीमें हिख हिया गया।

४३) इसके बाद, एक बार, जब बह बही [राजाके आगे ] बाची जाने छगी तो राजा अपनेको बड़ा उदार दानी मानकर घमंडरूपी भूतसे आविष्ट होनेकी मौति--

५२. मैंने वह किया जो किसीने नहीं किया, वह दिया जो किसीने नहीं दिया, वह साधना की जो असाव्य थी: इसलिये [ अव ] हमारा चित्त दृ.िखत नहीं है ।

इस प्रकार वास्वार अपने भाग्यकी प्रशस्त करने लगा । तम किसी पुराने मर्शाने, उसके अभिमानको दूर करनेकी इच्छासे, श्री विक्रमादित्यकी धर्म-बही राजाको दिखाई । उसके उत्परवाले निमागमें शुक्तमें ही पहला काल्य इस प्रकार था—

५९. तुम्हारे मुख्यमवर्धे 'सरस्वती ' वसती है, 'शोण ' तो तुम्हारा अधर ही है, और रामचन्द्रके वीर्यकी स्मृति दिखानेमें पढु ऐसी तुम्हारी दक्षिण शुना 'समुद्र ' है। ये बाहिनियाँ (सेना और नदियाँ) सदा तुम्हारे पास रहती हैं; क्षणभर भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़तीं; और किर तुम्हारे अंदर ही यह राम्छ मानस (मानसरीनर, मन) है; तो किर हे राजन्, तुम्हें जलपानकी अभि-छापा क्यों हो है '

इस काव्येक पारिकोधिकमें राजाने इस प्रकार दान दिया था-

. भूभ. आठ करोड़ स्वर्णमुद्दा, ९३ तुछा मोती, मदमत्त भौरोंके कारण क्रोधसे उद्धत ऐसे ५० दृाधी, चढ़तेमें चतुर ऐसे दस हजार घोड़े और सी वेश्यायें;—यद सव जो पाण्डय राजाने दण्डके स्टक्समें क्रिक्स राजाको भेट किया था; यह उसने उस्त वैतार्जिकको दानमे दे दिया।

इस प्रकार उस काञ्यके अर्थको जानकर, निकासकी उदारतासे अपने सारे गर्न सरिलको परानित

मानकर, उस वहीं की पूजा करके उसे यथास्थान रखना दिया !

99) एक छमय, प्रतीहारने आकर स्चित किया—'महाराजके दर्शनके टिये उत्सुक ऐसा एक सरस्वती-मुद्धम्ब द्वारपर खडा है। 'शीप्र प्रनेश कराओं 'राजाकी ऐसी आज्ञा द्वोनेपर पदछे उसकी दासीने प्रनेश फरके कहा—

५६. बाप मी निदान् है, नापका बेटा भी निदान् है, माँ भी निदुपी है, माँकी छड़की भी निदुपी है; जो उनकी निचारी कानी दासी है वह भी निदुपी है; इसछिये है राजन् ! मैं समझती हूँ कि यह सारा क़टन्य भी नियाका एक पुख है ।

उसके इस हास्यकर बचनसे राजाने जरा हैंसकर, उनमें के सबसे बड़े पुरुषको बुखाया और यह समस्या दी-' असारसे सारका उद्धार फरना चाहिये। '

[ उसने इसकी पूर्ति इस तरह की-]

५७. धनसे दान, वचनसे सत्य, और वैसे ही आयुसे धर्म और कीर्ति तथा शरीरसे परोपकार-इस प्रकार असारसे सारका उद्धार करना चाडिये !

२ इस पर्में जो सामगी वर्गित की गई है वह विजय राणको द्वित्यके पाण्टम रामने दण्डने कपूर्ने दी थी और उसी सामग्रीको प्रिज्ञमें किसी वैतालिक बानि स्तुतिसाटक कविको, उस्त श्वेसके कहनेपर पारिनोरिकके कपूर्व-दानमें दे दिया,

यह इसका सात्पर्य है।

र हित्री समय दिवस राजने अपने नोकरले पीनेको पानी मागा तब पावमें बैठे हुए दिशी बनिन यह पत्र बनाया और राजको सुनाया। हब्से, स्परती, सील, दक्षित समुद्र, मानस और बाहिनी हतने सम्दोग्य रुप है। ये सन सम्ब प्रापंक्र है, जिनमें एक अर्थ प्रतिद्व जलभव बाचक है और दूस्य अन्यार्थ वाचक है। यथा-स्परती=र नरी, र रियार्दरी, सीज-उनद, र लल्का, दक्षिण समुद्र-है सहास्पर, र सुद्राजन हाय, बाहिनी=र केमा, र नरी, मानस=१ स्वेरार, र नन्न ।

इसके बाद राजाने उसके पुत्र ते [ यह समस्य दो ]—' हिमालय नामक पर्वताँका राजा है ] '— 'मवाल (तृणाहुर ) की बारयाको सारीरका सरण' बनाया। राजाके इस मानयको सुनकर उसने उत्तर दिया— ५८. बह जो हिमालय नामक पर्नतांका राजा है, तुम्हारे प्रतापस्त्री आप्रते विघल रहा है; और तिरहसे आपुर बनी हुई मेना (हिमालय-पत्नी मेनका) अपने सरीरको प्रवाल (तृणाहुर्ते) की शब्याके हारण कर रही है।

इस प्रकार उसके समस्या पूरी कर देनेपर, ज्येष्टकी पत्नीको राजाने समस्याका यह पद अर्थित किया~ किससे पिछाऊँ दुध है

५९. जब राजण पेदा हुआ तो उसने एक शरीरपर दस मुँह देख कर उसकी माता नहीं विस्मित हुई और सोचने जगी कि कौनसे मुँहसे इसे दूब पिटाक !

-उसने इस प्रकार यह समस्या पूरी की।

इसके बाद रानाने दासीसे भी इस प्रकारका पद सपस्याके लिये दिया- 'कंटमें काम रूटम रहा है।' ६०. पतिनित्रहसे कराल बनी दुई किसी स्रोने उस बेचारे कौनेको उहाया तो, बहा आश्चर्य मैंने है सिख। यह देखा कि वह काक उसके करमें लटम रहा \*।

उसने इस तरह पूरा किया। राजाने उस कुटुनमेंकी छड़कीको भूटकर, अन्य मबको सरकार फरके बिठा किया।

बादमें राजाने जब सर्गम्सर ( राजसमा ) का निसर्जन किया और स्वय चन्द्रशाख ( चाँद्रमी=महरूसे ऊपरको छत ) की भूमिन उन प्रारण फरके टहल रहा या, तब द्वारपालने उस लड़कीका द्वसान्त कहा । राजाने उसे [ कुलकर ] कहा-' कुछ बोलो '--नो वह बोली कि-

६१. हे राजन्, हे शुक्र उच्चे दीपक, हे समस्त पृथ्वीके पाठक, राजाओंके नृहामित ! इस भवनमें रातमें भी, तुम इस प्रकार छत्र धारण करते ही वह उचित ही है ! इससे न तो दुम्हारे शुक्कां कातिकी देखकर खदमाको छित्रत होना पहला है और न भरानती व्यक्त्यतीको (पर पुरुषेके शुक्रदर्शनसे) दु शीक्ताका माजन होना पहला है !

उसके इस वाक्यके अनन्तर राजाने, जिसके चिचको उसके सीन्दर्य और चातुर्यने हरण कर छिपा था, उससे निवाह करके अपनी भोगिनी बनाया।

### भोजकी गुजरातके राजा भीमके प्रति प्रतिस्पर्धा ।

१५) इसके बाद, एक समय, संविष्ठिक होते हुए भी, सन्धिमें दोष उत्पादनके िनचारसे भी ज -राज्य ने मूर्जर देश की बुद्धिमत्ताका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छार्स अपने सान्धिक्रिप्रहिकके हाथ, भी म के पास यह [प्राप्टत] गांधा ढिख भेजी—

६२. क्रीडा मात्रमें जिसने हाथीता कुम्मस्थल निदीर्ण किया हो और चारों दिशामें जिसका प्रताप फैल रहा हो उस सिहका, मृगके साथ न तो निग्नह ही [शोमता है] और न सन्पि ही [रहती है]।

भी म ने इस गायाका उत्तर देनेके िव्ये सब महाकि गोने गाया माँगी। पर उनकी बनाई सब गायाओं के निःसारार्थक देखकर वह सोचमें पह गया। उसी समय नगरमेंके जेन मन्दिरके अन्दर नाचनेके विये सज्ज बक्षा हुई नर्तकीको खमेंके पास खडी हुई देखकर मंत्रीने पर्वी बैठे हुए किसी आचार्य-शिप्यसे स्तंभ-वर्णनके विवे कहा। वह बीवा—

[ ४८ ] हे स्तंभ ! तुम जो इस मृगनयंनी नववीयनाकी, करुणामरण आदिसे सिक्रित बाइडकासे विधित होतर भी ] न स्वेद-युक्त होते हो, न हिज्जे हो और न काँपते हो; सो सचमुच ही तुम पचरके वने हो यह निश्चित होता है।

[ প্রাত্মার্য-হিম্মের্র) বিহরার) यह बात जब मॅग्रीने राजासे कही तो राजाने [ उसके गुरु ] প্রাত্মার্যন্ত্রী প্রভাকে তেন বিদদেশ পুতা—

६३. निधाताने मी मको अन्य कके \* पुनोंको मारमेके छिपे ही निर्माण किया है। जिस भी मने ही अन्यक पुनों। को कठ नहीं गिना उसके सामने तझ अकेलेकी क्या गणना है। '

इस प्रकार गी निन्दा चार्यकी बनाई हुई चित्रको चमक्टत कर देनेगळी इस गायाको दूतके हाथ भेजकर, सन्यिके दौपको दूर किया ।

9६) बारमें किसी एक रातको, जाड़ेके दिनोंमें, राजा जब वीरचर्योमें वृम रहा था, तो किसी मन्दिरक्षे सामने, किसी पुरुषको यह पहले सुना—

६८. मेरा पेट जूखते ब्याउंड है, ऑठ फट गये हैं, ऐसी अनस्थामें ईफते फकते आग ठंडी हो गई है, चिन्ताके समुद्रमें हुन रहा हूँ, शतिसे भायके फड़का तरह सिकुड गया हूँ। निदा अपमानिता स्रोकी मेंति कहीं दूर चडी गई है; और सत्यानमें दो गई छश्मीकी मेंति रात मी खतम नहां हो रही है।

यह मुनकर रात वितासर कोरे उसे युटासर पूँटा—'किस प्रकार तुमने सारिशेपमें शीतका अस्पन्त उपदम सहन किया ?'।'सत्पाममें दी गई छड़भी 'इ यादि क्रयनकी और संकेत करके उसने कहा या । [यह बोटा—]' महाराज ! मैं खुद गाढ़े तीन यहाँसे जाड़ा काटता हूँ।' राजाने पूटा कि तुम्हारे ये सीन् यह क्या हैं! तम उसने किर कहा—

६५. रातमें घुटने, दिनमें सूर्य और दोनों शायको आग, इस प्रकार है राजन्! घुटने, सूर्य और आगके बरुपर मैं शीत काटना हैं।

जन उमने इस प्रकार कहा तो राजाने उसे तीन टाखका दान देकर सन्तुष्ट किया।

६६. तुमने अपनी आमाको धारण करके बाँछ, कर्ण आदि उन त्यागम्ता धनपान पुरुपोंको मुक्तकर्

यहाँतर 'अपक 'इस शब्दार रोग है। कीलाँका विता पुत्रसूत्र अन्या या इस्टिये उनको अन्याक कहा है।
 भोजका रिता छिंपुन भी अन्या या इस्टिये उसका विशेषण भी अन्याक सार्यक है।

दिया, जो सजनोंके चित्तरूपी कैद्धानेमें आबद्ध थे।

इस प्रकार जब वह सारवान् काव्यका उद्गार प्रकट कर रहा या तो राजाने उसका परितीपिक देनेमें अपनेको असमर्थ समझ कर अनुरोधपूर्रक रोक दिया।

[ यहाँ P. B. नामक प्रतिमें निम्नांकित वर्णन अधिक पाया जाता है-]

[ १९ ] शीतसे रक्षा करनेके लिये पटी ( नख ) नहीं है, आग सुल्मानेके लिये सगई। नहीं है । कमर भूमिपर धिस गई है—सोनेको शब्या नहीं है, दुटियामें हयाके रोकनेका कोई उपाय नहीं है, खानेको सुद्दीभर चारल नहीं है, चईभिर भी मनमें सतोप नहीं है, श्रागर को कोई हति नहीं है, मनको प्रसन्न करनेनालों कोई त्रिया नहीं है, लेनदारोंसे सकटमें पढ़ा हूँ; ऐसी दशामें है भोजराज । तुम्हारे जुपालपी हाथी द्वारा ही मेरी इस आपदाकी तटीका नाश हो सकता है।

इस स्रोक्तमें आई हुई ग्यारह टी के हिसाबसे मो जरा जा ने उसे ११ छाखका दान दिया।

एक बार, किसी निद्धत्मुल्क निगासके लिये वर देखे जा रहे थे। उनके न मिलनेपर राजाने कहा कि बुलाहों और मन्त्रीमारोंको उजाइ दिया जाय। जब राजपुरुप उन्हें उजाइने लेगे तो एक लुलाहा उन्हें रोककर राजाके पास गमा, और बोला कि-महाराज! क्यों हमें उजाइ रहे हैं 'तो राजाने पूळा-क्या तू कारिता करता है 'यह बोला-

[५०] जिसके करणोंपर राजाओंके सुरुटके मणि छोटते रहते हैं ऐसे हे साह साक महाराज ] में काव्य तो करता हूँ पर छुन्दर नहीं कर पाता 1 जेशा तैसा करता हूँ पर सिद्ध नहीं होता 1 में उसका क्या करूँ में किता करता हूँ, कपडा सुनता हूँ और अब जाता हूँ 1

धीवरकी बहु मी हाथमें माँस छेकर राजाके पास गई और बोछी-

[ ५१ ] ' महाराज, तुम्हारी जय हो ! '-' तु कौन है है '-' खुम्बक (शीवर) की बहू ! '-' हाथमें यह क्या है है '-' मास ! '-' सुखा क्यों है है '-' यों ही '-और यदि महाराज ! आपको कीतुक हो तो कहती हूँ कि-सुम्हारे शतुओंकी शिषाओंके ऑसुकी नदीके किनारे सिद्धोंकी लियाँ गान करती हैं। गीतमें अन्ये होकर हरिण चरते नहीं। इस्रिक्टिय जनका यह मास दुर्वक हो गया है।

इस प्रकार उक्ति प्रायुक्तिमय ये दो काव्य क्षत्रकर राजाने उन्हें नगरके भोतर स्थापन किया।

एक बार, फोई निहान, जो गर्नेवित था, उस नगरके निरासियोंको घरमें ही गरजनेवाले समक्षमर अवज्ञापूर्वक बारके लिये आथा। नगरके समीप किसी पुरुषसे (धोनीसे) जो वल थो रहा था बोला-' और साइक्ति मैठ घोनेनार्जे ! नगरमें क्या हाल्याल हो रहा है <sup>2 1</sup> वह बोला-

[ ५२ ] घोड़े तीरण छी इए मनलांको ढोते हैं, गाथें केसरके सहित कमछोको चरती हैं, दही यहाँ-एर पीछा मिछता है, तिछोमें यहाँ तेळ नहीं होता और मक्तानिके दरवाजेके शिखरपर हिरण चरा करते हैं।

इसके बाद, किसी बालिकासे पूँछा- दू कौन है : ' सो वह बोली-

[ ५२ ] मरे हुए जहाँ जींदा होते हैं, जिनकी आधु बीत गई है वे उछ्यसित होते हैं और अपने गोत्रमें जहाँ कटह होता है. मैं उस कटमी चालिमा हैं ।

इसका अर्थ न समझकर उसने निचार किया, कि जहाँ बालिका मी इस तरहकी निचाताली है बहाँके निदान कैसे होंगे, यह उस्टे जॉर्ब लीट गया।

र इस क्षेत्रकों ' टी ' जिसके अनमें हैं ऐते पटी, कटी, कुटी, सटी हत्यादि ११ डास्ट आसे हैं उन सम्दोंको जिनकर ११ लालका भो अने उस कविको दान दिया ऐसा इसका सातर्य हैं।

9७) इसके बाद, एक दूसरे अवसरमें, राजा राजपाटीमें श्रमणार्थ हायीपर चढ़कर नगरके भीतर जा -रहा था । उस समस किसी मिश्चकको, पृथिवीपर गिरे हुए अन्त-कर्णोको चुनते हुए देखकर बोळा-

६७. अपना पेट भरनेमें भी जो असमर्थ हैं उनके जन्म छेनेसे क्या है ?
 —इस प्रकार उसके पूर्शर्घ कहनेपर;

द्वसमर्थ होकर भी जो परोपकारी नहीं उनके [जन्म टेने ] से भी क्या है ?

६८. 'उनके [जम्म लेने ] से भी क्या है'—यह कहनेपर, द्वानश्र भोजन रेन्द्र ने उसको सी हाथी और एक करोड सुवर्ण सुवार्षे दीं।

उसके इस वचनके अन्तर्में [राजाने कहा]-

६९. हे जननि ! ऐसा पुत्र न जन जो दूसरोंके आगे प्रार्थना किया करें।

उसके इस वाक्यके प्धात् [भिक्षुक बोळा ]—

उसकी भी उदरमें न धारण कर जो दूसरोंकी प्रार्थनाका भंग करें।

जब चसने इस प्रकार कहा तो राजाने पूछा-' तुम कीन हो !' इस पर नगरके प्रधान पुरुपोंने - कहा, कि आपके पहाँ, नाना भाँतिके दिहानोंकी घटामें जब अन्य किसी उपायसे प्रदेश न पा सका तो इसी प्रपक्षसे स्वामिदर्शनकी इच्छा रखनेवाला यह [ व्यक्ति ] राजशेखर है। उसको उचित महादानोंसे पुरस्कृत करनेपर उस राजशेखर ने ये कवितायें पढ़ी--

[ ५४ ] अर्ज्जुंखल मेवोंके नादसे नाचती हुई! स्पृरियोंकी उत्तत आवाजसे आऊल, मेवागमन काल्ये (वर्पोमें) तो जमीनगर भी जल खुविशासे मिल जाया करता है। लेकिन, इस भयानक उच्चता मोर मीन्म कालमें करणासे एक दूसरेकी ओर देखनेवाली और इंचर उचर ताकती हुई मललियोंका यदि तुपालन नहीं करता, तो, रे कासार (तालाव) तेरी किर सारता ही क्या है!

७०. जिस सरोवरमें, मेंइक मरे हुओंको भाँति कोटरोंमें सो गये थे, कळुए पृथ्योमें छिप गये थे, और गाई पंक्रके ऊपर छोटमेरी मछिएयाँ बारंबार मूर्छित हो रही थाँ, उसी तालावमें, अनालके मेचने जतस्कर ऐसा किया कि उसमें कुंमस्थल तक इसे हुए हाथियोंके हुंड शाली थी रहे हैं।

इस प्रकार अकाळ जळद राज शेख रकी यह उक्ति है।

### राजा भोजकी गुजरातपर आक्रमण करनेकी इच्छा।

8८) इसके बाद, किसी साल, वर्षा न होनेके कारण राजा भी म के देशमें (गूज रात में) जन, कण और तृण भी नहीं मिलता या ऐसे कुसमयमें, राजपुरुपेंते भो ज का आना बताया (अर्थात्—भोजराजाने गूज रात पर चढाई करने भी बात चलाई) । यह सुनकर भी म को चिन्ता हुई और उसने अपने दा म र नामक सान्धि-विप्रहिकको आदेश किया कि कुळ दण्ड देकर इस साल भोज को यहाँ जानेसे रोको । उसका यह आदेश पाकर यह यहाँ गया । वह दा म र अर्थत कुरूप समझा जाता था । भो ज ने [ उसका उपहास करनेकी दृष्टिसे ] कहा—

७१. 'हे ब्राक्षण ! तुम्हारे स्वामीके संन्धि-विग्रह पदपर तुम्हारे जैसे कितने दूत हैं ! ' [ उत्तर-] ' यों तो बहुत ही हैं, हे माल्य-नरेश ! पर वे सब गुणको दृष्टिसे तीन प्रकारके हैं—अधम, मध्यम और उत्तम । [ इनमें ] जो जिस गुणके योग्य होता है उसीके अनुसार ये दूत उन उन राज्योंमें भेजे जाते हैं। ' इस प्रकार भीतर ही भीतर हँसते हुए उत्तर देकर उसने धाराके स्तामी (भोज) को प्रसन्न किया।

इस प्रकार उसकी वचन-चातुरीसे राजा चमरुकत हुआ। गुर्जर देश के प्रांते प्रयाण करनेका राजाने नगाड़ा बजवाया । प्रयाणके समय बंदीने यह स्तातीपाठ किया-

- ७२. ची द [का राजा ] समुदकी गोदमें प्रदेश कर रहा है और आन्ध्र [पति ] पर्नतकी खोहमें निवास कर रहा है, कर्णाटका राजा पट बंध (पगडी वॉबना) नहीं करता है, गूर्जर का राजा | निर्द्धरका आश्रय छेता है, चेदि [ नरेश ] अखोंसे म्लान होगया है और राजाओंमें समट समान का न्य क बज कुवडा होगया है-हे भी ज ! तुम्हारे मात्र सेनातनके प्रशास्के भयते ही सभी राजा लोक न्याकुल हो रहे हैं।
- ७३. कों कण कि राजा को नेमें, लाट (नरेश के दरवाजे के पास, कलिक पिति ] ऑगनमें सोबा करते हैं। और को शरू [ नरेश ], दं अभी नया है, भेरे पिता भी इस आसनपर सोबा करते थे । इस प्रकार जिस (भोज ) के कारागढ़ में रातमें प्रत्यर्थियों में स्थानप्रापिके छिपे बठा हुआ पारस्परिक निरोध निरतर बढ़ाता रहता है ।

प्रयाणके लिये नगाई वजवाये जानेके बाद, रातको समस्त राजाओंकी दुर्देशाका दश्य दिखलानेवाला नारक अभिनीत होने लगा । उसमें कोई कुद्र राजा, कारागारके भीतर सामनेकी जमीनपर सुस्य भारसे सीये हुए ते िप राजाको उठाने छगा । तै छिप ने उससे कहा- भ तो यहाँ पुस्त-दर-पुर्वसे बास कर रहा हैं. आप जैसे नये आये हुए राजाकी बातसे अपना पद कैसे छोड़ दूँ है ' राजा सो ज ने हँसकर दा म र से नाटक के रसावतारकी प्रशंसा की । इसपर वह बोळा-' महाराज ! यथपि नाटकमें रसजी जमानट बहुत उत्तम है तथापि इस नटकी, कथानायकके बृतान्तसे जी नितान्त अनिभक्षता है यह थिक है । नयों कि राजा तै लिप दे व सुळीपर चढावे हुए मुख के सिरसे 'पहचाना जाता है। सियाके सामने जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाको उसकी निर्मर्त्तनापर कोष हो। आया और उसी समय उस सामग्रीके साथ, जो दूसरोंके जटाये न जट सकती थी. ति छ इ देशके प्रति प्रयाण किया ।

४९) वाइमें ते लिप देव को बड़ी भारी सेनाके साथ आता हुआ सुनकर भी ज व्याकुल हुआ। उतनेमें उसे दा मर ने [अपने ] राजाके यहाँसे आये हुए एक कल्पित (जाली) आदेशको दिखाकर कहा कि भी म मी चदकर भी गपुरतक आगया है। जलेपर नामक डिडकनेके समान उसकी उस बातसे राजा भी ज खब सचित हो गया। उसने दाम रंसे कहा-इस वर्ष किसी तरंह तुम अपने स्वामीको यहाँ आनेसे रोको। उसने बार बार इस प्रकार दीनताके साथ कहा और उस अपसरके जाननेवाले (दा मर) को हाथीके साथ हथिनी भेंट दी । उनको छैकर वह पश्चन में आया और भी म की परितृष्ट किया।

५०) एक बार, जब वह धर्मशास्त्र सुन रहा था, उस समय अर्जुनका राधा-नेध ( मत्य-नेघ ) सुनकर सोचा कि ' अम्यास करनेपर क्या कठिन है। ' फिर बराबर अम्यास करके उस निश्वनिदित राधानेयको उसने शिद किया और उसकी सारे नगरमासियोंको जान हो इसिटिये नगरमें खुद समाप्रट कराई। किन्तु एक तेटा और एक दर्जी के, अवजासे उत्सवसें कोई भाग न ' छेने पर, रजाको उसकी खबर की गई। तैटीने चंदताला (जपी छन) पर खड़े होकर, पृत्तीपर रहेले हुए संकड़े मुँहर्क पात्रमें तेल ढालकर, और दर्जीन पृष्टीपर खड़े होकर उपरकी और उठावे सूतके दोरेके अममागको क्षाकाससे पहली हुई सुईके छेदमें

पिरो कर अपने अम्यास-कौशलका परिचय दिया; और फिर राजासे 'यदि शक्ति है तो स्वामी भी ऐसा कर दिखावें 'ऐसा कह कर राजाका गर्व खंडित किया। [ उसका राघावेघ करना देखकर किसो कविने उसकी प्रशंसाम कहा-]

७५. हे भोजराज 1 केंने राधा-नेध ( मत्स्य-नेध ) का कारण जान लिया । वह यह कि आप 'धारा 'के विपरात ( राधा ) को नहीं सह सकते ।

५१) बिद्वानों द्वारा इस प्रकार प्रशंसित होते हुए उस राजाको नया नगर बसानेकी इच्छा हुई तो उसने पटद बजवाया। उस समय घारा नामक एक वेश्या अपने अग्निवेता छ नामक पतिके साथ छंका जाकर उस नगरका निवेदा देख आई; और उसने यह कह कर कि नगरको मेरा नाम देना, छंका का प्रतिच्छन्द पट (मानचित्र) राजाको दिया। उसके अनुसार राजाने नई घारा नगरी बसाई।

### दिगंबर कुलंबन्द्रको सेनापति बनाना ।

५२) किसी दिन वह राजा सार्वकालके सर्वावसरके बाद अपने नगरके भीतर [ वीरचर्या निमित्त ] वम रहा था, उसी समय किसी दिगंबर विदानको यह किन्ता पढ़ते सुना—

७५. न किसी सुमटके सिरपर खड़के दुक्के किये, न तेजी घोड़ोंपर सवारी ही की और न गौरा

क्षित्रो गर्छ ही छगाई-इस प्रकार निर्ध्यक ही यह नव्न जन्म चळा गया । राजाने सबेरे ही उसको बुछाकर और यह संकेत सुनाकर उसकी शक्ति पूंछी । यह बोळा—

७६. महाराज ! समणीय दीपोस्तयके बीत जानेपर जब हाधियोंका मद झरने लगेगा तो में अपनी शक्ति गाँड देश के साथ सारे दक्षिणाय यको एक छत्र नीचे कर दूँगा।

उसने अपना ऐसा पौरुप प्रकट किया तो राजाने उसे [योग्य समझकर] सेनापतिके पद पर अभिपिक किया।

कुलचन्द्रकी गुजरातपर चढ़ाई।

५३) इशर, जब राजा भीम सिन्धु देशकी विजयमें रुक्ता हुआ था, [वह दिगम्यर] सारे सामन्तांके साथ, लग हिल्ल पुर पर आक्रमण करके, उसके धवलगृहके घटिकाद्वार पर, कौक्यिं वयन कराकर उसने जयपत्र प्रहण किया। तबसे सर्वत्र "जुल्लचन्दने छूट लिया" [कहावत ] की प्रसिद्धि हुई। वह जयपत्र लेकर माल वामें गया। श्रीभोज को यह बुत्तान्त विदित किया। 'तुमने यहाँपर कोषण क्यों नहीं बोया! [इन कौटियोंक बोनेसे तो यह स्चित होता है कि भविष्यमें ] यहाँसे कर वस्ल होकर मूर्जर देश में जायगा। ' दुस प्रकार सरश्वती-कण्डा मरण श्रीभोज ने ध्यह मविष्यवचन ] कहा।

५४) एक बार चन्द्रातप (चाँदनी ) में श्री मो ज राजा बैठे थे, पास-ही-में कुछ चंद्र भी था। पूर्ण

चन्द्रमण्डलको देखकर [ पुन: पुन: उसकी ओर देखकर ] ( राजाने ) यह पढ़ा-

७७. जिन छोगोंको रात प्रियाके साथ क्षणमस्क्री तरह ब्यतीत हो जाती है, चन्द्रमा उनके छिये शीतल है; फिन्तु निरिह्मोंके लिये तो उल्काके समान सन्तापदायक है।

वस कविके इस प्रकार आधा कहनेपर कुछ चन्द्र बोळा-

हम छोगोंके न तो पिया है और न बिरह है, इसिटये दोनों ओरसे श्रट होनेंके कारण हमको तो चंद्रमा दर्पणकी आकृतिके समान दिखाई देता है। न वह उच्च है, न शीतल । ऐसा कहनेके अनन्तर ही उसे पुरस्कार्स एक बेश्या प्रदान को गई। ५५) इसके बाद, माळव मण्डळ से जीटे हुए दागर नामक सिंध-निमिहकने भोज की सभाका वर्णन करते हुए [ सबको ] बहुत आखर्य उराज किया। 'और वहाँ ( माळवा में ) जाकर भीम के अजीकिक रूप सील्ट्रिके वर्णनसे भोज को उसे देखनेकी इच्छासे चाळक कर दिया। भोज ने अनुरोध किया कि 'या तो भीम को पहाँ छे आओ या मुखे वहाँ छे चाळो। ' इसी तरह भोज की सभाको देखनेके छिये उत्काष्टित मीमने भी वेला ही अनुरोध किया। किसी एक समय, उपार्थोंका जाननेवाळा वह (दागर) बहुतसा उपहार छेकर भीम को, जो जिनका वेश घारण किए हुए या और हायमें पानदान छिये था, साय छेकर भोज की सभामें गया। प्रणाम करते हुए उस दामर को [ भोज ने भीम की डे आनेके हुचल्तके बारेमें पूछा। उसने कहा— 'हमारे खामी रतत्त्व हैं, जो काम उनको अभिमत नहीं उसे अबदेश्ती कीन करा सकता है। महाराजको ऐसी दुराशा सर्पण धारण नहीं करना चाहिये। ' भोज मे भीम की उन्न, वर्ण और आजति पूँछ। दाम र मे समामें बैठे हुए छोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करनेने छहन करने करने करा, क्या स्वाम धारण नहीं करना चाहिये। ' भोज मे भीम की उन्न, वर्ण और आजति पूँछ। दाम र मे समामें बैठे हुए छोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करनेने छहन करने करने करने का स्वाम हिन्दी हुए छोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करने वेश हो स्वाम हिन्दी हुए छोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करने अभिमत नहीं छुट करके करने कहा—स्वामिन !

७८. वही आवृत्ति है, यही वर्ण है, यही खप और यही अनस्या है | इसमें और उस राजामें अन्तर देवट काच और मणिके समान है |

इस मकार उसके बतानेपर, चतुर चक्रमसी भो ज में सामुद्रिक शाखको आधारपर, उस निश्च हिट-बाड़ेकी ही राजा [ यही भीम है ऐसा ] जब समग्र छिया तो, उपायन वस्तुयें ( भेंटकी चीजें ) छे आनेके बहानेसे उस सिच-निप्तिक ( दामर ) ने उसे बहार भेज दिया । जब ये ( भेंटकी ) चीजें आ गई तो हाम में उनका ग्रुप यणैन करके तथा इयर उथरकी बातें करके बहुत-सा काठ काट दिया । जब राजाने कहा कि— यह पान-दानवाटा अभीतक क्यों नहीं आया, कितना निष्म करता है ! 'तो उस ( दामर ) ने बतापा कि नहीं तो भी मणा। तब राजा उसके पींड सैन्य दीडाने टमा। इसपर दाम र ने कहा— बारह बारह योजनके अन्तरपर सामरीके घोड़े लाई हैं, और एक घड़ोंने योजनमर चर्टी जाने नाली करिमीं ( सॉडनियों ) रहा हैं ! इन सारी सामित्रमें से भी म प्रतिक्षण बहुत-सी भूमि तै करता चला जा रहा है ! आप उसे कैसे प्रकड़ों ! ' उसके ऐसा बतानेपर वह देर तक हाय सठता रहा ।

[ यहांपर Pb संतक आदर्शमें निम्नदिखित प्रमरण अधिक पापे जाते है-]

इमके बाद एक दूसरे साल, भी म उस बाम र को मालव म वह उमें भेजनेकी इन्छांसे वार्ता आदि ( नीति ) सिना रहा था। बाम र ने उदकर वक हाह िया। तब भी म ने [ कारण ] पूठा। यह बोला—आपका मिनाया हुआ यही छोड़ जाता हूँ। विषे ति वहाँ जाकर तो मुझे स्वय ही अवसरीचित बोला एहेगा। दूसरेका सिनाया हुआ यही छोड़ जाता हूँ। इसके बाद राजाने उसकी अरसरीचित चातुरा जानके लिये, मरूज मारसे, सीनेक हिन्देको राखसे मरकर असके हायमें, यह सिसाकर भेट देनेको कहा कि मी ज को सम्प्रति सिरा अन्यक कहीं भी इसे न खोलना । उसे छेकर यह माल वामें गया। मी ज की समार्त जाकर उस हिन्देको, को अनेक रेशमी वकीसे वेदित था, राजाको मेट किया । जब राजाने उसे खोलकर देखा तो मीतर राखका पुत्र था। तब राजाने कहा—' जजी, यह कैसी मेंट है है ' हाविर जगब डाम र ने तत्काल कहा—' महाराज श्रीमीम ने एक कोटिहोम कराया है । यह उसीकी रक्षा है, जो तीर्थके समान पत्रि में है। मिति-सम्बन्धसे उन्होंने लाको भेंद्र दिन्या है। ' उसके ऐसा कहनेपर, राजाने प्रसन्न हिकर, अपने हारास में भी मह थोड़ी घोड़ों हो। उन सर्वोने उसके तिल्क करके उसका बंदन किया। अन्त उपने में देखें वह से में मी मह साल में मी वह साम से मी गई। बादने वह बाम र सम्मानित होकर, प्रति-मान्यतके (भेंटके बदले में देखें में उसके भी सह साम में ना सकी में वह के में सह से मी वह की पूजा ( मानाना) की।

पुनः एक बार भी म के चित्तमें कीतुक उत्पन हुआ। उसने एक बार हा म र के हाथमें अपनी मुझसे मुद्रित ( मुहर किया हुआ) छेल दिया और हाथमें भेंटकी सामग्री देकर उसे मा छवा में भेजा। उसने उस मेंटके साय बहु छेल राजाको दिया। राजाने जब खोळकर पढ़ा तो, उसमें छिला मिळा कि—' इसको आप शीग्र ही मार डाळिये।' तब विसम्यके साथ राजाने पूछा—' अजी, इसमें यह क्या छिला है !' तब उस शीम्बुहिन कहा—' महाराज । मेरी जन्म-पत्रिकामें ऐसा छिला है कि जहाँ इसका रुविय पढ़ी गायहाँ बारह वर्षतक अकाळ पढ़ेगा। यहाँ जानकर मी म ने, स्वदेशके बिनाशसे मीत होकर, मुख्ज छेलके साथ मुझे यहाँ भेजा है। ऐसी स्थित होनेयर आप अपनी रुविक अनुसार करें।' उसके ऐसा कहनेपर राजाने कहा—' में अपने देशकी प्रजाको अन्यमें महीं पड़ने दूँगा।' इसके बाद, उसका सम्मान करके उसे विदा किया और बहु अपने देशके अन्य स्वरूपे स्थान हिसके होतर भीम उसे बहुत मानने छगा।

# महाकवि माधका प्रवन्धं।

५६) इसके बाद, भी जराजा माघ पंडितकी विद्वत्ता और पुण्यवत्ताको सदा छनकर उसके दर्शनकी उत्प्रकतासे अनेक राजकीय आदेश बारंबार भेजकर श्री मा छ न ग र से जाड़ेके दिनोंमें उसे अपने यहाँ युवाया और अस्पन्त मानके साथ भोजनादिसे उसका सत्कार किया । बादमें राजोचित विनोदोंको दिखाकर और रातकी आरतीके अनन्तर अपने निकट ही, अपने ही समान पर्छेंगपर सुलाकर, उसे अपनी निजकी शीतरक्षिका ( रजाई, विहास ) ओहने दी और चिरकाल तक उसके साथ प्रिय आलाप करता हुआ सखपर्वक सी गया । प्रातःकाल मागल्य तुर्यनादसे जब राजाको नींद खुली तो माध पंडितने घर जानेके छिपे किदा माँगी। राजाने विश्नित होकर अगछे दिनके भोजन आध्छादन आदिके सुखकी बात पूँछी । उसने कहा-' उस अच्छे-युरे अन्न ती बात रहने दीजिये। 'और कहा कि शीतरक्षिका (रजाई) के मारसे तो में थक-सा गया। राजाने अपना खेद प्रकट करते हुए किसी प्रकार जानेकी अनुज्ञा दी। नगरके उपवन तक राजाने अनुगमन किया। माघ पंडिसने भी कहा कि कभी अपने आगमनसे मझे भी धन्य करें। राजाकी अनुजा छेकर माघ पंडित अपने स्थानपर आया । उसके बाद, कितनेएक दिन बीतनेपर, मोज राजा उसकी विमय-सामग्री देखनेकी इच्छासे श्री मा छ न गर में आया। मा घ पांडेतके द्वारा अगवानी आदिसे यथोचित सकृत होकर यह अपनी सारी सेनाके साथ उसकी धुइसालमें ठहरा। किर यह अकेला माच पंडितके महलमें गया। वहाँ उसने सन्नारक भूमि ( महलमें जानेकी पगर्डडी ) की काचसे जड़ी देखी। स्नान करनेके बाद, देवताके मन्दिरमें जानेपर, वहाँकी भूमिपर, जिसका गच मरकतका था, शैवाल सहित जलकी भ्रान्तिसे घोती और चादरको समेटने लगा । तत्र पुरोहितने उसका स्वरूप बतलाया । फिर देवताकी पूजा की । बाद जब मंत्रायसर समाप्त हुआ ती, भोजनके समय आई हुई रसोईका आस्त्रादन किया । ऐसे ऐसे न्यंजनों और फलोंको देखकर, जो उस काल और उस देशमें नहीं होते थे, वह चित्तमें बड़ा विभित्त हुआ। संस्कार किये दूध और चायलकी बनी रसोईका आकण्ठ उपमान किया। भोजनके अन्तमें चन्द्रशालपर आरोहण करके, ऐसे ऐसे कान्यों, कथाओं, इतिहासों और नाटकोंको देखा, जिन्हें इसके पहुछे कहीं देखा या सूना नहीं या। जाइके दिनोंमें भी उसे अकरमात् उप प्रीप्प ऋतु हो जानेकी भान्ति हुई। उस समय सफेर स्वच्छ वस पहने हाथमें तालके पंखे लिये हुए अनुचर उसको हुन करने छगे । उसके बखोंमें सुन्दर चन्दन छेन दिया गया और उस रातको उसने क्षणभरकी नांई बिता दी । सबेरे जब शंखके नाइसे राजाकी नींद ख़ुळी तो माध पांडितने शीतकालमें अक-'स्नात् कैसे प्रोप्म ऋतु उत्तर आई इसका स्वरूप समझाया | इस प्रकार प्रत्येक क्षण विस्मयके साथ विताता हुआ

कुछ दिनोंतक वहाँ रहकर } स्वदेशगमनके िये निहा गाँगते हुए, अपने बनाये हुए नये मो जस्वामी मंन्दिर के पुण्यको उसे समर्पण कर मालय मण्डलको प्रस्थान किया।

मा य के जन्म दिनके समय उसके पिताने ज्योतिपीक्षे जन्मपत्र बनगाया था। ज्योतिपीने उसमें छिखा या कि पहुंचे तो इसको समुद्धि बराबर बहुतो जायगी; पर बाद में ( पिछ्टां अवस्थामें ) विभव नष्ट हो जायगा और बराजों मुद्ध स्वत्र स्वत्र वहुतो जायगी। या घ के पिताने अपने जिमव-सम्मासी महदराका नितारण करना बाहा और यह सोचा कि मनुष्यको आयु यदि सो वर्ष की होगी, तो ३६ हजार दिन होंगे, पृक्ष नया कोश (विधि) बनना कर उसमें उतनी ही संस्थाक मणियों का हार बनाकर रख दिया। इससे सेकडों गुनी अभिक और समुद्धि रख दी। उक्केक नाम मा घ रखा और अपने कुछके उचित शिक्षा दे कर और यह समक्ष कर कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, वह मर गया। इसके बाद मा च कुरेसकी माँगति जिलाङ समुद्धि सेकडों गुनी अभिक और समुद्धि रख दी। उक्केक नाम मा घ रखा और अपने के जन्म मा च कुरेसकी माँगति जिलाङ समुद्धि-सावाय पाकर, विद्वानों की उनकी इच्छाके अनुसार घन देने ज्या। अपिमित दानसे अभि-जनों को इतार्य करते हुए और मोगाकी जिल्लेक विद्वानों आमानुष्र मी माँगति दिखाते हुए, उसने ' शि द्धा पा छव घ ' नामक महा काच्य बनाया। इम काच्यको देखकर पान सा गया, तो उक्का हो गया। अन्तर्मे पुण्यन्थ्य होने पर वम उसको मा सा व न पा से पा सा पा मा पा में वा सा सा सा व के पास प्रमुख के साथ उस कर कर भेना कि सार पा पा न गरी में वास हो सा व के पास प्रमुख की यह कह कर भेना कि सार प्रमुख के कर दि से दंशक रख कर, राजाके पाससी कुछ भी इत्य छे आओ। स्वय उसकी आशामि विरक्षाङ तक विश्व रहा। उसर मोज ने उसकी जीकी वह असका देखका संभक्त साय उस पुरक्तको हाथमें विया और समकी प्रकार। निकार कर उसी बीज वी उसमें प्रकार हो यह कावर देखा—

৩৭. ब्रमुदयनकी शोभा नष्ट हो गई और कमलोका समृद्ध शोभानित हो उठा। युक्त हर्प छोड़ रहा है और चक्रमा प्रीतिमान् हो रहा है। सूर्यका उदय हो रहा है और चन्द्रमाका अस्त! अहो, दुर्भाग्यके खेलका परिणाम 'हो ' निचिन है !

काल्यका मर्भ समझकर मो ज ने कहा कि सारे प्रथकों तो बात है। क्या है, इसी एक काल्यके मूल्यके लिये पूछी मी दे दी जाप तो वह कम है। समगोचित और अनुष्ठिट इस ' हों ' शब्दके पारितोपिकमें हो एक छाल रुपये दे कर राजाने उसे बिदा किया। यह भी जब बहाँसे चंडो तो याचकोंने उसे भा व की पत्नी समझकर मौंगना छुक किया। इस पर उसने वह साय-का-सारा परितोपिक उन याचकोंको दे दिया और स्वयं जयों की खों पर छोटी। उसने अपने पितरो, विसके चरनमें कुठ स्वन हो आई थी, उस इत्तारको कह सुनाया। इस पर माय ने यह कह कर उसकी प्रशंसा की कि-' तुम्हीं मेरी शारिर-भारिणों कीर्सि हो।' इसी समय एक मिश्चकरों, जो उमके घरपर आया था, देखा। यसमें उस देने योग्य कुठ न देखकर दु:खके शाय वह मोछा-

- ८०. धनती है नहीं, और दुसहा मी मुझे छोड़नी नहीं। मैं सुरी तरहसे बहुका हुआ हूँ और फिर स्पागसे हाथ मी संतुचित नहीं होता। याचना करता उपुताका कारण है और आत्महरपार्में पाप उगता है। अतः है प्राणों! तुम स्वयं चछे जाओ तो अच्छा है। मुझे इस प्रकार दुःख देनेसे क्या होगा!।
  - ८२. दिहिस आगका जो सन्ताप था वह तो सन्तोप रूपी जटमे शान्त हो गया; किन्तु दीन जनोंकी आशा भग करनेमें जो [ सन्ताप ] पैदा हुआ है, यह किससे शान्त होगा ! ।
  - ८२. अकाटमें मिक्षा वहाँ है बुरी अवस्थावाटोंको ऋण क्योंकर मिले है मूनवानियोंसे काम क्योंकर

करार्रे [ । और दान भी कौन देना चाहे, जब िक ] बिना दान दिये यह सूर्य भी अस्त हो जाता है । [ इस प्रकार ] हे गृहिणां ! कहाँ जारों, और क्या करें ! जीवन-विधि वहा गहन हो गया है । ८३. भूसने कातर वना हुआ यह पिथेक मेरा घर पूछते पूछते कहीं से आया है, सो हे गृहिणां ! क्या कुछ है कि इस बुभुक्षितको खानेको दिया जाय ! "-पर्लीन वचनसे तो ' है ' यह कहा छेकिन किर ' नहीं है ' यह वात विना अक्षरोंके ही, चंचल नेत्रोंसे टफकते हुए वहें वहे अध्रविन्द्रओंसे

स्चित की।
८८. हे प्राणीं! जाओ, याचकके न्यर्थ छोट जानेपर, चले जाओ; बादको भी तो जाना है; 'फिर ऐसा
साधी कहाँ जिल्हेग हैं?

'फिर ऐसा साथी कहाँ मिलेगा ?'-इस वाक्यके बोलते ही माघ पण्डितकी मृत्यु हो गई ! प्रातःकाल राजा भोजने उस इत्तान्तको सुनकर, श्रीमालनगर में [अनेक ] धनवान् सजातियोंके रहते हुए भी, जो ऐसा पुरुष-रान क्षुधापीक्षित हो कर मर गया, इसलिये उसने उस जातिका नाम 'भिक्षमाल' \* ऐसा राज दिया।

इस मकार श्री माघपण्डितका प्रश्नेच समाप्त हुआ !

### महाकवि धनपालका प्रवन्ध ।

५७) प्राचीन कालमें, समृद्धिसे विवाल ऐसी वि शाला (उल्लिप नी) नामक नगरीमें, मध्य दे शोरप न सं का स्य गोत्रीय सर्व दे व नामक आक्षण वास करता था। जैनदर्शनके संसर्गसे उसका विध्याल प्राय: शान्त हो गया था। उसके दो प्रुत्र ये जिनका नाम धन पाल और शोभ न था। एक बार श्री न ई मान स्ति वहाँ आये। गुणानुरागी होनेके कारण सर्व दे व ने उन्हें अपने उपाश्रयमें निवास कराया और अपनी अनन्य मिकिने उन्हें सन्तुष्ट किया। उन्हें 'सर्व इ-पुत्र क' जानकर गुम हो जाने ग्रली पूर्वजोंकी निधिक बारें में पूँछा। उन्होंने बचन-चातुरीसे पुत्रोंका आपा हिस्सा माँग लिया। संक्षेत बतानेपर निष्यि मिली। जब यह आधा मान देने लगा तो स्तिने दोनों पुत्रोंकी आधा हिस्सा माँगा। घन पाल ने, जिसकी मिति मिथ्यात्यके कारण अन्यी हो रही। थी, जैन मार्गकी निन्दा करते हुए नहीं कर दो। छोटे लक्ष्मे शोभ न पर कृपा-परायण हो कर, विताने उसको देना नहीं चाहा। इपयर उसने अपनी प्रतिक्षक भेग होनेके पायको तीर्थमें जाकर प्रकालन करना निश्चित किया। पितृमक्त शोभ न नामक छोटे पुत्रने, उसको उस आवहसे इच्छासे, तीर्थमें क्रात्र कर समर विद्याओंका अध्ययन करने लिखत किया। पितृमक्त शोभ न सहण कर स्वर्थ गुरुका, अनुसरण किया। धन पाल समस्त विद्याओंका अध्ययन करने शोभी जे के प्रसाद-प्राय समस्त पित्र निप्य क्षाराम निर्मेद कराया। किर समस्त विद्याओंका अध्ययन करने शोभी जे के प्रसाद-प्राय समस्त पित्र विराय क्षार शिव्य क्षार कर स्वर्थ गुरुका अनुसर क्षार कराय होति स्वराय किर विद्याओं के स्वर्शन स्वर्थ स्वर्थ क्षार कराय निर्मेद कराया।

<sup>\*</sup> श्री माल नगरका दूषरा नाम भिछा याल भी है। वर्तमानमें वह स्थान इसी नाससे प्रविद्ध है। श्री माली जातिक देख और ब्राह्मण इक इसी रमानंधि निर्दे के दूस है। श्री मालवा दूसरा नाम भिछा माल एका कब और क्षेत्र पर इसना अन्य कोई दूसरा पिंतराधिक उद्देश्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। महाकृति माथ की जमभूनि श्री माल यो यह वात कि वेके करना स्थि है दिह होते हैं, वेनिन उत्तर्शने मृत्युना जो वह क्षण मुतान्त भेरुद्धात्तापेने लिला है और अभी प्रचान परने मोज राजोंने श्री माल वा नाम भिछा माल रल दिया यह जो उद्देश्य किया है, इसनी स्थ्याके लिये और कोई सुनिश्चित प्रमाण ज्यतक प्राप्त न हो तबतक इस वपनाने एक कियदलीके रूपो ही समस्ता चाहिए। माथ और भो वनी समन्तिनता भी सन्दर्भ है। और कम से कम यह मोज प्रविद्ध मालती पर प्यार बची या या मोज तो विश्वी तह सम्भिन्त नहीं है। इसनी विरोध विश्वना अनाले ऐतिहासिक अवलेक्टममाले सहस्ते की जायगी।

कुछ दिनोंतक वहाँ रहकर ] स्वदेशमानके लिये विदार्मांगते हुए, अपने बनाये हुए नये भोजस्यामी अन्दिर के पुण्यको उसे समर्पण कर माठव मण्डलको प्रस्थान किया।

माद्य के जन्म दिनके समय उसके पिताने ज्योतिपीस जन्मपत्र बननाया था। व्योतिपीने उसमें िख्खा था कि पहले तो इसका समृद्धि बराबर बढ़ती जायगा; पर बाद में (पिल्ली अवस्थामें) निमय नष्ट हो जायगा और चरणोंने बुछ स्वन आ कर मृत्यु प्राप्त करेगा। माध के पिताने अपने निमव-सम्भारते प्रश्चरक्षाका निस्तरण करना चाहा और यह सोचा कि मनुष्यको आयु यदि सी वर्ष को होगी, तो वह हजार दिन होंगे, एक नथा कोश (निधि) बनना कर उसमें उत्तनी ही सल्याके मणियोंका हार बमाकर रख दिया। इससे सैकडों ग्रामी अनिक और समृद्धि रख हो। उड़के जान माध पर खा और अपने कुछके उचित शिक्षा दे कर और यह समझ कर कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, वह मर गया। इसके बाद माध कुवरकी माँति निशाल समृद्धि-साम्राध्य पाकर, निश्चलोंकों उनकी इन्जाके अनुसार धन देने ज्या। अपरिक्षित दानसे आर्थ-जनोंको इतार्थं करते हुए और भोगकी निथिन्ने अपनेको अमानुपत्री भाँति दिखाते हुए, उसने विश्व पाकर होने पर जब उसका चन्न वाता। इस काध्यको देखकर रिहानोंका मत चमरकत हो गया। अन्तन पुण्य-स्वद होने पर जब उसका चन्न काण हो गया और निष्यक कर, अपनी खाके साथ माछक हो गया और निष्यक कर, अपनी खाके साथ माछक हो गया और निष्य कर साथ गया। के साथ स्वत्य कर कर से मा कि साथ प्रत्य हो हो बंधक एक कर, राजो के पास लुक भी हुल्य छे आओ। स्वय उसकी आशामें चिरकाठ तक विद्य । उसर भी ज ने उसकी खाको वह अस्था देखकर साथनके साथ उस प्रस्तको हाथमें किया और समक्ष हाला निकाल कर उसे लील तो उसमें प्रत्य हो यह काल देखा-

৩৭. बुमुदरनकी शोमा लए हो गई और कमठोंका समृद्ध शोमानित हो उठा । पुक हर्प छोड़ रहा है आर चक्रमा प्रीतिमान् हो रहा है । सूर्यका उदय हो रहा है और चन्द्रमाका अस्त ! अहो, हुर्मीग्यके खेळमा परिणाम 'हो ' भिनित्र है !

काध्यका ममें समझकर मो न ने कहा कि सारे प्रंथकी तो बात ही क्या है, इसी एक काध्यके मूल्यके छिये पूर्वी भी दे दी जाय तो यह कम है। समयोचित और अञ्चल्छिट इस ' ही ' रास्त्के पारितोषिकमें ही एक छाल रुपरे दे कर राजाने उसे बिदा किया। वह भी जब बढ़ोंस चला तो वाचकोंने उसे साब की एकी समझकर मौंतना हाक किया। इस पर उसने यह साय-का-सारा ■ रितोषिक उन याचकोंको दे दिया और स्रयं ज्यों की खों पर लेशिंग इस सम्बन्ध कर सम्बन्ध के सिदा और स्रयं ज्यों की खों पर लेशिं। इसने अपने पतिथों, जिससे चरनें कुछ स्वतन हो आई थी, उस हक्तान्तकों कह सुनाया। इस पर माम ने यह कह कर उसकी प्रशास की कि-' तुम्ही मेरी शरीर-धारिजों कीर्ति हो। ' इसी समय एक मिझुकको, जो उसके धरपर आया था, देखा। यामें उसे देने योग्य कुछ न देखकर दु:खके साथ यह बोछा-

- ८०, धनतो है नहीं, और दुराशा भी मुखे छोड़नी नहीं । मैं बुरी तरहसे बहका हुआ हूँ और फिर त्यामसे हाथ भी सबुचित नहीं होता। याचना करना उचुताक्ष कारण है और आत्महत्यामें पाप जगता है। अतः हे प्राणों! तुम स्वय चर्छ जाओ तो अच्छा है। मुझे इस प्रकार दुःख देनेसे स्था होगा!।
- ८९. रास्टिम्सी आगका जो सन्ताप था बह तो सन्तोप रूपी जरूने शान्त हो गया; किन्तु दीन जनींकी आशा भग करनेसे जो [ सन्ताप ] पैदा हुआ है, यह िससे शान्त होगा ? ।
- ८२. अकालमें मिश्रा वहाँ । बुरी अपस्थाप्रालोंकी ऋण क्योंकर मिले ! भू स्वादियोंसे काम क्योंकर

- ८८. अहां ! केने इसके पहले मोहवका, कुल ही नगरिके स्वामीका, जो शरीर दे देनेपर मी दुर्महणीय है, मित-दान करते हुए अनुसरण किया । इस समय ऐसे त्रिशुवनपति प्रशु मिल गये हैं जो सुद्धि-ही-से आराप्य हैं और जो अपना पद तक दे देनेबाले हैं । इससे उन प्राचीन दिनोंका बीत जाना खेदकारक हो रहा है ।
- ८९. हे जिन ! जनतक मैंने तुम्हारा धर्म नहीं जाना या तवतक समझता था कि धर्म सब कहीं है । जिस प्रकार धर्युके विपसे जातुर रोगीको सब कुछ सोना (पीतवर्ण) ही सोना दिखाई देता है; और कोई सफेद यस्त नजर नहीं आती ।
- [ ५५ ] घासके जैसे निःसार ऐसे उन करोडों रहेकोंको पट ठेनेसे भी क्या है।ता है--यदि जिससे 'दसरेको पीडा न पहुँचाना ' इतना भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता।
- [ ५६ ] देशका मालिक [ तुष्ट होनेसे ] एक गाँव देता है, गाँवका मालिक एक खेत देता है, खेतका मालिक शिरिवका ( सेम, छीमी ) देता है परन्तु सार्व ( सर्वज्ञ जिन ) तो सन्तुष्ट होकर अपनी सारी सम्पद दे देते हैं !

इत्यादि वाक्योंको पद्मा करता । एक दिन राजाने धन पाल को शिकार खेलनेके िय साथ ले खिया । \*राजाने जब बाणसे मृगको विद्व किया, तो उसके वर्णनको छिये धन पाल को मुँदकी और देखा । \*पन पाल बोला—

- इस सरहका पैहिप रसातको चळा जाय । यह कुनीति है कि निर्दोप और शरणागतको मारा जाय । बक्कन् भी जब दुर्बकको मारते हैं तो यह बढे दुःखकी बात है । बगत् अराजक हो गया । उसको इस निर्मर्सनासे कुछ राजाके यह पुळने पर कि यह क्या बात है—
- ९१. प्राणान्तके समय यदि तुण मक्षण करना चाहे तो वैशे भी छोड दिया जाता है, तो फिर यें पदा तो सदा तुण ही खाकर जीते रहते हैं, ये क्यों मारे जाते हैं ?

राजाको इस कथनले अञ्चल कृषा उत्पन्न हुई । उसने धनुष्य बाणके भंगको स्वीकार करके आजीवनके छिये मृगयाका त्याग किया । बादमें नगरको और जब छोट रहा था, तो यञ्चमण्डपके यहार्त्तममें बँधे हुए स्त्राग (बक्ते) की दीन वानी सुनकर पूँछा कि यह पद्म क्या कह रहा है! इस पर ध न पा छ ने कहा कि सुनिये—

९२. हे साथो, में स्मीफलको भोगनेके लिये तृषित नहीं हूँ, मेंने [ इसके लिये ] तुमसे प्रार्थना भी नहीं की । में तो केवल तृण खाकर ही सन्तुष्ट हूँ | तुम्हारा यह कार्य उचित नहीं । यदि तुम्हारे हारा यहमें मारे हुए प्राणी निश्चय ही स्वर्गगांभी होते हैं तो फिर अपने माता-पिता और पुत्रों तथा बाँधयोंका यह ( बल्दान ) क्यों नहीं करते !

उसके इस वाक्यके अनन्तर जब राजाने कहा कि इसका क्या मतलब है है तो फिर बोला कि-

- ९३. यूप ( यञ्च ) करके, पञ्च मारकर और ख्नका कीचड़ बना कर यदि स्वर्गेमें जाया जाता है तो फिर नरकमें कैसे जाया जाता है ?
- ९२. सनातन यह तो उसका नाम है, जिसमें सन्य तो यूए हो, तप ही अग्नि हो और अपने सारे कर्म समिष् (काष्ट ) हो, अहिंसाको [ उसमें ] आहति दी जाय ।

इस प्रकार, यु क संवाद में कहे हुए वचनोंको उसने राजाके सामने पढ़ा और [ ब्राह्मणोंको ] जो हिंसा-शासके उपदेशक और हिस्त-प्रकृति दें, ब्रह्मस्यमें राखस बताते हुए, राजाको अर्हद्वर्म ( जैन धर्म ) की ओर प्रवृत्त किया। उस देशके उपासकोंद्रास अस्पन्त अन्पर्यनाके साथ ग्रुहको बुछानेपर, सकल शाकरूपी समुद्रके पास्को प्राप्त पर हेने ग्राह्म वह शो भ न नामक तपो ग्रन गुहसे अनुमति छेकर यहाँ आया। घर में प्रवेश करते हीं, पिडत धन पाल ने, जो उस समय राजपाटिकामें [राजाको साथ] अमणमें जा रहा था, उसे न पहचान कर, उपहासके साथ फहा—'पर्यपर्त्त (गर्पके समान दाँतग्राहे) भदत्त, तुमको नमस्कार!' इसपर उसते—'किमेक द्रुपण समान गुँहवाले मित्र, तुम्हें सुख हो!' [इस प्रकार प्रशुपर दिया। तब चमक्त होनेकर भ न पाल ने सीचा कि मैंने तो दिछानों भी 'नमस्ते 'कहा और इसने तो 'मित्र गुम्हें सुख हो'] इतना ही कहकर अपनी वचन-चातुरोसे मुझे जीव लिया। फिर धन पाल के यह कहने पर कि 'आप किसके अतिथि हैं हैं शो मन मुनि ने कहा—'हमें आपके हो जीतिय समित्रीये।' उसकी यह वह मुनकर एक निमायोंक साथ उन्हें अपने स्थानपर भेजकर वहीं ठहराया। स्वय चर आजर पन पाल ने प्रिय आलापोंके साथ उस स्थादकर भेजनसे लिये निमात्रित किया। पर ने तथिय आलापोंके साथ उस स्थादिकर भेजनसे लिये निमात्रित किया। पर ने तथिय आलापोंके साथ उस स्थादिकर भेजनसे लिये निमात्रित किया। पर ने तथिय आलापोंके तथा उसके उन्होंने निषेत्र किया। आमहपूर्वक जन उसने दोपका हेतु पूँला तो कहा—

८५. मुनि ग्लेच्छ कुळसे भा मधुकरी इत्तिके साथ भिक्षा प्रहण करे परन्तु बृहस्पतिके समान श्रेष्ठ कुळीन एक ही गृहस्थलें वहाँ भीजन न करे ।

इसी प्रकार जैन धर्मके दश वैका छिक सूत्रमें मी कथन है—

८६. जो अमिश्रित हो कर मधुकरके समान नाता स्थानोंमेंसे अपना भिक्षापिण्ड प्राप्त करते हैं उन्हीं सुद्ध और दान्त मिश्चओंको साधु कहते हैं।

इस मकार, अपने धर्मसे और परममेंसे भी, निपिद्ध ऐसे किएत आहारको त्याग करके हम लोग छुद्ध भीजन महण करते हैं। धन पाल उनके चरिजसे चिकत होकर चुप हो रहा और उठकर स्नाम करने चला गया। स्नातके आरममें ही अचानक मिक्षाचर्याके लिये आरे हुए उन दो मुनियोंको देखा। उन्हें एक मासणी, रसोई तैमार न होनेक कारण, रही देने लगी। मुनियोंने पूँछा कि दही कितने दिनोका है ! तो धन पाल ने मजाक करते हुए कहा 'क्या कोई उसमें कीई पर गये हैं ! मह्याने जजाब दिया कि इसे दो दिन बीत चुके हैं। यह मुक्तर दोनों मुनि बोले कि कि हमें कोई पर गये हैं। यह मुक्तर दोनों मुनि बोले कि नहीं कोई पर गये हैं। यह मुक्तर पाल उसे देखनेक लिये स्नामसे 'उठकर यहाँ आया। पाजमें खेह ए दहीके पास ही एक महानर (जाल) का देला रखा किस पर जन जीतने चढ़कर हिंदी हमान ही सम्में जीवरखाको ही प्रमानता है; और उसमें भी जीवरखाको निययक ज्ञानका चैटान्य [ विशिष्ट प्रकारका ] है । जैसा कि कहा है—

८७. मूरा और उड़द इ'यादि बिदछ घान्य जो कहे गोरसमें वहे तो उसमें इस ( क्विनिट्यगरि ) जीवोंकी उत्पत्ति होती है; और तीन दीनके बाद दहीमें भी जीनोंकी उत्पत्ति हो जाया करती है।

यह बात एक जैन शालमें हो कही गई है। ऐसा निश्चय करके शोभ न मुनि के श्वमोपदेशसे सम्यक् विश्वास पूर्वेम उसने सम्यक्त (जैन वर्ष) ग्रहण किया। [इतने दिनोंके बाद अपने मिध्यात्रको समझते हुए, सी मन से ही पूँज कि मेरे माईको भी कही देखा है! शोभ न ने वय, जाल्या और गुण आदिमें अपने-ही-से उसनी तुल्ता की। १मपर उसने अनुमानसे समझा कि यही भरा माई है। यह निश्चय करके आनन्दाशु त्याग कृतते हुए उसे आर्टिंगन करके अपने लडकेको भेज कर उसके गुरुको भी जुल्याया। ] स्वमानतः ही धन पाल बत्ता मुदिमान सा अतर्व कम्में प्रशृति जैन-िचार-म्योमें भी बहा ग्रनीण हुआ। प्रति दिन समेरे निन प्रवाक अपने-

- ८८. अहां 1 कैंने इसके पहले मोहका, कुछ ही नगरोंके स्वामीका, जो शरीर दे देनेपर भी दुर्महणीय है, मतिन्दान करते हुए अनुसरण किया । इस समय ऐसे त्रिभुवनपति प्रभु मिल गयें हैं जो चुद्धिन्दी-से आराध्य हैं और जो अपना पद तक दे देनेवाले हैं । इससे उन प्राचीन दिमोंका बीत जाना खेदकारक हो रहा है ।
- ८९. हे जिन ! जनतक मैंने तुम्हारा धर्म नहीं जाना या तवतक समझता या कि धर्म सब कहीं है । जिस प्रकार धत्रेके विपसे आतुर रोगीको सब कुछ सोना (पीतवर्ण) ही सोना दिखाई देता है; और कोई सफेर वस्त नजर नहीं आती ।
- [ ५५ ] वासके जैसे निःसार ऐसे उन करोडों खोकोंको पढ छेनेसे भी क्या होता है-यदि जिससे 'दसरेको पीडा न पहुँचाना ' इतना भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता ।
- [ ५६ ] देशका माछिक [ तुष्ट होनेसे ] एक गाँउ देता है, गाँवका माछिक एक खेत देता है, खेतका माछिक शिग्विका ( सेम, छीमी ) देता है परन्तु सार्व ( सर्वज्ञ जिन ) तो सन्तुष्ट होकर अपनी सार्य सम्पद दे देते हैं !

इत्यादि वाक्योंको पद्म करता। एक दिन राजाने धन पाल को शिकार खैलनेके लिये साथ ले लिया।
'राजाने जब बाणसे मृगको विद्व किया, तो उसके वर्णनको लिये धन पाल के मुँहकी और देखा।
'धन पाल बोला--

- १०. इस तरहका पैक्प रसातळका चळा जाय । यह कुलीति है कि निर्दोप और शरणागतको मारा जाय । यटगान् भी जब दुईळको मारते हैं तो यह बडे दु:खकी बात है । जगत् अराजक हो गया । यसकी इस निर्भर्तनासे कुद राजांके यह पूळने पर कि यह क्या बात है —
- प्राणानके समय यदि तृण भक्षण करना चाहे तो वैशी भी छोड दिया जाता है, तो फिर में पश तो सदा तण ही खाकर जीते रहते हैं, ये क्यों मारे जाते हैं !

राजाको इस कथनसे अञ्चल कथा उत्पन्न हुई। उसने धनुष्य बाणके संगको स्वीकार करके आजीजनके ठिये मृगयाका त्याग किया। बादमें नगरकी ओर जब छोट रहा था, तो यञ्जणकपके यहास्तममें बँधे हुए छाग (बकरे)की दीन वानी सुनकर पूँछ। कि यह पश्च क्या कह रहा है! इस पर घन पा छने कहा कि सुनिये—

९२. हे साथो, मैं रार्गफलको भोगनेके लिये तृषित नहीं हूँ, मैंने [ इसके लिये ] तुमसे प्रार्थना भी नहीं की। मैं तो केउल तृण खाकर ही सन्तुष्ट हूँ । तुम्हारा यह कार्य उत्तित नहीं । यदि तुम्हारे द्वारा यहमें मारे हुए प्राणी निश्चय ही स्वर्गगामी होते हैं तो फिर अपने माता-पिता और पुत्रों तथा बाँधयोंका यह ( बल्दियन ) क्यों नहीं करते !

उसके इस याज्यके अनन्तर जब राजाने कहा कि इसका क्या मतलब है ! तो किर बोला कि— ९३. यूप ( यज्ञ ) करके, पश्च मारकर और खूनका कीचड़ बना कर यदि स्वर्गमें जाया जाता है तो किर नरकर्में कैसे जाया जाता है !

९२. सनातन यह तो उसका नाम है, जिसमें सत्य तो यूप हो, तप ही अग्नि हो और अपने सारे कर्म सिमंग् (काष्ट ) हो, अहिंसाको [ उसमें ] आहति दी जाय ।

इस प्रकार, हा के संवाद में कहे हुए बचनोंको उसने राजाके सामने पढ़ा और [ माझणोंको ] जो हिंसा-शासके उपदेशक और हिंस-प्रकृति हैं, मसरूपमें राक्षस बताते हुए, राजाको अर्हहर्म ( जैन धर्म ) की और प्रचुत्त किया। ं [ इस जगद्द Pb बादर्शमें तो मूळ ही में, पर B बादर्शके द्वाशिवेपर निदालिखित कथोपकथन 'बाधिक लिखा हुआ पाया जाता है।]

इसके बाद जब राजा गीकी बन्दना करने छगा तो धन पाछ भेंसको नमस्कार करता हुआ बोछा-

[५७] अपनित्र वस्तु खातो है, त्रिवेक-शून्य है, आसक्त होकर अपने पुत्रसे ही रित करती है, खुराप्रसे और सींगसे जीवोंको मारती है। हे राजन् ! ऐसी यह गा किस गुणसे वन्दनीय हैं!!

[ ५८ ] दूच देनेके सामर्थ्यसे अगर यह गी वन्दनीय है तो, मैंस क्यों नहीं है ! मैंससे इसमें थोड़ी भी तो विशेषता नहीं दिखाई देती !

[ ५९ ] असेष्य अक्षण करनेवाली गायोंका स्पर्श पापको हरनेवाला है, जेतनाहीन हुछ वन्दनीय है, छागका वध करनेसे स्वर्ग मिलता है, जाहरणोंको खिलाया हुआ जल पितरोंको स्वर्गमें पहुँचता है, . छल-क्षप्रयुरायण देवता जास पुरुष हैं, अप्रिमें हवन किया हुआ हवि देवताओंको प्रांत करता है — इस प्रकारको स्पष्ट दोपपुक्त और स्पर्य श्रुतियोंक वचनोंकी लीलाको कीन ठोंक मान सकता है!

ह – इस प्रकारका रिष्ठ दायुक्त जार क्य जारकाक प्रयाक्त जालका साम जान साम समार है. [ इ. ] जिनका [ प्राणी- ] यब तो घर्ष है, जरू तीर्थ है, जी क्यतीय है, गृहस्य गुरु है, अप्ति देवता है. 'और प्राप्तण पात्र है जनके साथ परिचय रखनेशे फल ही क्या हो !

[ ६१ ] इसके शिरके जिना पुष्पमाला व्यर्ध है, और जब कलाट ही नहीं है तो पृष्ट बन्ध फैसे हो ! जिसके कान और ऑख नहीं है उसके लिये गीत और उत्य कैसे ! और जिसके पैर ही नहीं उसको मेरा प्रणाम कैसा !

इत्यादि बातें कहने पर, राजाने कहा—'फिर अवसर हुआ भी कही !' तब पंडितने 'ग्रशमरसिममं और 'नेत्र सारकुषा' इत्यादि ( बचन बोलकर ) और इसी प्रकारकी बातें कह कर अन्तमें कहा कि [ इस प्रकार ] जेनालय में स.रा अवसर रहता है, जतः वहीं मेने पूजा की ।

. [६र] इसके बाद-एक दूसरे दिन, शिवमन्दिरकें द्वार्यदेशों यूंगीगणको देख कर राजाने घन पा छ से पूछा कि-पह दुर्बन्ट क्यों र्ह १ वह बोला-[ यूंगी शिमकी विभन प्रकारकी बिश्तित्र ] छीलायें देखकर सोचता रहता है कि-

[६३] पिट्र यह (शित) टिगंबर है तो इसको धनुष्यसे क्या काम है! अगर धनुष्य है हो तो अस्म क्यों! यदि अस्म भी हुआ तो छी क्यों! और यदि खी है तो फिर कामसे हेप क्यों है!--इस प्रकारकी अपने स्वामीकी परस्य निरुद्ध चैद्याओंको देखकर [यह छंगी हैरान हो रहा है और इसी टिये] दिसाओंसे गांड वेंपे हुए अस्पि-रोप असेरको धारण कर रहा है। ५८) इसके अनन्तर एक बार राजा सरस्वतीक ण्डा भरण नामक प्रासादमें जा रहा था। उस समय घन पाछ पटितमे, जो सदा सर्गन्न-शासन (जैन वर्ष) की प्रशसा किया करता था, पूछा कि 'सर्गन्न तो कभी एक बार हुए थे। पर अग भी उस वर्षमें क्या कुछ ज्ञानातित्तय है 2 3 उसके ऐसा कहनेपर [घन पाल बोटा-] 'अईत् निरित्तत (उपिट्ट) अईन्त श्री चूना पि नामक प्रचमें बैठोक्यके तीनों काटके वस्तु निपयके स्वस्त्रपका पिज्ञान आज भी वर्षमान है। 3 उसके ऐसा कहनेपर राजाने पूछा कि 'इस टोग अभी इस तीन दरवादेक मण्डपंग स्थित हैं। किम रास्ते होकर यहाँसे बहार निकटेंगे 2 र राजानो इस प्रकार शाखपर कल्क छमानेको उचत होते देखकर उसने 'चुद्धि यह तेरहधीं मात्रा है 'इस टोकोजिक्त सत्य करते हुए, भीजपत्रपर राजाके प्रयक्ता निर्णय टिख कर उसे फिड़के गोटेमें रव दिया और उसे तान्त्रप्राहक से सिंपकर राजामे निर्णय टिख कर उसे फिड़के गोटेमें रव दिया और उसे तान्त्रप्रकार की सींचा कि इसने नीनमेंस ही किसीक्ता निर्णय किया होगा, इसल्यि बन्दर्शोको दुखकर मण्डपकी प्रशिखा और तीचा कि इसने नीनमेंस ही किसीक्ता निर्णय किया होगा, इसल्यि वन्दर्शोको टुखकर मण्डपकी प्रशिखाको हटना दिया और उसी मार्गेसे बहार निकटा । किर उस पिड़ीके गोटेको तोइकर उसके टिखल अक्सरीमें, निकटनेके टिथे उसा मार्गिके निर्णयको पदकर कीतुकने चित्तमें चिकत होता हुआ जैन धर्मकी ही प्रशस्त की।

#### ( यहाँ D पुस्तकमें निम्निटिखित पद्य अधिक पाये जाते है-)

[६४] जो चीज निष्णु दो ऑखोंसे, शिन तीनसे, त्रसा आठसे, कार्तिकेय वारहसे, रात्रण बीससे, इद्र दस सैसे ओर जनता असत्य नेनेंसे भी नहीं देख पाती, बुद्धिमान पुरुष उसीको एक प्रहा-(बुद्धि) रूपी नेत्रसे स्पष्ट देख छता है।

( Pb आदर्शमें यहाँ निम्नलिखित एक और कथन अधिक पाया जाता है-)

एक बार जलाश्रय (तालान) के अन्छे-नुरे-पनके निषयमें पूछ हुई [सी पण्डितने कहा-]

[६५] सचमुच ही तालागेंमेंका ठडा और चदमाकी किरणोंसे बेत बना हुआ जल खून पी करके प्राणियोंको साध तृष्णा नष्ट हो जाती है और ने मनमें प्रमुदित होते हैं, परन्तु जन सूर्यको किरणे उसे सोख लेती है तो [उसमेंके] अनत्त प्राणी निषष्ट हो जाते हैं और इसीलिय मुनि-लंग कुओं बानड़ी आदिके बनोनेक निषयमें उदासीन भाग प्रकट करते हैं।

एफ बार राजा अपने बननाये हुए बहुत बड़े नये ताळाउके पास गया । वहाँ पण्डितसे पूछा कि यह धर्मस्थान कैसा हे । धन पा छ बोळा—

[६६] तद्दागके बहाने यह आपकी [एक] दानशाय है जिसमें सदा ही मठली आदि नकजन्तु अच्छी तरहकी रहीई है और जिस स्थानपर बक्त, सारस, चक्ताक आदि [मस्य मोनी दान प्रहण करनेताले ] पात्र हैं, वहाँ कितना पुण्य होता होगा सो तो हम नहीं जान सकते।

े इससे राजा [ मनमें ] दुपित हुआ । नगरको आते समय बालिकाके साथ एक खुदियाको वृद्धानस्थासे सिर धुनती हुई देखकर राजाने पूजा-' यह सिर क्यों धुन रही है ! ' तत्र धनपाल बोला—

[६७] नया यह नदी है, या त्रिणु " क्या कामदेत है या चदमा " क्या त्रियाता है अयम नियातर है " क्या इद हा कि नल है, कि दुनैर है " ना, ना, यह नहीं है, यह भी नहीं है, यह भी नहीं है, क्लिनुल यह नहीं, यह भी नहीं, वह भी नहीं, और वह भी नहीं, यह तो कीड़ा करनेमें प्रकृत ऐसा है सखे! स्वय राजा भोज देव है।

[ इसके सिरके धुननेका यह मतल्य है-ऐसा कह कर ] इस स्पेकसे रुष्ट राजा को सन्तृष्ट किया । १३-१४ ५९) इसके बाद, धन पाछने ऋषम-पश्चाशिकास्तुतिकौ रचनाकौ । सरस्य तीक ण्टाम रण प्रासाद में उसकी बनाई पशस्ति-पटिकार्ये किसी समय राजाने [यह काव्य पढा--]

९५. इसने [ अपने जन्ममें ] पृष्पीका उद्धार किया, श्रुते वक्षः स्थळको विदारण किया, और बिळ्की राजळ्झी ( िर्म्णुके पक्षमें बिळ नामक राजा और भोजके पक्षमें बळशाळी राजा ) को जात्मसात् किया । इस प्रकार इस सुवकने ये काम एक ही जन्ममें किये जो पुराण पुरुष ( िर्म्णु ) ने तीन जन्ममें किये थे ।

इस कान्यको पश्कर उसके पारितोषिकमें एक सोनेका कलश दिया। उस प्राम्रादसे निकलकर उसीके द्वारके खंबोपर मृतिमान मदनको, जो रतिके साथ इस्तताल ( ताली ) दे रहा था, देखकर राजाने थन पा छसे उनके इंसनेका कारण पूछा। इस पर पंडित बोला—

९६. यह है त्रिश्चनमं स्वयम्क िंव्ये तिर्यात ऐसा वह त्रिय, जो इस समय त्रिरहकातर हो कर अपने इरिसमें ही कीको घारण किये है। इसीने हमें एक समय जीता था! इस प्रकार प्रियाक हाथसे अपने हाथको बजाता हुआ और इंसता हुआ यह मदनदेव जयरान हो रहा है।

[ यहाँ D पुरतकर्में '' अत्रश्ये किरपरणे॰ " '' दिखाल यदि तिकसर चतुमा॰ " " असेप्यसभाति॰ " " यद प्रदास• " '' अस्त्युत्तमाद्वे " हमादि यत्र पाये जाते हैं । पर जूँकि ये यहाँ अप्रकपिक हैं और Pb आदांके अनुसार इसके पहले ही जिल्लित है। जुके हैं हसीस्थे पिर उद्दुन नहीं किये गये । ]

९७. पाणिप्रहणके समय शिनका को मूतिमूचित हारीर पुरुक्तित हुना उसकी जय हो-जिस हारित्में [पुरुक्ति वहाने ] भरमानशेष मदन मानों फिर अर्करित हुआ है।

इस प्रकारके तथा इसीतरहके, अन्य अन्य प्रसिद्ध और सिद्ध सारस्रतकारियों के कान्यों के कह कह कर जब ध न पाछ राजाको रिक्रत कर रहा था, उसी समय हारपायने एक व्यागरीका आला निवेदन किया। समामें प्रनेश फरके, राजाको निमरकार कर, उसने मीमकी बनी पत्रीपर खिखे हुए कुछ काव्योंको दिखाया। राजाके उसके प्रतिस्थानक चौर्षे पूजने पर यह बोख्य कि— मेरा जहाज अकस्पाद समुद्रमें एक जगह रुक गया, जहाजियोंने खोज करके देखा तो वहाँ एक शित्रमन्दिर मिछा, असके अबर चारों और जब छहरा रहा है पर भीतर पानीका अभाव है। उन्होंने असके एक रोजाय पर अक्षर देखकर उसे जाननेको इच्छांसे उसस्पर मोनकी पत्री खात है। उसी के उनके हुए अक्षर इस पहीपर हैं। राजाने जब यह हुना तो, उससर (केसी हो) मिहीको पही खागा कर, उसपर एके हुए उठटे अक्षरोंको पिक्तांसे पहनाया।

९८. ' उड़कपनते ही, मेरी प्राप्तिके कारण ही यह उजतिकी परा कीटिकी प्राप्त हुआ है, और इस समय मेरी ही बातते यह राजका उड़का उजाता है। ' इस प्रकार खिन होकर अपने पुराद्यी यशसे अवस्त्र दिया जाकर इद ' गुणीका समृद्ध' समुद्रके तौरपर तपस्याके ियो च्या गया।

९९. जो पनुर्पात प्रतिदक्षिपीकी विषयंको वैषय कर देनेवाला है ऐसे उस राजाके दिग्वजयके लिये उपत होनेपर और कुद होफर प्रति दिशामें उसके अमण करनेपर, और क्षियोंकी तो बात ही क्या सम्यं रित मी मारे उसके अपने पतिको, मदान्य अमरियोंका नील खोला धारण किये हुए पुष्परत्यको [मां हायमें] नहीं लेने देती।

१००. चिन्ताम्पी गर्मीर कूनपर महाशोकरूपी चटती अध्यह (धहारी) परसे ति.श्वास केंगकर अपने बड़ी बड़ी ऑखरूपी घटीमेंत्रसे होड़े हुए अञ्चयारको और जासिकाकी बंदाप्रणालीके विषम पयसे मिरते हुए इस वाष्प रूपी पानीयको, हे महाराज, तुम्हारे शत्रुओंकी कियाँ अविराम भावसे स्तनरूपी दो फल्टोंमें ढोया करती हैं।

इस प्रकार काज्योंके पूरा पढ़े जानेपर [ ऑग यह आवा काव्य मिटा-]

१०१. 'अहो । पूर्यकृत कमींका परिणाम प्राणियोंके लिय सचमुच ही बड़ा तिपम होता है । '

इस काल्यका उत्तरार्द्ध ि च प प्रमृति सैकड़ों पिडताँ के पूरा करनेपर भी ठीक नहीं जमता था तब राजाने ध न पा ल पिडतां पूटा [तो उसने अपनी प्रतिमाक बल्से यह यथार्थ पाठ कहा ]—'' हरेहरे ! जो किर शिवके सिर पर निराज रहे थे थे गुप्तों के पैरोंसे खुण्टत हो रहे हैं ''। ' यही उत्तरार्द्ध ठीक जमता है ' इस प्रकार जब राजाने कहा तो पिडत बोला—'पदि पदवन्य और अर्थ दोनों ही, थी रा मे खर प्रासाद की दीरालपर ये इसीप्रकार न हों तो, इसके बाद आजीनन मैं किनताक त्याग कर दू! ' उसकी इस प्रतिकाक सुनने के साथ ही राजाने जहाजके यातियों को उसी समुदर्भे गोता लगनाकर मिट्रकों खोन निकालनेकी आजा दी। इस मिहने बाद उसे हुड निकाला ओर उसपर फिरसे मोमकी पृत्री लगा कर [ लेखकी नकल ली] उसमें पही उत्तरार्द्ध निकल। यह देखकर [ राजाने ] उसके उपयुक्त पारितोपिक दिया | इस प्रकार, इस खण्ड म हा ति के अनेक काल्य परपराके अनुसार समझने चाहिये।

६०) एक बार रानाने से नामें डील-डाल होनेका कारण पिडतसे पूछा ! उसने अपनी तिल क म ज री [नानक कया ] की रचनाको व्यमताका कारण बताया ! शीतकालको एक रात्रिके अतिम प्रहर्मे राजाको कोई निनोद नहीं मिल रहा था ! उसने पिडतको बुला कर, स्वय उसकी उस ति ल क म ज री कथाको पढ़ने लगा और पिडत उसकी व्यारण करने लगा ! राजाने उसके 'रस' के गिरनेके मयसे उसके नीचे सीनेकी थालीमें कचोलक (कटोप) एखा और इस तह [बटे चारके साय ] समात किया ! उस अहुत माल्यते चिचलें चमल्यत होकर राजाने कहा कि—'यि सुन्ने इस काल्यका कथानायक बनाओं और निनी ता के स्थानमें अब मती का नाम राजो, तथा शका वता रात्रीर्थकी जगह महाकाल को उल्लिखित करों सो जो माँगो बही में तुर्हे दूता ! राजाके ऐसा कहने पर उसने कहा कि—िकस प्रकार खयौत और सुमैंने, सरसों और सुमैरेने, काच और कालमें है । ऐसा कहता हजा-

१०२ हे दो मुँहपाछी, निरक्षर, छोड़ेकी तरान् ! तुझे क्या करूँ ? जो त् गुनाके साथ सेनेकी तोछते समय पाताछ नहीं चर्छा गईं।

इस प्रकार जब पढ़ित झिड़क रहा था, तो राजाने उस मूछ प्रतिको जलती क्षागमें इ मन बना दिया। इम प्रकार वह दिया निवेंद \* होकर और दिया अगल्मुख x होकर अपने मकानके पिछले मागमें एक पुराने मुद्यपर जा बैठा आर नीसांसे बालता हुआ लगा होकर सो गया। बाल्पिडता ऐसी उसकी लड़कीने उस मिल्पूर्यक उठाकर स्नान-पान-मोजन आदि कराके, तिलक म खरी ही प्रग्न प्रतिके लेखनका स्मरण कर करके आगा अग लिखा दिया। किर पण्डितने उत्तराई निया लिखकर प्रथ स्वर्ण किया।

[ यहाँ पर इसके जाग Pb आदर्शमें निम्न लिखित कथन पाया जाता हे- ]

पडितर्ने प्रथ सपूर्ण किया और फिर रूष्ट होकर नाणा गाँव में चळा गया। एक बार मो ज की समामें ध में नामक बारी आया। उस समय वहाँ ऐसा कोई विद्वान् नहीं या, जो उसके साथ प्रतिगद करनेका साहस करता।

द्विमा निवेंद्रवा मतल्य दोनों तरहते निवेंद हुआ । १ निवेंद=निम्न हुआ २ निवेंद=जानम्य हुआ ।

x दिघा अगार्मुख १=नीचा मुखवाला, २≔वाणीयृत्य मुखवाला ।

त्तव भीजने बहुत मानके साथ घन पाल को बुलाया । उसे आते छन कर ही वह बादी भाग गया । छोगोंने हँसक कहा-धर्मस्य खरिता गतिः=धर्मकी गति शीघ होती है। इस कहानतको उसने चरितार्थ किया | राजाने सम्मान किया....और वहाँपर योगक्षेमके निर्वाह (गुजर ) की क्या हाउत थी सो पूछी | परित बोला—

[६२] हे राजन् , इस समय हमारा और आपका घर समान है, क्योंकि दोनों ही पृथु कार्त स्वर पा त्र ( १ ग्रेमीर आर्तनादका पात्र, और २ त्रिपुछ सुवर्णपात्रताला ) हैं, दोनों हा मू पित निः शेप परिजन है ( १ अखंकारहोन परिजनवाटा, और २ सारे परिजन जिसमें भूपित है, ऐसा ) हैं, और दोनों ही वि छ स स्करेण गहना (१ घृष्टिपूर्ण, और २ हाथियोंसे सुसजित ) हैं।

( यहाँ P प्रतिम निम्नलिश्वित और विशेष पार्कियाँ पाई जाती हैं-)

एक बार उसने भोज की सभानें यह काव्य पढा--

ि६९ | हे धाराके अधीखर ! प्रध्यीके राजाओंकी गणनामें कील्डल्यान, होकर इस ब्रह्माने आकाशमें खड़ियासे टकीर खीच खीचकर तुम्हारी ही ( अकेलेकी ) गणना की। वहीं रेखायें यह स्वर्मगा हो गई है ओए तुम्हारे समान पृथ्यीमें अन्य भूमियय (राजा) का अभार होनेसे उसने उस खडियाकी फेंक दिया वही यह हिमालय बना है ।

अन्य पडित इस फाल्य [को अत्यक्ति] पर हेंसे । पर धन पाछ ने कहा-

ि७० | बारुमी कि ने बानरोंसे आहत (मँगनावे गये) पर्वतोंसे समदको बॅधनाया और व्यास ने अर्जुनके बाणोंसे । तथापि उनकी बातें अन्युक्ति नहीं समझी जातीं । हम तो कुठ प्रस्तुत विपय ही कहते हैं, तथापि छोग मुँह फाइ कर हँसते हैं ! इसछिये हे प्रतिष्टे, तुझे नमस्कार है ।

एक बार किसी पण्डितके यह कहनेपर कि-हे राजन . महामारतकी कथा सनिये, उसपर परम आईत पंडितमे कहा-

[७१] कानीन (बुमारी कत्याके पुत्र=ज्यास) मुनि, जो अपनी आहारधूके वैधव्यका विश्वंस करने थाला है. उसकी रचना, जिसमें गीलक (विधवा प्रव ) के पाँच प्रव पाण्डव नेता हैं. जो स्वयं इन्ड (जीनितपतिका स्वीके अन्य उपपतिसे उत्पन्न पुत्र ) है । कहा गया है कि ये पाँची समान जातिके हैं ! इनका संकीर्तन करना भी यदि पण्य-कर और कन्याण-कारक हो तो फिर पापकी दसरी कीन सी गीत होगी है

६१) शोमन मनिकी 'शोभन चतुर्विशतिकास्तति' प्रसिद्ध ही है।

<sup>6</sup> इस समय क्या कोई [नया] प्रवंश आदि लिखा जा रहा है?' राजाके यह प्रजनेपर घनपाछने कहा—

[ ७२ ] गटेमें उत्तरनेवार्क गरम काजीते, जछ जानेकी आशंकाके कारण सरस्त्रती मेरे मुँहसे निकल कर चर्छ। गई है। इसलिये बैरियोंकी लक्ष्मीके केश पकड़नेमें व्यप्न हाथवाले महाराज! मेरे पास अब कवित्र नहीं रहा।

राजाने [प्रसन्न होकर दूध पीनेके टिए] सी गायें दिख्याई | राजाने जब यह पहा कि 'गार्वे निडी !' तो—

[ ७३ ] हे नरपर | ये सी तो दूध देती नहीं है और ना ही इन सीमेंसे एकको भी बळडा हैं। इन सीमेंसे बड़ी मुस्किटसे बोसामा खाती हुई २० गायें घर तक वहाँच सकता हैं।

इस प्रकार धन पाछ ने [अन सुद्दी और बेकार गार्थोकी ] बात कही।

[७४] ध न पाळ किनका सरस वचन और मळयगिरिका सरस चन्दन, इदयमें रखकर कीन निईत (शान्त) नहीं होता।

[इगर दो म न मु नि स्तुति करने के ध्यानमें [डीन होनेसे ] एक खोके घर तीन बार [भिद्धा छेने ] नया । इससे उस खीका रिष्टिदोष ख्या और वह मर गया । उसने अपने मार्डमे अन्त समयमें ९६ स्तुतियोंकी सृति कराके अनगनपूर्वक सीधर्म स्वर्ग प्राप्त किया ।]

## -इस मकार यह धनपाल पंडिनका मबंध पूर्ण हुआ।

६२) फमी, उस नगरका निग्रासी कोई नासण, जिसरी इति केन्छ भिन्ना ही थी, एक पर्न दिनमें नगरके सब छोगोंने लानमें व्यस्त रहनेके कारण भिन्ना न पानर खाछी तान्न-पानने साथ ही घर छोट आया। इसिंखे ब्राह्मणी उसे फटकारने छगी। अगदा बढ़ा और नाहाणने उसपर प्रहार निया। आरतक पुरुप (नगररक्षक=पुडीस) उसे केंद्र करके राजमिंदरमें छाये। राजाने पूडने पर उसने यह छोन पढ़ा-

१०३. माँ मुससे सन्तुष्ट नहीं रहतो, ओर अपनी पतोडूसे मो सन्तुष्ट नहीं रहती; वह (वहू) भी न मुससे ओर न मेंसि [सन्तुष्ट] है। मैं भी न उस (भौ) से और न उस (की) से [सन्तुष्ट रहता हैं]। हे राजन ! बताओ इसमें दोष निमका है?

इस जा अर्थ पडितोंके न समझने पर, राजाने अपनी बुद्धिसे उसके अभिप्रायको प्राय समझ कर, उसे तीन डाख [दानमें] दिख्याये । और 'शेकके अर्थका व्याग्यान करते हुए कहा कि दारिझ ही कडहका मुख है।

#### सय दर्शनोंसे सत्यमार्गकी प्रच्छा।

६३) बादमें, किसी समय, एक बार सब दर्शनीं की एकन सुउत्तर राजाने मुक्तिका मार्ग पूछा । ने अपने अपने दर्शनका पक्षणत करने छगे । सयमार्ग जाननेकी इच्छासे राजाने उन सनकी एकमत होनेकी कहा । वे सब ६ महीने तक शारदाके आरानमें छगे रहे । किमी राजिक अन्तर्मे शारदाने यह कहकर कि कागते हो है रे राजाकी उठाया और

१०६. सीगत (बीद्ध) धर्म है सो तो सुनने छायफ हे (अर्थात् उसके सिद्धान्त सुननेमें अच्छे हैं), और आईत (बीन) धर्म है सो करने छायफ है। व्यवहारमें बैदिक धर्मका अनुसरण करना योग्य है और एरम पदकी प्राप्तिके छिए शिवका व्यान उरना उत्ति है।

( अया-अक्षय परका प्यान करना चाहिए ) राजाको तथा दर्शनों ( सत्र मत्रक्रां पण्डितां ) को यह भीक सुनाकर श्रीभारता तिरोहित हुई।

२०५. ' अहिंसा ' जिसका सुग्य व्ह्षण है वही धर्म है । मारती (सरस्तती ) है वही मबकी मान्य देवी है । प्यानसे मुक्ति प्राप्त होती है यही सब दर्शनोंका मतन्य है ।

दया है। स्थानस मास्य आत हाता है यहा सब दशनाका मतन्य ह

इन दो श्रोकोंको वनाकर उन्होंने रानाको मुक्तिका निर्णय बताया।

#### श्रीता पण्डिताका प्रवन्ध ।

६ थ) वारमें, उस नगरकी निर्मासिनी शो ता नामक रचनी (स्सोई बनानेसळी) को किसी थिरेशी— कार्यटिकने सूर्य पर्नेत दिन मोजन बनानेके छिए अब दे कर, म्यप बछाशयमें स्नान करते समय कपुनीके सेछका पान कर जानेसे, उसके घरपर आते ही, वमन करके मृखु प्राम हुआ। उसे देखकर, अपनेको द्रव्यके निमित्त मार डाळनेका कळक छगनेकी आशकासे उस स्टानीने मरनेके छिए उसी अकतो खा छिया। उह [ उसके पेटमें ] टिक गया। और उसके प्रमावसे उसको प्रतिमाका बड़ा निमन प्राहुर्मृत हुआ। तीनों निवाजांका हुछ अन्यास करके नि व या नामक अपनी नव युवती कन्याके साथ श्री भो ज की सभाको सुशोभित करती हुई श्री मी ज से बोटो—

१०६. श्रीमन्यदाराज मो जनी शूरताकी सीमा तो शत्रुओंके कुळोंका क्षय करने तक है, यशको सीमा टेठ ब्रह्माण्डरूपी आण्ड तक है, प्रश्नोंकी सीमा समुद्रके तट तक है, ब्रह्मको सीमा पार्वती-पित (शिव) के चरणह्रन्दमें प्रणाम करने तक है, टेकिन वाकी जो अन्य गुण हैं उनकी तो कोई सीवा हो नहीं है।

इसके दाद विनोद-प्रिय राजाने कुच-वर्णनके छिए विजयाको आज्ञा दी । यह वोली-

१०७. उस पत्तले शरीरबाली समर्गाके सनमण्डलकी यदि, ऊँचाई चित्रक तक है; उत्पत्ति भुजलताके मूल तक है; जिस्सार हैट्य तक है और सहित कमलिंगी सूत्र तक है; वर्णकी सीमा सर्गिकी कसीटा तक है; और फठिनताकी सीमा हरिकी खाननाली भूमि तक है, तो उसका लावण्य अस्त समय (जीननकी समारि) तक है।

उसके इस वर्णनको सुनकर, उस आधे कवि राजाने कहा-

[७५] ' उस कप्रज-नवनीके दोनों हुचोंका क्या वर्णन किया जाय ' '-हसपर उसने आधा श्लेक यह कहा- सात द्वांपक्ष ' कर ' ( महस्छ ) प्रहण करनेवाछे आप जैसे वहाँ ' कर ' ( हाय ) देते हैं । राजाने एक और आधा कान्य पढ़ा-

[७६] 'आधात किये हुए मुख्येक समान गमीर प्रतिवाठे और श्रमधेके समान नील (वर्णनाले) बादलैंसे वह दिशा रुद्धन्ती क्यों हो गई है ! '

इसके उत्तराधीर समने बहा-

['इस टिपे कि] प्रथम निरहके खेरते म्हान वनी हुई बाला, जिसका मुख ऑखोंके उगले हुए ऑसुऑसे घो गया है, वह वहाँ वास करती है।'

१०८. ' जगत्की आनद देनेगाछे उस सुरतको नमस्कार है '-इस प्रकार रामाके कहनेपर [क्यों कि ] ' जिसके अञ्चपिक फट हे भोजराज, आप जैसे पुरुप हैं ।'

त्रिज या के इस विजयसाठी बाक्यको सुनकर राजाने छिनत होकर मुँह नीचा कर छिया। तब राजाने उसे [अपनी] मोगिनी बनाई। एक बार उसने जाछके भीतरसे आते हुए चन्द्र-कर (किरण) के स्पर्ध होनेयर [कार्य] पदा—

[७७] हे स्टक्के श्रमारवाले चन्द्र । वस करो इस करस्पर्शनको लीलको । तुम तो शियके निर्माल्य हो, इससे तम्हारा सर्थ करना उचित नहीं ।

[७८] अनुसम परायण ( आवसी ) राजाओंके समान, क्षणमार्भे तारायें क्षीण ही गई; प्राप्त जनोंकी समामें पटितवरी पण्डिताईके समान चन्द्रमाओं कान्ति म्टान हो गई, जैसे मानों पारेने सौना मा टिया हो वैसी ग्राची दिशा पिंगछत्रणों ही गई और निर्धन पुरुषोंके गुणकी तरह ये दौयक भी शोभा नहीं प्राप करते।

[७९.] बिक्राटमें खबनोंडी भाँति तारायें निरह हो गई, मुनिके मनकी नाई आरास सर्नन प्रमन हो गया, सञ्जनिके चित्रसे दुर्जनकी तरह अध्यकार दूर हो रहा है और निरुचिमयोंकी स्टर्भाषी तरह रात जन्दी जन्दी जीत रही है।

इस प्रकार पहें। पर बहुत कुछ बनतव्य (काल्य आदि कहने टायक) है जो पश्यरा द्वारा जान टेना चाहिए।

## मयूर, बाण और मानतुङ्गाचार्यका प्रवन्य।

६५) म यूर और वाण नामक दो साळा-बहनोई पंडित, अपनी विह्वासे एक दूसरेके साथ स्पर्दा करते हुए मोज की समामें उच्चप्रतिष्ठ हुए। एक बार वाण पर्ण्डित वहनसे मिलने गया और उसके घर जाकर रातको हारपर सो गया। | उस रातको रूठी हुई ] उसकी मानवती वहनको वहनोई हारा मनाती सुना। [वाण ने] उसपर प्यान दिया तो उसने यह सुना—

१०९. हे तन्यंगी, प्रायः [सारी ] रात बीत चर्छा, चन्द्रमा क्षीणसा हो रहा है, यह प्रदीप मानों निदाके अर्थान होकर झूम रहा है, और मानकी सीमा तो प्रणाम करने तक ही होती है, अहो ! तो मी तुम कोच नहीं छोड़ रही हो !—

[ काव्यके ] ये तीन पद वारंबार उसे कहते सुनकर [ बह चोथा पाद इस प्रकार बोळ उठा-- ]

'हे चिंड ! कुचोंके निकटवर्सा होनेसे तुम्हारा हृदय मी [ उनके जैसा ] कठिन हो गया है ! '

भाईके मुँहसे यह चौथा पाद सुनकर वह छजित हो गई और क़पित होकर उसे शाप दिया कि 'तम अप्री हो । ' उस पतित्रताके त्रतके प्रभावसे उसे उसी समय अप्र रोग उत्पन्न हो गया । प्रातःकार शार्टसे शरीर दक्तर राजसमामें आया। मयूरने मयुरकी माँति कोष्ठ वाणीसे उसे 'वरको दी' यह प्राप्तत शब्द कहा । इसपर चतर चक्रवर्ती राजाने उसकी ओर जिस्मयके साथ देखा । प्रसंगान्तर उठनेपर वाण ने देवतारायनका निचार किया और उजित मानसे वहाँसे उठकर नगरकी सीमापर गया । वहाँ पर एक स्तंम खड़ा फर नीचे खदिर काष्ट्रके अंगारसे भरा हुआ कुंड बनवाया । स्तंभके सिरेपर छटकाए हुए छीकेपर स्वयं बैठ गया । यहा सूर्यदेवकी स्तृति बनाना प्रारम्भ किया । प्रति कान्यके अन्तमें छी केकी एक एक रस्सी चाकुसे काटने छगा । इस प्रकार पाँच कान्यों के अन्तमें उसने पाँच रस्सिया काट दी । इसके ब्राट छींकेके अग्रजारामें लगा रहकर उसने छंडे कान्यसे सूर्यदेवको प्रत्यक्ष किया । उसके प्रसादसे ताकाल ही यह तेजवान काञ्चनकी कान्तियाटा हो गया। दूसरे दिन उत्तम वर्णके चन्दनका शरीरमें छेप करके और दिव्य श्वेत बल छपेट कर [राजसमामें] गया । उसके दारीरसीन्दर्यको [पूर्वतत्] राजाने देखा तो मयूर ने सूर्यके बरका फल बताया। यह सुनकर याण ने वाणकी माँति इस वाणीसे मयूरका मर्भ वेध किया कि 'यदि देगरायन इतना सरल है सी तम भी कुछ कोई विचित्र कार्य करके दिखा ओ न ? ' उसके ऐसा कहनेपर म यूरने जराव दिया कि- नीरीग आदमीको वैद्यसे क्या काम ! फिर भी तुम्हारा वातको सच कर दिखानेके छिए अपने हाथ-पेर छूरीसे काट देता हैं और तमने तो छेड़ कान्यमें सर्वको प्रसन्न किया है. वरन्त में प्रयम कान्यके छेड़ अक्षरमें ही मवानी-को प्रसन करता हूँ । यह प्रतिज्ञा कर सुखासनपर बैठकर चण्डिकाके मंदिरके पिछपाडे जाकर बैठ गया । यहाँ 'मा भांक्षीविञ्चमम् ' (ऐसे आदि वाक्यताली चिण्डिका-स्तृति प्रारम्म की ) इसके छट्टे अक्षरपर ही चिण्डका प्रयक्ष हुई और उसकी कृपासे उसका असिराक्षत्र प्रयम तक सुन्दर हो गया। अपने सामने ही उस प्रसादको देखकर राजा और अन्य राजपुरुपोंने सामने आकर उसका जय-जय-कार किया ओर बढ़े समारीह के साथ उसका नगरमें प्रोदा कराया ।

<sup>&#</sup>x27;यरहोदी' यह मारत प्रस्त प्रस्त कियाँ है। 'बर कोटी' और 'बरक ओदी' ऐसा इक्का पदन्छेद किया जाता है। पदने पदमें यदम अपने, नोटी-इन्ही अर्थात् अन्छे तुन्नी (जुन्नीयी) बेने ऐसा व्यय है। दूसरे पदमें बरक=शान ओटी=उत्तर हाटी अर्थात् 'बान ओटनर आये हो!' ऐसा आवर्षयोतक बचन है।

६६ ) इसी अरसर पर, मिध्यादृष्टि याजोंके धर्मको इस प्रकार विजयी होते देख, सम्यन्दर्शन (जैन) देयी बुठ प्रधान पुरुपोंने राजासे कहा—' यदि जैनकर्ममें मो कोई ऐसा प्रभान वतलाने वाला हो तो स्तेतावर स्विद्यां सुठ प्रधान पुरुपोंने राजासे कहा—' यदि जैनकर्ममें मो कोई ऐसा प्रभान वतलाने वाला हो तो स्तेतावर स्विद्यां में स्विद्यां हो ही विविद्यां कि अपने देनताजोंके कुळ चमत्कार दिखाइये। ये बीले—' हमारे देवता तो मुक्त है, उनके चमत्कार क्या हो सकते हैं, तयापि उनके किंकर देवताजोंके प्रभानका आविर्माव देखिये। 'टस प्रकार कहके अपने दारीरको चैंवालीस हयकाईयों और बैडियोंसे कसमकर उस नगरके श्री-पुगादि देनके मेदिरके पिछले भागमें बैठ गये।' म क्ता म र ' इस आदि वाक्यमाली मंत्रामें मई स्तृति बनाने 'छो । इसके प्रति काज्यके अन्तमें एक एक बेडी टूटती जाती थी। बेडियोंकी संस्थाके बरावर काल्य बनाकर स्तम पूरा किया और उस सदिरको अपने समुख परिवर्तित कर सासनका प्रमाव दिखाया।

-इस प्रकार श्रीमानतुङ्गाचार्यका प्रवन्ध पूर्ण हुआ ।

## गुर्जर देशकी विदरधताका प्रवन्ध !

११०. हे भो ज देव ! यह तुम्हारे गठेमें को कण्डा पडा है वह मुझे बहुत अच्छा छत रहा है । साझम दे रहा है कि तुम्हारे मुख्यें जो सरस्वती और बक्षास्थळमें छशी बस रही है उन दोनोंकी सीमा इसने निमक कर दी है ।

इस प्रकार उसकी उक्ति सुनकर विस्मयंत भगेंग चिकत होकर उसके सामने देख रहा था कि उतनेंमें उस उत्तम परिष्ठर धारिणी वेरनाको भी देखा । उसके प्रति भी ज ने यह आक्षिमक बचन कहा—' यहाँ क्या !' । इसके अनन्तर वह बुद्धि-निधि सुसुखी, जो स्वजाति ( खी जाति ) को होनेंके कारण मानों सरस्वतीकी खास रूपा-पाप्र थी और दारिस्धारिणी प्रतिभाकी भाँति [दिखाई देशी थी ], राजाके गंभीर बचनके भी तत्वको समझकर उसको [ प्राष्ट्रत मायानें ] जान दिया कि—' पूछते हैं ' उसके इस उचितत यचनसे भो जा सुख-काक विकतित हो गया । उसको कोशाय्यक्षी तीन छाख दिख्यानेको कहा पर वह ( कीशाय्यक्ष) इस तत्त्रको न समझकर होन बार कहनेपर भी जुप-चाप वैठा रहा । जब वह नहीं देने त्या तो सामा प्रवास का प्राप्त को माया हो तीन हो छाख दिखा हा हुं, यदि उदारताके साथ दिया वाय तो इतना बडा साम्राज्य भी देना कम ही है । इस आदेशको बुनकर समास राजशिकने राजारी प्रार्थना की कि उन दो वाक्योंका अन्यय क्या है ! इस पर यह बोछा— 'दशके कटाखेंकी दोनों अंजन रेखाओं कान तक कैडी हुई देखकर कैने कहा कि ' यहाँ वया !' इसने

जवाव दिया कि—'दोनों नेत्र कान तक फैळी हुई अंजन रेखाके बहाने कानोंके पास यह निर्णय करने गये हैं कि क्या यह वही श्री मोज हैं जिनके बारेमें आप छोगोंने पहले सुन रखा है ! यही बात ये पूछते हैं ! 'प्राइत भाषामें, ज्याकरणके नियमसे दिवचनका प्रयोग बहुवचनसे होता है ! इसी बातकी आरांका करके , इसने 'पुष्टांति 'ऐसा जवाव दिया है '। अपनी दृद्धिसे खुहस्पतिकी भी अवज्ञा करनेवार्छ ऐसे जो पण्डित हैं उनके छिये भी जो अर्थ अत्रिपयीमृत है, उसे सहसा ही कहती हुई यह मानों प्रत्यक्षरूपा भारती ही है । सो इसके पारितीपिकमें तीन छाख क्या चीज है ! ! इसके बाद तीन बार 'तीन छक्ष 'देनेके छिये कहनेके कारण ' अपने सामने ही उसे नव छाख दिख्याया । इस तरह राजा भोज को गूर्जर जनोंकी चतुरता माष्ट्रम हो गई तो उसने कहा—'वियेक तो गूर्जर देश ही में है ।'[और तव राजाने 'मा छ थी य पंडित और गूर्जर गोपाइ समान है 'इस बुद्धननोंकी वाणीको सत्य मानकर उन्हें विदा किया । ]

#### इस प्रकार यह बेश्या और गोपका प्रवन्ध है।

६८) यह राजा लड़कपनसे ही-

१११. मनुष्य यदि मृत्युको सिरपर बैठी हुई देखे तो उसे आहार भी अच्छा न छगे; तो किर अहत्य (अनुचित कार्य) करनेकी तो बात ही कहाँ हो।

इस तस्यको जाननेके कारण धर्म कार्यमें अप्रमच रहता । एक बार [ रातको ] निदा मंगके अनन्तर 'कोई विद्वान् आ कर [कहता है ] कि एक तेज घोडेपर सवार हो कर तुम्हारे पास प्रेतपति ( यमराज ) आ रहा है, इस टिप उसके अनुसार धर्म-कर्मके टिए सिजत हो जाहए ' इस बचनको बोटनेके टिए नियुक्त किये हुए पंडितको प्रतिदिन उचित दान देता रहा । एक बार अपराहमें राजा सिंहासन पर वैठा हुआ पान देनेबाटेके दिये हुए बीडेसे पानके पचेको पहले ही मुँहमें बाट टिया । जब नीतिविद्यति उसका कारण पूछा तो इस प्रकार कहा—' यमराजके दाँतके भीतर पड़े हुए मनुस्योंके टिये वहां वस्तु अपनी है जो या तो दान कर दो गई है, या उपमीगमें छो गई है । और तो संशपवार्थ है । तथा और भी—

११२. [ मनुष्पको ] नित्य ही उठ उठ कर विचारना चाहिये कि आज मैंने कौनसा सुकृत किया । [ दिनके पूरा होने पर ] आयुका एक टुकड़ा छे कर रवि अस्त हो जायगा ।

११३. छोग मुझे पूछते रहते हैं कि आपका शरीर तो कुशछ है। [टेकिन यह नहीं सोचते कि...] हम छोगोंको कुशछ कैसे ! आयु तो दिन-अतिदिन बीतती ही जा रही है।

१९४. [ इस लिये ] फल जो फरना है उसे आज ही कर लेना चाहिये, जो दोपहरफे बाद फरना है उसे उसके पहले ही कर लेना चाहिये । मृत्यु इसकी प्रतीक्षा नहीं करती कि इसने किया है या नहीं किया ।

११५. क्या मृखुक्ती मोत हो गई है, बुझापा बूढा हो गया है, त्रिपत्तियाँ विपदामें पढ़ गई हैं और व्यापियाँ बीमार हो गई हैं जो ये आदमी दर्प करते रहते हैं !

इस मकार अनित्यता संबंधी चार श्लोकोंका यह मबंध है।

\*

मोजका भीमके पास चार वस्तुयें माँगना । ६९) अन्य किसी दिन मोजने मोग राजाके पास दक्तके मुखसे चार चीज माँगी । एक बनु वह 'जो यहाँ है, यहाँ नहीं; 'दसरी 'बहाँ है, यहाँ नहीं; 'तीसरी 'जो दोनों जगह है; 'और चीयी 'जो १५-१६ कहीं भी नहीं है। े विदानोंके लिये भी इसका अर्थ समग्रना सन्दिष्य होनेसे अण हिं छुए में इसके लिये दीं हो परिवाई वा वहीं यो तब किसी गणिकाने उस दीं होंको छू कर निदापित किया कि—(१) गणिका, (२) तपसी, (३) दानेश्वर और (४) जुआडी रूप इन चार चीं मों के बीं जिये। उसके कहने पर राजाने उस दूतकों ये चीं में सें परी ही थीं। ऐसा ही होना चाहिये 'यह कह कर दूत चारों चीं में छे कर जैसे आया था वैसे ही वापस चला गया।

# 🎍 इस प्रकार चार बस्तुओंका यह प्रवंध है।

७०) एक बार राजा भोज थोरचर्योमें चून रहा था। उस समय किसी अमागेकी लीको-

११६. टोकमें तो ऐसा सुना जाता है कि मनुष्यको [ अपनी आसुमें ] दश दशायें आती हैं। पर मेरे पतिको तो एक ही [दिप्टि] दशा [ सदा ननी रहती ] है, सो माद्रभ देता है कि वाकीकी चोरोंने चुरा दिया है।

यह पहते हुन कर उसकी दूरमध्या पर राजाको हया आई और प्रात काछ उसके पतिको सभामें छुछा कर उसता हुउ भी अच्छा भविष्य सोच कर, दो विजीरे नीनुओंको, जिनमेंसे प्रत्येक्तें एक एक छाखकी कीमत-के रान गुप्त भावसे रखाग कर, उसे इनाममें दे दिये । उसने भी इस इन्डान्तको छुउ न समझ कर, कुछ दान छ कर, साग-मानीकी दूकान पर जा कर बेच दिये । उस ( दूकानदार ) ने भी उसका हाछ न जान कर उन दोनों नीनुओंको किसीको भेंट दे दिया । उस आदमीने किर से उन्हें उसी राजा मो ज को भेंट किया !

११७. समुद्रनेवाकी चञ्चव तरगोंसे घसीटा हुआ यदि कोई रत्न पहाडी नदीमें आ भी जाय तो बह फिरसे उसी मागेसे उसी रानाकर ( समुद्र ) में हो चळा जाता है ।

इस अनुमगरे राजाने [ इस उदाहरणमें ] भाग्य ही को सध्य माना । क्यों कि, कहा भी है कि-

११८. वर्षा कावमें अशेष जगतके प्रीत होने पर भी चातक तो जलका एक बूद भी नहीं पाता । सच है, अलम्य क्स कैसे मिल सकती है ।

### इस मकार यह विजीरे नीवृका प्रबंध है।

७१) अन्य फिली एक रातकी, राजाने अपने आँबा-शुक ( तीते ) की गुत क्यते ' एक अच्छा नहीं हैं' यह बात पढ़ा कर उसे सिखाया कि तुन प्रात काल समामें यही बावय उचारण करना। बादमें जब उस तीतेन ने नैसा ही कहा तो राजाने पिडतोंसे उसका मतलब पृछा। ने उसका मतलब न आगते हुए, उसके जाननेके ठिये, उन्होंने ६ महीनेकी मुहलत गाँगी। इसके बाद उनका मुराय बर रुचि इसका मतलब समझनेके ठिये दिसायांसे अगण करते लगा। बढ़ा किसी पशुणाजने उससे कहा कि मैं इसका मतलब आपके स्वाताको बता सकता हूं। पर में अपने इस हुन्छें के नवकी, बुढ़ा होनेके कारण, न तो दी सकता हूं,—और बढ़ा शिय होनेके कारण, ना ही छोड़ सकता हूं। उसके ऐसा कहने पर उसे साथ ठैनेको इच्छाते वर हाचि ने उस कुनेको करायें स्वाता हुं। पर में अपने इस हुनेको करायें पर उसे साथ ठैनेको इच्छाते वर हाचि ने उस कुनेको कारण केर राजाकी समामें गया। बहाँ उसको उतर देनेवाल सताया। इसके बाद, राजाने उस पशुणाब्यों उसी बातको पुछा। [ उसने जनव दिया—] महाराज, इस अंशब्देकों उस ही ' एक अच्छा नहीं हैं'। राजाने किर पुछा—' कैते र' वह बोजा—इसिटने कि यह

ब्राह्मण इस कुत्तेको, जो यद्यपि असपुरय है, तयापि उसे कन्ये पर ढोता है, वह छोम ही की र्टाटा है। इसटिये छोम ही एक अच्छा नहीं है।

## इस मकार यह ' एक अच्छा नहीं है ' मवन्य पूरा हुआ।

७२) ‡ अन्य किसी समय, के कुछ मिनको साथ छ कर राजा रातमें घून रहा था, तो उसे वह जोरकी व्यास छगी। तव उसने एक वेदयाके घर जा कर मिनने मुखसे जछ माँगा। तव बहे प्रेमके साथ शं म छी नामक दासी वहां देर करफे, ईखके रससे मरा पान, इउ खेदके साथ छ आई। मिनने जो खेदका कारण पूजा, तो बोर्छा कि पहले ईवकी एक ही छहांमेंसे, जब वह शुरूसे छेदी जाती थी तो, इतना रस निकल आता था कि घड़के साथ पुत्वा (शकीरा) भी भर जाता था, पर इस समय राजाका मन प्रजाके निरुद्ध हो रहा है, इस्टिये बड़ी देरके बाद भी केन्छ पुरवा ही मर पाया है। यही इस खेदका कारण है। राजाने उसके खेदफे कारण को सुन कर निवार किया कि जिस वणिकने शिन मन्दिरमें वह बड़ा नाटक करवाया है उसकी मैंने अपने मन ही मन, छटनेका निचार किया था; इसलिये इसकी यह बात ठीक ही समझनी चाहिए। बादमें छीट कर अपने स्थान एक का कर तो गया। दूसरे दिन मना पर बसल मान मनमें खता हुआ राजा वेश्योके घर गया। उस दिन उसने यह कह कर राजाको सन्तुछ किया कि आज राजा प्रजाके प्रति इपानान् है, क्यों कि आज ईखसे बहुत रस निकछा है।

## इस मकार यह इक्षरसका प्रवंध पूर्ण हुआ।

७३) अन्य िकसी एक अगसर पर, धारान गरी के झाखापुरमें एक गोत्र देवीका मिदर या जिसमें नमस्कार करनेके छिये [ राजा ] नित्य आया करता था, उसमें दुठ बेटाका व्यतिक्रम हो गया । इससे बह देवता प्रयक्ष हो कर हार पर आ कर उस राजाको देखने ट्या, जो उस समय बहुत योड़े नौकरोंके साथ हार-देश पर आ पहुंचा था। राजाको देख कर ससंभ्रम बहु अपने आसन पर बैठनेकी गइवनमें, निजका आसन खाथ गई। राजाने प्रणाम करके इस इत्तान्तको पूछा। देवताने निकट ही झुनुसेनाका आना बता कर कहा कि शीन जाओ। इस ही समयमें राजाने अपनेको गूर्जर है-यसे थिरा पाया। वेगनान् घोड़ेपर चड़कर तेजीने जाता हुआ यह धारा नगरीके काटक पर पहुँचा, तो उस समय आख्या और को छ्या नामके दो गुजराती सनारोंने उसके कंटमें घनुष्य फेंके और यह कह कर उसे छोड़ दिया कि 'तुम इतने-ही-से मार डाटे जाते!'

११९. जिसके 'गुण '-बान् धनुपने, मानों यह समझ कर ही कि यह मोज 'गुणी' है मागते हुए उस राजाको घोड़ेसे [ नीचे ] नहीं गिराया ।

### इस मकार यह घुडसवारींका मनन्य पूर्ण हुआ।

[ इसके ब्रागे Pb प्रतिमें निम्नांकित प्रयंघ पाया जाता है—] अन्यदा एक बार रातमें जग कर राजा भी ज ने अपनी समृद्धिके निस्तारको अपने हृदयमें मोच कर कान्यके ये तीन चरण पढे—

<sup>्</sup>रै यह सुगुरववाला प्रकल्प किनी प्रतिमें, विक्रम राजांक सम्बन्धमें लिला हुआ मिट्या है और १०४४ रहांके पहेंट, करर एंड ९ पर भी यह आया हुआ है, लेकिन वहाँ यह प्रीक्षत मादम देख हैं।

[ ८० ] मनोहर युवतियाँ, अनुकूछ स्वजन, अच्छे बांघव और प्रेममय वचन बोळनेवाळे नौकर हैं।

[ द्वार पर ] हाथियोंके झुंड गरन रहे हैं, और तरळ ( तेन ) घोड़े [ हिनहिना रहे हैं ]--

इस प्रकार राजा जब यह वारवार बोठ रहा या और चौथे चरणके िये कक्षर छुँद रहा था, उसी समय कोई वेरयाज्यसनी विदान, जो अपनी वेरयाके वचनसे राजीक हो कुण्डल जुरानके िय राजाके महल्में चौर वन कर शुसा था, उसने उन तीन चरणोंको सुना। तब उसने सोचा कि ब जो होना हो सो हो, पर जो चौथा चरण मनमें स्कुरित हो आया है उसे कैसे दबा रख़्! जैस वह बोळा—

ं ' आखोंके मीच् जाने पर [ इनमेंसे फिर ] कुछ भी नहीं है । '

राजाने सन्तुष्ट हो कर कुण्डलके साथ उसको मनीबालित दिया ।

७३) अन्य समय, एक बार, बही राजा, राजपाटीसे जीट कर नगरके गौपुरमें [ जब आ रहा था तब ] एक बिता लगामका घोड़ा दौहता हुआ वहाँ आ पहुँचा, जिसे देख कर लोक आकुल-व्याकुल हो कर इधर उचर मागने छगे। उनमें एक तक विकय करनेवाला ग्वालिन भी सपाटेंमें आ गई और असके सिरपर जो लाँछसे मांग हुई होंडिया थी वह नीचे गिर पड़ी। उसमेंसे नदीके प्रवाहको तरह गौरस निकल कर वह चला, जिसे देख कर उसका मुख-कमल खिल उठा। भोज ने यह देख कर पूछा कि विपादके समय भी तुम्हारे इस हर्पका कारण क्या है ! राजाके यह पूछने पर वह बोली—

१२०. राजाको मार कर, पतिको सांपसे काटा हुआ देख कर, मैं विधिवश परदेशमें वेश्या हुई। पुत्रको [ अपने साथ ] वेश्यागामी पा कर मैं चितामें प्रविष्ठ हुई। इसके बाद, गोपकी गृक्षिणी बनी; ती किर आज मैं इस तकके छिये क्या शोच कर्लः हैं

[ वह इस प्रकार बोळी । उस प्रदेशसे एक वड़ी नदी ब्रादुर्भूत हुई, जिसका नाम मही पड़ा । ]

## इस मकार गोपंग्रहिणीका यह प्रवेध समाप्त हुआ ।

, ७५) एक बार, प्रातःकाळ, श्री भो जे एक उपशिळा ( छोटे एक्सर ) को ळहर करके आनन्दपूर्वक धर्चुर्वेदका अन्यास कर रहा था, उसी समय खेला धर वेशधारी श्री चंद ना चार्य ने अपनी तस्काळात्म प्रतिभाकी सुन्दरतासे इस उचित पयको कहा—

१२१. यह खिटत शिला चाहे खिण्डत हो जाओ, पर हे राजन् ! इसके बाद कीका करना बस कर दीजिये; और देव ! प्रसन्त हो कर पापाणवेषके व्यसनकी यह रिक्कता छोड़िय ! क्यों कि जगर यह क्षीड़ा बढ़ी तो बढ़े बढ़े पर्वतांको देध करींगे और यह घरती व्यस्ताधारा (आयार जिसका प्यंस हो गया है) हो कर, है जुपतिलक ! पातालके मुल्में चली जायगी !

उनकी इस प्रकारकी कविताके चमन्तारसे चमन्त्रत हो कर भी राजाने कुछ सोच कर कहा—'सर्व-शाक-पारंगत हो कर भी आपने जो ' च स्ता घा रा ' यह पढ़ा उससे कोई उत्पात सृचित होता है । '

#### मोज और कर्णका संघर्ष ।

७६) इघर, बाह छ देश के राजाकी देश ति नामक रानी महा योगिनी थी । एक बार, जब कि बह आसन प्रसम थी, सदैव ज्योतिरियोंसे यह पृञ्जा करती थी कि 'किस सुभ समर्से उत्पन्न पुत्र सार्यभीत (सम्राट ) होता दे !' इसके बाद, उन्होंने अच्छी तरह विचार कर बताया कि 'बब शुभ मह तव सारी, और फेन्ट्र (प्रयम चतुर्ध, सनम, और दसम ) में हो, तथा प प मह त्वांय, पष्ट और एकाद्रसमें हो, तो जो पुत्र होगा यह सार्वभीम राज होगा। यह सुन कर, निश्चित प्रसन समयके चाद, १६ पहर तक, योगकी शिकसे गर्भसम करके न्योतियांके निर्णात छम्में कर्ण नामक पुत्रको उसने जन्म दिया। उस गर्भधारणके दोगसे पुत्रसमके अनन्तर खाटनें पहर्से यह मर गई। सुछनमें जन्म होनेके कारण कर्णने अपने पराक्रमसे दिग्मण्डलको आकान्त किया। एक सी छत्तीस राजाओंके, भैरिके समान कार्छ-कार्छ केश-कञ्चपसे उसके दोनों निमल चरण-कमल पूर्व जाते थे और चारों प्रकारकी राजनियाओंमें परम प्राणिता प्राम करके, निवा पति प्रशृति महाकवियांसे वह स्तृत होता च्या। जैसे [ एक बार कर्ष्र किन के कहा—]

१२२. + जिनके मुँहमें तो 'हारानाति'' है, आँखोंमें 'कंकणमार' है, नितंबमें 'प्रावटां' है, और दोनों हाय 'सितटक' है—हे श्री कर्ण ! तुम्हारे शत्रुओंकी लियोंको, विजित्रश, वनमें, इस समय भूपण पहननेकी यह कैसी [ निट्सण ] रांति महण करनी पड़ी है !

ऐसा कहने पर चतुर चक्रवर्ता राजाने कहा—'यहि 'िविध व हा 'ऐसा हुआ तो फिर वर्णनीय राजाका क्या रहा ! दैवने मी जिस बातकी चिन्ता नहीं की बह हो।' अतएउ राजाको इममें टुठ भी चमरकार नहीं जान पड़ा और उसे निना टुठ दिये ही निदा कर दिया। घर जाने पर मायोने पूठा—'क्या दिया राजाने!' उसने कहा—'वही क्रास्करा !' ( अर्थात् श्लोकमें जो वर्णन क्रिया गया है वही स्वरूप ) वह बोली— यदि 'निनिन्दात् 'को जगह 'ता वहात् रेकहा गया होता तो वह सब कुठ दिलाता। तब किर ना चिराज क्रिने कर्ण नपकी स्तृति की। जैसे—

[८१<sup>°</sup>] गोपियोंके पीन पयोजरसे निष्णुका इदय [ रूपी कमल ] आइत हो गया है इसलियें के समझता हूँ कि ल्यमी कमज्की आयंकांसे तुम्हारे नेत्रोंमें ही अब नियाम कर रही है । इसलिये हे ग्रीमन् कर्ण नरेश । जहाँ तुम्हारी जुलता चलती है वहाँ मयआन्त हो कर दारिश्रकी मुद्रा टूट जाती है।

इससे अयन्त तुष्ट हो कर राजाने हायके माकले इत्यादिके जीवत दानसे उसे प्रस्टत किया। इस प्रकार जब वह मार्गिम आ रहा था, तो कर्षूर कि निने डीसे कहा कि राजाने इमें जो कुछ दिया है उसे, अब में अपने पर ले आता हूं। यह कह कर वह उसके सामने गया।

[ २२ ] 'हें कर्ये | तं कीन है!'-'कपूर कि ! क्या तं मुझे नहीं पहचानता !'-'क्या मारती है!-'
'सच है'-'तं प्रिपुरा क्यों है! '-'मैं छूट ठी गई!'-'मीं किमके द्वारा !'-'दुष्ट विश्वातके द्वारा'' उसने तुम्हाश क्या छे छिया !'-' मुझ और भी ज रूपी दोनों आँख '-' तो जी भैसे रही हो!''
--' क्यों कि दीर्याय श्री ना चिराज कि अधेकी छक्की छप बने होनेसे !'

मा वि राज किन हम काल्यते सन्तृष्ट हो कर कर्ण राज से जो बुठ क्ल्फ्रं, दुक्तृत्र आदि प्रान किया था यह सब कर्ष्र किन हो दिया। कर्ण नरेन्द्रने यह सुना, तो कर्ष्र की सुटाके प्ठा कि-'हे करें। मो ज के नियमान रहते 'शुष्ठ-मो ज' यह पर कैसे उदाहन किया। 'वह बोधा-'महारान, जन्दी में 'हर्ष-सुष्ठ 'भी जार सुष्ठ-मो ज शुँदसे निकट गया।' तब राजाने सोचा कि यह बात मो ज का अमगठ सन्तिक करती है।

[ ८३ ] श्रीमत् कर्ण नरेडने मान और त्रिमस्से सब याचक्रोंका मनोरच वूर्ण कर दिया, इसिक्टें चितामणिके ऑगनमें शिषावाडी दूर्वीयें हमेशा श्यासक हो रही है। कत्यनकके सूच तडमें निर्माक हो कर पशु-पड़ी थेड रहे हैं। और कामभेतु निकट हो स्केटको बैठा कर आवमने निदार रही है।

<sup>्</sup>रम् १व पर्यने दान्दीहे केप द्वारा दो मित्र अबं निकारे गये हैं। १ शुराव नि≔स्सरी प्रति और 'स' देश 'सर' दान्द्री प्राप्ति । २ कदान्द्रास्त्रा आपूरण और कल्यनी त्यका काल्यभुदिद्व । यो तो प्राप्ती धत पर क्षी क्यो है, क्यार होता है रिक्रिय हा क्योंके हो ये पूर बच्च नहीं है इव रिवे पत्रज्ञारी निवास प्रदार्थ दाक्या पहा है। ४ स्वीतक दो क्यार होता है रिक्रिय हा क्योंके हो अब श्रम्स ही सीतन्त्रल्लालेट्याले हैं।

७७) इस प्रकार महाकवि गण उसके नाना यशकी स्तृति करते थे । एक बार उस क र्ण राजाने श्री भी ज के प्रति प्रधानोंको भेज कर [ यह कहलाया-] ' आपकी नगरीमें आपके बनाये हुए १०४ मन्दिर हैं, इतने ही आपके गीत-अवंघ और इतने ही बिरुद हैं; इसिटिये, या चतुरंग [ सेना ] की उड़ाईमें, या दुन्द युद्धमें, या चारों विद्याओंका शासार्थ करनेमें, या स्थागमें मुझे जीत कर एक सी पांच विरुद्धेंके पात्र बनी । नहीं तो भैं तुन्हें जीत कर १३७ राजाओंका स्वामी बनुगा । ' उस प्रकार उसके प्रमावके आवि-र्भावसे भो जन्मा मखरमळ किंचित म्छान हो गया । यह काशी न गरी के स्थामीको सब प्रकारसे जीत जाने योग्य समझ कर और अपनेको पराजित मान कर, अनुरोधपूर्वक उसकी अम्पर्यना करके इस प्रकार उससे स्वीकार कराया कि- भे अवन्ती में, और श्री कर्ण वाणार सी में एक ही लग्रमें नींव दे कर स्पर्दाके साथ ऐसे मंदिर बनवावें जो ५० हाथ ऊंचे हों l जहाँकी प्रासादमें प्रथम करुश प्रजारोपणका उत्सव हो उसमें दूसरा राजा छत्र-चामर छोड कर. हाथी पर बैट कर वहाँ आवे । इस प्रकार भी ज के यथा-रुचि अंगीकार फरनेकी बात जब कर्णके कानों पहुँची तो वह बद्यि कुद्र हुआ तथापि भोजको उस तरह भी नीचा दिखानेके छिये िउचत हुआ । एक ही लक्ष्में अलग अलग दीनों जगह जब प्राप्ताद आरंभ किये गये तो. सारी तैयारी करके. सत्रधारोंसे क र्ण ने अपने प्रासादको बनाते समय पूछा कि—' बताओ एक दिनमें, सूर्योदय और सूर्यासकी बीच किसना काम किया जा सकता है ! ' इसके जवाबमें उन्होंने, चतर्दशांके अनध्यायके दिन, सात हाथ उंचे स्यारह मन्दिर, सर्योदयमें आरम्भ करके शामको कलका तक बना कर राजाको दिखा दिये । उस सारी सामग्रीसे राजाने प्रसन्त हो. आवस्य छोड कर. मी जर्के मन्दिरका जब मेंड्रेरा बाँग जा रहा था तभी अपने मंदिर पर कठश स्थापित करा दिया: और घजारोपणका छप्न निर्णय कर, दत भेज कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनेके लिये थी भोज को निसंत्रित किया । तब मा छ वा मण्ड छ का अधिपति भोज अपनी प्रतिज्ञा भंग होनेके मयसे. उस हरह जानेमें असमर्थ हो कर खुप हो रहा । इसके बाद प्रासाद पर ध्यजारीपण हो जानेके बाद, प्ररातन कर्णके नवीन अवतारके समान उस कार्ण राजाने उतने ही। राजाओं के साथ प्रयाण करके थी भो व के उत्पर आफ्रमण किया । उस अवसर पर श्री भी ज के राज्यका आधा हिस्सा देनेकी प्रतिज्ञा करके श्री क र्यो ने साल व सण्ड ल पर पुँठ पीछेसे आजमण करनेके लिये श्री भी मको आमीजेत किया । इस सरह उन दो राजाओंसे आकान्त होने पर राजा भी ज का दर्प, मंत्रसे आक्रान्त सपके विपक्ती भाँति दूर हो गया। अकस्मात उसी समय भी ज का स्वास्थ्य बिगड गया जिसको वहाँ वाळीने छपा रखा, और नियुक्त मनुष्यों द्वारा सभी घाटोंके रास्ते रोक दिये गये तथा अन्यदेशीय पुरुषोंका प्रवेश एकदम अटका दिया गया । तब भी म ने अपने सन्धिवप्रहिक दा म रको. जो उस समय कर्ण के पास था, भीज का कुतान्त जाननेके छिये अपने आदमी भेज कर पूछा। उसने भी उस परपको एक गाया पढ़ा कर भेजा, जिसने श्री भी मकी सभामें आ कर कह सुनाया। यथा-

१२३. आमका फल [ अब ] एक गया है, बन्त शिथिल हो गया है, ऑधी जोरोंसे चल रही है और शाखा कॉपने लगी है। और आगे हम नहीं जानते कि इस कार्यका परिणाम क्या होगा।

इस गायाके स्टस्यको जान कर राजा भी म चप हो रहा। श्री भो ज के परलोक-मार्ग की यात्रा जब निकट आई तो उसने उपयुक्त धर्मऋय किया और समस्त राजपुरुयोंको राज्यातुशासन दे कर और यह आदेश दे कर कि मेरे हाय विमानके बाहर रखना, स्वर्ग गया ।

(२४ ] और ! पुत्र, कट्य और पुत्रियोंको क्या कर रहे हो और खेती बाड़ीको भी क्या कर रहे हो ! मनुष्यको तो अपने हाथ पग दोनों झाइकर अक्रेडे ही आना है और अक्रेडे ही जाना है । मो ज के इस वास्यको वेरयाने छोगाँसे कहा ।

#### कर्णसे भीमका आधा भाग छेना।

७८) [इसके बाद, जब वह राजा भीज स्वर्गगामां हुआ ] तो उस घ्रतान्तको जान कर कर्ण ने उसके दुर्गम दुर्गम तो कि कर भोज की सारी व्यक्षी इस्तगत की । तव श्री भीम ने दाम रको आदेश किया कि— 'तुम या तो श्री कर्ण से मेरा प्राप्य आघा राज्य के आओ या अपना सिर के आओ।' इस प्रकार राजादेश पावन करनेकी इच्छासे, ३२ पदातियोंके साथ, उसने राजाके तंत्र्में वृसकर मध्याह कार्ल्में सीये हुए श्री कर्ण को वन्दीक्रमें गिरफ्तार किया। इसके बाद उस राजाने राज्य-ऋदिके दो विभागोंमेंसे एकर्मे शिव, शाखिष्राम, गणेश इत्यादि देवताओंको रखा और दूसरेमें राज्यकी अन्य सारी बस्तुओंको रखा।' अपनी इच्छाके अनुसार इन दोमेंसे एक हिस्सा के ले।' उसके ऐसा कहने पर, वह सोव्ह प्रहर तक तो वैसे ही पड़ा रहा, किर भीम की आज़ [ लोन पर ] देवताओंके मंडारको के कर ही उन्हें श्री भीम को मेंट किया। इस प्रवन्यका सारा इतिहास इन दो कार्योंमें संबर्गत है। जैसे—

१२४) पचास हाथ प्रमाणके दो शिवमंदिर एक ही छग्नमें प्रारम्भ किये गये। यह स्थिर हुआ कि जिस राजाके मंदिर पर पहले कल्क्शारोपण होग्ना, उसके पास दूसरा राजा छत्र और चामर रहित हो कर आयगा। इस संवारमें राजा मोज की शुद्धि व्ययसे विमुख हो गई और इस प्रकार वह कर्ण देव के द्वारा जीता गया।

१२५. भो ज राजाके स्वर्ग जानेके बाद श्रीतब्छी क र्ण ने जो घारापुरी के मंग करनेका उपाय किया तो राजा भी म को सहायक बनाया । उसके मृत्य दा मर ने बंदी किये हुए फ र्ण से गणपतिके सहित नांव्यकंटेबरको सोनेकी पाळखाँके साथ प्रहण किया ।

१२६. कियों और कामियोंमें, योगियों और मोगियोंमें, घन देनेवालों और सजनोंका उपकार करनेवालोंमें, तथा धनी, धनुर्धर और धार्मिकोंमें मो ज जसा राजा पूर्णी तलपर नहीं हुआ।

१२७. राजा भो ज ने अपने त्यागोंके फारण कन्यवृक्षके समान अशेष दुःखोंको त्रासित किया, साक्षात् वृहस्पितको नाई शीत्रतापूर्वक नाना प्रवंधोंको रचना की । राधा-वैध ( मत्स्य-वैध ) करने में वह अर्धनके समान [ सिह्त ] या । इसीव्धि बहुत दिनोंसे, उसकी कीर्तिसे उरह्यक-चित्त देवताओंके द्वारा निर्मित्रत ही कर बह स्वर्ग गया ।

इस प्रकार भी ज के अनेक प्रवन्य हैं जो परंपराके अनुसार जानने चाहिये।

इस प्रकार श्रीमेशनुङ्गाचार्यरचित प्रयन्धविन्तामणि प्रन्यका 'श्रीमोजराज और श्रीमीमराजके नामा यद्योंका वर्णन ' नामक यह दूसरा प्रकाश समक्ष हुआ।

# ८. सिद्धराजादि प्रवन्ध ।

#### मृलराज कुमारकी प्रजावत्सलताका प्रवन्य I

१२८. केरल अपना ही भरण-पोषण करनेगले शुद्र पुरुष तो हजारों हैं पर जितका परार्थ ही स्थार्थ है ऐसा सजनोंका अगुआ पुरुष तो [ हजारोंमें ] कोई एक होता है । बाहर अग्नि समुदको अपने हुन्यूरणीय पेटको भरनेके लिये पीता है पर बाइल तो पीता है प्राध्यके तापसे तपे हुए जगतका सन्ताप दूर करनेके लिये ।

इस प्रकार इस कान्यायके भागको समझ कर, अविक छोमका निषद करके किर और युउ नहीं माँगा। इस तरह मानेत्रत हो कर वह अपने स्थान पर गया। उसके हारा, इस तरह बन्धन-विमुक बने हुए वे छोग देवताकी माँति उसकी पूजा और स्तृति करने लगे। दैवनशाव तीसरे ही दिन, उनके सत्तीयकी इष्टिसे स्तृत होता हुआ [ वह राजदुनार ] मृत्यु प्रात कर स्था छोकको चल गया। राजा, राजपुरूप और यभन-निमुक्त ये सन प्रजानन उस शोकसागरमें इन गये जिहें [ अन्यान्य ] समझदार छोगोने, अनेक प्रकारके बोजनचन सुना सुना कर, कितने हो दिनोंके बाद उनकी शोक-विमुक्त किया।

इसने बाद, दूसरे साल, यथेर पृष्टि होनेके कारण रहन क्सल वैदा हुई । इससे वे किसान छोग अरप त हारिन हो कर, उस वर्षका और बीते हुए वर्षका भी, छगान देनेको सत्यर हुए पर राजाने उसे महण नहीं किया । सब उन्होंने एक उत्तर-समाका सम्येटन किया । समा और सम्योका छशाण बहु है--

१२९. यह समाधी नहीं जिसमें कुछ न हों, और थे कुछ नहीं जो धर्मका कपन नहीं काते। यह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और बहु सुच नहीं है जो कन्यत्वसे अन्तिक हो।

ऐमा [ शाय ] निर्णय कर सम्योने राजसे गत साळ और उस साउका छगान प्रदण करवाया। राजाने उस प्रयक्ते समा सजानेमेंभे और बुख द्रष्य मिश कर प्रृष्ट राज कुमारके करवाणार्थ नया श्विरूप प्रासाद [ नावक शिकान्दिर ] बनवाया। ८०) इसने पत्तनमें श्री भी भेदन रदेव और महारिका (पटरानी) भी रु आणी के [नामसे हिवके] प्रासाद बनवाये। संवत् १०५७ से लेकर ४२ वर्ष १० मास ९ दिन राज्य किया । ( B. P. प्रतियोगें - संवत् १०६५ से लारंग कर ४२ वर्ष राज्य किया।)

. कर्णराजा और मयणहादेवीका वृत्तान्त ।

८१) उसकी रानीने जिसका नाम उदयमित या [और जो नरवाहन खंगारकी छड़की थीं ] पत्तन में एक बहुत बड़ी नयी वापी (बावडी) बनवाई, जो सहस्र छिंग सरोबरसे मी कहीं अधिक भाकर्षक थीं।

८२) इसके बाद, सं० ११२० चैत्र बदि ७ सोमवार, इस्त नक्त्र, मीन छप्रमें श्री कर्णदेवका

राज्याभिषेक दुआ !

८३) इधर, द्युम के शी नामक कर्नाट देश का राजा घोड़ेसे [ जिसको अपने काबूमें न रख सकनेके कारण | वडाया जा कर किसी घने जंगलमें जा पडा | वहाँ पत्र फल्से मरे किसी वृक्षकी छापाका उसने आश्रप हिया । उसके पास ही दावाबि लगी । जिस बृक्षने [ अपनी छायामें ] विशाम दे कर उपकार किया था उसे. इतर्हताके कारण होड कर चले जानेकी उसकी इच्छा न हुई । और इसलिये, उसीके साथ दावानलमें उसने अपने प्राणोंकी आहुति दे दी। फिर इसके बाद, मंत्रियोंने उसके पुत्र जयकेशों को राज-पद पर अभिपिक्त किया । क्रमशः उसके एक मयण छा देवी नामकी पुत्री पैदा हुई । शिवमक्तोंने उसके सामने [ किसी समय ] उयों ही सो मे ऋ र का नाम छिया ध्यों ही उसको अपने पूर्व जन्मका स्मरण हो आया कि— ' मैं पूर्व जन्ममें ब्राह्मणी थी। बारहों मासके उपवास करके मध्येकके उद्यापनके समय बारह वस्तुओंका दान किया करती थी। [इसके बाद । श्री सो मे स्वरको प्रणाम करनेके लिये प्रस्थान करके बाह्र छो द न गर में आई। बहाँपर कर देने में असमर्थ हो [आगे] न जा सकी। उसीके शोकमें, यह प्रतिज्ञा करके कि ' मविष्य जन्ममें मैं इस करको मिटादेने वाजी बन् रे-मर कर इस कुछमें पैदा हुई। ऐसी यह उसे पूर्व जन्मकी स्मृति हुई। इसके अनुसार बाहु टो ह के करको हटा देनेकी इच्छास उसने गूर्जर नरेश जैसे श्रेष्ट वरकी कामना करके अपने पितासे यह सब क्तांत कहा। जय के शी राजाने यह व्यतिकर जान कर अपने प्रधान पुरुषोंके द्वारा, श्री क र्ण से अपनी पुत्री श्री मयण छ। देवीको पत्नीरूपमें महण करनेकी । स्वीकृति माँगी। श्रीकर्णने जब उसकी कुरुपताकी बात सुनी तो वह उदासीन हो गया। पर उस कुन्याका मन उसीमें छगा देख कर पिताने मय ण छा दे बी को उसके वहाँ, स्वयंवरा रूपमें-जिसने स्वयं अपना बर चुन िववा है-उसीके पास भेज दिया । इधर क र्ण गुप्तरूपसे स्वयं ही उसे कुरूपा देख कर उसके प्रति सर्वधा निरादर हो गया । राजाके इस प्रकार त्यागके कारण अपनी आठ सिक्षयोंके साथ मयण हा दे वी की प्राणत्याग करनेकी उच्छक जान कर श्री क र्ण की माता उदय म ति रानीने, उनकी यह त्रिपद देखनेमें असमर्थ हो कर. उन्हींके साथ प्राणस्यागका सङ्करप किया। क्यों कि-

१३०. महान् खेंग अपनी विपत्तिसे उतने दुःखी नहीं होते जितने दूसरेंकी विपतिसे ! अपने 'ऊपर आचात होने पर जो पृथ्वी अचल रहती है वही दूसरेंकी विपद देख कर काँपने लगती है !

इसके बाद महा उपदव उपस्थित हुआ जान कर मातृमक्तिक्वा श्रीकर्णने उससे विवाह कर दिया। पर बादमें [ बहुत समय तक ] उसकी ओर नजर उदा कर ताका भी नहीं [

८४) एक बार मुखा छ मंत्रीको कञ्चुकोसे यह साहम हुआ कि राजाका मने किसी अधम स्रीके प्रति सामिष्टाप है । [यह जान कर ] उसने ऋतुस्ताता सथण छा देवीको, उसीका रूप धारण कराके एकान्तमे उसके पास भेजा। राजाने यह समझ कर कि यह वही खी है, उसके साथ सप्रेम उपभोग किया और उससे उसके गर्मायान हो गया। फिर उसने सहेत बतानेके लिये राजाके हाथसे उसकी नामाद्वित लेंगूठी ले ली और अपना केंगुलिमें पहन ली। बादमें मृत काल, उस हुर्विलासके कारण राजाको ग्लानि हुई और उस रहस्थमय वास्तविक हुनान्तको न जानते हुए उसने प्राणत्याग करनेका सकल किया। स्पृतिशाक्षियों के, ताँवेकी बनी हुई प्रतप्त मूर्तिके साथ आर्थिंगन नरनेसे इसका प्राथित हो जायगा, ऐसा विधान बतलानेसे राजाने उसी प्रकार करनेकी इच्छा की। तब उस मंगीने यह साथै बात जैसी बनी थी बैसी कह सुनाई।

## ( इस जगह P प्रतिमें निम्नलियित न्होंक मिलते हैं -)

- [ ८५ ] [ अपने ] भारी पराजमके कारण तो वह पिता [ मीम ] के समान हुआ | और रमणीय आकारके कारण वह राजा अपने पुत्र [जय सिंह-सिंह राज ] के समान हुआ |
- [८६] निना कर्ण (राजाके) के ली-नेनोंनो कहीं भी रित (प्रीति) नहीं प्राप्त होती थी इसी छिपे उन (ली नेनों) की प्रइति कर्ण (कान) तक हुई। (अर्थात् इसी छिपे मानों लियोंके नेन कानतक छवे होने छमे।)
- [ ८७ ] मानों कर्ण और अर्ज़ न के उस पुराने बैरको स्मरण करते हुए ही, उस कर्णने [अपने ] अर्जुन (स्वेत ) यशको देशा तरमें पहुँचा दिया।

## सिद्धराज जयसिंहका जन्म।

- [८८] निस प्रकार दश्चरथ के पुत्र मनोहर गुणोंसे युक्त श्री राम हुए उसी प्रकार इस [कर्ण] का जगदिजयी ऐसा जयसिंह नामक पुत्र हुआ।
- ८५) अप्टे छप्न ( सुदूर्त ) में पैदा हुए उस पुत्रका नाम राजाने ' ज य सिंह ' ऐसा रखा । वह वाछक जब तीन वर्षका था उसी समय समत्रवस्त दुमारीके साथ खेळता हुजा सिहासनएर आग्न्द हो गया । इस बातको ॰पबहार त्रिरुद्ध समझ कर राजाने ज्योतिषियाँसे पूछा। उन्होंने निनेदन किया कि यह [वडा]आम्युदयिक छप्न है। राजाने उसी समय उस पुत्रका राज्याभिषेक करा दिया।
  - ८६ ) स॰ ११५० पीप वदी ३ शनिवार, श्रवण नक्षव, वृप उन्नमें, श्री सिद्ध राज का पहाभिषेक हुआ !
- ८७) राजा स्रयं, आ द्या पंछी नामक प्रामके रहनेवाछे आ द्या नामक भीलके ऊपर युद्धके छिये चढाई करके गया। भैरत देवीका द्यान राजुन होने पर, वहाँ को छ र न्या नामक देनीका मदिर कनाया [और वहीं दिश्वर निवेश निया] पिर, एक छाख खड़के अधिपति उस भीलको जीत कर और उस प्रासादमें ज य स्ती देनीकी प्रतिद्या करके, कार्य खर देवताका मदिर और कार्य सामादमें सुसोधित कार्यों वर्ष सी प्रतिक्री स्वापना कर खुद वहीं रा य करने लगा। उस राजाने य सन में श्री कार्य के नामक प्रासाद वनाया।
- स० ११२० चैत्र सुदि ७ से छे कर, स० ११५० पीप वदी र तक, २९ वर्ष ८ मात २१ दिन इस राजाने राज्य विया !

# सिद्धराजका राज्यवर्णन – छीला वैद्यका भवन्छ।

८८) इसके बाद, जब श्रीकर्णका स्वर्गवास ही गया तो श्रीमती उदयमित देवीका भाई मदनपाट असमनस भावसे वर्तने लगा। उसने छैटा नामक वैचको,— जिसने देवतासे वरप्रसाद पाया था और ताकाटिक नागरिक टोग इतहृदय हो कर जिसकी काश्चन-दान आदि पूना द्वारा अन्यर्चना किया करते थे—अपने महल्में गुलाया । जारीरमें बनाउटी रोग बतला कर नाडी दिखाई । बैबने उपगुक्त पथका मेमन करा। बतलाया तो [ उस म द न पाल ने कहा ] 'बही तो नहीं है । ' और इसिल्यि मैंने तुम्हें युलाया है । [ किसी और प्रकारका ) पथ्य दे कर भूख शान्त करनेके लिये तुम्हें नहीं [ चुलाया है ] । इसिलेये बत्तीस हजार [ हरपे ] हानर करो, यह कह कर उसे बंदी कर लिया । उसने यह सब बैसा करके ( अर्थोद्द उसका मागा हुआ इन्य दे-दिला कर ) फिर इस तरहका अभिग्रह (नियम) ग्रहण किया कि—'में इसके बाद मतीकारके लिये राजाका वर छोड़ कर अन्यन कहीं नहीं जाऊँमा '। इसके बाद परम आतुर रोगियों का प्रश्नम ( पैशाब ) मात्र देख कर ही यह उनका निदान और विकित्स करता रहा । [ एक समय ] किसी मायायीने, किन्यत रोगावीं विकित्स की क्षाल के जिल्ला हो । इसिले वहने अच्छी तरह उसे देख कर सिर हिलाते हुए कहा—' यह बैल बहुत खानेके कारण कुल गया है । इसिलेये बीन हो हो ते लियां नाली दो । नहीं तो भर जायगा।' ऐसा कह कर उसने उसके वित्त नाली दो । नहीं तो भर . जायगा।' ऐसा कह कर उसने उसके वित्त नाली रो । नहीं तो भर . जायगा।' ऐसा कह कर उसने उसके वित्त नाली हो । नहीं तो सर . जायगा।'

एक बार राजाने अपनी गर्दनको पाँडाका प्रताकार पूछा । उसके यह कहने पर कि, दो पछ भर कस्त्राीको भिगो कर छेप करानेसे रोग ज्ञान्त होगा, वैसा ही किया गया । गर्दन ठीक हो गई । किर राजाकी पाछकी ढोनेबाछे किसी गरीब मनुष्यने भीगा ( गर्दन ) की पांडाकी दचा पूछी । उससे कहा कि 'करार्यों जड़ विस कर उसके रसमें उसी जगहकी भिद्यों मिछा कर उसका छेप करो । ' तब राजाने पूछा कि यह क्या बात हैं ! इस पर उसने बताया कि 'आयुर्वेद छोग देश, काल, वल, हारीर और प्रकृति देख कर चिकित्सा किया करते हैं । '

एक बार, बुछ धूर्त एक मत हो कर दो दोकी संख्यामें पृथर्ज् धुगक् हो गये। पहले दोने बाजारके रास्तेमें पूछा कि 'क्या बात है कि लाप शरीरसे खिल दिखाई देते हैं। व दूसरे दोने श्री मुझाल स्वाधी प्रासादके सोपान पर [बही बात ] पूछी। तीलरे दोने राजद्वार पर और चौथे दोने द्वारतोरण पर बही बात पूछी। इस प्रकार बार बार पूछनेसे उसे [अपने स्वाध्यके निपयमें बड़ी ]शंका उत्पन्न हो गई और तत्काल ही उसे माहेन्द्र ज्यर हो गया। [और उससे ]तेरहमें दिन वह बेच मर गया।

#### इस मकार यह द० लीला वैद्यका मर्वध समाप्त हुआ।

८९) इसके बाद, सान्त नामक मंत्री, काठकी नोंई अन्यायी उस मदन पाछ को मारनेकी इच्छासे किसा समय, फर्ण के पुत-कुमार जय सिंह—को हाथी पर चढ़ा कर राजपाटिकाके बहाने उसके घर छे गया और वहाँ [कुछ दुक्तान मचना कर ] बीरोंके हाथसे उसको मरवा डाछा ।

#### उदयन संजीका प्रवन्ध ।

९०) इयर, म रु दे श का रहने नाला कोई श्री मा ल बं शी य वर्णक् जिसका नाम 'उदा' था, अच्छा घो खरीदनेके लिय, वर्णकालकी कोंधेरी रातमें कहीं जा रहा था। वहाँ जंगलमें उसने देखा कि कुछ कर्मचारों किसी खेतमें एक क्यारिस दूसरी क्यारों जल पर रहे हैं। उनसे पूछा कि तुम लोग कीन हो। उन्होंने जब कहा कि 'हम पत्लें आदमीके कामुक (हितिचन्तक) है' तो उसने पूछा कि मेरे मो कहीं हैं। इस पर उनके यह बताने पर कि 'कर्णाव ती में हैं 'वह सकुट्टेंब [उस स्थानको छोड़ कर ] बहाँ (कर्णाव तो) पहुँचा। वहाँ पर वाप दी य जिन मन्दिरमें [देवदर्शक करते हुए उसको ] किसी 'छा छि 'नामक एक डिग्पिका श्रायिकाने, उसे साथिक जान कर प्रणाम किया। उसके यह पूछने पर कि आप तिस्कों जीतिये हैं '[उदाने कहा कि] 'में निदेशों हूँ, आप ही को श्रीये समिश्चर् !' यह सुन कर उसने उसको अपने साथ छे जा कर, किसी विण-

्क्से घर भोजन बनवा कर उसे खिळाया और अपने धरके नीचेके तल्लेमें खाट बिछना कर रहनेकी जगह दी। काळकमसे उसके पास खूब सम्पति हो गई। फिर उसने अपना निजका ईंटोका घर बनवानेकी इच्छा की। उसकी नींव खोदते समय [ जमीनमेंसे ] अपरिमित धन निकल आया। वह उस खीको खुला कर उस निधिको जब देने लगा तो जसते अस्त्रीकार किया । उसी निश्चिक प्रमावसे, वहाँ पर, वह उद य न मंत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

९१) [ फिर उस धनसे ] उसने क र्णा वती में अतीत, मिवप्य और वर्तमानके चीवीस चीवीस जिनोंसे

स्रशोभित श्री उद्यन विद्वार विगयक मन्दिर विजयाया।

९२) उसको भिन्न भिन्न मातासे उत्पन्न ऐसे चार पुत्र हुए, जिनके नाम चाहड, आंध्यड, बाहड और सो छा क इस प्रकार थे।

## सान्त मंत्रीका प्रवन्ध

९३) एक दूसरे अप्रसर पर, सान्त्र नामक महामंत्री हाथी पर चढ कर राजपाटिकामें जा कर छीटा और अपनी ही बनवाई हुई सान्त् यस क्षिकामें देवजन्दन करनेकी इच्छासे उसमें प्रवेश करते हुए, उसने, किसी नैत्यवासी क्षेतावर यतिकी. बार-वेक्शके कंघे पर हाथ रखे हुए देखा । मंत्रीने हाथीसे उत्तर कर उत्तरासङ्घ करके, पञ्चाक प्रणामके द्वारा, गीत म सुनिकी भाँति, उसकी प्रणाम किया । वहाँ पर क्षणभर ठहर कर, किर उसे प्रणाम करके. वह चला गया। वह यति सो लानके मारे मुँह नीचा किये पातालमें गद्या-सा जाने लगाः और फिर ताकाल सब लोइ-लाइ कर ' मल घारी श्री हेम सुरिके पास उपसम्पदा प्रहण करके, संवेग रससे पूर्ण हो दा बु झ य पर्वत पर चला गया और बारह वर्वतक वहाँ तप किया। किसी समय वही मंत्री श्री दा बु झ य पर देवचरणोंकी यात्रांके लिये गया तत्र वहाँ उस मुनिको अपिश्वितकी नाई देख कर, उसके चरित्रसे मनमें चित्रत हो कर, उसका गुरुंकुछ आदि पछा। 'असरुमें तो आप ही गुरु हैं'-उसके ऐसा कहने पर कान बंद करके मंत्रीने कहा - नहीं, नहीं, ऐसा मत'कहिये।' असल बात न जाननेके कारण ऐसा कहते हुए उस मंत्रीसे उसने कहा-१३१. चाहे गृही हो न्वाहे त्यागी, जो जिसको शुद्ध धर्ममें स्थापितं करता है वही उसका धर्मगुरु

होसा है। इस प्रकार उसे मूछ बृतान्त बता कर उसकी धर्ममे रहता निर्माण की ।

इस प्रकार यह पन्त्री सान्त्रकी दृद्धमैताका प्रबंध समाप्त हुआ ।

#### मयणहादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना।

९४) उसके बाद, श्री म यण ह्या दे वी ने, अपने पूर्व जन्मकी स्पृतिके झानसे जाना हुआ, पूर्वभवका चह प्रतात. जब सि द पा न से कह बताया. तो वह श्री सो मना थ के योग्य सवा करोड़ ग्रन्थकी सवर्णभयी प्रजा-सामग्री सांप छे कर यात्राके छिये गाताके साथ चला। वह इस ग्रकार, बाहु छो इन गर पहुँची, तो वहा पर, पखदुळ-कर वसूल करने वाले राजपुरुप -के द्वारा, काएडी आदि प्रवासी भिक्षक गण, कर देनेके लिये पीडित किये जा कर, उनकी अवहेलना की गई। वे ऑलोंमें, आसू भर कर पीठे लौटने लगे। मयण हा देवी ने जी यह बनान देखा तो उसके दर्पणसे [ स्रन्छ ] हृदयमें उनकी पीड़ा संजान्त हो गई। वह मी [ उनके साथ यात्रा किये बिना ] पीठे छोटने छगी । तब सि द्ध राज ने बीचमें पड कर कहा- स्वामिनि ! आपका यह कैसा संभ्रम है! आप क्यों पाँठे छीट रही हैं! ' राजाके ऐसा कहने पर [उसने कहा-] जमी यह कर सर्रिया बन्द कर दिया जायमा तमी में सो में चरको प्रणाम करूँगी, अन्यया नहीं। और तो क्या, इसके बाद भोजन और पानका भी मुद्दो नियम है। ' यह सुन कर राजाने पश्चकृतको बुखाया और उसका हिसाब पूछा, तो उसमें ७२

खाखकी आमदनी मादन दी। राजाने उस करके पृथ्को काड कर, माताके कल्याणार्थ उस करको उठा दिया और अंजडीमें जछ छे कर उसकी प्रतिज्ञा की। इसके बाद उस ( मयण ह्या देवी ) ने सो मे श्वर के पास जा कर उस सुवर्णसे पूजा की; तथा तुछापुरुपदान, गजदान आदि अनेक महादान दिय। रातको वह ऐसे गर्वके साथ कि 'मेरे समान संसारमें न कोई हुई और न कोई होने वाळी है 'गाढ़ी नींदमें सो गई। तपत्वी वेप धारण करके उसी देव ( सो मे श्वर ) ने [ स्वाम्में प्रत्यक्ष हो कर के ] कहा—' यहीं मेरे देवाळपर्में एक काफीटिक की नाजाके लिये आई है । तुम्हें उसका पुण्य माँगना चाहिये । ऐसा आदेश करके जब वह देवता अन्तर्वान हो नाये तो [ किर मानःकाळ ] राजपुरुपीसे खोज करा कर उस खीको उसने सुख्या । उसके पुण्यको माँगने पर भी वह किसी तरह जब देनेको तरपर न हुई तो उससे पूछा कि ' यात्रामें तुमने क्या [ दृष्य ] ज्यम किया वह किसी तरह जब देनेको तरपर न हुई तो उससे पूछा कि ' यात्रामें तुमने क्या [ दृष्य ] जयम किया है !' तो यह बोळी कि मैं भीख माँग माँग कर १०० योजन दूरसे, कई देश पार करके, कल्के दिन यहाँ देवाळपर्में आई हूँ । तीथींपयास करके, पारणानें किसी सुख्यति में वह तुमने क्या [ व्या की पार के सुख्यति के सुख्यति है निमंगिनी थोडासा पिण्याक ( खळी ) प्राप्त करके, उसके एक दुकड़ेसे भेले यो सो मे श्वर तो पूजा की, एक दुकड़ा अतिपिको दिया और पुत्र देता हो आपने यह बाद्य छोज करा । आप तो वही पुण्यवती हैं—जिसके विता, माई, पित और पुत्र राजा हैं । आपने यह बाद्य छोज करा, जो थर छालका था, उठवा दिया है । स्वा करोइ नृत्यक्षी सामगीर देवकी पूजा कर अगणित पुण्य अर्जन किया है । आप मेरे इस कुद पुण्य पर कमी कि करती हैं शीर यदि क्रोज ज करें तो कुछ कहाँ । असकों तुग्हारे पुण्यते सेरा पुण्य अधिक है । कमों कि—

१३२. संपत्ति होने पर नियम करना, हाकि रहते सहन करना, यीवनावस्थामें वत छेना और दीरेहा-' नस्थामें दान देना.-यह सब वहत थोडा होने पर भी अधिक प्रथमा कारण होता है।

इस प्रकारिक युक्ति-युक्त वाक्यसे उसने उसके गर्वका निराकरण किया |

न्त्रा कर इस प्रकार रहात का— १३३. हे चक्रवर्ती नाथ : तुरुहारे चित्तको तो कौन जानता है, छेकिन में समझता हूँ कि हे क्त र्गप्रक्र आप शीव्र ही छंका छेना चाहते हैं और उसीके छिये यहाँ खड़े खड़े मार्ग देख रहे हैं।

[ तत्र एक ] दूसरे चारणने कहा-

१२४. हे जे सल (ज व सिंह)! यह समुद्र दीड कर तुम्हारे पैर घो रहा है; इतलिये कि तुमने और तो सब राजाओं को जीत लिया है और सिर्फ एक मेरा तिभी पण राजा वक्ती रह गया है; सो उसको छोड़ दीनिए!

#### सिद्धराजका माछवाके साथ संघर्ष।

९६) राजा जब इस प्रकार यात्रामें ज्यस्त था, उसी समय माळवा का छ्ळान्वेपी राजा यशो व मों मूर्ज र दे श में [आ गर ] उपदव करने छगा। सान्त् मंत्री ने पूछा कि 'मळाँ, आप कैसे इस चढ़ाईसे निइक्त हो सकते हैं!' उसने कहा कि 'यदि तुम अपने स्वापीकी सो मे खर देव की यात्राका पुण्य सुझे दे दो तो।' ऐसा कहने पर उस मंत्रीने उसके चरण थो कर, उस पुण्यदानके निदानरूप जळको चुन्द्में छे कर उसके हाथ पर छोड़ दिया और ऐसा करके उसको [ मूर्ज र देश से ] यापस छोटाया। [यात्रासे छोट कर] श्री शिक्ष राज जब नगरमें आया और मंत्री और माळव नरेशके उस चुनात्तो सुना तो वह नदा कुद हुआ। मंत्रीने उससे

[ शात करते हुए ] यों कहा —' स्त्रामिन् ! यदि मेरे देनेसे तुम्हारा पुण्य चळा जाता है तो मैं उसका तथा अन्य पुण्यतानोंका पुण्य इसी तरह आपको भी दे देता हूँ । और असलमें तो बात यह थी कि जिस-किसी भी उपायसे अप्रसेनाको स्वदेशमें प्रवेश करनेसे रोकनी जरूर थी।" ऐसा वह कर उसने नृपतिका अनुनय किया। इसके बाद इसी अमर्पनदा उसने मालव मण्डल पर चढ़ाई करनेकी इच्छा की । सह स लिंग [सरोजरादि ] धर्म-स्थानके कार्यका जो आरंग किया गया था उसकी देखरेखका काम मंत्रियों और शिन्पियों (कार्रागरों) की सींपा। बढ़ी द्वीप्रताके साथ उसका काम चलने पर राजाने युद्धेक लिये प्रयाण किया । वहाँ जय-जयकारके साथ बारह वर्ष तक यह होता रहा । फिर भी जब किसी प्रकार था रा । नगरी ] का किला नहीं इटता दिखाई दिया तो [ एक दिन राजाने यह ] प्रतिज्ञा की कि वा रा के किलेको तोड़े बिना आज अन ही न खाऊँगा । सायकाल हो जाने पर भी ऐसा करनेमें असमर्थ डोनेके कारण, साचित्रोंने आटेकी बनावटी धारा बनवा कर और वहाँ पर पर मार राजपुत्रको अपने सैनिकों द्वारा मरवा कर, उस प्रतिज्ञाका निर्वाह कराया । इस प्रकार प्रपन्नसे राजाने प्रतिज्ञा तो परी की, टेकिन कार्यमें सफलता प्राप्त न होनेसे नापस छीटनेकी अपनी इच्छा स जा छ नामक मंत्रीकी बताई ! उसने अपने गुप्तचरोंको तीन रास्ते, चोराहे और चब्रुतरे इत्यादिक स्थानों पर भेज कर, धाराके किलेके भग होनेकी वातें जाननी चाहीं । लोगोंके परस्पर वार्तालाप करते हुए, धाराके रहने वाले किसी [ जानकार ] पुरुषने कहा कि ' दक्षिण दिशाके दरराजेकी ओरसे शत्रसेना हमला करे तर ही कहीं धाराके किरोका तोइना सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं।' यह बात सन कर जिन गुप्त चर लोगोंने ] मत्रीको सूचित किया। उसने इस ब्रुचान्तको गुमरूपसे राजाको विज्ञापित किया। राजाने भी यह ब्रुचान्त जान कर उधर ही से भेनाके साथ आफ्रमण किया । तो भी दर्गको बड़ा दर्गम समझ कर राजा स्वयं 'यशः पट हं गामक अपने प्रधान बळगान् पर हाथी पर चढ़ा। उसके पाँठे साम छ नामक महारत खड़ा रहा। त्रिपोळिया दरपाजेके दांनी कियाडोंको, जिनके अदर छोहेकी जनर्दस्त अर्गछा छगी हुई थी, तोडनेके छिपे उस हाथाने अपना सर्न सामर्थ्य खर्च कर दिया । कियाड ती हट गये लेकिन हाथीकी हड़ी भी साथमें हट गई। महासतने सि द्व राज को उस परसे उतारा और ज्यों ही वह स्वयं उस पर चढ़नेको उचत हुआ त्यों ही वह हाथी पृथ्नी पर गिर पड़ा। यह हाथी बड़ा बीर होनेके फारण सर कर अपने यशसे धवल हो कर बढ़ सर प्राप्तमें यशो धवल नाम प्रडण फरके निनायक रूपसे अन्तीर्ण हुआ।

१३५. सिद्धिक स्नमन्य रीटको तटदेशको आधारको कारण मानो जिसका दूसरा दांत टूट गया है, यह एक दाँत भारण करनेमछ। गजरून ( निगयक ) तन्द्रारा श्रेय करे ।

इस तरह उसकी स्मृति [को जाती] है। इस प्रमार दुर्गका भग करने पर युदमें आगन्द च शोप मी की [सन्धि-प्रिम्हादि] ६ गुणोसे बॉध कर, उस जगह पर अपनी जगन्मान्य आहारी उद्योपणा करवाई और य शोप में [ रामाकी वन्दि बना कर अपने साथमें हो | पत्तन में आया [

[ तम परियोंने ऐसी स्तृतिया पड़ी-]

[८९] जो शिरियो, ऐसा न ममनो कि इस भिद्ध सज के प्रपाणने अनेक राजाओं हो होनाका नाश किया दे इसटिये जब इसकी धार बुटिन हो गई है। नहीं नहीं; प्रजल प्रतापरण अपिके उपर आफ्ट हो कर यह सम्प्रापवार (=१ जिसने धारा नगरीको प्राप्त किया है, २ निसने सेजदार धार पार्ट हो कर यह सम्प्रापवार (=१ जिसने धारा नगरीको अपन्त और अधिक तेज होगा

[९०] दे महाराज ! आपने राष्ट्रभोते जिसस करनेमें दूधकी धाराके समान जो उप्पर करा प्राप किया दे उसके कारण आपनी लड़पार सो उप्पर ही थी पर इन महस्य-नारियोके कानर [मिदिन असुनर ] पी पी कर, इसने, उसकी महिमा मूचक, यह कारिया धारण कर टी दें। ।

#### सिद्धराज और हेमचन्द्राचार्यका मिलन ।

९७) प्रति दिन सत्र दर्शन [के आचार्यों ] को आशीर्मद और दानके लिये बुलाये जाने पर, यथात्मर चुलाये ग्रेय श्रो हेम चन्द्र प्रभृति जेनाचार्य श्री सिद्ध राज के पास गये । राजाके दुक्ल आदि दे कर उनका सरकार करने पर, उन समी अप्रतिम प्रतिमा पूर्ण पंटितों द्वारा दोनों तरह पुरस्कृत हो कर हेम चन्द्रा चार्य ने राजाको इस प्रकार आशीर्माद दिया—

१३६. हे कामधेतु! तू अपने गोमयके रससे सूमिका आसेचन कर, हे समुदो! तुम अपने मोतियोंसे स्वित्तिक बनाओ, हे चन्द्र! तूं पूर्णकुंम बन जा और हे दिग्गजो! तुम अपने सरळ त्हेंसे कल्पवृक्षके पत्ते तोड कर उनके तौरण सवाओ — क्यों कि संसारका निजय करके सिद्ध राज आ रहा है।

इस प्रकार निष्यपच (सरङ) काल्यके निनेचन करने पर उनकी वचन-चातुरीसे विचर्ते चमरहत हो कर राजाने [यथेष्ट] प्रशस्त की । इस पर कुछ असिहिष्णुओं के - जर्थात् ब्राह्मणों के - यह कहने पर कि 'हमारे शाखों के - अप्योत् पाणिन्यादि व्याकरण प्रंथों के - अप्ययनके वक पर ही इन (जैनों) की निद्वत्ता है।' राजाने श्री हेम च द्र आचार्यसे पृछा । [उन्होंने कहा-] प्राचीन काल्ये श्री किनेन्द्र महाधीर ने अपने शैशन काल्ये इन्द्रके सामने किसकी व्यारणा की यी उसी जै नेन्द्र ज्या करणा को हम लोग पढ़ते हैं। उनके ऐसा कहने पर उस पिछानने कहा कि इन पुरानी बातों को लोड़ दो और हमारे समयके ही किसी तुन्हारे व्याकरण कर्तांका पता वता सकते हो तो वताओ । इस पर थे राजासे बोले कि यदि महाराज श्री विद्र राज सहायक हो तो, मैं ही स्वय कुछ दिनों ही पत्राक्ष पूर्ण नृतन व्याकरण तैयार कर सकता हूँ। राजाने कहा-मैंने [साहाय्य करना] रेखीकार किया। आप अपने यचनका निर्माह करें। ऐसा कह कर उसने सब सूरियों की विद्या किया। वे भी अपने अपने स्थानको गये।

राजाने [पहुंछ हो यह एक] प्रतिज्ञा कर छी थी किय शोव मी के हाथमें निना म्यानकी छुरी देकर ओर उसकी अपने पीठे विठा कर हाथो पर सनार हो कर हम नगरों प्रनेश करेंगे। राजाकी इस प्रतिज्ञाकी छुन कर मुखा छ नामक मत्री [असतुष्ट बना और उस] ने प्रशान पद ठोड़ दिया। राजाके बार बार कारण पूठने यर

१३७. राजा छोक चाहे सन्धि [करना] न जाने ओर निष्ण्य भी [करना] न जाने; पर यदि वे [मनियोंका] आएयात (कहा हुआ) ही सुनते रहें तो इसीसे वे पण्डित हो सकते हैं।

इस प्रकारका नीतिशालका उपदेश हैं। महाराजने स्वय अपनी शुद्धिसे जो यह प्रतिज्ञा की हे, भविष्यमें चह क्षित्रकर न होगी। राजाने प्रतिज्ञामग होनेके अयसे भीत हो कर कहा कि "प्राणोंका त्याग करना अच्छा है। किन्तु निक्षियित इस प्रतिज्ञाका नहीं। " इस पर मंत्रीने काठकी छुरी बना कर शाल्कृक्षचे पाण्डुरगके गोंदसे उसे परिमार्जित कर, पीठेके आसन पर रोजा कि स्वर रोज में के हाथमें दी। उसके आगेके आसन पर राजा सिक्ष राज बैठा और ख्या सामारोहके साथ उसने अणा हिस्त प्रति क्षेत्र किया।

प्रानिशक मंगठकी धूमनाम समात हो जाने पर राजाने व्याकरण ब्रचानकी याद दिवाई। इस पर बहुतसे देशोंके तन्त्र पड़ितोंके साथ सभी व्याकरणोंको नगरमें मंगना कर श्री हे म च हा चार्थ ने श्री सिद्ध हूं म नामक -मूतन प्रवाह ब्याकरण एक वर्षमें तैयार किया। इसका मंगरमाण सगदाख रूगेक था। राजाके निजके वैठनेके हाथी पर उस पुस्तकको रख कर उसका खुट्म निकाल्य गया। उसके उपर खेतच्छन व्यानाया गया। और दो चामरसाहिणिया चामर झुट्मे टुर्मा। इस प्रकार उस मंग्रकी महिमा करके उसे कोशागारमें रखा। फिर राजाकी आज्ञासे अन्य व्याकरणोंको छोड़ कर लोग सब उत्तीका अध्ययन करने लगे। इस पर किसी मस्तरीने राजासे कहा ' कि ' इस व्याकरणों आपके वंदाका तो कोई उल्लेख हो नहीं है।' इससे राजाके मनमें क्रीध हुआ। यह बात किसी राजपुरुपसे जान कर श्री है मा चा येंने [ताखण ] बत्तीस छोक नृतन निर्माण करके बत्तीस ही सुज्यादोंके अन्तरीं उन्हें संल्या कर दिया। प्रातःकाल जब राजसमामें व्याकरण बांचा गया तो...

१३८. हरिको भाँति बिल बंघकर (=१ विक्ति बाँधनेवाला, २ विल्योंको वंदी करनेवाला), शिवकी नाँद्रे त्रिद्यक्तिमुक्त, और ब्रक्षाकी तरह कमलाश्रय (=१ कमलका आश्रय लेनेवाला, और २ कमला-लक्ष्मीका आश्रय ) श्री गुल राज लुपकी जय हो ।

ितृतीय प्रकाश

इत्यादि, ची छुवय ये राक्षी स्तुतिवाले बचीस स्त्रीक बचीस स्त्रगादीके अन्तरे आये हुन कर राजा मनमें प्रमुदित हुआ और उस व्याकरणका उसने स्त्व प्रचार कराया। इसी प्रकार श्री सिन्दराज के दिग्यिजय वर्णतर्में [हेमा चार्य ने । आ अय नामक [काव्य ] प्रंय बनाया।

['है माचार्थ के बनाए इस सिद्ध है म व्याकरण के विषयों विद्वानोंने ऐसी उक्तियाँ कही हैं— ]

१३९, हे साई! पाणि निके प्रलापको बंद करो, 'कार्तत्र का चीयहा यत काडी शाकटायन के कटु वचनको मत पढ़ो, और क्षत्र चांद्र व्याकरण से कचा मतलब है, भलों, और कण्टा मरण आदि व्याकरणोंसे अपने आपको कोई क्यों शुल्यमा, जब कि अर्थमचुर ऐसी श्री सिद्ध है मकी उक्तियों सुननेको मिलतो हैं।

९८) इसके बाद, श्री सिखराज ने एक न में य शोव में रा या को, त्रि युक्ष प्रभृति सभी राजप्रासारों और सह स्र लिंग प्रभृति धर्मध्याजींको दिखा कर बताया कि—[हमारे राज्यमें] प्रतिवर्ध देवदायमें एक करोड़ द्रव्य व्यय किया जाता है। और किर उससे पृष्ठा कि 'यह सुंदर है या असुंदर है'। यह बोला—में तो अहारह छात्र संस्थालां (१) मा छव देश का राजा हूँ, तो भी में सुमधे पर्याजित कैसे हुआ है। पर यह देश तो पहले ही महा का छदेव को अर्थण कर दिया गया है और उसी देवद्रव्यका हम मा छवी लोग उपभोग कर रहे हैं, और इसीछिय हमारा उदम और अस्त होता रहता है। आपके मंशमाले राजा भी इतना देवद्रव्य व्यय करनेमें छसमधे हो कर उसका लोग करेंगे और किर सारा देवदाय बंद हो जानपर इसी एकार वे विविक्तप्रत हो कर समुख हम हम हम हम विविद्य हम स्वाप्त हम सा हम हम हम स्वाप्त वे विविक्तप्रत हो कर समुख कर होता हो सु

## सिद्धराजका सिद्धपुरमें क्ट्रमहालय बनवाना ।

९९) इसके पथात, एक बार श्री सिंद राज ने सिंद पुरमें रुद्र महारू यका प्रासाद बनवाना चाहा। किसी [प्रसिद्ध] स्वपति (कारीगर) को अपने पास रख कर, प्रासादके प्रारंभ होने के समय उसकी कैस्ट्रांसिकाको — नो उतने किसी साहकारके पढ़ों एक छावमें बेचक रखी थी — हुइ। कर उसकी दिलवाई। वह बांस्का कमाविष्यों को वही हुई थी; उसे देख कर राजाने पूछा कि क्या बात है! इस पर उस स्वपतिने कहा कि मैंने महाराजकी उदारताको परीक्षा कि ठिये ऐसा किया है। किर उस हव्यको राजाकी अनिच्छा रहरे पूर्व भी छोटा दिया। किर कमावसार १ वह साव उच्च सर्वापक्ष प्राप्त अक्ष्मति, गजपति, नरपति प्रमृति वह बढ़े राजाओंको सूर्तियाँ बनवा कर रखी और उनके सामने हाथ ओई हुए अपनी मूर्ति भी बनगई। [जिसका आश्चय यह है कि राजा] उनसे वर मांगता है कि देशका भ्रष्त करते हुए भी इस मामादका कीई मंग न करें। उस मंदिर पर प्रायापिका उत्सव करते समय सभी जैन प्रासादोंकी पताकार उत्तरया दी गई। जैसे मा छव देश के महा का कक में मिरेरमें जब वैवर्षती चढ़ाई जाती है तब जैन प्रासादोंके पतावारी मही होने पाता।

र यह कलानिका नामका कार्यगरका कोई ओजार है जिसका टीक अर्थ समझमें नहीं आता !

#### सिद्धराजका पाटनमें सहस्रिंग सरोवर वनवाना।

- १००) एक बार, सिद्ध राजने मालयक मण्डलके प्रति जाना चाहा तब किसी व्यवहारीने जो अस काममें नियुक्त अधिकारी था ] सह स्र लिंग सरोजरके कारखानेके लिये कुछ द्रव्य और माग माँगा ! राजा कमे कुछ भी दिये जिना चला गया। कुछ दिनोंके बाद दुन्याभाउसे उस कामके चलनेमें देरी होते देख, उस ब्यवहारी ( अधिकारी ) ने अपने उड़केंसे किसी धनाट्य पुरुपकी खीका तार्डक ( करन फूट ) चरना छिया. और फिर स्वय उसके दण्डस्वरूप तीन लाख इन्य दे दिया। उससे वह काम पूरा हो गया। यह वात मा छ व मण्डल में, वर्षाकाल में ठहरे हुए रानाने सुनी। सुन कर उसे जो आनन्द हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । इसके बाद वर्षाकालकी धनी बृष्टिसे जब सारी पृथ्वी एक समदकी माँति जलमय हो गई तो प्रधान पुरुषोंने राजाको वधाई देनेके लिये किसी मरुदेश वासीको भेजा । उसने [जा कर ] राजाके सामने निस्तार पूर्वक वर्षाका स्वरूप कहना आरम्म किया । इसी बीच, उसी समय आया हुआ कोई धूर्त गुजराती जल्दोंसे बोल तठा- महाराज बर्गाई ! सहस्र लिंग सरोगर [जल्से परिपूर्ण ] भर गया है। उसके ऐसा कहने के साथ ही राजाने उस गुजराती को अपने शरीरके सारे आभरण दे दिये। यह महयासी छींकेसे गिरे हुए मार्जार की भाँति देखता ही रह गया।
- १०१) इसके बाद, वर्षा बीतते ही, राजा पहाँसे छोटा ! [सस्तेमें ] नगर महास्थान (वडनगर) में हैरा डाला और वहाँ बननाये गए मच-मडपर्ने राजसमाकी बैठक की गई। नगरके प्रासादों ने प्रज लगे हुए देख कर ब्राह्मणोंसे पुछा कि 'ये कीनसे प्रासाद हैं हैं' उन्होंने जब वहाँके जिन और ब्रह्माके मंदिरोंका हाल बताया तो कृद हो कर राजाने कहा कि । जब भैने गुर्जर मंडल में, जैन मदिरों में पताका लगानेका निपेध किया है, तो किर आप छोगोंके इस नगरमें इन जैन मदिरों पर ये पताकार्ये क्यों उड रहीं हैं ?? उन्होंने कहा कि- धानिये. कृत्युगके प्रारममें श्रीमन्महादेवने इस महास्थान की स्थापना करते हुए श्री ऋपमनाय और श्री ब्रह्मदेवके प्रासाद स्वय बनागये और उन पर पाजायें चढाई। सो इन दोनों प्रासादोंका सकतियों द्वारा उदार होते रहने पर ये चार युग बीत गये । दसरी बात यह है कि-पहले यह नगर शत्रक्ष क महागिरिकी उपयका भूमि था। क्यों कि न गर पुराण में भी कहा है कि---
  - १४०, कहा जाता है कि आदिकालमें इस निनेश्यरके पर्यतकी मूलभूमिका विस्तार पचास योजन था ऊपरकी मुमिका विस्तार दश योजन था और ऊँचाई आठ योजन थी ।

कुतयुगर्मे आदिदेव श्री ऋष भदेव के प्रत्र भरत नामक हुए । उन्होंके नामसे यह 'सरत खण्ड ' प्रसिद्ध हुआ ।

- १४१. नाभि और [उनकी पतनी ] यरु देवी के प्रत्र श्री वृषम (ऋपम देव) हुए जिहोंने समदक् हो कर मुनियोग्य चर्याका आचरण किया । वे स्वच्छ, प्रशान्त अन्त करण, समदक् और सधी थे। ऋषिगण उनके अर्हत पदको मानते हैं।
- १९२. म र देवों के गर्मसे नाभि के (श्री ऋषभदेव) पुत्र हुए जो अष्टम [त्रिण्युके अन्तार स्त्रह्म ] थे और सत्र आश्रमसे नमस्कृत थे । निहोंने घीरोंको अथवा बीरोंको [मोक्षका ] मार्ग दिखाया । ( यहां P प्रतिमें निम्नलिखित -अनुवादवाले-श्लोक अधिक पाये जाते हैं- )
- [९१] स्त्राय मुव म नुके पुत्र प्रियत्र त नामक हुए, उनके पुत्र हुए अग्रीन्द्र, उनके ना मि और उनके प्रत्रऋषम ।

- [९२] मोक्षधर्मका विधान करनेकी इच्छाने वा सु देव ही अंशरूपने अवतीर्ण हुए हैं, यह बात उनके निषयमें [ मुनियोने ] कही है । उनके सी पुत्र हुए जो सभी ब्रह्मपारंगत थे ।
- [९३] उनमें सबसे ज्येष्ठ भरता थे जो नारायणके भक्त थे। जिनके नामसे यह अद्भुत ऐसा भारत वर्ष निस्थात हुआ।
- [९४] अईन, तिन, भर, त्रिणु, सिद्ध, बुच, परमात्मा, और पर--ये सभी शब्द एक ही अर्घके बाचक हैं।
- [९५] मनीपियोंने जैन, बौद, बाक्ष, शैप, कापिल और नास्तिक इन छहोंको दरीन कहा है।
- [९६] उसमें, इन शपके कुळके आदि बीज निम च बाहन हैं। मरुदेव और नाभि ये भरत खंडमें कुळ-सचम (कुळेश्च) हुए।

इत्यादि पुराण शक्योंको सुना कर, निशेष निश्वासके छिए श्राष्ट्रपादेवके मन्दिरके मण्डारमेंसे, राजा मरत के नामने अकित, पाँच आदिमियों द्वारा उठावे जाने छायक काँस्टेका बद्दा ताछ छे आ कर राजाको मावर्णोंने दिखाया ! और इस प्रकार जैनधर्मका आदिधर्म द्वांग उन्होंने सिद्ध किया ! इसके बाद खेदसे मनर्में क्रिक हो कर राजाने, एक वर्षके बाद, जैन मिदरों पर पुनः प्रजारोपण करवाये !

- १०२) तहुपरान्त, प च न में पहुँचने पर राजाको जब सरोग्रस्के खर्चका हिसाब बताया गया कें च्यवहारीने उस अपराधी पुत्रते दण्डस्वरूप तीन छाख ठिये जानेकी भी बात सुनी । यह तीन छाख उसके घर भिन्ना दिया। इसके बाद यह ब्यन्डारी राजाके छिये हायमें भेंट छे कर उसके समीय आया और वोडा कि ' यह आपने क्या किया!' तब फिर उस कर्मस्थायके अधिकारी ब्यवहारीसे राजाने कहा—' जो ब्यन्डारी मोटीप्न है यह ताडहूका चौरनेवाडा कैसे हो सकता है ! तुमने इस धर्मस्थातके बन्नातेमें दुख धर्ममाग मागा था, छेकिन उसके न मिछने पर प्रपद्मयं चतुर—तथा मुँदसे यूग और धीतरसे ब्याव्यकी इतियांक, उपरासे यूब सांख और अतरसे शक्तानाजे वतुत्यकी तदद—सुम्होंने यह कर्म ( ताडहूकी चौरी ) करवाया है ।' [ इस प्रकारनी और मी कितनी ही बातें कह कर उसे खब छाता किया। ]
  - १४२. जिस सरोजरके भीतर, शिवके शन्दरके दांवक प्रतिविधित हो कर पातालमें सर्पीके सिरपरके मणियोकी भीति शोभा पाते हैं।
  - १९४. सिन्द राज के हुंस स्रोवरके शोभित रहते, जेस मन मानस्रोतरकें नहीं रमता, एपा सर उसके भानद सम्पादन नहीं करता और अच्छोद स्रोतर, निसका जल बहुत हो अच्छा है, यह भी असार (जान पहता ) है।

एफ सार श्री सिद्ध राजने राम चन्द्र[कारि] से यूटा 'ग्रीच्य अप्तुर्वे दिन क्यों क्षेट्र होते हैं!' राम चन्द्र ने फटा—

[% ] दे थी मि दितु में के मछ महाराज ! आपके दिग्यिजयके उत्तर्सचें दी इते हुए योरों के धांशें की टर्म में एय्यीनव्डल गोद बाजा गया है और इत्तर्स उड़ी हुई उत्तर्स धूउने जा कर आकारणंगामें निज्ञ कर उसे पंकायकीक रूपमें परिणत कर दिया है। इसमें उत्तर्में दूर्वी उस गाई है और उसे सूर्यके धोड़े चरने लग गये हैं। इसी उद्द यह दिन बहा हो गया है।

[९८] मार्गणोंने तुम्हारे रात्रुओंके पास लक्ष (निशाना) पा लिया है और तुम्हारे पास वे विलक्ष ( निशानेसे रहित ) हो कर रहे हैं। फिर मी हे सिद्ध राज ! तुम्हारा 'दाता 'पनका जो यश है वह ऊपर सिर उठाये रह रहा है-बहता चला जाता है !

इसके बाद. एक बार राजाने प्रयिद्याचार्य ज य म क्ल छ सू रि से नगरवर्णन करनेको कहा । उन्होंने कहा-[ ९९ ] माळम होता है कि इस नगरीकी नागरिकाओंके चातुर्यसे निर्जित हो कर सरस्वती देवी है सो हक्की-बक्की-सी हो कर अपनी कच्छपी मां ांणाको अपने वाहुसे उतार कर यहाँ पर छोड़ दी है और स्वयं पानी वहन करने छगी है। उसकी इस बीणाका यह सहस्र छिंग सरोवर तो मानों तुंबा है और की र्तिस्तं भ मानों तसका उच दण्ड है।

१०३) इसके बाद, जब श्रीपाल कि विकी रची हुई सह ऋ लि इस रोयरकी प्रशस्ति, पहिका पर छिखी गई तो उसके संशोधनके छिथे सर्व दर्शनके (आचार्योंके) अुटाये जाने पर ब्रीहेम चंद्राचार्यने [अपने प्रधान शिष्य ] राम चंद्र पण्डितको यह कह कर मेजा कि प्रशस्ति काव्य जो सभी विद्वानोंको अनुमत हो तो उसमें अपना कुछ भी पाण्डिल मत दिखाना । 'फिर उन सब विदानोंने प्रशस्ति काव्यको शोधनेकी हरिसे पदा और राजाके अनुरोबसे तथा श्री पा लक वि के चतरतापूर्ण पाण्डित्यसे प्रसन्न हो कर मारे काल्यको मान्य किया । उसमें भी उन समीने निम्नलिखित काल्यकी विशेष प्रशंसा की-

१८५. " कोशसे युक्त होते हुए भी तथा दल (१ पता, २ सेना ) से समृद्ध ही कर भी यह कमल अपने ही कण्टकोंके समृहको उच्छित्र करनेमें असमर्थ है और इसके अतिरिक्त पुंस्त्व भी नहीं धारण करता। (कमल शब्द पंहिंग नहीं है) दिसरी ओर सिद्ध राज का जो कृपाण है ) यह अकेला ही विना कोश-( म्यान ) के भी भूसळको निष्कण्टक कर रहा है, ऐसा समझ कर ळहमीने [ अपने उस निवासस्थान रूप ] कमछको छोड कर इसके कपाणका आश्रय छिया है।

इस विपयमें श्री सिद्ध राज ने राम चन्द्र से खास पूछा तो उसने कहा कि 'यह कुछ सदोप है। 'उन सभी पंडितोंसे पूछे जाने पर ि उसने कहा कि 1 'इस काल्यमें सेनाका वाचक 'दल 'शब्द और कमल शब्दका ' नित्पक्रीवल ' ये दो दोप चिन्तनीय हैं । तब उन सभी पंडितोंसे अनुरोध करके राजाने ' दल ' शब्दको तो सेनाके अर्थभें प्रमाणित कराया । किन्तु कमछ शब्दका ' नित्यक्षीबल ' जो छिङ्गानुशासनसे असिद्ध है उसे कौन प्रमाणित कर संकता । इसिटियें पुंसर्व च धत्ते न वा ' (कभी पुंस्व धारण करता है, कभी नहीं ) इस प्रकार इस पदमें अक्षरभेद करवाया [जिससे वह अशुद्धि दूर हो गई ]। उस समय राम चन्द्र को सिद्ध राज का दृष्टिदोप छगा और यह उयों ही बसतिमें प्रवेश करने छगा त्यों हूं। उसकी एक आँख नष्ट हो गई ।

१ इस रुप्रेकमें 'मार्गण ' और 'लक्ष ' दान्द पर रुप्र है। 'मार्गण ' का एक अर्थ है बाण और दसरा अर्थ है मंगन=याचक । 'लख' का एक अर्थ है खाल संख्या पीरमित द्रव्य और दूसरा अर्थ है लहर≕निशाना । मार्गणका अर्थ जब बाण ऐसा विवश्चित है तब उसके साथ व्यवका अर्थ निशाना देना होगा: और जब मंगन=याचक ऐसा अर्थ अपेश्चित होगा तब ल्युका अर्थ लाख द्रव्य लेना होगा । सिद्ध राज के मार्यण याने बाण निपन्न याने झुरके पश्चर्य लन्यलक्य-निशाना प्राप्त करनेवाले होते हैं, कभी व्यर्थ नहीं जाते; और वे ही बाण ( शतुके फेंके हुए ) सिद्ध सात के पश्चमें विल्ला -लश्यम्नट हो कर रह जाते हैं । इससे विपरीत, मार्गण याने याचक लेक हैं वे सिद्ध स्ताक पास लक्कार याने लालीका द्रव्य प्राप्त करते हैं और शत राजाओं के पास बिल्झ याने विगतल्ख-विनाही प्राप्तिके रह जाते हैं ।

१०४) किसी समय, सान्धिविप्रहिकों द्वारा ढाइ छ दे श के राजाका निम्न लिखित लोक, जो यमछ ' पत्र ( मिन्नताका संबंध सूचक पत्र ) पर लिखा हुआ था, सुनाया गया—

१४६. आ-युक्त हो कर छोकमें प्राणदान करता है, वि-युक्त हो कर मुनियोंको प्रिय होता है, सं-युक्त हो कर सबैधा अविष्ट कारक वनता है और केवल-अकैछा होने पर क्रियोंका प्रिय बनता है।

राजाने पूछा कि 'इसमें क्या बात है ?' उन्होंने कहा —' आपके देशमें एक-से-एक प्रधान ऐसे बहुतसे विद्वान् रहते हैं । सो उनसे इस दुर्वोध्य कोककी व्याख्या कराइये ।' उनकी यह बात सुन कर सभी विद्वान् उसका अर्थ सोचने छगे पर किसीकी समझमें नहीं आया । राजाने आचार्य है म च म्द्र में पूछा । उन्होंने इस प्रकार व्याख्या की —' इसमें 'हार ' उन्द्रका अप्याहार है । उसके साथ ' आ ' उपसर्गका योग होनेसे ' आहार ' बनता है जो सब जीनोंको प्राण देता है । ' नि ' उपसर्गके योगसे ' विहार ' वन कर दोनों तरहसे पतिस्थेंका प्रिय होता है । ' से ' के योगसे ' संहार ' वनता है जो सर्वया अनिष्ट छगता है और विवा किसो तरमों के लियोका प्रिय जामरण गर्छका ' हार ' होता है । '

१०५) एक दूसरी बार, सपाद छक्ष देशके राजाने

' उगी हुई चन्द्रकला तो गैरिशेके मुखकमण्का अनुहार नहीं कर सकती ।'

इस प्रकारकी समस्यायाळा आधा दोहा यहाँ पर (पाटन में ) भेजा । अध्याप्य उन कवियों के उसकी पूर्तिन करने पर

'(और) जो न देखी गई वैसी प्रतिपदाकी चन्द्रकलाकी उपमा दी कैसे जाय ।' ॥स प्रकारका उत्तराई कह कर मुनीन्द्र हेम चन्द्र ने उसको पूर्ण किया ।

## सिद्धराजका सौराष्ट्रके राजा खंगारको विजय करना।

१०६) श्री सि द रा ज ने, न व घ ण नामक आभी र राणाका निम्नह करलेमें, पहले ग्यारह बार अपनी सेनाका परानित होमा जान कर, व दें मान (व द वा ण ) आदि नगरोमें बड़े बड़े प्राकार बनवा कर, स्वयम् ही उसके लिये प्रयाण किया । उस (व व घ न ) के भगिनी पुत्रने [ किलेका रहस्य आदि बसलानेवाले ] संकेत देते समय यह वचन लिया था कि ' किलेका कन्या करते समय वह न व घ म को सिर्फ द्रव्यमासी मारना (अर्थात् मारी दल्ड दे कर द्रव्य वस्तुल करना ), लिया कि किले आक्षेत्र मारसे नहीं मारना । ' [राजाके किल सर कर लेने पर ] जस न व घ न को जसकी खीने कहीं अन्यर खुषा दिया जिसको राजाने उस विशाल महल्मेंसे बहार खीच निकाल और अपने के भेर हुए वर्तनीसे जसे पीट पीट कर मार बाला। उसने लिको पढ़ कह कर कि ' इसके सरसे हमने इत्यके मारसे ही मारा है ' अपने वचनका पालन वतलाया और उसे शात किया।

शोकसे निमग्न उसकी रानी [सून छ देवी] के ये वाक्य कहे जाते हैं-

१४८० वह राणा स्वयर्षे नहीं है। न कोई उसे लाया है, न कोई छायेगा। खंगार के साथ में स्वयं अपने प्राण अग्रिमें क्यों न होम हूँ।

१४९. और सन राणा तो बनिये हैं और उनमें यह जे सरू ( जय सिंह ) वडा सेठ है । हमारे गढके नीचे इसने यह कैसा न्यीपार मांड रखा है ।

१५०. हे गौरवताली गिरनार तेने क्यों मनमें भस्तर धारण कर लिया है! खंगार के मरने पर तेने अपना एक शिखर भी नहीं गिराया।

[१०१] हे गरवा गिरनार! तुम पर वारि जाती हूँ | [खंगारके लिंथ] छंबा बुछावा आया है | इसके जैसा भारक्षम (समर्थ) सज्जन फिर दूसरी वार तुझे नहीं मिछेगा |

[ १०२ ] मुझको इतेन-ही-से संतोप होगा, जो प्रमु (स्वामी) के पर्गोमें [ भेरा मी टारीर अग्निदारा ] प्रदीप्त हो । न मुझे रानीपनकी चाहना है, न रोप है । ये दोनों संगार के साथ चर्छ गये ।

[१०३] हे मन रें अब तंबोछ मत माँगो, खुद्धे मुँह मत झांको । देउ छ बाढे के संप्रामर्ने खंगार के साथ वह सब चळा गया है।

[१० ह] हे जे सुछ ! मेरी बॉड मत मोडो और वारंबार विरूप मात्र न बताओ । नय घन के विना नदोंमें नया प्रवाह नहीं आता।

[१०५] हे बढ बाण भैंग तुझसे क्या छई — भूछ जाना चाहती हूँ छेकिन भूछ नहीं सकती। हे भोगावा (बढ बाण के पासकी नदी) तेंने सोनांक समान धार्णोका भोग छिया।

इस प्रकारके बहुतसे बाक्ये [ कहे जाते ] हैं । वे यथाप्रसंग जानलेने योग्य हैं ।

१०७) इसके बाद, महं० जाम्ब के बंशज दराडाधिपति सज्जन की योग्यता देख कर उसे छुरा टू दे श का प्रवन्धक ( गयर्नर ) नियुक्त किया । उसने स्वामीको विना स्चन किये ही, तीन वर्षके वस्ष्ठ किये हुए [ राजकीय ] द्रव्यसे श्री उज्जयम्त ( गिरनार ) पर्वत पर स्थित नेमिनायोक काठके बने हुए लीर्ण मन्दिरको उखाइ कर उसके स्थानमें नया पर्यरक्का मन्दिर बनवाया । चीधे वर्ष चार सामंतोंको भेन कर राजाने सज्जन दण्डाधिपतिको परण में खुठ्याया । उससे [ पिछ्छे ] तीन वर्षका वस्त्व किया हुआ द्रव्य मॉगने पर, साथमें छाये हुए उसी देशके व्यवहारियोंसे उतना ही धन के कर देता हुआ वह बोछा — "महाराज! श्री उज्जय का मंत्र मंदिरके जीर्णोदारका पुण्य अथवा यह धन इन दोनोंसेंसे चाहे सो एक के छैं। ' उसके ऐसा बताने पर उसकी अतुष्ठनीय दृद्धिसे चित्रमें चमस्त्रत हो कर सिद्धराज ने तीर्थोद्धारका पुण्य केना ही स्थीकार किया । मह .संज्ञन पिर उसी देशका अधिकार पा कर, उसने श्रमुं जय और उज्जय नद इन दोनों तीर्थोंमें उनके इंग्विके बारह योजन विस्तृत अन्तरके जितना ही क्ष्य हुक्लका वना हुआ महास्वज चढ़ाया।

# 🊬 ृ इस मकार यह रैवतकोद्धार मवन्य समाप्त हुआ ।

#### सिद्धराजका शञ्जंजयकी यात्रा करना।

. १०८) इसके बाद, एक बार िक्त सो मैं वा रक्षा बाता कर बापस छोटते समय श्री सि इराज ने, 'रे य त कि ित ही उपयक्षामें देश डाछ कर, अपना कीर्तन ( मिन्दरादि धर्मस्यान ) देखना चाहा । उसी समय मस्तरप्रायण ब्राह्मणोने यह कह कर विद्युनवाक्योसि उसे रोका कि 'यह वर्षत सजछावार छिगके आकारका है, इस्तिये इसे पैरोते स्पर्धा करण जांचित नहीं है। 'राजाने बहाँ पर पूना भिजवा कर प्रस्थान किया और दा बुख य महातीर्थिक पास आ कर पड़ार डाछा। बहाँ पर भी उन्हों निर्देश चुगखबोर ब्राह्मणोने हाथ में रुपाण छे कर तीर्थ पर जानेका मार्ग रोका। उनके ऐसा करने पर श्री सि इराज ने सेवेरा होनेके पहले ही, कापदीका येप वाना कर, और जिसके दोनों और गंगाजलके पात्र एखे हुए हैं ऐसी बहंगी केवे पर एरख कर, सुद इन ब्राह्मणोंके बीचमें हो कर पर्यंत पर चढ़ मया। किसीने उसके स्वरूपको नहीं जाना। [ उत्तर जा कर ] गंगाजलके श्री सुगाइ देव ( ऋपमनाय ) को खान कराया और पर्यंतके वासके बारह गाँगोंका शासन उस

<sup>9</sup> ये जो वास्य ऊपर अनृदित निये गये हैं, उनमेंहा क्तिनाह कपन अलग्न और असुन्धपंत्र है । जी अर्थ यहा पर् दिया गया है वह निर्भान्त है ऐसा नहीं कह सकते ।

देवनी दान कर दिया। तीर्पका दर्शन कर वह उन्मुद्धित-ळोचन हुआ और अधुताभिपिक होनेकी नाँई खड़ा रह गया। [वर्रतकी समणीयता देख कर ] सोधनी लगा कि ' इस सल्लकी-बन और नदिवोंसे परिपूर्ण पर्वत पर, यही, [नरे ] विष्यवनकी रचना करूँगा '— इस प्रकारकी जो सफल प्रतिज्ञा [पहले की थी और सदनुसार ] हाथियोंका झूंड पानेके लिये जो बेरा मन बेहाय हो गया था, उस मनोरथसे मैंने इस तार्थिकी पिन्नताका प्यंस करनेवाला मानस पाप किया है और इसलिये मुख पाणीको धिकार है। ' ईस प्रकार श्री देव-पादके सामने राज्ञोंक होरा विदित्त अपने आपकी निंदा करता हुआ वह आनंदके साथ पर्वत पर से सीचे उत्तरा।

## वादी श्रीदेवसृरिका चरित्रवर्णन ।

१०९) अब यहाँ पर देव सूरिका चित्रं वर्णन करेंगे। — उस अनसर पर कुनुद चंद्र नामक दिगम्बर [बिहान्] भिन्न भिन्न देनोंके चौरासी वादियोंको बादमें जीत कर, कर्नाट क देशसे गूर्जर देशको जीतनेकी इच्छासे कर्णात्व तीनगरमें आया। बहाँ महारक श्री देव सूरिचतुर्मोस करके रहे हुए थे। एक बार श्री अरिष्टनैमिके महिरमें जब वे धर्मशालका ब्याख्यान कर रहे थे तो उस दिगंबरके साधी पंडिसीने उनकी बहु अतुरिट्ट (मैक्टिक, विद्युद्ध ) वाणी सुनी। उन्होंने जा कर वह बुचान्त कुनुद चन्द्र से कहा तो उसने उनके उत्तमर्थने सूर्ण के साथ जब प्रक्षित कराम या। पर, खण्डन, तर्क आदि प्रमाण शालों में प्रयोण ऐसे उस महार्ष पडितने जब इस पर कुछ प्यान न दे कर समकी अनका की, तो उस दिगम्बर्स श्री देव वाचार्ष की बहन सरोजना शीट सुन्दर पे को चेटकाधिष्ठित करके, जाच, जल्लानयन आदि अनेक विश्वंताओं से उसे विश्वंति किया। चेटक (टोमा आदि) के दूर होने पर बह जब स्वस्य हुई तो उस उत्तर उत्तरमें दुःक्षित हो कर वह अपने आचार्यकी खूब अरसीना करने हुआ। उसे रोक कर आचार्य चिन्तासग्र हो रहे ।

( यहाँ पर P मतिमें इस विषयके निम्निखिखित पद्य पाये जाते हैं-)

[ १०६ ] हा । मैं किसके आगे पुकार करूँ । भेरे प्रश्न तो कर्णरिहित हैं। इनसे तो बह सुगत (सुद्ध) देय हो अच्छा है जो अपने शासनका तिरस्कार होने पर [ उसका प्रतिकार करनेकी इच्छाते ] अरतार पारण करता है।

[ साध्नीके इस याक्यको सन कर आचार्य मनमें सोचने लगे-- ]

( १०४ ] आ: ! गुरुजनके प्रमाणोंका स्याख्याका श्रम मेरे पास केवल उनके कठके सुखा देने भरका पुष्ट कल देनेवाला मात्र हुआ—गुरुओंका मुसै पदानेके लिये किया गया परिश्रम व्यर्थ ही हुआ !—जो मैं उनके शासन ( धर्म संप्रदाय ) के प्रतिकी गई इस प्रकारको विवंबनाओंके उबरको शान्त मनसे सुन रहता हूँ !

दिवस्रिके द्वारा कही गई यह उक्ति सन कर उस श्रेष्ठ आर्याने कहा- ]

[१०५] दुष्ट वादियोंके निर्देखनमें अंबुश जैमी श्री देवी, जो खेतांवरोंके बर-युद्यके ठिये मंगलमयी कोमज दुर्जा जैसी है, गुरुनर श्री देव सु रि के ख्खाट पट पर प्रथमावतारको रियति छाने।

श्री देव स्र्रिने [दिगम्बर निहान्से] कहा-'बादिखानिनोद (बाखार्थ-निनोद) के छिपे आप पत्त न चर्छे। वहाँ राजन्समामें आपके साथ बाद करेंगे।' उनके ऐसा आदेश करने पर वह दिगवर अपने आपको इतहत्य मानता हुआ पत्त न को पहुँचा।[उसका आना सुन कर] श्री सिद्ध राजने, जिसके मातामहका यह निहान् गुरु पा, सामने जा कर उसका थाय सन्कार किया। वह बही देश शान कर उसरा। सिद्ध राजने श्री है मा चा ये से वादमें निष्णात ऐसे आचार्यको बात पूछी। उन्होंने चारों विवाशोंमें परम प्रवीणता प्राप्त, जैन मुनिस्त्य हाथियोंके यूपपति, बेतांवर शासनके छिये वनके प्राक्तार जैसे मानेजानेवाछे, राजसभाके श्रंगारहार, कर्णाव तो में [चातुर्पास ] रहे हुए, बादिनियाके पारणामी, बादिहस्तियोंके छिये सिंहस्वस्त्य श्री दे वा चा में को बताया। इसके बाद उनको छुछानेक छिये, श्री संघके छेखके साथ राजाकी विज्ञासिका वहा पहुंची। उसै पा कर दे व सूरि प च न में आये और राजाके अनुरोधसे बागूदेवीकी आराधना की। उस देवांने आदेश दिया कि- वाद करते समय, वा दि वे ता छीय श्री शान्ति सूरि बिरचित उत्तर राष्य य न छुह हु कि में उछिखित दिगंबर बादस्यछ निययक चौरासी निकत्य जालका उपन्यास करके, उसे प्रपंचित करोगे तो दिगंबरके मुखमें मुद्रा छग जायगी। देवीके इस आदेशके बाद, गुत मानसे कुमु द चंद्र के पास पंडितोंको यह जाननेके छिये मेजा कि किस शाक्षमें इसकी निशेष कुशब्दता है। उनके हारा उसकी यह निम्न छिखित उति सुनी—

१५३. हे देव! आदेश क्षीजिये मैं सहसा क्या करूं? छंकाको यहाँ छे आऊं, या जंबूद्रीपके। यहाँसे छे जाऊं?, क्या समुद्रको सुखा दूं, या उस उच पर्वतको, बिसकी चोटीका एक प्रयर कैछास है, उसे खेळ-ही-में उखाइ कर समुद्रको वाँव दूँ, कि जिसके प्रक्षेपसे खुटर हो कर समुद्रका पानी वह जाय।

१५% और स्वेताम्बरी । इस प्रकारके निकटाटीप वचनोंके द्वारा, संसार इक्षके अतिनिकट कोटरमें, इस मुग्य जन-समूहको वयों गिराते हो ई यदि तरगतरको निचारमें आए छोगोंको योहीसी मी कामना हो तो सचमुच ही कुमुद चन्द्र के दोनों चरणोंका रात-दिन ध्यान किया करी।

इसके बाद श्री देव स्रिके चरणका परम परमाणु (बिनीत शिष्य), बुद्धिवेभरसे चाणास्यका भी उपदास करनेगळे पंडित माणिस्य ने निम्नलिखित स्लोक उसके पास भेजा—

१५५. अरे! वह फीन है जो सिंहके केस बालको पैरोसे छूना चाहता है ! वह फीन है जो तेन मालेफी नोफसे अपनी ऑख सुजालना चाहता है ! वह फीन है जो नागरावके सिर एरकी मणिको अपनी शोमाफे लिये सतारना चाहता है ! जो यह करना चाहता है वही बंदनीय ऐसे खेतावर शासनकी निन्दा करना चाहता है !

फिर राना कर पंडितने सी इस श्लोकको कुमुद चंद के पास उपहासके सहित सेवा-

१५६. नंगों (रिगम्बरों) ने जो युवतियोंजी मुक्तिका निरोत्र किया है इसमें क्या तरत है यह तो प्रकट ही है। किर पृथा ही कर्करा तर्किक टिये यह अनर्थमुटक अभिज्ञाना क्यों करते हो ! द्यो हे म चे द्रा चार्य में सुना कि श्री म य ण छा देवी कु सु द चंद्र की पहार्गतिनी है और समाके अपने संपर्कताले सम्योंसे उसको जयके लिय निस्य अनुरोज कर रही है, तो उच्होंने, उन्हों समासरोंसे यह चुत्तान्त कहल्याया कि 'वादस्थल पर दिगंबर लोक तो बीकृत सुकृत्यको अप्रमाणित करेंगे और श्रेताम्बर प्रमाणित करेंगे।' यह सुन कर राजेने स्याहारबहिर्मुख उस दिगंबर परसे अपना पक्षपात हट। लिया।

इसके बाद, भाषोत्तर (बादका विषय) छिखानेके लिये कुमुद चन्न तो पालकीमें बैठ कर, और पाण्डित र स्त्र प्रभ पैदल हो चल कर, राजाके अक्षपटल (न्यायिमाग्) कार्यालयमें आये। बहाके अधिकारियोंको

बु मुद्द चंद्र ने अपनी यह भाषा ( बादके विषयमें निजकी प्रतिज्ञा ) खिखवाई-

१५७. केवर्टा होने पर [मनुष्य ] मोजन नहीं करता, चीपर सहित [मनुष्य ] निर्माण नहीं पाता और सीजनमें मुक्ति नहीं मिनती ।

श्वेतावरोंका इसके जिरुद्ध यह उत्तर या-

१५८. केरही होने पर भी [ शतुष्य ] भोजन करता है, सर्चावर [मतुष्य ] को भी निर्याण मिठता है, और लीजनमें भी मुक्ति होती है – यह देव सुरिका मत है।

इस प्रकार भाषा और उत्तर छिख छेनेके अनंतर वादका स्थान और समय निर्णात हुआ। उसमें दि ह्र राज के सभापतिलाने, पहर्दान-प्रभाणको जाननेवाई सम्यकोग जब उपस्थित हुए तो, तो सुखासन (पालकी) में बैठ कर, सिरार खेत छत्र धारण किये हुए और जयश्विक बजाते हुए, बादी कु मुद चन्द्र ने सभामें प्रनेश किया। उसके आगे बातके सिरेपर, उसके प्राप्त किये हुए जयपत्र खटक रहे थे। सि ह्र राज ने उसके बैठनेके छिपे सिहासन दिख्याण । प्रमु श्री देव सूरिने मुनीन्द्र श्री हेम चंद्र के साथ समामें एक ही आसनकी अर्छहत किया।

१५९. दे राजन् ! आएके बराके स्वरण होने पर सूर्य समीतको समक जैसा प्रसीत होता दे, पन्द्रमा प्राने मणाड़ीके जाउभी भौति भीका जान पहता दे और (दिमाण्डादित) पर्यत मराक्रमे जान पहने दें। ब्लाहास समयें मीरे जैसा हो जाती दे और इसके बाद सो बाया बन्द हो जाती दे। उसके इम अपशब्दको सुन कर कि 'बाणी बंद हो जाती है '- सम्य लोग उसे अपने ही हार्यो बंधा समझ कर बढ़े प्रसन्न हुए । इसके बाद देवा चार्यने राजाको, यह आर्ट्यार्जिट दिया--

१६०. हे चालुक्य महाराज 1 तुम्हारा यह राज्य और यह जिनशासन चिरकाल तक प्रमतित रहें।
( राज्यपक्षमें पहला अर्थ- ) जा राज्य अनुओं ने शानित नहीं प्राप्त करने देता है, उज्ज्यल आकाशको-सी उल्लेसिन कीर्तिकी प्रमास जो मनोहर हो रहा है, न्यायमार्गिक प्रसारकी पद्धतियोंका जो गृह बना हुआ है और जिसमें परवक्षके हारियोंका सदैव मद उतारने नाले ऐसे कौन हाथी बल्यान् नहीं है।

(जिनशासनपक्षमें दूसरा अर्थ—) जो जिनशासन नारियों (कियों) को मुक्तिपद प्रदान करता है, खेतन्रकों को धारण करने नाले यतियों को ल्लिसि मनोहर लग रहा है, नय मार्ग (जैन तरन पहित ) के निनेन्न प्रसार और माद्वियों का गृहरूप है और निसमें अन्य मतवादियों के गर्नका जय करने नाले के नल्लान कमी मोजन नहीं करते ऐसा निधान नहीं है—वह जिनशासन चिरंजीन रही।

इसके बाद, बादी कुमुद चंद्र ने केपलि-मुक्ति, खी-मुक्ति और चीपर-सिद्रिके निराप्तरण रूप अपने पक्षके उपन्यासमें, करतर पक्षीकी माँति मन्द मन्द और बार बार स्वटित वाणीसे बीटना द्यारु किया । इसे देख कर सम्यटेंग, उपरसे तो उसे उत्साहपरक नचन कह रहे थे और अन्दर दिटमें ईम रहे थे। इम प्रकार कितनाफ उपन्यास ( स्वपक्ष स्थापन ) करनेके बाद, अन्तमें [ दे वा चार्य को छदय करके कहा कि ] 'अब आप बोलिये ' । देवा चार्थने प्रलय कालमें उन्मीलित प्रचण्ड पत्रनसे तिश्चरत्र समुद्रके तरगाधातके समान गंभीर बार्णासे, उ च रा व्य य न सूत्र की बृहद्बृत्तिमें कथन किये हुए चीरासी निकलोंका उपन्याम करना प्रारम किया। इसे देख कर, मास्यत् प्रकाशके प्रसारसे म्लान हो जाने वाले शुमुद्-रात्रिशिकासी कमल-की माँति निष्प्रम हृदय कु मुद चंद्र ने मयसे चित्रमें आन्त हो कर. उम बातको समझनेमें असमर्थ बन कर. किरसे उसी उपन्यासके दहरानेकी प्रार्थना की । श्री सिद्ध राज के तथा और सम्योंके निया करने पर भी, उन्होंने उसे अप्रमेप प्रमेप व्हरियोंके द्वारा प्रमाण-समुद्रमें हुवीना हाक किया । इस तरह निरतर वाक्प्रवाह चलने पर, सोवहरें दिन अकम्मात् देवा चार्थका अण्ठ रुद्ध हो गया । तव मंत्रशाखिद् श्री यशो भद्र मूरिने, जिन्होंने कुरु कु छा दे वी के भीरिसें अनुष्टनीय वर प्राप्त किया हुआ था, तनकी कण्ठनालीसे क्षणमारमें क्षपणक (दिगंबर) के किये गये अभिचारके प्रमानसे पड़ा हुआ केशोंका गुच्छा बाहर निकाल दिया। इम विचित्र न्यापारके निराक्षणसे चतुर टोर्गोने श्री यशो भद्र सुरिकी भूरिप्रशंसा की और कुसूद चंद्रकी एव निराक्षी। इन प्रकार ( पहलेने ) प्रमोद और ( दूसरेने ) निपाद घारण किया । इसके बाद, देव सृति ने पक्षके उपन्यानके उपक्रममें ' कोटारोटि' शब्द कहा। कुमुद चंद्र ने उस सन्दर्का न्युत्पति पूछी। तत्र का कल पंडित ने, जिसके कछमें आठों ज्याकरण छोट रहे थे, शाकटायन ज्याक र व में कहे हुए 'टाए टीए' मूत्रसे नियन 'कोटाकोटिः' 'कोटीकोटिः' 'कोटिकोटिः' इन तीनों सिद्ध शब्दोंका निर्णय सुनाया । पहले-ही-मे 'बाचस्ततो सुद्रिता' इम करे हुए अपरान्दके प्रमारमे उसका मुख मुदित (बन्द ) हो गया: और किर स्वयं ही बोटा कि-' में श्री देवाचार्य से जीता गया "। श्री सिद्ध राज ने उसे पराजित कह कर अपदारसे वाहर कर दिया । इस पराभन के कारण उसका सिर फट गया और यह मर गया ।

इसके अनन्तर थी मिंड ए ज ने आनन्द उन्नसिन मनसे देवाचार्यके प्रमानकी एयानि करनेकी इच्छा की । उनके सिर पर चार श्रेतच्छन धारण करवाये गये, मृत सुंदर चानर डटमाये गये, दांगींके दुगन्न बजवाये गये, इंकोंकी चोटसे मानों आक्राशका पेट गुइसुडा रहा या और उत्तम प्रकारकी दुंदुनियोंके नादसे दिगंतराळ मरा जा रहा था। राजाने स्वयं अपने हाथका अवलंबन दे कर, 'हे बादि चक्रवतीं, पशिरिये!' ऐसी स्वित्पूर्वक उन्हें राजसमारे प्रस्थान करवाया। बाहुड नामक स्वपासकने उस समय तीन लाख [दम्म] याचकोंको दान किये। इस तरह जगव्के आनंद स्वरूप कन्द ( ग्रूल ) के कन्दल ( अंकुर ) समान भंगळके वारंबार उचारित होने पर, उसी बाहुड हारा बनवाये गये श्रीमहावार देवके प्रासाद ( मन्दिर ) में, देवको नमस्कार करने बाद, उसीकी वसति ( उपात्रय ) में आ कर उन्होंने आश्रय लिया। स्विती अनिन्छा होने पर भी राजाने उनको प्रारितीयिक रूपमें उग्रखा आदि बारह गांव भेंट दिये। [ भिन्न भिन्न समर्थ आचार्यो हारा की गई ] उनको स्वितिक कुछ छोक इस प्रकार हैं—

१६१. जिनके प्रसार-शिका मानों सुखाप्रश्रके समय दर्शन ( सेतांवर संप्रदाय ) उचारण करता है, उन वसप्रतिष्ठाचार्य श्री हे व सूरिको नमस्कार है। — इस प्रकार श्री प्रयुक्ता चार्य ने कहा।

१६२. यदि सूर्यके समान देवाचा ये, कुमुद चंद्रको न जीत पाते तो कीन खेताबर, संसारमें कटिमें वृक्ष पहनने पाता । — इस प्रकार हे मा चा ये ने कहा ।

१६६. जिस नग्नेन क्योतिंहरूपी कंशा उपार्जन करके अपना अतर्मग किया या, देवस्दिने उस कंशाको छीन कर उसे निर्मय (नंगा) कर दिया।—इस प्रकार श्री उद थप्रस्म देवने कहा।

१६४. अमी तक भी किन्होंने छेख-शालका त्याग नहीं किया उन देवस्रि ( बृहस्पति ) के साय, वादिविधाको जानने बाले प्रसु देवस्रिकी, त्रिकमा कैसे की जाय।—इस प्रकार श्री सुनिदेवाचार्यने कहा।

१६५. जिनकी प्रतिभाके धाम-तेजसे [ अस्त हो कर ] कीर्तिक्सी योगवक्षका त्याग कर देने बावे [ उस ] जप्त [ दिगंबर ] को भारतीने भानों छाबके कारण छोब दिया, वह देव सूरि तुम्हारा कल्याण करें।

१६६. कशेप केव्िमांकी भुक्ति स्थापन कर जो समाकार बने तथा क्षियोंकी मुक्तिके युक्त उत्तर द्वारा मोख तीर्थ बने, और नम्रको जीत केने पर खेतान्वरमासनके प्रतिष्ठागुरु बने, उन प्रमु श्री देव स्रिक्ति महिमा, देवता और गुरुकी अपेक्षा भी अपिरितित है। - इस प्रकार दो की का श्री मे हर्तुं गस्रिके कहे।

इस प्रकार यह देवसूरिका प्रवन्ध समाप्त हुआ ।

### पत्तनके वसाह आभडका बुत्तान्त ।

११०) इसके बाद, य ल न का रहने बाला, जिसका बंदा बिल्लत हो गया है ऐसा, ला म व नामक एक बिलिन्युत्र कंसारेकी दुकान पर, गागर विसंविका काम, किये करता था। उसको बहा रोज पाँच विरोपकका उपार्जन होता था। वह लपना साथ दिन उस काममें व्यतीत कर, दोंगों शाम प्रमु श्री हे म सूरि के चरणोंके पास वेठ कर प्रतिकाग किये करता था। स्थानकी-से चतुर होनेके कारण उसने अगस्य और बीद्र पत लादिकों रत्त परीसार्थ के मंग्री के पत लादिकों रत्त परीसार्थ के मंग्री के पत लादिकों ते स्वत उस उस परीसार्थ दक्ष हो गया। किसी सम्प, अपे हे म चंद्र मुगानकी निकट उसने, भागाविक कारण, सक्य प्रमाणमें परिसद-परिमाण बतका नियम छेता चाहि हो सामुद्रिक निवाद जातकार प्रमुने मनिष्यर्थ उसके मान्य वैयवका खूब प्रसार होना जात कर, तीन उगल प्रमाने अभिक हम्य न रसनेका उसे नियम कराया। इसके बाद, सेतीय पूर्वक वह कपना स्ववहार

करने छगा। किसी अवसर पर, वह किसी गाँवको जा रहा था, तो उसने रास्तेमें वकिरियोंका एक हुंड जाते देखा। उसमें एक वकरिके गटेमें पापाणका एक खण्ड वन्या देखा, जिसको रत्नपरिक्षक होनेके कारण, परीक्षा करके देखा तो वह सचा रत्न माद्यम दिया। फिर उस रत्नके छोमसे, मृल्य दे कर उस वकरीको उसने खरीह छिया। मणिकार (मणियारे) के पाससे उस रत्नके साम पर चटना कर उसे देदीन्यमान वनवाया और फिर श्री। हिंद राज के मुद्धन्द वनानेके अवसर पर, एक छाव मृत्य पर राजा-दी-को दे दिया। उसी मृछ धनसे उसने एक बार विवन्नको आये हुए मीअष्टाके कई बोरे खरीदे और जब केचनेके समय उन्हें खोळकर देखा तो समुक्षके चौरोंसे छिपानेके छिए, व्यापारियोंने उनमें सोनेकी पहियों छिपा रखी हुई माख्यम दी। फिर उसने सब योरे खोळ कर उनमेंसे वे पहियों निकछा छो। इस तरह फिर वह सारे नगरमें मुख्य ऐसा सिंद राज का मान्य (नगर सेट) और जिन-धर्मको प्रमावना करने याछ। प्रसिद्ध ो आवक हुआ। प्रति दिन, प्रति वर्ष, स्वेष्टा उसार केत मुनियोंको अन्य यह आदि दिना करता और गुनरुपसे स्वरेश और विदेशमें नये नये धर्मरपान बनवात तथा पुराने धर्मरथाको जन यह आदि दिना करता और गुनरुपसे स्वरेश और विदेशमें नये नये धर्मरपान बनवात तथा पुराने धर्मरथाकों का लोगोंद्वार करवाता रहा। पर किसी पर उसने अपनी प्रशस्ति नहीं छिखनाई। [कहा सी है कि]—

१६७. ब्लासे आच्छन बृक्षकी नाईं और प्रतिकासे आच्छादित बीजकी नाईं प्रच्छन ( ग्रुसह्पसे ) किया हुआ सुकृत कर्म प्रायः सैंकको शाखाओवाटा विस्तृत हो जाता है ।

इस प्रकार यह बसाइ आयदका प्रवन्ध समाप्त हुआ ।

## सिद्धराजकी तत्त्वजिज्ञासा और सर्वेदर्शन प्रति समानदृष्टि।

१११) एक दूसरी बार, श्री सिद्ध राज संसार सागरको पार करनेकी इच्छासे, सर्व देश के सर्व दर्शनों में से. प्रत्येकसे देवतस्य, धर्मतस्य, और पात्रतस्यकी जिज्ञासासे पृछने छगा, तो मादम हुआ कि, वे प्रत्येक अपनी स्तुति और दूसरेकी निंदा कर रहे हैं। इससे उसका मन [ खुव ] संदेह-दोलारूढ़ हो गया। श्री है माचा र्य को युला कर धनसे विचारणीय कार्यको पूँछा। आचार्यने चतुर्दश विवाओंके रहस्यका विचार करके, इस प्रकार एक पौराणिक निर्णय कह सनाया कि - पहले जमानेमें किसी ख़बहारी [ गहस्य ] ने अपनी पहली परिणीत परनीकी छोड़ कर किसी रखेटिनको अपना सर्वस्य दे दिया। इससे उसकी पूर्व पत्नी, सर्वदा ही, उसको अपने परामें करनेके टिये अभिचार (मंत्र-तंत्र आदि)के उपाय पूछा करती। किसी गौड (बंगाछ) देशीय [ जादुगर] के बताया कि-" तुखारे पतिको में ऐसा कर दूँ कि तुम उसे फिर रस्मीमें बाँवे रखो " ऐसा कह कर, उसने कोई एक ऐसी अचित्रवर्धीर्य भीपधि छा दी और कहा कि-"इसे मीजनमें खिला देना"। ऐसा कह कर यह चला गया । कुछ दिनोंके बाद जब क्षयाह ( श्राह्मका दिन ) आया तो उस सीने वैसा ही किया-पतिको यह आंपाधि रिखा दी। फलसरूपं वह (पति) साक्षात् बैल हो गया। उसका फिर कोई प्रधीकार भ जान कर थह, सारी दुनियाकी शिक्षकियाँ सहती हुई, अपने दुधारितके ऊपर शोक करने छगी। एक बार [ प्राप्त काउके ] दोपहरके समय, सूर्यके कठोर किरणोंसे खूब संतम हो कर भी, किसी शाहुछ भूमिये यह अपने दस पट्टारफ पतिको चरा रही थी और तिसी बुधके नीचे बैठ कर सूच निभेर मारखे जिला कर रही थी । अकसमाद उसने आकाशमें हुछ आठाप सुना। पट्टारीत (शिव) मरानीके साथ निमानमें बैठे हुए उस समय यहाँसे निकटे । मवानीने उसके दुःलका कारण पूछा । इस पर शिवने वह कुत्तांत ज्यों का स्पों कह सुनाया । किर मशानीके आग्रह करने पर शिवने यह भी बताया कि, उसी इसकी छापा मैं, पुरुप बननेकी औराधि है:

और वे अन्तर्धान हो गये । फिर वह को उस इक्षको छाया है। खिकित करके, उसके मीतर पड़ने वाळी [समी] औपियों के अंकुरों हो उखाड़ उखाड़ कर इप्रभक्ते मुँदमें डाटने टमी। उस अज्ञात स्वरूप हो गया। अज्ञात स्वरूप हो कर भी, औपियेने जैसे अभीष्ट कार्य किया, वेस ही काल्युपम मोहक कारण, वह पात्र-पिखान तिरोहित होने पर भी, मिक्युक्त हो कर सब दर्शनोंका आराधन करनेले, अधिदेत स्वरूप-ही-से मुक्तिरायक हो जाता है, यह निधय है। इस प्रकार श्री हेम चंद्रा चार्य में जब सर्थ दर्शनके सम्मत होनेका उपदेश दिया तो श्री सिन्द राज ने फिर सब धर्मोंका समान आराधन किया।

## इस मकार यह सर्व दर्शन मान्यता मबंघ समाप्त हुआ।

#### सिद्धराजका प्रजाजनीके साथ उदार व्यवहार।

११२) एक दूसरी बार रातमें, राजा क ज में ह प्रस्तारमें नाटक देख रहा था। बहाँ पर कोई चना बचने गाजा एक गरीब बनिया भी चला आया और वह राजांक कच्चे पर हाथ रख कर देखने लगा। राजा उसके इस अभिनय (व्यवहार) से मनमें प्रसन्न हो रहा, और बार बार उसका दिया हुआ कर्मूर मिश्रित पानका बोड़ा आनंदके साथ लेता रहा। नाटकके निसर्जन होने पर, राजाने अनुचरों के हारा उसका घर आदि अच्छा तरह जान लिया और किर अपने महल्में जा कर सो गया। सबेरे उठ कर प्रातःहरन पर लेने बाद, सर्गरिसर (राजसमा) के मिलने पर, राजाने समामंत्रकों अलंद्रत किया और उस चना बेचने बाले अनियेको हुलाया। राजाने उससे [क्यामें ] कहा कि—' सातं गुमने जो भेरे कन्धे पर हाथ रहा पर से मेरी गर्दनमें दर्द हो रहा हैं 'नतों उस तकालेक्यम मित बाले (हाज़िर जवाब) बातियेने कहा। कि—' महरराज। आसमुद निसर्जन ऐसी एपीके मारको फन्य पटा एखनेसे यदि स्वामिक निर्में कोई पीड़ा नहीं होती तो मुझ समान तुणा-मारसे निर्में विनयेक मारसे स्वामिक कर्यों स्वया पीड़ा होती। ।" उसके इस उचित उत्तरको सुन कर राजा वक्षा प्रसन् हुआ और पटलें उसको इनाम दे कर विदा निया।

ं इस तरह यह चना वेचनेवाछं बनियेका प्रबंध समाप्त हुआ।

#### लक्षाधिपतिको श्रोडपति यना देना।

(१६) एक दूसरी रातको, राजा क र्ण मे र प्रासारति जाटक देख कर टीट रहा था, ता (राजमार्गमें) किमी स्पाहरीने घर पर बहुत-से दीपक जलते हुए देख कर पूजा कि—' यह क्या है!' उसने कहा कि ये एसजरीय है। राजाने उमकी धरण कहा और बहु अपने महल्में चला गया। राजिको व्यतीत कर [अपने मारलें ऐसे प्रजानन है दम निचारते | अपनेको धरण मानता हुआ, संवेरे दसे राजस्यामें सुखा कर आदेश किया कि—' इन प्ररीमीको सरा जजते रहनेते तुमको सरा ही अग्निका मय रहता है, तो कहे कि तुमारे पत कितने खानका पन हैं। उसमें उसने निवेदन किया कि—' वर्तमान पेरी रही लाख हैं'। इस पर मनमें अनुकंतित हो कर राजाने प्रामुक्त कपने गुजानेते १६ उसने किवाज कर दे रिया और उसके मकान पर [दीपकोंके वरते ] किरानि दीनेका सूचक कोटियन पहराया गया।

इस तरह यह पोटचळसमसाद मर्वच समाप्त हुआ ।

### सिंहपुरके ब्राह्मणोंका कर माफ करना।

११४) एक दूसरी बार, राजाने वा छाक देश की दुर्गभूमि (पष्टाई जमीन) में सिंहपुर नामका प्रदेश ब्राक्षणोंको रहनेके छियं दे दिया और उसके अधीन १०६ ब्राम दान कर दिये। पर बहा पर . सिंहका डर देख कर ब्राक्षणोंने सिद्धरा जसे प्रार्थना की कि, उन्हें कहीं देशके मीतर निनास दिया जाय। इस परसे राजाने उनको साध्य मती के तीर परका आ साबि छी ब्राम दे दिया, और सिंहपुरसे धान्य छानेमें जो आते जाते कर छगता था उसे माफ कर दिया गया।

## वाराहीके पटेलोंको ब्रूचाका विरुद देना।

११५) बादमें, राजा सिन्ध राज ने किसी समय, मालव दे श की यात्राके लिये प्रयाण किया। रास्तेमें या राष्टी मान के पास जब वह आया तो उस गाँउने पटेलों ( मुंखियों ) को बुला कर, उनकी चतुरताकी परीक्षाके लिये, अपनी एक प्रधान पालकी, उनको अपने पास यात्राके रूपमें रखनेके लिये दी। राजाके आगे प्रयाण कर जाने पर उन सभीने मिल कर, उसके एक एक हिस्सेको अल्या अल्या कर, यथोचित रूपसे स्वने अपने अपने घर पर संमालके रखा। यात्रासे लीटते समय राजाने अपनी रखी हुई उस धातीको जब जनसे मोंगी, तो उन्होंने अल्या अल्या किये हुए उसके वे साम हुकडे लाके दिये। यह देख कर राजाने आक्षयेसे पूला कि — ' यह वा बात है ।' तो उन्होंने विज्ञापना की कि — ' यह राजा है प्रकार वा वा ते है । विज्ञापना की कि — ' यह राजा अपने साम के कि — ' यह स्वा बात है ।' तो उन्होंने विज्ञापना की कि — ' यह राजा वा वा ते कि एक आदमी तो इसकी रक्षा करने से समर्थ नहीं हो सकता। कमी चीर और अग्नि आदिका उपन्न हो जाय तो किर स्थामीके सामने कीन जनावेदह हो — यही सोच कर हम लोगोंने यह ऐसा किया है।' तम राजा मनमें खूम आध्यर्थवित हुआ और उनको ' मूच \*' ऐसा विरुट उसने दिया।

इस मनार यह वाराहीय ब्र्च मबंध समाप्त हुआ।

#### उज्झाके ग्रामीणोंसे वार्तालाप।

१९६) इसके बाद, एक बार राजा थी जय सिंह देव, माल्य जिजय करके और रहे थे तब रास्तोंमें पहने वाले जरुशा मा में खीने वाले गये। बहाके प्रामीणोंने, जिनको राजा मामा कहा करता था, दूससे भरे हुए हवाँ आदिके तिवत सरकारसे राजाको सन्तृष्ट किया। वसी रातको, राजा गुम वेप करके उनके हुल- सुख जाननेकी इन्छासे, किसी प्रामीणके घर पर चला गया। वह (प्रामीण) गाय दूहने आदिके कार्गोंने व्यस्त होता हुआ भी, उसने पूज कि - ' तुम कीन हो !' हिम्यादि। इसके उत्तरमें उसने किए उसा कि - में भी सीनेक्सका कार्योदेक (पार्ता) हूं। महा राष्ट्र देश कीर उसने सामा प्रामीण राजा है। असने किए उसने पह राष्ट्र देश और उसने सामाके गुण-दोप आदि पूजे। उसने वहारे राजा के प्रामानकों प्रामा करते हुए, उस मामीणसे गुजे र देश के राजा के गुण-दोप पूजे। इस पर यह थी सिद्ध राज के प्रजानकन्दकार और सेमरों पर अनुपप प्रेम स्थादि गुणीं का वर्णन करने लगा। तब बीचमें उसने राज के प्रजानकन्दकार और सेमरों पर अनुपप प्रेम स्थादि गुणीं का कि - ' हम लोगों के मंद मामण्डे राजाको कोई सुज नहीं है और यह। उसने एक देग्व है'। १ए प्रकार निक्तपुट भारसे उसने उसने सब कह कर उसे सुनुट किया। किर प्रमान कार्जे मन लेक किया। ता कर सामा कारमें स्था लिख मर राजा ने

<sup>\*</sup> यह 'मूच' कोई देख ग्रन्द है। हिंग्रेमें इसके जेना बूचा ग्रन्द है जिनका अर्थ ' कानका दुआ ' ऐमा होना है। इस पोटलेंने राजाडी पान्कीके अन-प्रन्याप काट बांने ये हन निय इनको 'बूचा' कहा ग्रमा प्रतीन हाना है। गृमगांगी मुनाका आर्थे मोला—मुग्य ऐसा भी होता है। इसले राजाने उनके हन मोन्यनको देख कर उन्हें 'बूचा' ऐसा गम्यापा हिशा है।

दर्शनके लिय उत्कंठित हो कर उसके निवासस्थानमें गये और राजाको प्रणामादि करके उसके अनुपम ऐसे पढ़ंग पर हो बैठ गये। आसन देनेके लिये नियुक्त नोकरीने उनको अलग आसन पर बैठनेको कहा तो वे लोग अपने हार्योसे उस पलंगको कोमल शस्याका स्पर्श करते हुए [भोले भावसे ] ' हम लोग यहाँ बदे आरामसे बैठे हैं '-ऐसा कहते हुए वहीं बैठ रहे। [यह देख कर] राजाका मुख मुस्तुराहटसे कमलको माँति लिल उठा।

इस पकार उज्झाबासी ग्रामीणोंका यह मबंघ समाप्त हुआ !

# झाला सामंत माँगुकी शुरताका वर्णन।

११७) किसी समय, का छाजा ति का मा हु नामक सिनिय श्री सि इराज की सेनाके छिये समामें आया करता था। यह रोज़ ही दो पराची (छोईकी मारी कुसी) जमीनेमें गाइ कर बैठवा और फिर उन रोनोंको उखाइ कर ऊठता। उसके मोजनमें चीसे मरा एक हुतुत (कुडवा—ची तेछ मरनेका घडेके जैसा चमडेका माजन ) खर्च होता था। बी छगी हुई उसकी दाहीके थोने पर भी उसमें सोछहाँ हिस्सा धी बच जाता था। किसी समय उसके रारीकों रोग होने पर, पष्पके छिये यवागू (जीकी पतछी गाँउ) सानेकों वैघने कहा तो, यह ५ माणक (करीज ४ होर कब नाम वितनी) खा गया। इस पर वैचने बाँठ कर कहा कि आधा मोजन कर छेने पर बीचमें अमुरीद्रक वर्गो नहीं पिया है 'क्यों कि कहा है कि—

१६८. जब तक स्योरंय न हो जाय तब तक एक हजार घड़ा सी पानी पिया जा सकता है, पर जब स्वारंथ हो जाता है तो फिर एक बुँद भी एक घड़ेकी बराबर हो जाता है।

रातकी विश्वली चार धक्षीमें, सूर्योदय न होने तक, जो जल विया जाता है—जो जल प्रयोग किया जाता है—जसे बज़ीदफ कहते हैं (वह अमृतोदफ भी कहाता है)। सूर्योदय हो जाने पर विचा अन्न खाये, जो पानी पिया जाता है, वह निय है। इस लिये एक बूँद भी वह पानी सी घड़िके असबर हो जाता है। आघा मीजन करने पर, बीचमें जो जल विया जाता है वह अमृत कहलाता है, और भीजनात्वमें तत्काल पिया जाता हुआ जल छल था छनोदफ कहलाता है। उस भीजूने, यह सुन कर कहा कि—' यदि ऐसा है, तो पहले जो अन खाया है उसे आया आहा हुआ जल छल था छनोदफ कहलाता है। उस भीजूने, यह सुन कर कहा कि—' यदि ऐसा है, तो पहले जो अन खाया है उसे आया आहार कल्पना कर लिया जाया, और इस समय अब पानी पी कर किर उतना ही खाहार और कर दूँ।' ऐसा कह कर वह किर खानेकी तैयारी करने लगा, लेकिन वैचने उसे वैसा करनेसे रीक दिया।

' किसी समय राजाने उसके निःशल रहनेका कारण पूछा। उसने कहा कि — 'भेरा हथियार तो समयोचित होता है '। किर एक बार उसके स्नान करते समय, किसी महानत द्वारा चलाये हुए हायीको अपने ऊपर आता है '। किर एक बार उसके स्नान करते समय, किसी महानत द्वारा चलाये हुए हायीको अपने ऊपर आता है उ, गज़्दीको रहे हुए कुत्तेको पकड़ कर उसकी सुंह पर फेंक मारा । मांस्थान पर चोट टागनेके कारण निपीटित ऐसे उस हायी को खीचा, तो उसके अतुल नकसे वह हायी मीतर-ही-मीतर क्सोमेरी हुट गया और उस स्वावतक नीचे उतरने पर, वह जमान पर गिरते हो गांधी गुक्त हो गया । मूर्ज र देशपर आपी इई रेड-छोंकी सेगाको देख कर राजाके प्रथमन कर जाने पर, वह अपनी इच्छास उस सेनाका उच्छेन करता हुआ, सुद्धें विस स्वाप्त पर मारा गया, उस जगहकी, परान में अब भी 'माहुस्पविडल' के नामसे मिसिद्धें चल आ रही है ।

# सिद्राजकी समामें म्लेच्छराजके दृतोंका आगमन।

११८) एक दूसरी बार, म्लेन्छराजके प्रधानोंके आने पर, मध्यदेशसे आये हुए वेपकारोंको बुला कर कुठ रहस्य दिख्छानेका आदेश दे कर निर्मार्जित किया । इसके बाद दूमरे दिन, सार्यकाल, प्रलय कालके समान प्रचण्ड ्परनके आने पर, राजा द्वधर्मा समाके समान राजसमामें सिंहासन पर बैठ कर जो देखता है, तो अन्तरीक्षसे दो राक्षम उता रहे हैं - जिनके मस्तक पर सोनेकी दो ईंटें रखी हुई हैं और जो सुवर्ण जैसी कान्ति धारण कर रहे हैं। उन्हें देख कर सारी समा भयसे स्नात हो उठी । इसके बाद, उन्होंने राजाके चरणपीठ पर वह लपहार रख दिया और फिर प्रधीतल पर लठित होते हुए, प्रणाम करके कहा कि - भाज लंका न गरी में महाराजािक्याज विभी पण ने देजपूजा करते समय राज्यस्थापनाचार्य रघुकुल-तिलक श्री रामचन्द्रके उत्तम गुणवामोंको स्मरण करते हुए, ज्ञानमय दृष्टिसे जाना कि - आजकुछ उनके स्वामी ( रामचन्द्र ) ची छ स्य कुछ तिलक श्री सिद्ध राज के रूपमें अन्तीर्ण हुए हैं। इस लिये उन्होंने यह (सन्देश) कह कर हम दोनोंको भेजा है कि - 'मैं प्रमुक्ती प्रणाम करनेके लिये अयन्त उस्कण्ठित मन्त्राला हो रहा हु, सो क्या मैं ही यहाँ प्रणाम करनेको उपस्थित होकेँ या प्रमु ही यहाँ आ कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ! - इसका निर्णय महाराज स्वयं अपने श्रीमुखसे करें। र उनकी यह बात सुन कर, राजाने मन-ही-मन कुछ सोच कर उनसे इस प्रकार कहा - र प्रपुद्ध आनंद छड़रीसे प्रेरित हो कर में ही ख़द अपने अनुकूछ समय पर, विमीपणसे मिछने आ जाऊँगा।' ऐसा कह कर, अपने कण्डका श्रुगारमृत ऐसा एकाउछी हार उनकी प्रत्यपहारके रूपमें दे दिया । जाते समय <sup>4</sup> प्रमुक्ते अन्य दूत पठानेके अपसर पर, हमें मुखा न दें <sup>2</sup> इस प्रकारकी विशेष विशिष करके अन्तरील मार्गसे वे दोनों राक्षस तिरोहित हो गये। उसी समय वे म्लेम्होंके प्रधान पुरुष बुलाये गये तो. मयमीत हो कर अपना पीरुप डोइ, राजांक सामने आ कर उपस्थित हुए और मक्तियुक्त बचन कह कर राजाको खुश करने ख्री । राजाने फिर उनके राजाके लिये उचित भेट दे कर उनको विदा किया ।

इस मकार यह म्छेच्छागमनिषेष मर्भष समाप्त हुआ ।

### :सिद्धराजका कोल्हापुरके राजाको चमत्कारके भ्रममें डालना ।

मनुष्यको साथ छ कर, अक्तस्मात् उस देशके गेरिस्में ग्रादुर्मृत हुआ। उसने देनीकी रस्त, सुवर्ण और कर्यूस्से पूना अर्चा को और उस राजको रानियों को उसी प्रकारके उत्तम पानके बांइ दिये। फिर था सि स्र राज का नामांकित वह सिद्धेवप प्रजाके बहाने वहीं रख कर, उसी वर्वरके कंधेपर चड़कर, उडता हुआसा जैसे आया या वैसे ही चछा गया। रातके अन्तमें रानियोंने उस निरोवी राजको वह चुनान्त कह सुनामा तो, अपअन्त हो कर उसने, उस उपहारको, अपने प्रशास पुरुषों के हारा सि स्र राज के पास पहुँचा दिया। इधर उस सिक्त अपने मार्ट्स कर नाम पुरुषों के हारा सि स्र राजको प्रशास पुरुषों के करने मार्ट्स व्यवस्था दिया। इधर उस सिक्त के अपने करने प्रशास पुरुषके साथ यह जनर मिनवा दी कि —' जन तक मैं न आर्के तत्व तक इन प्रधास पुरुषों को दर्शन न दीजियेता।' फिर स्वय जन्दी चछ कर बुळ ही दिनोंमें वहाँ पहुँच गया। उसके अपने क्षियेका पूरा वर्षने करने पर, राजने उन प्रधासीका वर्षोचित स्वागतादि किया।

# इस मकार यह कोव्हापुर मबंध समाप्त हुआ ।

# कौतकी सीलणकी बाक्बातुरी।

१२०) श्री सिद्ध राज, माछ व मंडल से य झो व भी राजा को जब बॉघ लागा, तब उसके निमित्त किये जाने वाले उसस पर सील ग नामक कीनुंकीने कहा कि — 'लहो बेडा (नाप) में समुद्र दूव गया।' तब उसके पीठे स्थित किसी गायन (गान करनेटाले) ने 'तुम लपदान्द कह रहे हो '—ऐसा फह कर उसकी सर्जना को। तब उसने लयोपचिसे इस प्रकार बिरोगाल्ड्रास्का परिहार करके बताया कि—' बेडाके समान इस मूर्जर मूमिनें समुद्र लीसा यह माल्य - न देश हव गया।' [इस पर उसने] राजासे सीनेकी जीम प्राप्त की।

#### इस नकार यह कौतुकी सीखणका मबंध समाप्त हुआ ।

# काशीपति जवचन्द्रकी समामें सिद्धराजके वृतकी वाक्पहुता

१२१) किसी समय, सिद्ध राज के एक वाचाळ सान्धिविमाहिक (वृत् ) से का शो के राजा जय चंद्र ने अण दि छ पुर के प्रासाद, प्रणा (बारडी ) और नियान (कृष् ) आदिका स्वरूप पूछते समय [ उसकी निशेष शोमा सुन कर, ईप्यांवश राजाने ] यह दोष बताया कि — 'सह च लिंग सरी यर का जल शिव-निर्मान्य होनेके कारण अस्पुरत्य है। उसका सेनन करने बाले दोनों छोतसे निरुद्ध ज्याहार करते हैं। अतः वहाँके छोग, उदित प्रमान मार्च केसे हों ! सिद्ध राज ने सह क्षिण सरी वर बना कर यह अनुचित कार्य किया है।' राजाको इस बातसे मन-ही-मन दुषित हो कर उसने राजासे पुठा कि — [आपकी] 'इस बाराण सी में कहाँका जल विया जाता है !' राजाके 'सामान्य 'ऐसा कहने पर उसने कहा—'क्या गराजळ शिव निर्मान्य निर्मा है से और क्या है " शिवका सिर हो तो गंगाको निवास-मृति है।'

इस मकार जयचंद्र राजाके साथ गूर्जरके मधानकी उक्तिमत्युक्तिका मांध सपाप्त हुआ ।

# मयणहादेवीके पिताकी मृत्युवार्ता ।

 प्रतिहा पूर्वक बोल ठठे कि-' यदि बिल्लोंके हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी तो मैं भी तुम्हारे ही साथ मर्दगा '। वह तीता क्यों ही पिजडेसे उद कर उस सोनेके थाल पर आ कर बैठा त्यों ही उस बिल्लोंने [ल्यक कर] मेडिये जैसे दौतींसे उसे मार डाला। राजाने उसे मरा देख कर मोजनका प्राप्त छोड़ दिया, और उक्ति-प्रत्युक्ति जानने बाले राजपुरुपोंके [बहुत कुल ] निषेष करने पर भी कहा-

१६९. राज्य चला जाय, श्री चली जाय, और क्षणमरमें प्राण भी मले ही चले जाँय, किन्तु जो वात

मेंने खयं कही है वह शासती वाणी न जाय |

इस प्रकार इष्ट देवताकी माँति इसी बाणीका जाप करता हुआ, काष्टकी चिता बनवा कर, उस तीतेकी साथ छे, उसमें प्रवेश कर गया। इस वाक्यको छन कर मयण छादेथी शोकसागरमें इब गई। विद्रजनोंने विशेष प्रकारके धर्मोपदेशरूपी इस्तावटंबन दे कर उसका उद्धार किया।

पिताके प्रण्यार्थ मयणञ्जादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना।

,१२६) वादमें, िषताके कल्याणार्थ श्री सो मे खरप च न की यात्राको वह गई, और वहाँ उस सतीने किसी नित्रेदी न्रासणको बुछा कर उसे जछांत्रित्र देना चाहा। उसने अंजिछमें जल ले कर कहा कि—' यदि तीनं जन्मका पाप देना मंन्द्र करो तो में यह खूँगा, नहीं तो नहीं।' उसकी इस बातसे अत्यन्त सन्तुष्ट हो कर, हाथी, घोड़ा, सोना आदिक दानके साथ, उसे पापवटका दान किया। उसने वह सब अन्य न्नासणोंको दे दिया। देशिक यह पूँठने पर कि 'ऐसा क्यों किया है'; बोछा कि—' पूर्व जन्मकी पुण्य-बुद्धिक कारण तो आप इस जन्ममें राजरानी और राजमाता हुई हैं। और फिर इन लेकोत्तर दानोंके पुण्यसे प्रतिय्य जन्म भी श्रेयस्कर ही होगा। यही सोच कर मि तीन जन्मका पाप न्रहण किया है। आपने जो इस पापचटके दानका उपक्रम किया है, इसे तो कोई अपन न्नासण ले कर खुदको और आपको भी मय-सागरमें दुबो दे। मैंने तो पहले ही सब चनका त्याम कर दिया है और फिर इस चनको ले कर भी दान कर दिया है, इस लिये जो मैंने त्याग किया उससे आठ छात्र अधिक श्रेय: संग्रह किया है।

इस मकार यह पापघटका मर्वध समाप्त हुआ।

सान्त् मंत्रीकी बुद्धिमत्ताका एक प्रसंग।

१२४) किसी समय, मा छ ये मण्ड छ से बिग्रह करके स्वदेशको छीटते समय सि हरा ज को माङ्ग हुआ कि [ गुजरात और माङ्गेके मध्यमें बसनेवाछे ] अनुपम बळशाडी भिछोंने उसका रास्ता घर छिया है । सान्द्रमंत्री को [प स न में ] इसके समाचार थिछे, तो उसने ग्रति ग्राम और प्रति नगरसे घोड़े इकहे किये, और प्रत्येक बैठको भी पछानसे सज्ज करके बड़ा ग्रासी दळबळ इकहा किया । फिर उस दळके बळसे मिछोंको त्रासित . कर सि हरा ज की सुखपूर्वक स्वदेशमें छे आया ।

इस पकार सान्त् पंत्रीकी बुद्धिका यह प्रवंघ सपाप्त हुआ ।

ंसिद्धराजके एक सेवकके भाग्यका बृतांत ।

१२५) किसी एक रावको दो बुद्धिमान मृत्य श्री सिंद्ध राजके पैर दबा रहे थे। उनमेंसे एकने, राजाको नीदके कारण शाँखें बंद किया हुवा समग्र कर, उसकी प्रशंसा करते कहा कि—'महाराज सिंद्ध राज कृत्रा और कोपमें [ एकसे ] समर्थ, सेनकीके छिये कल्पबुक्ष और राजोचित समी गुणोंके बाख्य हैं। दूसरेने, राजाके इस २३-२४ महान् राज्यका कारण भी प्रावतन कर्म को बता कर [कर्म हो की] प्रशंसा की। गजाने इस वृत्तान्तको सुन कर कर्मनी प्रशंसाको विकल करनेके विचारित, प्रशंसा करनेवाले चाकरको एक दिन, उसे कुछ भी रहस्य न जता कर, यह प्रसाद-छेल दे कर महामजी सान्त्रके पास भेजा कि—' इस चाकरको एक सी घोड़ेका सामत बना दिया जाय'। वह चाकर इस छेलको छे कर जब चंद्रशायको सीहियोंसे नीचे उत्तर रहा था, तब पैर किसल जानेसे गिर गया और उसका अंग अंग हो गया। उसीके पीठे चले जाने माले दूसरे चाकरने पृद्धा कि—' यह क्या वात है!' तो उसने अपनी बात वताई। वह तो किर खाटमें बैठ कर अपने घर गया और उस दूसरे [ अपने साथी ] को वह राजाका छेल दे कर गंत्रीके पास जानेको कहा। गंत्रीने उस छेलमें की गई आजानुसार उस चाकरके सी घुडसमारों बाल सामंत्रपद प्रदान किया। यह सब बात सुन कर राजाने भी कर्मको ही बलनान माना।

१७०. न तो आइति, न कुछ, न शीछ, न निया और न मनुष्योंको की हुई सेवा कुछ फछ देती है। पूर्व जनमं सपस्यासे संचित्त किये इए पुण्य कर्म ही मनुष्यको समय पा कर इक्षोंकी तरह फछ देते हैं।

इस तरह यह वष्टकर्म माधान्य-प्रवंध समाप्त हुआ !

# सिद्धराजकी स्तुतिके क्रच फ्रटकर पद्य।

१७१. तीन सुवनके बीचमें यह जेस ड ( ज य (से ह-सि द्ध रा ज ) राजा [ एक बडा ] कूट बहड \* है जिसके अनेक राजनशीका छेदन कर [ अपना ] एक छत्र [ राज्य ] बनाया है । इसकी जय हो ।

१७२. महालब, महा-यात्रा महास्थान और महासरोवर,\$ जैसे सि द राज ने किये वैसे किसीने नहीं किये।

१७२. जितायु जन ( एक अर्थ — गानेका इच्छा रखने बाले; दूसरा अर्प-विजयका इच्छा रखने बाले) एक मात्राका भी अधिक होता सह नहीं सकते, गानों इसी लिये हे धरानाय ( पृथ्वीनाय ) ! तुमने धारानाथ ( धारानाय रें के नाथ ) को नह किया है। [ क्यों कि ' धरानाय रें की अपेक्षा ' धारानाय रें में एक मात्रा अधिक है ।

१७४. हे सस्वती, मान छोड़ दो; हे गमा, तुम भी अपने सोहामनी मंगीको छोड़ो; अरी पद्मने, अब सेत दुटिलता ह्या है; ने रेवा, यं बेगको छोड़ दे; बयों कि अब समुद्र, श्री सिद्ध राज के कुपाणसे कटे हुए झानुक्तेपोमेंसे उछकने बाठी रक्तकी भागसे बनी हुई नदीहरूपी नवीन छोसे रक्त (१ ठाठ वर्ण, २ अनुस्क — मिनी) हो गया है।

१७५. हे विजयी राजाओंमें सिंह (जयसिंह ) महाराज, सचसुन ही तुम्हारे जय-यात्राके समय, हारियोंके कारण जरुरायोंके मूख जानेकी चिंतासे, बीरोंके धावकी आकाशासे; सथा, अपने पतियोंके निनाहाकी आरोकासे; क्रमशः गठनी रोती है, मक्खी हँसती है, और खियाँ अशुमका ध्यान करती हैं !

क्टर या करड उस जातिना नाम है जो क्षेत्र और-ओल कर उससे टोकरी, करडक और छाता आदि बनाये
 करते हैं। कर्री कर्री ' गछ ' मी इमके कहा है। इस स्वयं, राजवश और छात ये अब्द स्वेगात्यक है।

१७६. हे सिद्ध राज, नत हो जाने पर तो तुमने आ ना क सूपको अनेक टार्खोके साथ सपादरुक्ष [जैसा देश] भी दे दिया और टस ऐसे य शोव मी के पास माल्ल्य ( माल्ल्या देश; श्रेपार्ध मा≔ल्क्ष्मीका ल्यः टेशमात्र ) का होना भी तुमने सहन नहीं किया।

- इत्यादि बहुतसी स्तृतियां और प्रबंध उसके बारेमें हैं जो [ मन्यान्तरोंसे ] जानने योग्य हैं !

सं० ११५० से छे कर [११९९ तक] ४९ वर्ष तक श्री सिद्ध राज जय सिंह देव ने राज्य किया।

इस प्रकार थी मेरतुङ्गाचार्यके बनाये हुए प्रयंघ चिन्तामणिमें थी कणै और श्री सिद्धराजका चिरिञ्च चर्णन नामक यह तीसरा प्रकाश समास हुआ।

यहाँ पर P प्रतिमें निम्नलिखित स्त्रीक अधिक पाये जाते हैं। ये स्त्रोक सी मे करदेव रचित की ति-की मुदी के हैं और इनमें संक्षेपमें सिन्द राज के जीवनके महत्त्वके सभी गीर कार्योका सूचन किया गया है--

- [ १०६ ] जिसने, वाळक होते हुए मी, इंदकी बीरवृत्तिको भी छांघ जाने वाळे अपने कोपके प्रभावसे दुए राजाओंको आज्ञाधीन बनाया।
- [ १०७ ] अपार पौरुपके उद्गारवाले सौ रा प्टीय खंगारको भी, जिस गुरुमस्सरने सुद्रमें इस प्रकार पीस डाला, जैसे सिंह हाथीको पीसता है ।
- [ १०८ ] जिसने रामचंद्रका तरह असंख्य घोड़ोंकी सेना छे कर और अनेक राजाओंको नष्ट करके ( रामके पक्षमें—पर्वतोंको छखाड कर ) सिन्धुपतिको (सिद्धराजके पक्षमें — सिन्धु राज • • नामका राजा, रामके पक्षमें सिन्धु ⇒समुद्र ) बाँध छिया।
- [ १०९ ] मनमें अमर्प करके विपक्षीय वर्षांस्त् (एक अर्थ पर्वत, दूसरा राजा ) के उन्नत होने पर, जिसने अगस्य सुनिकी माँति, तीर्ध ही अणोराज (एक अर्थ - ससुद्र; दूसरा - शा कं म री का चाह मान राजा ) को द्वारक कर ढाला ।
- [ ११० ] विष्णुने तो अमोरान ( समुद्र ) की पुत्री ने नी भी, किन्तु इसने तो अमोरानको अपनी पुत्री दे दीअ | विष्णु और इस सिद्ध राज में एक यही अंतर है ।
- [१११] शतुओं के कटे हुए सिर देख कर शाकंभ री के ईश ने भी शंकित हो कर इसके चरणों हें अपना सिर शका दिया।
- [ ११२ ] खर्य अर्यत छक्षीवान् और अपरमार (दूसरीको न मारनेवाला ) हो कर भी युद्धमें जिसने माछबरवामी ( एक अर्थ – माछव देशका राजा, दूसरा छेपार्थ – छक्षीका किंचित् मोका ) परमारको मार डाला ।
- [११३] जिसने धारा-न रेटाको राज-ंशुकको तरह काष्ठ-पड़ार (काठके पिंजके) में रख कर् अपनी कीर्तिरूपी राजहंसीको काष्टा-पड़ार (दिक्चकवार्छ) में छोद दिया।
- [१९८] जिसने नरवर्मा राजाक्षी तो केवल एक ही नगरी जो घारा थी वह ले छी, पर उसकी - बयुओं को [बदलेमें ] हजारों अधु-भारायें दे दीं |

शार्क्रमधे ( अजमेर ) के चाहमान राजा जर्णोराजको, जिलका देख नाम आनाक या आना या, विदराजने युद्ध करके पहले तो अपना आजापीन राजा बनाया और किर पीलेखे उसको अपनी पुत्री न्याह दी थी। इतीका सूचन इस परामें हैं।

- [११५] घारा-मंगके प्रसंगको देख कर, जिसको समीप आनेको ही आशंकाले, प्राप्त्रुर्णकके बहाने जिसको महोदय राजने दण्ड दिया।
- [११६] जिस राष्ट्रने, अग्रतको भाँति, इसको पृथ्वीके छेनेको इच्छा की, उसीको तरवारसे उछसित इसके ब्राहुने राष्ट्र बना दिया ( अर्थात् राष्ट्रके समान उसे सिरकटा बना दिया )। -
- [११७] डोगोंने तो इसकी कुमार (कार्तिकय भी ही तसह शक्तिमान वपना स्वामी माना था, लेकिन यह तो तामुजुडण्य \* था और वह केकिप्पम \* था (यही इनमें अंतर था)।
- [ १९८ ] ऐसा कोई राजा नहीं या, जिसको विश्वके इस एकमात्र बीरने जीता न हो; और ऐसी कोई दिशा न थी जो इसके यशसे शोभित न हुई हो।
- [ ११९ ] गणेसकी तरह जिस अनपुष्कर और वर्षाध्यतिको, मोदकका तरह, गीव राजा † आर्थसार और करस्य हो गया ।
- [१२०] इसशानमें वर्षर नामक राक्षासेन्द्रको बाँज करके राजाओंकी ग्रेणीमें जो राजचंद्र - .सिदराज हो गया ]
- [ १२१ ] जिसने, छहाईसे ऊठी हुई पृष्ठसे पहले जिस आकाशको गरिन कर दिया था, उसने पीछेसे उसी आकाशको अपनी कीतिंछहरीसे घो कर उज्ज्वल कर दिया।
- [१२२] उस पृथ्वी मंडलके सूर्यके लोकान्तर होने पर चन्द्रसमान श्रीमान् राजा कुमारपालने प्रजाका रक्षम किया।

 <sup>।</sup> তত্ত্বন্দ কলন আলমুক খাল ক্রপ্রত্তা বিভ্ থা ইয় লিয় বছ বায়লুক্তমন কছজারা মা । কুনার (কার্বিক্রম)
 ই. তারন করি নামান নাম্বাদ বিভ্ মা । মানুকে এইয়া কুকুত আছিক কলনান হারা ই, হয় লিয় কুনার প্রাপ্ত প্রাপ্ত করিক।
 প্রিক্রেকয়া হারিমান ইলা ছল পর্যেন ক্রনির বিখা নামা ই ।

गणेशके पर्यो—आंगे है शापीकी संह जिलके; राजाचे पर्यो आंगे है बाल जिलके। २ गणेशके पर्यो—प्रकार है स्पिटि स्थिकी; राजाके पर्यो पर्यम्स है स्पिटि जिल्की। ३ मोदकके अपूर्वे आव्य =पुरतास्वाल, राजाके अपूर्वे =युद्रतार बाला। ४ मोदकके अपूर्वे कर ≈ हावाँ यह दुआ; राजाके अपूर्वे कर = दश्य देनेवाल।

<sup>†</sup> गोड = मंग देशका राजा शिद्धराजकी कर देने वाला बना यह अर्थ इस परामें ब्यानित किया गया है ।

# ९, कुमारपालादि प्रवन्ध ।

### कुमारपालके पूर्वजादि।

१२६) अब प्रम आहत थी छु मार पाछ का प्रवंघ प्रारंम किया जाता है — अण हि छु पुर नगरमें जब कि महाराज बड़े भी मदे व राज्य-शासन कर रहें थे, उस समय श्री भीभिष्ठाके नगरमें ( अर्घात् प्रतममें ) ब कु छा दे थी ' नामकी एक वेस्या रहती थी जो नगर प्रसिद्ध रूप और गुणकी पात्र थी। कुछ्यपृञ्जोंसे भी उसकी अधिक शीछमर्यादा कहाँ जाती थी। राजाने यह छुना तो उसकी परीक्षा छेनेके विचारसे उसे अपने अनुकरोंके हारा सवाछाख कीमतकी एक कहारी, अपनी रिक्षता बनानेके इरारेसे, इनामके तौर पर भिजयाई। [कार्योन्तरकी] उस्कुकता बश राजाने उसी रातको बाहर जा कर प्रस्थान (यात्राके) छप्रको सिद्ध किया। विप्रह (युद्ध) के निमित्त दो वर्ष तक उसको मा ब छ दे हा में रहना पड़ा। पर बह ब कु छा दे थी, उसके भेजे हुए उक्त इनामके अनुसार, अस्य सब पुरुपोंको छोड़ कर शीछ आचारका पाछन करती रही। विस्तीय पराक्रमशाल भी म ने तृतीय वर्षमें अपने स्थान पर आ कर जनपंपरारी उसकी इस प्रछि बो। उसका पुत्र त्रि अपने अन्तरपुर्ग दाखिछ कर छिया। उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम ह रिपा छ देव था। उसका पुत्र त्रि मु व पा छ दे व हुआ और उसका पुत्र श्री कु मार पाछ दे व। वह जब धर्मका जानने वाछा न या तब भी छुगाछु और परिकर्योंका माई बना हुआ था। सि ह्य ज से सामुद्रिक जानने वाछोन कहा था कि—'आपके बाद यही राजा होगा'। इससे यह उसे हीन जातीय मान कर, उससे प्रति करादिष्ण बन, सदा उसके विनायका अवसर खोजा करता। इह कु मार पाछ इस बातको हुळ कुछ समक्ष कर, राजासे मनमें शंकित बना हुआ, तापसवेप धारण कर, नाना प्रकारसे, देशान्तरोंने अमण करता रहा। हुछ साछ इस तरह विता कर किर वाम करते अथा आ वौर हिसी मठनें ठहरा।

# सिद्धराजके भयसे कुमारपालका मारे मारे फिरना।

१२७) इसके अनन्तर, श्री क ण दे व के आहंके अवसर पर शहाख सि ह राज में सम त्रापित्यों को [मोजनके िये ] निमंत्रित किया | उनमेंसे प्रत्येकके पैर घोत समय, कु मार पाळ नामक तपत्वीके भी कोमळ चएणतळको हायसे स्पर्ध करता हुआ, उसमेंकी उच्चे रेखा आदि चिन्होंसे उसने जाना कि ─ पही बह राजा होने योग्य हैं ' — और इस किये निश्चक रिश्चे उसे देखता रहा | उसकी इस चेटासे [अपने प्रति ] उसे विरुद्ध समझ कर, उसी समय पेप बदळ करके, कोबेको मॉति, बह अह्म्य हो गया; और आ छि ग नामक कुन्हारके घरमें जा छिपा | बहा मिटोके वर्तन पकानेके छिये आवा बनाया का हा था, उसीमें कुन्हारने छिपा कर, पीछा करने बात कर तो अले राजपुरुगोंसे उसे बचाया | फिर वहाँसे धीर धारे आगे चळा तो, उसने खोजनेके छिये आये हुए राजपुरुगोंको सामने देखा | उससे जासिल हो कर, जा कर कर को हिपा कर पायस मूरिको जा या कर किसीएक खेतमें जा खड़ा हुआ | वहाँ पर, खेतके स्ववाळोंने, खेतकी रहाके छिये कांटेरार बुसोंको डाक्टियाँ काट कर जो इसडी कर रखी थी, उन्होंके बीचमें उसे छिया दिया और वे अपनी जगह पर आ कर बैठ गये |

१ हक्के नाममें कुछ पाठमेर मिलता है—किशी प्रतिमें 'चउला देवी' ऐसा भी पता जाता है—परन्तु यह 'च' और 'च' के बीचमे लिलने मालोंके ध्रमके कारण हुआ माद्म देता है। 'बकुलादेवी' का अपभेदा उचार 'बउलादेवी' देता है । अभिकार मतियोंमें 'बकुलादेवी' नाम बन गया माद्रम देता है। अभिकार प्रतियोंमें 'बकुलादेवी' नाम दी मिलता है और यही अद्भ प्रतीत होता है।

राजाक आदमी पैरोंक चिहुके अनुसार वहाँ पहुँचे, पर तु उसका वहाँ पाना असमय जान कर और भालेकी निक्को उसमें खोंच कर देखेंन पर भी कुछ न माल्म कर, वे वहाँसे वापस छोट गये। दूसरे दिन खेत नालोंने उस स्थानसे उसे बहार निकाल। वह संबेर ही वहाँसे आगे चलता हुआ एक वृक्षकी छायामें बैठ कर विधाम लेते लगा, तो क्या देखता है कि, एक चूढ़ा निस्तमावसे बिलमेंसे चाँदीका सिका बाहर ला कर रख रहा है। जब वह इस प्रकार इकीस सिका निकाल चुका, तो उनमेंसे फिर एक वापस लगा कर वह बिलमें ले गया। उसके विलमें छुतने पर वाकीक सब सिक्ष तिकाल चुका, तो उनमेंसे फिर एक वापस लगा हो। एकानतमें जा कर देखता है तो वह चूहा बाहर ला कर उस सिकोंको न ॥ कर वह छिलमें छोटन पर वाकीक एकानतमें जा कर देखता है तो वह चूहा बाहर ला कर उस सिकोंको न ॥ कर वह उस एका चलते हुए रास्तेमें किसी [धर्मी पुरुष] की बहुने, जो सहुरालसे पीहर जा रही थी, देखा कि राहबचिक अभावमें तीन दिनसे भूखे मरते उसका पेट फफ पह गया है। उसने माईकी तरह स्वेहसे कर्मुराकीसी सुगाविवाले चावलके करवेसे उसकी प्रतृत्व किया।

१७७. सन्द ११९९ का वर्ष पूर्ण क्षेत्रे पर, हे निक्रमादित्य, तुम्हारे ही समान एक कुमार पाळ नामक राजा िनैन धर्मका पाळन करने वाळा विकास ।

इस प्रकारको गाया किसी हुई देख कर मनमें बड़ा विस्तित हुआ। [इस समय] गू जिरा थि पिति सिट-राज का स्थानेनास सुम कर वहाँसे जीटा। उसका सब खर्च समास हो जुका था। उसी क्यारमें, किसी बनियंकी
दुकान पर [निना कुछ दिये] भोजन करने के बाद उसको बदी किया गया। यह ज्याकुछ हो कर रोने छगा तो,
किर तगरके छोगों ने इकड़ा होने पर दोबोंका मरण होगा यह जान कर उस बनियंने कहा कि-'भी बनायटी
मूर्च्या है हरे तुम दूर करनेका प्रयत्न करने छगो है उसके इस प्रकारके सुद्धियनसे अपनेको प्रयुजीवित सानकर, कु भार पा छने वैसा किया और उस उपायसे अपना कर खुटा कर यह जण हिंछ पुर में राव के समय पहुँचा।
पासमें बुळ न होनेके कारण करोईकी दूकान पर जा कर, उसका दिया हुआ छुछ खाया। बाद में अपने बहनोई
राजकुछ प्रा का रह देव की घर गया। जब का ह इसे ब राजवीदरसे आया तो उसे आगे आगे करके साके
भीतर छे गया। किर अन्छ। खाता जादि खा कर स्वस्य हो कर सो गया।

१ यहा पर यह नया बात कही गई है सो ठीक समझमें नहीं आती । अथकारका केल बहुत अस्पर और सजित है ।

#### कमारपालका राजगादीपर वैठना ।

१२९) प्रातःकाल बह बहनोई अपना सैन्य तैयार करके, उसके साथ, उसको राजाके महलमें ले आपा। अभिषेककी परीक्षाके लिये पहले एक कुमारको पट्टे पर बैठाया। उसको चादरके आँचलोंको भी ठॉक सम्बालके न देख किर एक दूसरको बैठाया। उसको हाथ जोड़ कर बैठा हुआ देख कर उसे भी अप्रमाणित किया। फिर कान्द्र इदेव की अनुहासे कुमार पाल, बढ़ा संकरण करके कँचेसे खासे लेता हुआ और हायमें तलनार कँपाता हुआ, (सिंहासन पर जा बैठा। पुरोहितने मंगलाचार किया, नगाड़े बजे। श्रीमान् कान्द्र इदेव मे पंचांगोसे पृथ्यो चूम कर प्रणाम किया। उस समय उसकी अवस्या पचास वर्षकी हुई थी।

# क्रमारपालने राजद्रोहियोंका उच्छेद किया।

१२०) कु मार पाछ स्वयं प्रोइ होनेके कारण, तथा देशान्तर अमणिस विशेष निपुणता प्राप्त करनेके कारण, तथा देशान्तर अमणिस विशेष निपुणता प्राप्त करनेके कारण, सब राज्यशासन स्वयं करने छगा। राज-इहोंको यह अच्छा नहीं छगा। उन्होंने मिछ कर उसे मारना चाहा और अन्यकार वाखे दरवाजेमें घातकोंको रख दिया। पूर्वजन्मके छुम कर्मीसे प्रेरित किसी आसने उस इत्तान्तको बता कर उसे अन्य हारसे मकानमें प्रवेश कराया। बादमें उन प्रधानोंको उसने शीव यमपुरीको भेज दिया।

वह माहुक मण्डलेश्वर (कान्ह ड दे व ), राजा अपना साला होनेके कारण, तथा अपने आपको राजप्रतिष्टाचार्य समझ कर, राजाको दुरवस्थाक [ उन पिछले ] ममौको कहा करता ! इस पर किसी समय राजाने
कहा — ' हे भावुक, तुन्हें इस प्रकार राज-दरवारमें सर्वदा पुरानी दुरवंस्थाके ममौका मजाक नहीं करना चाहिते |
अवसे ऐसी बातें समामें न कहना, विजनमें चाहे यथेच्छ कहते रहना ! 'राजाके इस प्रकार उपरोध करने पर भी,
उत्कट अवहावरा हो कर वह बोला कि — ' रे जनायत । अभी इतनेहीमें अपने पैर उच्छाड रहा है ! 'इस प्रकार
वकता हुआ, मानों मोतहीकी इच्छाते, औपधकी माँति उससे पथ्य वचनको भी उसने प्रहण नहीं किया |
[ उस क्षण तो ] राजाने अपने भावका संवरण करके अपनी मनोइचि लिपा हो । दूसरे दिन राजाके संकेत प्राप्त
महोंने उसका अंग तोड़ मरोड़ कर, दोनों ऑखें निकाल डॉ और उसे उसके मकान पर भिजवा दिया।

१७८. इस विचारसे कि पहुंछे मैंने ही इसे बाजाया है अतः तिरस्कार करने पर भी यह मुझे नक्षा जाजयेगा, इस अमर्क बक्त हो कर दीपककी तरह, राजाकी कीई अंगुलिंक पीरसे भी न छुए । यह विचार कर, सामन्त जोग, उस दिनसे अस्यिक भयचिकत चित्त हो कर, प्रतिपद पर उसकी सेवा करने ज्यो ।

१३१) राजाने पूर्वेमें उपकार करने वाळे उदयने के पुत्र वाग्मटदेव को अपना महामात्प बनाया और आ लिंग की तथा मई० उदयन देवको वहे (बृद्ध) प्रधान बनाया।

#### कुमारपालका चाहमान राजा आनाकके साथ युद्ध ।

१३२) चाह इ नामक एक कुमार सिद्ध राज का प्रतिपन्न (माना हुआ) पुत्र या। वह कुमार पाछ दे न की आज्ञा न मान कर सपाद छक्ष के राजांके पास सैनिक हो कर चला गया। वह श्री कुमार पाछ ने साथ विमह करनेकी इच्छासे, वहाँक सभी सामन्त लोगोंको लॉच (रिक्षत ) आदिके हारा अपने वरामें करके, प्रवल सेनांके साथ सपाद लक्ष के राजांको ले कर [गूर्जर] देशकी सीमा पर चढ आया। अत, चौलुक्य चक्रवर्ती (कुमार पाछ) ने भी, प्रतिराष्ट्र बन कर, उस सैन्यके सामने अपना सैन्यसमूह जमा किया। जक लक्ष्मिका दिन तै हुआ और सीमायों निष्कंटक की गई तथा चतुरहा सेना सिज्यत की गई, तो उसी समय पर

इस्तीके च उठि ग नामक महावतने, किसी अपराधर्मे राजासे फटकार पा कर, कोषसे अकुश-स्थाग कर दिया। इसके बाद, अनेक गुणके पात्र ऐसे सा म छ नामक महावतको खुद वस और धन आदि दे कर उस पद पर नियुक्त किया। उसने 'क छह पृश्वा न न ' (युक्तका सिंह ) नामक हायीको सजा करके उसके उपर राजाका आसन रखा। ३६ प्रकारके अखाँको बढ़ा जमा कर, किर राजाको बैठाया और सब कछा कछापसे पूर्ण ऐसा बह नय भी कछापके पर रेर रख कर हायी पर चढ़ा।

98]

दस आसन पर बैठ कर चीलुक्य-चक्रपतीं (कु मार पा छ ) ने देखा, तो मालूम हुआ कि, समामके नायक पुरुषोंसे उठाये जाने पर भी, चाह ह दु मारके किये हुए भेदके कारण (पुट जानेसे), सामत लोग उसकी आजाको नहीं मान रहे हैं । इस प्रकार सेनामें कुछ निष्ठा देख कर उसने महागतको ( आगे वहनेका ) आदेश -किया। सामनेकी सेनामें हाथी परका छत्र देख कर अनुमान किया कि यह सपाद छक्ष का राजा शि आ रहा 1 है। और यह निश्चय करके कि, सेनाके विघटित ( विमुख ) हो जाने पर मुझे अकेटेहाँकी टडना आउस्यक है, वस महाज्यको. सामनेके हाधीके वास. अपने हाधीको ने चन्नेकी साजा दी । पर वसे भी वैसा न करते देख बोला कि - 'क्या तू भी फूट गया है ' 'इस पर उसने कहा - ' महाराज! कल इप आतान न हाथी और साम छ नामक महानत ये दोनों युगान्तमें भी फूटने वाले नहीं है: किन्त सामनेके हाथी पर जो चा ह द नामक कुमार चढ़ा हुआ है यह ऐसी गभीर आगाज कर रहा है कि जिसकी हाँकके उरसे हायी भी माग छुटते हैं। यह सन कर राजाने । अपनी बृद्धिमतासे सोच कर ] हाथीके दोनों कानोंको चादरसे बद कर दिया और किर दानुके हाथीसे जा भिदाया। इधर चाहद ने, यह जान कर कि यह च उ छि ग नामक महात्रत ही-जिसे उसने पहलेहीते अपने वशमें कर लिया है--राजाके हाथा पर बैठा है, कुमार पाल की मारनेकी हुन्छासे हाथमें कुपाण ठै कर अपने हाथी परसे कद कर ' कलहपचानन' हायांके कुमध्यल पर पैर रखा । इतनेमें महारतने [ बडी चालाकी है ] हाथीको पाँछे हटा दिया। इससे वह चाह द कुमार पृथ्वी पर गिर पहा और नीचे खंडे हुए पैदल सैनिकोंने उसे पकड़ लिया। इसके बाद चौ छ क्य राज ने श्री का नाक नामक सपाद लक्ष देशके राजासे कहा कि - ' इथियार समाले ! ' ऐसा कह कर उसके मुख-कमल पर उचित समझ शिलीमुख (बाण) फेंकने छगा। ( उचित इसलिये कि शिलोमुख भीरेका भी नाम है और भीरोंका कमलकी ओर जाना उचित ही है। ) <sup>4</sup> तुम बड़े प्रधान क्षत्रिय हो न <sup>3</sup>∼इस प्रकार उपहासके साथ प्रशसा करते हुए, उसे मुलावेमें डाल कर, जो बाण मारा तो उससे घायल हो कर यह हाथीके क्रमस्थलसे गिर गया। 'जीत लिया, जीत लिया ! कहते हुए जाराने स्वय सारी केतामें अपने हाथीको इधरसे उधर धमाया और जो सब सामत थे उनके घोड़ों पर आजमण करके उनको केट किया।

इस मकार यह चाहड कुमारका भवंध समाप्त हुआ।

## कुमारपालका उपकारियोंको सत्कृत करना।

१३३) तल्यात्, कृतद्व-समाट् चौलुनयराजने आिश्य कुम्हारको सातली गाँउनाला निचित्र चित्रकृट पटिका (चित्रोड, मैताडकी मूमि) दी। ने अपने नगके कारण लाजित हो कर आज भी अपनेको 'सगर'(') कहते हैं। जिन्होंने कटे हुए बब्बूलकी डालोंमें दिया कर राजाकी रखा की धी व अंगरक्षकरी पट्टार रहे। गये।

१ दायीपर चटनेके क्षिये रस्त्रीका बना हुआ छींकाला।

#### गायक सोलाककी कलाप्रवीणता।

१३४) एक बार, सी छा क नामक गायकने अवसर पा कर अपनी गानकछासे राजाको संतुष्ट किया, तो उसने इनाममें मात्र ११६ दम्म उसे दिये। इससे [ वह असंतुष्ट हो कर उन दम्मोंसे ] सुखमिक्षिका ( गुड और आटेक्सी बनी हुई एक मीटाई) छे कर उसे वाळकोंको बाँट दिया। राजाने इस पर कुपित हो कर उसे निर्वासिक्त कर दिया। उसने, वहाँसे फिर विदेशमें जा कर [ किसी एक ] राजाको अपनी अनुपम गीतकछासे प्रसन्न किया और उससे इनाममें दो हाथी पाये। उनको छा कर उसने चौ छ क्य राज को मेंट किये। राजाने [ फिर ] उसका सन्मान किया।

१६५) ितसी समय, कोई विदेशी गरैवा [ राजाकी समार्गे आ कर ] यह कह कर जोरसे चिछाने छगा कि 'मैं छुट गया, छुट गया!' राजाने पूँछा—'किसमें छुट गया!' तो उसने बताया कि मेरी अतुक गीतकछासे एक ग्रुग समीप आ कर खडा रहा। मैंने कौतुक बदा उसके गर्छमें अपनी सोनेकी कण्ठी पहना दी। फिर मयसे वह माग गया। इस छिये मैं उस हिरनसे छुटा गया हूँ। तब बादमें, राजाका आदेश पा कर उस सी छा नामक गन्धर्यराजने बनमें जा कर अपनी मनोहर गीतिरियाक आकर्षण द्वारा सोनेकी कण्ठी- बार्छ उस ग्राफो आकर्षित करके छ आ कर राजाको दिखाया।

१६६) उसके इस कलाकीशन्स मनमें चिकत हो कर, प्रमु श्री हे मा चार्य ने उसकी गीतकलाकी कितनी शक्ति है सो पृष्ठी। उसने सुखे काठको एक्जिन कर देने तक की [अपनी कलाकी] अपि बताई। उसको इस कीतुकके दिखानेका आदेश दिया गया तो, उसने अर्धुद गिरि परसे तिरहक नामक इक्षको उखडवा कर मंगवाया, और उसके कुक शाखालण्डको राजमहन्के ऑगनमें, कुमारमृचिका (कुमारी मिट्टी = किसीने नहीं छुई हुई ऐसी कोरी गिट्टी ) से भरे हुए ,आन्याल (क्यारी) में रख कर अपनी नवप्रशंकित गीतकलासे तकाल उसे पढ़जोंसे छुशोभित करके दिखा दिया और इस प्रकार राजाके साथ महारक श्री है मचंद्र सुरिको उसने सन्तुष्ट किया।

### इस मकार बहकारै सीलाकका मर्बंघ समाप्त हुआ ।

# र्कीकणके राजा महिकार्जनका मंत्री आयड द्वारा उच्छेद।

१६७) इसने बाद, एक बार, जब चीलुक्य चनानतीं (जुः बार पाछ ) ने की क्क ण दे रा के म छि का जुं न नामक राजाके बंदीके मुँदि (उसका) " रा ज पिता म ह " ऐसा विरुद सुना, तो उससे राजाको इर्या हुई और उसने उस दृष्टिसे समाक्षी ओर देखा। राजाके चिवकी बातको समझ छेने बाखे मंत्री आम्ब इ को द्वाय जोड़ने देख कर राजा मनमें चिकित हुआ। समाविसर्जनके अनन्तर हाथ जोड़नेका कारण वृद्धा। इस पर उसने कहा कि आपका यह आशय समझ कर कि " 'क्या कोई ऐसा सुमट इस समामें है, जित मेज करके, शत-रंजके खेटके राजाके समान इस मुपामास म छिका खुं के को उसके दिया बाय '। में आपके आदेशको पूरा कर सकता हुँ; इस टिये मेंने हाय जोड़े। उसकी इस बातको सुन कर राजाने उसे सेनानायक बना कर कीर प्रवाह गुरस्कार दे कर समस्त सामन्तीके साथ बिदा किया। वह बिना करे चटना हुआ की काण देश में पहुँचा और अगाध जटने मरी कल विणी नामक नदीको पर करके सामनेके किनारे पर जा टेहरा। उसे इस प्रकार सामानेके टिये तैयार होता देख वह राजा म छिका खें न [ अकस्मात ही ] प्रहार करता हुआ उसकी सेना-पर टूट पहा। इससे वह सेनापति ( आम्ब ड ) पराजित हो गया। तब किर वह रूप्यान्त होता देख वह साम पर हात है वह समान ही कर साम है कर साम होता देख वह साम से हिना पर पहा। इससे वह सेनापति ( आम्ब ड ) पराजित हो गया। तब किर वह रूप्यान्तन हो कर, काले वस्त

१ वशानुक्रमते जो गरीयाका कार्य करते ये उनको बदकार कहते थे।

वारण कर और काले ही तबूमें निवास करता हुआ [ पत्तन आया ] वहाँ पर चौलुक्य मूपाल ( कु मा र पा ल ) ने उसे इस दगरें देखा तो पूछा कि 'यह किसमा सैन्य पडाहै ? 'इस पर उसे कहा गया कि ' की इर ण से छीटे हर पराजित सेनापति आम्बङके सैन्यका यह पडाय है। ' उसकी ऐसी टजाशीटतासे चित्तमें चमरहत हो कर, प्रसन्दरिसे उसे आदरके साथ बुछाया और फिर अन्यान्य बछ्यान् सामन्तोंके साथ म क्षिका के न की जीतनेके िये दसीकी राजाने फिर भेजा । [वह इस बार की हुण देशमें पहुँच कर ] उस नदीको उतर कर उस पर पुछ बँधवाया और फिर उस परसे सारे सैन्यको पार करके वडी सामधानीके साथ यहकी व्यमस्था की 1 घमासाम युद्ध चारू होने पर उस सुभट आ म्ब ड ने हाथीके कन्धे पर सुवार म हि का र्जु न को ही लक्षित करके, बड़ी वीरवृत्तिके साथ उसके हाथीके दाँतरूपी मुशलकी सीढ़ीसे, उसके कुमस्थल पर चढ़ बैठा । उद्दाम रण-शीर्यम मत्राला हो कर बोला कि - ' पहले प्रहार करो, या इष्ट देवताका स्मरण करो । ' यह कह कर ि उसके सम्हलते हो । अपनी धाराल तलवारके प्रहारसे म लि का ज़ न को प्रध्यी पर गिरा दिया । उधर सामन्त लोग नगर ल्डिनमें सद्य थे. इघर इसने खेलहींने, जैसे सिंहशावक हाथीको [ मार बालता है ] वैसे ही [ मिल्लिकार्जनकी ] मार ढाळा । फिर उसके मस्तकको सोने । के पतरे हि छपेट कर, उस देशमें चीलक्य चक्रवतांकी आहाकी घोषणा करता हुआ, अण हि छ पर जा कर, बहत्तर सामन्तींके साथ सभामें बैठे हुए अपने स्थामी कु मारपाछ मुप्तिके चरणोंकी, उसके सिरहरणी कमलसे पूजा की, तथा ये ४ चीजें मेंट की - १ श्रासकोडी नामक साडी: २ माणिक नामक विद्योदा, ३ पापक्षय नामक हार, और ४ सयोगसिद्धि नामक सिप्रा । इनके सिवा ३२ कुम सुर्रण, ६ मूडा मोती, चार दाँतवाळा खेत हाथी, १२० पात्र (बारागना ) और १४॥ कोटी सुवर्ण दण्डके रूपमें उपस्थित किया । इससे अति प्रसन्न हो कर राजाने श्री आ म्ब व नामक महामण्डलेखरको श्रीसन्तरे ि उस म दि का र्श्वन का धारण किया हुआ वह ] 'राज-पिता म ह ै विरुद्द समर्पण किया |

इस मकार यह मैती आम्बदका प्रतंघ समाप्त हुआ।

### कुमारपाटके साथ हेमचन्द्राचार्यके समागमका प्रसंग ।

१३८) एक बार, अण हिंह पुर में भजारक श्री हैम चह्र स्टिने अपनी पाहिंगि नामक माताको, कि जिसमें दीक्षा हो हुई थी, परहोक प्राप्तिक समय कोटि नामकारके पुण्यका दान किया । मृत्युके बाद [सहजान ] जब हसका सस्कार महोस्तर करने जा रहे थे, तब शिवुहण धर्मस्थानके निकट [ उसका शविनान पहुचा तो ] बहाँके तपस्थियोंने स्वामायिक मत्सरतान्त्रा, उस विमानका भग करके आचारिका प्रमु अपमान किया । उसकी उन्हर्णने पात्र कर अपमानके आधारति कृतित हो कर उन्होंने [ उस समय ] मालवेमें स्थित कुमार पांच भूपतिके स्कामार ( सेनानिवेश ) की अलकृत किया ।

१७६, मतुम्पको [ असीष्ट कार्यिसिद्धि प्राप्त करनेके लिये ] या ती स्थप राजा वनना चाहिये या किसी राजाको द्वायमें करना चाहिये । [ इन दो रास्तोंके सित्रा ] कामके सिद्ध करनेका तीसरा रास्ता नहीं है |

इस वचनके तस्का निचार कर उन्होंने ऐसा किया। उनके इस तरह आनेका समाचार उद यन माधी ने राजाकी सुनाया तो कृतकोंके निरोमणि उस राजाने परम अनुरोधके साय उन्हें अपने महल्ये सुल्याया। राज्य पानेके शहन झानको समरण करते हुए राजाने अनुरोध करके कहा कि—' आप सर्वरा देवताअर्चनके अरसर पर यहा आया करें।' इस पर सुरिने कहा— १८०. हम लोग मिक्षा माँग कर तो मोजन करते हैं, जूते-पुराने वल पहनते हैं और अकेली जमीन पर सो रहते हैं, तत फिर हम लोगोंको राजाओंसे क्या करना है।

तनके ऐसा कहने पर राजाने कहा-

१८२. मित्र एक ही [ होना चाहिये ], राजा या यित; मार्या एक ही [ होनी चाहिये ] सुन्दरी रमणी या दरी ( कदरा ); शाख एक ही [ होना चाहिये ], वेद या अप्यारम; और देवता मी एक ही [ होना चाहिये ] केहार या जिन !

महाक्षितिक इस कथनके अनुसार में परछोककी साधनाके छिये आपकी मित्रता चाहता हूं। ' किसी बातका निषेध न करना उसे स्वीकार कर छेना है '— इस उत्तिके कथनानुसार, स्र्रिके कुछ न कहने पर उस महर्षिकी चित्तृहरिको पहचान छेने वाछे उस राजाने, छोगोंके आने जानेमें बाग देने वाछे द्वारपाछोको, श्रीमुखसे आज्ञा दो कि इन महर्षिको किसी मी समय आनेमें बागा न दी जाय।

# हेमाचार्यके समागमसे कुमारपाटके पुरोहितका विद्वेष ।

१३९) बादमें स्रिको वहाँ आते जाते देख और राजाको उनके गुणका गान करते देख, त्रिरोध मारक्षे प्ररोहित आ छि ग ने कहा —

१८२. त्रिशामित्र, पराशर आदि तथा अन्य ऋषिगण, जो केनल जल और पता ला कर रहते थे, वे भी स्रोके सुदर मुख्कमलको देख कर मोहित हो गये, तो किर जो मनुष्य थी, दूध और दहीका आहार करते रहते हैं जनका इन्दियनिष्ठह कैसा हो सकता है! अही, यह इनका दन्म तो हैकिये।

उसके ऐसा वहने पर हेम चदने कहा --

१८३. हाथी और स्अरफा माम खाने वाटा ऐसा जो बटान् (सह है वह, सुना जाता है कि वर्षमें केन्नट एफ ही वक्त रित करता है; पर कर्करा शिव्यश्योज खाने वाटा कब्तर रोज रोज कानी वना रहता है ! इसमें क्या कारण है, सो तो बताओं ? ?

उसका मुँह वर वर देने वाछे इस प्रखुत्तरके बाद ही किसी [और ] मस्सरीने फहा, कि ये श्रेतागर तो सर्पको भी नहीं मानते । उसके ऐसा कहने पर →

१८७. छोकने। घारण करने वाले सूर्यको [ वास्तरमें ] हमी छोग हर्यये घारण करते हैं । क्यों कि वसकी अस्तगमन रूप सकट उपस्थित होने पर [हम तो ] अन्न-जल भी छोड देते हैं ।

इस प्रमाणकी निपुणताके आधार पर, हमीं छोग यस्तुत: सूर्यमक्त हैं, ये नहीं [यह सिद्ध कर दिया]। इससे उसका मुँह व द हो गया। किर एक बार देवतात्रसर (देवपुजाकी समानि ) हो जाने पर, मोहान्यकारको नए परनेम चदमाके समान थी है म च द के अाने पर यहा खंद ग णिने रजोहरणके द्वारा आसन पहको साफ कर यहाँ फनक विद्यान, तो राजाने [उसका] तत्त्वन समझते हुए पूज्रा कि 'क्या बात है ग' उन्होंने कहा—'क्ट्राचित यहाँ कोई अनु हो, दिये उसको हटा देनेके छिये यह प्रमतन होता है।' राजाने इस पर यह युक्ति-सुक बात कहाँ कि—'यि प्रमत्यक्ष कोई अनु देवा जाय तो ऐसा करना उचित है; न कि यो ही हमा प्रमास करना ठीवत है; न कि यो ही हमा प्रमास करना ठीक होता है। देव पर उन स्तिन कहा—'आप क्या [अपनी] हाथी यो देकी होता है। उनका हमा के स्तिन कहा—'आप क्या [अपनी] हाथी यो देकी होता है। उनका हमा के स्तिन हमा अपनी पह जीने यह राजन्यकार है थेसे ही यह धर्म स्ववहार है। उनके इम प्रकारके गुणोंमे हरवमें रिजित हो कर राजा, अपनी पह जेसी हुई प्रतिज्ञाके

अनुसार, उन्हें अपना राज्य देने छगा, तो उन्होंने सर्व झालका विरोधहेतु वतलाते हुए उसका अस्वीकार किया। क्यों कि कहा है कि —

१८५. हे मुभिष्टिर, जैसे जले हुए बीबका पुनः ठद्गम नहीं होता वैसे राज-प्रतिप्रहसे ( राजाके दिये हुए दानसे ) दग्ब हुए बाह्यणोंका [ फिर बाह्यण कुल्में ] पुनर्जन्म नहीं होता ।

यह पुराणमें कहा गया है । उसी प्रकार जैन शाल भी [ कहते हैं ] - 'गृहर्यके वहाँ भिक्षा मिठती हो तो फिर 'राजिंपड' ( राजाके दान ) की इच्छा क्यों करनी चाहिए '।

इस प्रकार [प्रसु हेम चन्द्राचार्यका कहा हुआ सुन कर ] उक्त विषयके ज्ञानसे चित्तमें चमःहत हआ और वह पत्तन पहुँचा |

कमारपालका सोमेश्वर तीर्थके जीर्णोद्धारका प्रारंभ करवाना ।

१४०) एक बार, राजाने मुनिसे पूछा — 'क्या किसी सरह भेरा भी यद्यका प्रसार करपान्त-स्पायी ही सकता है !' उसकी इस बातकी छुन कर उन्होंने कहा — [यह दो तरहिर हो सकता है —] या तो विक्र मादि त्य के समान संसारको अञ्चण करनेसे, या सो में बार का काष्ट्रमय मंदिर, जो समुद्रके पानीकी छाडोंसे शीर्णमाय हो गया है, उसका उद्धार करनेसे कीर्ति दुगान्त तक स्थायी हो सकती है ।' इस प्रकार चन्द्रमाकी चाँद्रनीको माँति श्री है म चें ह की वाणी छुन कर उछित आनंत्रके समुद्रसे उस राजाने उसी महर्षिको पिता, युह और देवता मानते हुए और विज्ञासीय अन्य बाह्यणोंकी निदा करते हुए, प्रासादके उद्धारके छिये, उसी समय ज्योतिपीते हुम छन्न छे कर, पञ्चकुछको यहाँ भेजा और प्रासादके उद्धारका आरंभ कराया।

कुमारपालका उदयनसे मंत्री हेमचन्द्राचार्यका जीवनवृत्तान्त पूछना।

१४१) एक दूसरी बार, श्री हेम चंद्र के छोकोत्तर गुणोंसे इत-इदय हो कर राजाने मंत्री उदयन से 'पूजा कि —' इस प्रकारका यह पुरुष-रान, सकल वंशोंके भूषणरूप ऐसे किस वंशमें, समस्त पुष्पके प्रवेशवाले किस देशमें और सब गुणोंके आकर समान किस नगरमें पैदा हुआ है है र राजाके इस आदेश पर उस मंत्रीने जन्मसे आरंभ करके उनका पत्रित्र चरित्र इस प्रकार कह सुनाया — ' अ धी ष्ट म नामक देशके घु न्यु का नामक नगरमें मोद वंश के चा चि ग नामक व्यवहारीकी, सतियोंमें श्रेष्ठ और जैमधर्मकी शासन देवता समान साक्षात् छत्रमी जैसी पा हि णि नामक सङ्घर्मचारिणीके थे पुत्र हैं। चा मुण्डा नामक गोत्र देवीके आघाक्षरके नाम पर चाग देव इनका नाम रखा गया था। इनकी अवस्था जब आठ वर्षकी थी, उस समय [इनके गुरु ] श्री देवचन्द्राचार्थ पचन से तीर्थयात्रके छिये प्रस्थान का धुन्धुकाक गानमें गमे । वहाँ मोद वस हिका में देवको नमस्कार करने जब गये तो यह छड़का समवयस्क बालकोंके साथ खेलता हुआ, अचानक सिहासनके पास रखी हुई उन आचार्यकी गदी पर जा बैठा | इस बालकके अंग-प्रत्यंगमें संसारसे निलक्षण लक्षणोंको देख कर उन्होंने (देव चन्द्रा चार्य ने ) कहा-' यह यदि क्षत्रिय कुळमें पैदा हुआ है तो सार्वभीम चक्रवर्ती होगा, यदि विकक् या ब्राह्मण कुलमें पैदा हुआ होगा तो महामंत्री होगा और यदि दर्शन (संप्रदाय = धर्ममत्) का सीकार करेगा तो युग-प्रधानकी नाई कांडे-काटमें भी सत्ययुग छे आयेगा '। आचार्यने यह सोच कर, उसकी प्राप्त करनेकी इच्छासे उस नगरके रहने वाले व्यवहारियोंकी साथ छे, वे चा चि ग के घर गये । वह उस समय अन्य प्राममें गया हुआ था । उसकी निवेकवती पत्नीने स्वागत-सन्तारसे उन्हें सन्ताष्ट किया । उनके यह कहने पर कि - श्रीसंव ( गाँउका मुख्य श्रापक समूह ) तुम्हारे पुत्रको गाँगने यहाँ आया है । ' उसने हर्पके आँस



वहां कर अपनेको रुनगर्भी माना। तीर्यंकरोंको भी माननीय ऐसा संघ मेरे पुत्रको माँग रहा है, यह वडे हर्पकी बात है, फिर भी मुझे विपाद होता है। क्यों कि इसका पिता निर्तात मिथ्या-दृष्टि (जैन वर्ममें अश्रद्वालु ) है और येसा हो कर भी वह इस समय गाँवमें नहीं है। उन व्यवहारियोंने कहा कि [ उसका कुछ विचार न कर इस पुत्रको ] तुम दे दो । उनके ऐसा कहने पर, माताने अपना दोष उतार देनेकी इच्छासे. दाक्षिण्यके यश हो कर अमात्र-गुणपात्र ऐसे अपने उस पुत्रको उन गुरुको दे दिया । तदनन्तर उस (माँ) ने जाना कि उन (आचार्य) का नाम देव चंद्र सूरि हैं। गुरुने उस बालकसे पूछा कि — ' तुम शिष्य बनोगे!' सो उसने 'हाँ' ऐसा कहा और वह छोटते हुए गुरुके साथ चल पड़ा। वहाँसे वे कणीवती शहरमें आये | वहाँ पर उदयन मंत्रीके पुत्रोंके साथ वह बालक पालकों द्वारा पाला जाने लगा | इतनेमें बाहर गाँवसे आये हुए चा चि ग ने वह सारा चतान्त सुना तो, जब तक पुत्रका सुँह न देखने मिल्रे तब तक, अन्नका त्याग ्कर उन गुरुका नाम पूछता हुआ क गों व तो पहुँचा । आचार्यके बसतिस्थानमें जा कर उस कुपित पिताने कुछ घोडासा प्रणाम किया। गुरुने पुत्रके अनुहारेसे उसे पहचान लिया, और फिर विचक्षणताके साथ विविध धोडासा प्रणाम किया। गुरुने पुत्रके अनुहारेसे उसे पहचान लिया, और फिर विचक्षणताके साथ विविध प्रकारके सत्कारोंसे उसे आवर्तित कर, उदयन मंत्रीको वहाँ बुलाया। घर्मबन्धु कह कर वह उसे अपने भवनमें छे गया और बडे भाईकी तरह मीकपूर्वक उसे मोजन कराया। किर चागदेव नामक उस लडकेकी उसकी गोदमें रख कर पत्राह पुरस्कारक साथ तीन दुक्छ (बहुमूल्य वस्त) और तीन छाल रोकड इन्य चर्चना गायन प्रति क्या । उस ( उदयन ) से चा चि न ने कहा - ' एक क्षत्रियके मृह्यमें १ हजार अस्सी, घोडेके भारत ताथ पर निर्माण करान मामूळी भी बनियेक मूल्यमें ९९ हाथी, अर्थात् ९९ लाख होते हैं। तुम तो तीन छाख दे कर उदारताके बहाने ऋपणता बता रहे हो । पर भेरा पुत्र तो अयून्य है और उस पर तुम्हारी मीक ाज ५ नार अंतराजा । अंदर्श महत्यमें यह भक्ति ही मुझे बस है । द्रव्यसंचय मेरे लिये शिवनिर्मालयकी माँति अस्पृह्स अमृह्यसम है । सो इसके मृहयमें यह भक्ति ही मुझे बस है । द्रव्यसंचय मेरे लिये शिवनिर्मालयकी माँति अस्पृह्स है। ' चा चि ग के इस प्रकार कहने पर आयन्त आनन्दित चित्तसे उक्कंटित हो कर उस मंत्रीने आर्टिंगन करके उसे धन्यवाद दिया, और फिर बोला कि —' अपने पुत्रको सुझे समर्थित करनेसे तो, यह बालक मदाश्रीके बानरकी नाई सब छोगोंको नमस्कार करता रहेगा और केवल अपमानका पात्र बनेगा। परंतु, गुरु महाराजको दे देने पर ात पर अभारत । बाजचंद्रमानी माँति त्रिलोकके नमस्कार योग्य होगा। अतः यथा-उचित विचार करके कहो। ' ऐसा आदेश पा कर जन्म कहा कि — 8 आपका जो विचार हो वही मुझे मान्य है । 7 ऐसा कहने पर उसकी यह मंत्री गुरुके पास छ गया और उसने पुत्रको गुरुको समर्पित कर दिया। फिर तो चा चिगने खर्य उसके प्रत्रजित होनेका उत्सव किया । बादमें [ वह बालक ] अप्रतिम प्रतिभायुक्त होनेके कारण, अगस्यकी नाई समस्त वाक्यय रूप सप्तदको खुल्हमें रख कर पी गया। समस्त विधास्थानोंका अन्यास कर गुरुक दिये हुए 'है म चंद्र ' नामसे प्रसिद्ध हुआ। सफल सिद्धान्त और उपनिपत्का पारगामा और छत्तीस ही स्रिगुणोंसे अलंकृत समझ कर गुरुने उसे स्रि पट पर अभिषिक्त किया। 'इस प्रकार उदयन मंत्रीकी कहीं हुई है माचार्थके जन्मादिकी यह प्रवृत्ति सन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ ।

# कुमारपालका सोमेश्वरके उद्धारकी समाप्तिके निमित्त नियम लेना।

१५२) फिर श्री सो म नाथ देव के प्रासादके आरंगके िव्ये जब रह शिखाका आरोपण हो गया तो राजाने श्री हे म चंद्र मुक्को पंचकुळकी भेजी हुई वर्ह्यापना (वधाई) सी विवृत्ति दिखाते हुए महा कि - ' यह प्रासादारंग किस प्रकार निर्विप्ररूपसे समाप्त हो [सो उपाय बताइए] '। राजाके कहने पर श्री गुरूने कुछ विचार फर कहा कि- 'इस धर्मकार्यमें कोई विग्र न उत्पन्न हो उसके छिये दो-मेंसे एक फाम करना होगा-



या तो प्वजारोप हो तब तक छुद भावसे ब्रह्मचर्य पाउन करना या मब-मासका नियम छेना ( त्याग करना )' ऐसा कहने पर, उनकी बात सुन कर मध-मासके नियमकी अभिलाया करते हुए, उसने शिवके ऊपर जल छोड़ कर उक्त शपयको प्रहण किया। दो वर्षके बाद, जब कि, उस मंदिरमें कल्या और ध्नजका आरोपण कार्य पूरा हुआ, उसने नियमसे मुक्त होनेकी अनुजा पानेके लिये गुरुसे कहा। उन्होंने कहा कि—' अपने इस समृद्ध कीर्तन ( मिन्दर ) के साथ यदि चंद्रचृढ़ ( शिव ) के दर्शन करनेकी इन्छा हो तो यात्रा करनेके बाद ही नियम छोड़ना उचित होगा। ' ऐसा कह कर मुनिवर हे मचंद्र यहांस चले गये। उनके गुणोंसे नांलोंके रगकी माँति इन्हरूपसे हृदयमें अनुरक्त हो कर यह साथ समार्ग केश्व उन्होंकी मुरासा करने लगा।

# हेमचन्द्राचार्यका सोमेश्वरकी याचा निमित्त कमारपालके साथ जाना !

तन, निष्कारण वैरी ऐसा कोई परिजन उनके तेज:पुक्कको न सह कर, इस मसळके अनुसार कि --१८६. उज्ज्वल गुणवालेको अन्युदित होता देख कर क्षुद्र मनुष्य किसी तरह उसे नहीं सहन कर सकता । जैसे प्रतिमा अपने शरीरको जला कर भी दीप्त दीपशिखाको यक्षा देना चाहता है । पीठका मास मक्षण करनेके दोषको अंगीकार करके (पीठ पीछे जुगली ला करके) भी खनका अपबाद करने लगा कि - ' यह बढ़ा चालाक. III जी हा करने वाला और सेवाधर्म झराल है. जो केवल महाराजकी मरजीकी ही बात कहता रहता है । यदि ऐसा नहीं है, तो प्रात काल आप सो में खरकी मानामें साथ चलनेको उससे कहें । आपके ऐसा कहने पर वह परधर्मके लोधका परिहार करके किसी कारण यहाँ नहीं आवेगा । और हम छोगोंका मत ही प्रमाणभूत माद्रम देगा। " राजाने उसकी बांतका स्वीकार करके प्रातःकाछ जब, श्री है म चंद्रा चार्य आपे तो. सी में खर की यात्रामें साथ चलनेके लिये उनसे अभ्यर्थना की। इस पर श्री सूरि बोले कि ' शुमुक्षित (भूषे) के लिये निमंत्रणकी क्या [जरूरत है] और उत्कठितके लिये केकारवके अवगके महनेकी क्या आवश्यकता है - इस फहायतके अनुसार उन तपश्यियोंके लिये, जिनका तीर्थयात्रा करना तो एक अधिकारसा धर्म है, उन्हें राजांक आपहका क्या प्रयोजन ?' इस तरह जब गुरुने अगीकार किया, तो राजाने कहा कि-' आपके लिपे पालकी आदि क्या समारी दी जाय! ' गुरुने कहा कि - 'हम लोग पानोंसे चल करही पुण्य प्राप्त-करते हैं । किन्तु इम थोडे थोडे चल कर श्री अर्थुजय, उज्जयत (शिरनार) आदि तीर्योको नमस्कार करते इर आपसे [सोमनाय] प च न में प्रवेश करनेक समय आ किलेंगे। " ऐसा कह कर उन्होंने वैसा ही किया। राजा अपनी सारी राज्यकदिके साथ प्रस्थान कर कुछ पड़ाबोंके बाद पत्त न को पहुँचा । वहाँ श्री हे मच द मनीन्द्र भी आ निले जिसते वह अरयन्त प्रसन्न हुआ। मण्ड० श्री बृह्स्पति ने सम्मुख आ कर अगयानी की और महोत्सवके साथ उनकी नगरमें प्रवेश कराया । श्री सी म नाथ के प्रासादकी सीदियों पर चढ़ कर, जमीन पर छेट कर उसे प्रणाम करनेके बाद, विस्काउसे दर्शनकी उत्कट आकाक्षांक कारण सो ने सर के लिएका गाड आर्डिंगन किया ।

# हेमाचार्यका शिवकी पूजा-स्तृति करना।

जैतपसेसे देप रखने बाळोके मुँडसे यह करान सुन कर कि 'ये जिन देवके अतिरिक्त अन्य देवताओंको नामकार नहीं करते ' अन्य चित वाले राजाने हे या चन्द्र से यह बात कही कि—' यदि योग्य माञ्चम दे तो इन मनोहर उपहारिसे आप थी सो में बार देवकी पूजा करें।' ' अच्छी बात है ' ऐसा कह करके उन्होंने शीम ही राजांके कोशसे आप थी सामजीय अलकारोंसे अलंकृत हो कर, राजाकी आजारी थी सु हु साति हारा हाथका सहारा

पा कर [ मूळ ] प्रासादकी चीकट पर चढ़ गये। मनमें कुछ सोच कर प्रकाशमें बोळ कि-' इस प्रासादमें साक्षात् कैळासनासी महादेन रहते हैं, इस ळिये रोमाचकटिकत कारीरको धारण करते हुए, उपहारको दूना कर दिया जाय! ' ऐसा आदेश करके शि व पु रा ण में कहे हुए दीक्षा-निधिक अनुमार आव्हान-अनगुठन - मुद्रा - मक्रन्यास-निसर्जन आदि स्वरूप, पचोपचार निधिक्षे शिनकी पूजा की। अन्तमें इस प्रकार स्तुति की —

१८७. निस किसी धर्ममतमें, जिस किसी नामसे, तुम जो कोई भी हो, लेकिन दोप और कलुपतासे रहित ऐसे तुम एक ही भगगान हो और इस लिये हे भगगन ! तुन्हें नमस्कार है।

१८८. पुनर्जन्मके अकुरको पैदा करनेवाले राग आदि जिसके नष्ट हो गये हैं वह ब्रह्मा हो, निष्णु हो या शिन हो—वसे हमारा नमस्कार है ।

इत्मदि स्नुतियों करते हुए, सब राजपुरुषोंके साथ निस्मययुक्त हो कर राजाके देखते रहने पर, हे मा चा ये •दण्डन्द् प्रणाम करके स्थित हुए। किर कृह स्प ति की बतलाई हुई यूजाविधिके अनुसार सामिलाप मानसे राजाने शिन्ना पूजन किया। इसके अनन्तर धर्मशिलामें बैठ कर तुलापुरुपदान, गजदान आदि महादान दे करके कर्मुरकी आसी उतारी।

क्रमारपालकी तत्त्वजिज्ञासा और हेमाचार्यका शिवको प्रत्यक्ष करना !

फिर सभी राजपुरुपोंको हटा कर, शिनके गर्भगृहके अन्दर प्रवेश करके राता बीला कि-' न महादेवके · समान देन है, न मेरे समान राना है और न आपके समान महर्षि। माग्यनश इन तीनोंका सहज सयोग हुआ है। इस लिये, नाना दर्शनोंके भिन्न भिन्न प्रमाणोंके कारण जिस देवतंत्रके वारेमें चित्त सदिग्ध हो रहा है, उस मिक्तिदायक सचे देयका वास्तिनिक खरूप, इम तीर्थभूमिमें आप सत्य सत्य रूपसे मुझे बताइये । ' यह सुन कर श्री है मचद्र ने बुद्धिसे बुछ सोच कर राजासे कहा - 'इन दर्शनोंके पुराने कथनोंको छोड दीजिए। मैं श्री सोमेचर देवको ही आपके प्रत्यक्ष कर देता हूँ। उन्होंके मुख्से मुक्तिभाग क्या है सो जान जीजिये। 'यह वाक्य सन कर बोळा — 'क्या यह भी सभा है है' इम तरह राजांक निस्मित होने पर [सूरिने कहा] — निश्चय ही यहाँ पर तिरोहित मानसे दैवत वर्तमान है। और हम दोनों गुरक कथनके अनुसार इनके निश्चल आराधक है। तो फिर इस प्रकार, इस इन्द्रके सिद्ध होनेके कारण देवताका प्रादर्भाग होना सरछ है। मैं प्रणिधान (ध्यान) करता हैं और आप कृष्ण अगुरुका उत्क्षेप (धूप) करें। ओर वह उत्क्षेप तब वन्द करियेगा, जब प्रत्यक्ष शिव आ कर निषेध करें। ' इसके बाद दोनोंके इस प्रकार करने पर जब गर्मगृह धुएसे भर कर अन्धकारमय हो गया और नक्षत्रमाठाके समान उज्ज्यल प्रदीत दीपक जब बुझ गये, तो किर अकस्मात . जैसे मानों बारहों सूर्यका तेज फैछ रहा हो ऐसा प्रकाश दिखाई देने छगा। उसे देख कर सन्नमत्रश राजा अपनी ऑर्जे मटता <u>इ</u>आ देखने टगा तो. जराधारके ऊपर श्रेष्ट जनूनद ( सुपर्ण ) के समान पुतिवारे, चशुसे द्रराटोक्य, अपरूप असमन खरूपवाले एक तपरनी दिखाई दिये । उसको पैरके जाँगुरेसे ले कर जटा-नूट तक स्पर्श करके देवताका अवतार निश्चित किया और पचाड़से पृथ्वीतल पर छठित हो कर प्रणाम करके मिकसे राजाने िड़िंति की कि —' जगदीरा ! आपका दर्शन करके आँखें कृतार्थ हुई, अब आदेशका प्रसाद कर कर्णयुगछको कृतार्थ करो । 'ऐसा कह कर राजाके चुप हो जाने पर, मोहरात्रिके छिये सूर्य खरूप उनके मुखसे. यह दिन्य वाणी प्रकट हुई-' रानन्! यह महर्षि सब देवताके अनतार हैं। पूर्ण परमझके अवलोकनसे. करतलमें रहे हुए मुक्ताफलकी तरह इ हैं त्रिभालका स्वरूप निज्ञात हैं। इस लिये इनका बताया हुआ मुक्तिमार्ग ही असदिग्र मुक्तिमार्ग है। ' ऐसा कह कर शित्र जब अन्तर्धान हो गये तो, प्राणायाम पत्रनका रेचन कर और आसन बधको शिथिल करके ज्यों ही श्री हेम चड़ने 'राजन्!' यह सन्द कहा, तो तत्काल इस

# धवन्धचिन्तामणि मंत्री आम्रभटका शकुनिका विहारका उद्धार करवाना ।

१४६) इसके बाद, समस्त विरक्ते एक अद्वितीय ऐसे सुगट आन्न मटने पिताके कल्याणार्थ मृगुपु (भ रूच) में राष्ट्र निका निद्वार प्रासादके उद्धारका कार्य प्रारम किया । उसके डिये गहरी नींत रे ते समय, न में दा न दी के निकट होनेके कारण अकरणात् वह नींन घस पड़ी और काम करने वाळे मजदूर उसमें दव गये। उसने यह देख, ऋषा-परवश हो कर, अपनी अत्यन्त निन्दा करते हुए, उसीमें अपने आपको भी गिरा दिया। इस अनुपम साहसके प्रमारसे वह निन्न शान्त हो गया (सब छोक बच गये)। इसके बाद, रिांचासपूर्वक सारा प्रासाद तीन वर्षमें पूरा हुआ । कल्डरा-दण्डकी प्रतिद्याका अवसर आने पर समस्त नगरोंके सर्वोको निमत्रण दे कर बुळाया गया और उन सबको ययोजित बल्ल और आमरण आदि दे कर सङ्क्रत किया गया और फिर सबको यथास्थान वायस पहुँचाया गया। छम्न समयके निकट आने पर अहारक श्री है म-च द्र सूरिके नेतृत्तमं राजाके साय अण हि छ पुर के सचको निमत्रित कर उसे अतुक्षित पासस्यादि तथा भूपण आदि दानों द्वारा सन्तुष्ट करके, ध्वनाधिरोपणके लिये घरसे चला । इस समय अपने सारे घरको मानों याचक-जनोंसे खुटना दिया । श्री सुनतदेनके प्रासादमें महाचजके साथ ध्वारोपण करके, अव्यधिक हपेने कारण, वह अनाउद्दय मात्रसे नाच करता रहा। अन्तमें राजाकी अन्त्रर्थना पर, उसने आरती जतारी। अपना चोड़ा हारपाळको दान कर दिया । राजाने स्वय उसको तिलक किया । बहत्तर सामत चामर और पुप्प वर्षा आदिसे उत्साह बढ़ा रहे थे। उस समय आये हुए कदीको अपना करूण दे दिया। अन्तमें राजाने हाथ पकड़ कर जबर्दस्ती उसे बैठाया और आस्ती और मंगल मदीव उत्तरवाये । श्री सुनतदेवके तथा गुरूके चरणमें प्रणाम करके, बशुओंको बन्दना आदि करके, राजासे शीम आरती उतरवानेका कारण पूछा। राजाने कहा - 'क्रि जैसे छुआडि अरविषक यूत-सनके आनेरामें अपने सिस्को भी दाँउ पर रख देता है, वैसे ही तुम भी इसके बाद फही अधियोंके माँगनेसे त्यागके आनेशमें आ कर अपना सिर भी उन्हें न दे डालो ?। राजाके इस प्रकार फट चुकने पर, उसके छो कोचर चरित्रसे हत-हृदय हो कर श्री है मा चार्थ ने भी, जिन्होंने जन्म कालसे ही किसी मनुष्पकी

१९२. उस इत्तपुरासे [इमें ] क्या [मतलव ] है जिसमें तुम नहीं थे। और जिसमें तुम [विपमान ] हो यह कि किसा। और यिह किटिटीमें तुमारा जन्म होता है तो यह कि ही सदा रहो -

इस प्रकार आचम टकी अनुमोदना करके दोनों क्षमापति, जैसे आये थे नेसे ही यापस गये |

आम्रभटका शाकिनीमस्त होना । १४७) इसके बाद, जब हे म च इ अपने स्थान पर पहुँचे तो उन्हें यह निग्नि मिछी कि आक्रसिक रीतिसे देवी ( ज्ञासिनी) के दोवसे अस्त हो कर आ अ सटकी अन्तिम दशा उपिथत हो गई है और आपको सीम बुडाया गया दे । उ होने सत्काउ ही समझ डिया कि ' वह महामना जब प्रासादके सिम्बर पर नृत्य कर रहा था उसी समय मिध्यादृष्टि देनियोंका बुड दोय उसे हुआ है। 'यह सोच कर, सायकाड ही को संयोधन य दा सन्द्र को साप छे, आकाशगामिनी शक्तिमे उह कर निमेयमानमें, मृगुपुरकी प्रातम्मिकी अञ्चत किया भार सैन्य या देवी का अनुतय करनेके ठिये कायोत्मर्ग किया । उस देवीने जीम निकाड कर उनका अपमान किया। तब उल्लामें राष्ट्रि-चारत दात कर यहा खन्द गणिने मूरावसे प्रदार करना शुरू किया। पदरण बारके प्रहारमें प्रासाद काँचने लगा, दूसरी बार प्रहार देने पर वह देवी ही अपने स्थानसे लगड़ कर - ' इन बग-

और इस प्रकार उस काष्ट्रमय देवग्रासादका कभी विश्वंस होना सोच कर उसने उस मंदिरका जीणोंद्वार करवाना चाहा । इस इच्छासे देवके सामने ही एकमक (एकाशन करने) जादिक नियम महण किये । किर वहाँसे प्रयाण करके अपने पहाच पर आया । उस प्रत्यथीं (शत्रु) के साथ युद्ध शुरू होने पर शत्रुद्धारा राजाकों सेनाका पराजित होना देख कर उदयन स्वयं युद्धके कियं उठा । वह प्रहारेंसे जर्करशरि हो गया तो फिर निवासमें छे आया गया । [जीवनान्त समीप जान कर वह ] सकरुण स्वरसे रोने छगा । स्वजनोंने इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि, मृत्यु निकट आ गया है और शत्रु अय और शक्त निका विद्यार के जीणों-द्वारकों इन्छाना देवकण पीठ पर जगा रह गया । इस पर उन्होंने कहा — 'आपके वाग्म ट और आ म म ट नामक दोनों पुत्र अमिमह छे कर तीर्थोद्धार करेंगे। इम छोग इसके छिये प्रतिभू (जामीन) वनते हैं।' उनके इस प्रकार अंगीकार करनेसे अपनेको चन्य समसता हुआ वह मंत्री अन्वाराधनाक विका सित्त हिं। शारीको खोजने छगा। बहुँ पर कोई चारित्री न मिछनेसे किसी पारिको सामने देस प्रकारको अस्त उसके निवेदित करने पर, मंत्री उसके खणाको छछाटी रार्श्व करता हुआ, उसके सामने दस प्रकारको आराधका करके वह श्रीमान् उदयन पराहोक प्रता हुआ। पर्वेह सुरके परिमछसे वासित शुद्ध इक्षकी माई उस वंदर (नीकर) ने अनशन मत छ कर रेवत क पर्वत पर अपने जीवनका जन्त कर दिया।

### मंत्री बाहडका राष्ट्रस्नयतीथाँद्धार कराना।

१४५) तत्यथात्, अण हिल्ल पुर पहुँच कर उन स्रजनोंने यह बात याग्मट और आम्रमट की धनाई । उन्होंने वैसा ही नियम महण करके जीगोंद्धारका कार्य आरंभ किया। दो वर्षमें श्री श व्रं ज य का यह प्रासाद बन कर तैयार हुआ और उसकी खनर देनेके छिये आये हुए मनुष्यके बचाई देने बाद ही दूसरा मनुष्य आया जिसने कहा कि ' प्रासाद तो फट गया है ! ' तपे हुए सीसेके जैसी उसकी वाणीको कानोंमें सुन कर श्री इतमार पाळ भूपाळसे आज्ञा के कर मंत्री स्वयं वहां जानेको उचत हुआ । श्रीकरणकी जो अपनी सुदा (मंत्रीके पदकी मुद्दर) यी वह महं कप दीं को समर्थित को और स्वयं ४ सहस्र घोड़े छे कर श वं ज य की उप-त्यकामें पहुँचा । वहाँ अपने नामसे बाहड पुर नामका नया नगर वसाया । शिल्पियोंने प्रासादके फट जानेका ' कारण बताते हुए कहा कि सम्रम प्रासादमें पवन घुस कर निकलता नहीं, इस लिये मन्दिर फट जाता है; और जो प्रासाद भमहीन बनाया जाय तो बनाने वाला निर्वश हो जाता है [ ऐसा शासका विधान है ] । मंत्रीने यह सुने कर ऐसा विचार किया कि निवैश होना अच्छा है। इससे धर्म कार्य ही हमारा वैश होगा और पूर्व काळने जीपोंद्वार कराने वाले भर त आदिकी पंक्तिमें हमारा भी नाम उक्षिखित होगा । इस प्रकार अपनी दीर्घदर्शिनी बुद्धिसे सोच कर उस मंत्रीने श्रम और दीवालके बीचमें परधर भरवा दिये और प्रासादको निर्श्रम बनवापा। तीन वर्षमें प्रासाद पूरा हुआ । उसके कळश दण्ड आदिको प्रतिशके समय पत्त न के संघको निमंत्रित किया और महामहोत्सवके साथ सं० १२११ में मंत्रीने ध्वजारीपण कराया । पापाणमय विव ( मूर्ति ) का परिकर म म्माणीकी खानमेंके किंमती पत्थरका बनवाकर स्थापित किया। श्री बाह उपुर में राजाके पिताके नामसे श्री त्रि मु व न पा छ वि हार बनवा कर उसमें पार्श्वनाथको स्थापना कराई । तीर्थपूजाके छिये नगरके चारों और २८ वागीचे बनवाये, नगरका पक्षा कोट बनवाया और देवके पूजारियोंके प्राप्त और वास आदिकी व्यवस्था कर, वह सब कार्थ परा किया। इस तीर्थोद्धारके व्ययमें [ यह वात प्रसिद्ध है कि ]-

१९१. जिसके, मंदिर बनानेमें १ फरोड़ ६० लाख व्यय हुआ है, बिह्रान् छोग उस श्री वाग्मटदेव की [परी] वर्णना कैसे करें !

इस मकार शतुञ्जयके उद्धारका यह मबंध समाप्त हुआ।

देवताके सकेतसे राज्याभिमानको छोड़ कर उसने कहा —'जीव ! प्रधारिय !' इस प्रकार विनयसे सिर नवाता हुआ हाय जोड़ कर बोळा कि 'जो आजा हो सी कहिये ।' इसके बाद वहीं पर उसे यावजांतन मध-मासके स्यामका नियम दिया और वहींसे छोट कर वे दोनों क्षमापति ( ग्रुनि तो क्षमा≔क्षान्तिके पति, राजा क्षमा≕ पृष्वीके पति ) जण हि छुपुर आये ।

## कुमारपालका परमाहैत आवक बनना ।

१५३) श्री जिनमुख्ये निम्प्त पिनेश्र वचनोंके अवण द्वारा प्रतिबुद्ध हो कर राजाने 'परमार्धत' विहरको भारण किया। उससे अन्यर्थित हो कर प्रमु (हेम च ह) ने 'त्रिपष्टिश छाका पुरुप चरित' तथा बीस 'वीत राम-सुति काँ' से युक्त पिन 'योग सांख' की रचना की। उनका आदेश पा कर अपने आजातातीं जठारह देशोंमें, चीरह वर्ष तक, सर्व प्रकारको बीन-हत्याका निवारण किया।

[१२६] सतत आकारामें त्रिचरण करने वाले सहर्षियण एक छुगीको भी ब्याचेंके पहासे सुक्त नहीं कर सके। परना प्रसु त्री हेम सूरि अकेलेने ही चिरकाल तक पुट्यी पर जीवनप होनेका

निषेध कर दिया ।

[१२९] [आकारा स्थित ] कळाकळाच पूर्ण ऐसे अन्त्रमासे [गृष्वी स्थित ] हेम चन्द्र सूरि अधिक उज्ञ्यकर्तार्ति हैं। वयों कि, चन्नाने तो केम्ळ एक ही मृगका [अपनी गोदमें छे कर] रक्षण किया है जब हेम चन्द्र ने तो सब ही मृगका (सारे पशुगणका) रक्षण किया है ।

राजाने उन उन देशोंमें १४४० नये विद्वार (जैन मन्दिर) बनवाये। सम्यक्त मूळक १२ मर्तोको अगीकार किया। अदरादान - निरमण - स्वरूप तीसरे मतको व्याख्या सुन कर रुदती (रोती हुई निषया नारियोंके) धनका महण पापोंका कारण है ऐसा समझ कर, उस कामके अधिकारी पच्छुळों (कर्मचारी गण्ड) को बुळा कर उसके आयुष्टको, जिसका [वार्षिक] प्रमाण ७२ छाख या, काइ कर, उस कारको बन्द कर दिया। उस करके छोड़ दैने पर निहानोंने इस प्रकार स्तुति की—

१८९. जिस रुद्रतीयिचकी, इतसुममें पैदा होने 'बाले रसु-नहुप-नामाग-मरत आदि जैसे राजा छोग भी छोड नहीं सके, उसे करुणावश हो कर मुक्त करने बाले कुमार पाल ! तुम महापुरुपोंक

मुकुट-मणि हो ।

प्रमु है म सूरिने भी इस तरह राजाका अनुमोदन किया कि -

१९०. अपुत्र पुरुषोंका धन महण करके [अन्य ] राजा तो पुत्र होता है । किन्तु स-तोपपूर्णक उसका त्याम करने वाठे तुम तो समझूच राज-रितामह हो ।

# मंत्री उदयनका सौराष्ट्रके युद्धमें मारा जाना।

१४५) फिर, एरा ए दे शके सउसर [अनुर] से युद्ध करनेके लिये उदयन मणीको दलका नायक बना कर सारी सेनाके साथ भेजा गया। वह वर्द्ध मान पुर (आधुनिक बढ वाण) में पहुँच कर [नजदीकदीमें रहे हुए श मुजय पहाड पर] श्री गुगादिदेवको नगरकार करनेकी इच्छासे, सगरत गढले- सरोको आगे चल्लेकी अध्यर्थना कर, खुद नि गल गिरि (श सुजय) आया। विग्रुद्ध श्रद्धाने साथ देव- चरणोंकी पूना करके व्या ही निधिपूरिक नैयनदना करने लगा, त्यों ही एक मुपक (चृद्धा) नद्धनमालासी प्रदीस दीपमालामेंस एक दीपनीर्जन (दिवकों अंगरक्षकोंने उसे हुई बाट) को ले कर काटके बने उस प्रासादके किसी विल्में प्रनेश करने लगा, तो देवके अंगरक्षकोंने उसे हुई बाट) को ले कर काटके बने उस प्रासादके किसी विल्में प्रनेश करने लगा, तो देवके अंगरक्षकोंने उसे हुई बाट) को ले कर काटके बने उस प्रासादके किसी

श्रीर इस प्रकार उस काष्ट्रमय देवग्रासादका कभी विष्वंस होना सोच कर उसने उस मंदिरका जीणोंद्वार करवाना चाहा । इस इन्हासे देवके सामने ही एकमक (एकाशन करने) आदिके नियम प्रहण किये । किर वहाँसे प्रयाण करके अपने पद्धाव पर आया । उस प्रत्यार्थी (शत्रु) के साथ युद्ध शुरू होने पर शत्रुद्धारा राजाकी सेमाका पराजित होना देख कर उदय न स्वयं युद्धके जिये उठा । वह प्रहारोंसे जर्जरशरीर हो गया तो किर निवासमें छे आया गया । जिवनान्त सभीप जान कर वह । सकरण स्वरसे रोने छमा । स्वननोंने इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि, मृत्यु निकट आ गया है और शत्रु अय और शक्रु कि का विहार के जीणों-द्वारकी इच्छाका देवऋण पीठ पर छमा रह गया । इस पर उन्होंने कहा — 'आपके वा म्य ट और आ म म मामक दोनों पुत्र अभिग्रह छे कर तांचोंद्वार करेंगे । हम छोग इसके छिये प्रतिमू (जामीन) वनते हैं । ' उनके इस प्रकार अंगोकार करनेसे अपनेको धन्य समग्रता हुआ हम मंत्री अपन्यारावनाके छिये किसी चारिक-धारीको खोजने छमा । वहाँ पर कोई चारिजों न मिछनेसे किसी एक नौकरको साधुवेषमें छे आ कर उसको निवेदित करने पर, मंत्री उसके चरणोंको छछान्से राश्रों करता हुआ, उसीके सामने दस प्रकारकी आराधमा करके वह श्रीनान् उदय न परजेक असर हम प्रकार का प्रवेद स्वर इसकी नाई उस वंठ (नौकर )ने कनशन तर छकर हम हम तर छ कर देव तक पर्यंत पर अपने जीवनका अन्त कर दिया।

### मंत्री चाहडका शञ्जुयतीर्थोद्धार कराना।

१४५) तत्पथात, अण हिल्ल पुर पहुँच कर उन स्वजनोंने यह बात वाग्मट और आम्र मट को मनाई । उन्होंने वैसा ही नियम महण करके जीणोंद्धारका कार्य आरंभ किया। दो वर्षमें श्री श त्रं ज य का यह प्राप्ताद वन कर तैयार हुआ और उसकी खबर देनेके छिये आये हुए मनुष्यके बचाई देने बाद ही दसरा मनुष्य आया जिसने कहा कि ' प्रासाद तो फट गया है ! ' तपे हुए सांसेके जैसी उसकी वाणीको कानोंमें सुन कर थी क मार पाल भूपालसे आज्ञा के कर मंत्री स्वयं वहां जानेको उचत हुआ । श्रीकरणकी जो अपनी मुद्रा (मंत्रीके पदकी मुहर) थी वह महं क पदीं को समर्पित की और स्वयं प्र सहस्र चोड़े के कर श्रृ ज य की उप-त्यकामें पहुँचा । वहाँ अपने नामसे बाह इ.प.र नामका नया नगर वसाया । शिल्पियोंने प्रासादके फट जानेका ' कारण बताते हुए कहा कि सम्रम प्रासादमें पवन धुरु कर निकलता नहीं, इस लिये मन्दिर फट जाता है: और जो प्रासाद अमहीन बनाया जाय तो बनाने वाला निर्वेश हो जाता है [ऐसा शासका विधान है ] । मंत्रीने यह हुन कर ऐसा विचार किया कि निर्वश होना अच्छा है। इससे धर्म कार्य ही हमारा वंश होगा और पूर्व काल्में जीर्णोद्धार कराने वाले भरत आदिकी पंक्तिमें हमारा भी नाम उल्लिखित होगा । इस प्रकार अपनी दीर्घदर्शिनी बुद्धिसे सोच कर उस मंत्रीने श्रम और दीवालके बीचमें परधर भरवा दिये और प्रासादको निर्श्रम बनपाया । तीन वर्षमें प्रासाद पूरा हुआ । उसके कळश दण्ड आदिको प्रतिष्ठाके समय पत्त न के संघको निमंत्रित किया और महामहोत्सवके साथ सं० १२११ में मंत्रीने ध्वजारोपण कराया । पापाणमय विव ( मूर्ति ) का परिकर म माणी की खानमेंके किमती पत्थरका बनवा कर स्थापित किया। श्री बाहड पुर में राजाके पिताके नामसे श्री त्रिमुयन पाळ विद्यार बनवाकर उसमें पाइनेनाथकी स्थापना कराई। तीर्थपूजाके छिपे नगरके चारों आर रष्ट वागीचे वनवाये, नगरका पक्षा कोट बनवाया और देवके पूजारियोके मास और वास आदिकी ब्यदस्या कर, वह सब कार्य पूरा किया । इस तीर्योद्धारके व्ययमें [ यह वात प्रसिद्ध है कि ]—

१९१. जिसके, मंदिर बनानेमें १ करोड़ ६० छाख ज्यय हुआ है, विद्वान् छोग उस श्री वाग्म टदेव

की [पूरी] वर्णना कैसे करें !

इस प्रकार शत्रुखयके उद्धारका यह प्रवंघ समाप्त हुआ।

# मंत्री आन्नमटका शक्कनिका विहारका उद्धार करवाना।

१४६) इसके बाद, समस्त विश्वके एक अहितीय ऐसे सुमट आम्र मट ने पिताके कल्याणार्थ सृगुपुर ( भक्तच ) में श दुनिका निहार प्राप्तादके उद्धारका कार्य प्रारंग किया । उसके छिये गहरी नीन खोदते समय, न में दा न दी के निकट होनेके कारण अकरमात् वह नींन घस पड़ी और काम करने वाले मजदूर उसमें दव गये। उसने यह देख, जुपा-पर्यश हो कर, अपनी अत्यन्त निन्दा करते हुए, उसीमें अपने आपको भी गिरा दिया । इस अनुपम साहसके प्रभारते वह नित्र सान्त हो गया ( सब छोक बच गये ) । इसके बाद, शिलान्यासपूर्वक सारा प्रासाद तीन वर्षमें पूरा हुआ । कल्झ-दण्डकी प्रतिष्ठाका अवसर आने पर समस्त नगरोंके संघोंको निमन्नण दे कर बुखाया गया और उन सबको यथोचित वस और आभरण आदि दे कर सकत किया गया और फिर सबको यथास्थान बापस पहुँचाया गया। छड़ा समयके निकट आने पर भट्टारक थी है म-चंद्र सारिके नेतरामें राजांके साथ अणाहिल पुर के संघको निमन्नित कर उसे अतुष्ठित बारसण्यादि तथा भूपण आदि दानों दारा सन्तप्र करके. ध्वजाधिरीपणेक लिये घरसे चला । इम समय अपने सारे घरको मानों याचक-जनोंसे छटना दिया। श्री सुवतदेनके प्रासार्मे महाध्वजके साथ ध्वजारीपण करके, अपधिक हर्पने कारण, यह अनालस्य भारते नाच करता रहा । अन्तर्भे राजाकी अन्यर्थना पर. उसने आरती उतारी । अपना घोडा द्वारपालको राम कर दिया । राजाने स्वय उसको तिलक किया । बहत्तर सामन्त चापर और एप्य वर्षा आदिसे उत्साह बढ़ा रहे थे। उस समय आये हुए बंदीको अपना करूण दे दिया। अन्तमें राजाने हाथ पकड़ कर जबर्दस्ती उसे बैठाया और आरती और मंगल प्रदीप उत्तरनाये । थी सबतदेवके तथा गुरूके चरणमें प्रणाम करके, बन्धुओंको बन्दना आहि करके, राजाने शीप्र आरती उत्तरपानेका कारण पूछा। राजाने कहा - 'कि जैसे जुआडि अत्यधिक यूत-रसके आनेशमें अपने सिरको भी दाँउ पर रख देता है, वैसे ही तुम भी इसके बाद कहीं अधियोंके मॉगनेसे त्यामके आनेशमें आ कर अपना शिर भी उन्हें न दे डाडो 1 राजाके इस प्रकार कह चुकते पर, उसके छोकोत्तर चरित्रसे इत-इदय हो कर श्री है मा चार्य ने भी, जिन्होंने जन्मकालसे ही किसी मनुष्यकी स्तृति नहीं की थी. कहा -

१९२. उस इतपुगसे [ इसें ] क्या [ मतलन ] है जिसमें तुम मही थे। और जिसमें तुम [रियमान ] हो यह फिक्क फेसा 1 और यदि कलिहोंमें तुमारा जन्म होता है तो वह फालि ही सदा रही — इतसे क्या मतलन हैं।

इस प्रकार आव म टकी अनुमीदना करके दोनों क्षमापति, जैसे आपे थे वेसे ही शापस गये।

# आग्रमटका शाकिनीप्रस्त होना ।

१ ५७) इसके बाद, जब है म चंद्र अपने स्थान पर पहुँचे तो उन्हें यह विश्वति विद्यो कि आकासिक सीतिसे देवी (द्याकिनी) के दोवसे मस्त हो कर आ म य की अन्तिम दशा उपस्थित हो गई है और आपको सीत सुद्याया गया है। उन्होंने सकाव ही समझ दिया कि 'बह महामना जब प्रासादके शिखर पर नृत्य कर रहा पा उसी समय मिण्यादि देवियों ना सुद्याया उसी को स्वीधन पर साम सम्बद्ध है विभिन्न सुद्याया कर समस्य मिला अध्याप के आकाद्यायानिनी शिखर उह कर निमेपनाया, सुद्याय को प्रान्तभूमिको अक्टरत किया पर संद्र को साथ है, आकाद्यायानिनी शिखर है कर निमेपनाया उस देवीने जीन निकाज कर उनका अपमान किया। तब उनक्ष हो तीन चात्रज्ञ हो कर पहास कर निमेपनाया हो से स्वार्थ मानिन का उनका अपमान किया। तब उनक्ष हो तीन चात्रज्ञ हो कर पहास कर निमेपनाया हो से स्वार्थ महार करना ना स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त कर निमेपनाया स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त करना ना स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त करना ना स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त करना ना स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ प्राप्त स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्

पाणिके बन्नप्रहारसे बचाओ — बचाओ ' कहती हुई प्रमुके चरणों पर आ कर गिर गई। इस तरह अपनी अनिन्य नियाके बळ पर उस दोपके मूळभूत मिथ्यादृष्टिगळे व्यन्तरों (भूत पिशाचों) का निप्रह करके थ्री सुन्नतदेवके प्रासादमें आये। वहाँ पर—

१९३. संसाररूप समुद्रके छिथे सेतु, कल्याण-पयक्ता वात्राके टिये दीप-शिखा, िम्बके आधारके छिये आलंबन यिट, परमतके व्यामोहके छिये केतुका उदय, अथ्या हमारे मनरूपी हाथियोंके वन्ध्रनके छिये दह आजान रूप जीवाको धारण करने वांछे ऐसे श्री सुवतस्वामीके चरणोंकी नख-रिहेमयाँ [सवकी] रक्षा करें ।

इस प्रकारकी स्तृतियोंसे श्री मुनिसुनगरी उपासना करके, श्री आ म म टको उड़ाय स्नानसे सुस्य करके, जैसे गये ये कैसे हो [अपने स्थान पर] छोट आये। श्री उदयन चैस्य शकुनि का निहारके घटी गृहमें राजाने की क्कण मृत्र दिले हुए] सीन कट्स सीन जगह स्थापित किये।

इस प्रकार यह राज-पितामह श्री आम्रामटका मर्वघ समाप्त हुआ ।

# कुमारपालका विद्याध्ययन करना ।

१४८) इसके बाद, एक दूसरी बार, कप दीं यंत्री का अनुमत कोई विद्वाल्, राजा कुमारपाट के मोजन कर टेनेके बाद कामन्दकीय नी तिशास्त्र के इस स्टीकको पढ रहाथा—

१९९. राजा मेथती नाई समस्त भूत-मात्रका आगार है। मेथके निकल होने पर भी जीवन धारण किया जा सकता है पर राजाके निकल होने पर नहीं।

तब, इस बाक्यको सुन कर राजाने कहा कि — 'अहो राजाको मेवकी ' उत्पम्या ! ' इस पर समे सामाजिक छोक राजाका न्युष्टन करने छगे । पर उस समय क पर्दी म मी ने अपना सिर नीचा कर छिया । यह देख कर राजाने एकान्तमें उससे [कारण ] पूछा । उसने कहा — ' महाराजने जो ' उत्पम्या ' राज्यका उचारण किया वह सन व्याकरणोंकी दृष्टिसे अपसान्य (अश्वह ) है; और इस पर मी इन खुरामती अश्वतीसेंगिं न्युंटन किया । उनके ऐसा करने पर मेरा तो दोनों प्रकार सिर नीचा करना ही सनुचित है । शत्र राजाओं इस प्रकारको अपकीर्ति कैछतो है कि ' अराजक जगवका होना अच्छा है किन्तु मूर्ख राजाका होना अच्छा नहीं ।' विस अर्थों अराव वह है उस अर्थों उपमान, अराम्य, उपमा इस्पादि शन्य कहे वाते हैं । असकी इस वातको [ आररके साथ ] हरपमें महण करके, अनन्तर, ५० वर्षकी उममें, उस राजाने शब्द अर्थों उस हम करने हि छेये किसी उपापायको निकट माजिका पाठसे आरंम कर ( अ आसे छे कर ) शास पटना आरंम किया और एक वर्षके भीतर [ व्याकरणको ] सोमें वृत्ति और तीनों काल्य पढ़ ढांछ । और फिर पण्डितोंसे 'विचार-चतुर्युख' यह विरुद प्राम किया ।

इस प्रकार विचारचतुर्भुख कुमारपालके अध्ययनका प्रवंध समाप्त हुआ !

#### यनारसके विश्वेश्वर कविका पत्तनमें आना।

१९९) किसी अवसरपर, ति श्रेश्वर नामक कवि वाराण सी से पत्तन में आ करप्रमुश्री देमस्रिकी समामें गहुँचा। वहाँ कुमारपाङ राजाको विषमान देख कर उसने— १९५. क्रंबल जीर दंढ वाला यह हेम मुम्हारी रहा करें। इस प्रकार कह कर वह ठहर गया। राजाने उसे क्रोधकी दृष्टिये देखा। तब फिर-जी पड़दर्शन रूप पदाओंको जैन-गोधर ( चरागाह ) में चरा रहे हैं।

यह उत्तराई पढ़ा जिसे छुन कर सारी समा प्रसच हुई। किर किने रामक्ट्यारि [कवियों] को समस्यार्थे पूर्ण करनेको दीं। 'ब्यापिद्धा नयने०' इस चरणगडी एक समस्याकी पूर्वि महामात्य कपदीने इस प्रकार की

१९६. 'इसको ये सरछ ( बझाँ बझाँ ) आखें दोनों हथेंडियोस ढाकाँ नहीं जा सकतीं, और अपने
मुखदर्सा चन्द्रमाको चादनीके प्रकाशसे यह सब कहीं दिखाई दिया करती है – हस लिये आँख
मिचीनोके खेळमें अपनी चारों ओर रहीं हुई सिखयेंका बाचमें बैठी हुई वह बाजा [खेळनेसे]
रोक टी गई है और इस लिये वह अपने मुख और ऑखोंनो से रहीं हैं।'

{ इस समस्यापूर्वितो प्रतिभासे प्रसन हो कर ] उस किनेन पचास हजारकी कीमतका अपने गर्छका हार निकाछ कर कप दिंक फण्डमें यह कहते हुए दाछ दिया कि 'यह सो श्रीभारतीका पर (स्वान) है।' उसकी सहरयतासे चल्लुट हो कर राजा उसे अपने पास रखने छगा, तो यह यह कह कर, राजा हारा सकुत हो कर, यथास्पान चळा गया कि—

१९७, कर्णको कथा तो अब दोप भाव रह गई है। का शी न गरी मतुष्योंकी करीके कारण क्षीणप्राप हो गई है। पूर्न (या उत्तर ) दिशामें हम्भीर (म्डेल्ड ) के घीडे सहर्प हिन्तिहेना रहे हैं। इससे यह भेरा हृदय ही अब, सरस्ताके आङ्गनमें प्रश्वन आरसमुद्रके साथ लेह्या प्रमासक्षेत्र के छिय उत्करिक्त हो रक्ष है।

> \* हेमचन्द्रसुरिका समस्या पूरण करना ।

१५०) किसी समय कुमार निहार देनमन्दिसे राजा द्वारा आमीजित हो कर प्रभु औ हेम चन्न, कप सी मंत्री द्वारा हायका सहारा पा कर, जब क्षीपान पर चढ़ रहे थे [बहा पर तृरयीचत ] नर्तकीके कञ्चककी कसनीको तनती हुई देख कर कपराँचे यह कहा—

१९८. हे सीख तैरा यह कखुक सोभाग्यशार्थ है इस स्थि इसका यह तनना युक्त ही है । यह कह कर उसे जब आगे बोटनेमें रिटंब करते देखा तो प्रमुने क्वरार्थ इस प्रकार कह दिया — जिसके ग्रुपका महण पीटपीड तरुणंजन करता है ।

आचार्य और मंत्रीके बीचमें 'हरडह'का वाग्विलास।

१५१) एक बार, सोरे कप दी मजी ने थी स्रिको प्रणाम करनेके बाद [ उसके हाथमें कोई चीज देख कर ] उन्होंने पूठा-'यह क्या चीज है '' उसने प्राप्त ( देशों ) मापामें कहा -'हरदर'-अर्थाव् 'हरें '। प्रमुने कहा-'क्या अब भी ''। तन वह अपनी अनाहत प्रतिमा (भवर बुद्धि) के कारण उनके व-चनन्छत्र (क्यम्य) को समझ कर बोळा-'कब तो नहीं '। क्यों कि अन्तिम होने पर भी वह आदिम हो गया और एक मीत्रा अधिक भो हो गया । हमीश्च पूर्ण जॉखोंते प्रमुने राम चंद्र आदिने सामने उसकी चतुर्यहेंके प्रसुते शाम चंद्र आदिने सामने उसकी चतुर्यहेंके प्रसुत्त साम । उन्होंने (रामचन्द्रादिने) तत्त्व न समझ कर पूजा कि 'बतक्या है!' प्रमुने कहा कि 'हरदर' दममें सान्दरन्छने यह अर्थ ज्वय करके निकाल गया कि 'हरदर' अर्थात् हकार रोता ( गुजराती रहता )

है। हमने इस पर फहा कि 'क्या अब भी !' यह कहते ही शन्दतरको जानने बाठे इसने कहा कि 'अव तो नहीं।'क्यों कि पहले मातृका-शाल (वर्णमाला) में हकार सबके अंतर्थे पढ़ा जाता था, अतएव यह रडता=रोता था; 'किन्तु अब तो भेरे नाम (हेम चंद्र)में वह पहले आ यथा है और एक मात्रा अधिक भी हो यथा है।

# इस मकार यह हरडइ मबंघ समाप्त हुआ ।

# उर्वेशी शब्दकी ब्युत्पत्ति।

१५२) एक बार, किसी पंडितने पूछा कि 'उर्वशी' शन्दका शकार तालम्य है या दक्य । इस पर प्रमु (हेम चंद्र) कुछ सोच कर कहने जा रहें थे कि कप दोंने पन पर यह लिख कर लक्त अंकर्म केंक्र केंक्र दिया कि 'खरी श्रेते लक्शी' नर्थात् जो उरुमें शयन करें वह लक्शी। इसीको प्रामाण्य समझ कर प्रमुते उस पंडितके आगे तालम्य शकार होनेका निर्णय कह सुनाया।

# इस मकार यह उर्वशी-शब्द-प्रवंध समाप्त हुआ।

# सपादलक्षके राजाके नामका अर्थखण्डन ।

१५३) अन्य फिसी समय, स पा द छ छ के राजाका कोई सान्धिविग्रहिक कुमार पा छ राजाकी सभामें भाया। राजाने पूछा कि 'आपके स्थामी कुज़छ तो हैं हैं' अपनेको महापंडित समझने वाछा यह मिष्याभिमानी बोछा—'विश्वको जो छे छे यह 'निश्वक' कहछाता है (—यह स पा द छ छ के राजाका नाम था)। इस छिए उसकी निजयमें क्या सन्देह हैं हैं' राजाका इशारा पा कर श्रीमान क पर्दी में त्रीने कहा कि —'श्वछ-श्वछ धातु सो होंग्र गत्यथें के हैं। इसी खछ धातुसे यह शब्द बना है, अतः इसका अर्थ तो यह हुआ कि —िन अर्थात् पक्षीकी भौति जो खछन करता है —शाग जाता है वह. 'विश्वछ 'है।' इसके बाद, उस प्रधानके हारा इस नाममें दोप समझ कर उस राजाने पंडितोंके पास निर्णय कराले 'विग्न हराज' ऐसा दूसरा नाम धारण किया। दूसरे वर्ष उसी प्रधानने कुमार पाछ नुपतिके सामने 'निम्न हराज 'यह नाम बताया। मंत्री क पर्दी ने [यह अर्थ किया]—विग्न विग्नतासिक —जासिकाशिन; ह-राज अर्थात् इस और नारायण। इद और नारायण। इद और नारायण। किया। विश्वन नारायणको जिसने नासिका होन किया है यह इस 'विग्नहराज' का अर्थ है। तदनन्तर क पर्दी के नामलण्डनके अर्थसे उस राजाने 'किविन्याच्य' ऐसा नाम धारण किया।

१५४) एक दूसरी बार, कुमार पाल राजा के आगे योग शास का व्याख्यान हो रहा था उसमें जब पश्चदश कर्मारानका पाठ पढ़ा जाने लगा तब "दन्त केशनसास्थित्वग्रोम्पां प्रहणमाकरे " प्रयुक्ते रचे हुए इस मूल पाठमें पढ़ित उद्द य च न्द्र बार बार 'रोग्णा प्रहणम् रोग्णा प्रहणम् ' यह पाठ बोधने लगा । तो प्रमुते पूछा कि — 'क्या लिपि-मेद (अछुद्ध पाठ) हो गया है ! '। उसने कहा— 'प्राणितुर्याङ्गाणाम् ' इस व्याकरण सूत्रसे तो एकल सिद्ध होता है, [सो यहाँ पर वैसा होना चाहिए]' ऐसे लक्षणविशेषको बता कर, प्रमु हारा प्रशिक्ति हुला और राजाने न्युंखन करके उसकी संभवाना की ।

इस प्रकार पं॰ उदयचंद्रका यह प्रवंध समाप्त हुआ ।

#### सेवड (श्वेताम्बर साघु ) आ रहा है।

इस प्रकारका अविधिक निंदास्य कथन सुन कर, अन्तःकुटिल पर बाह्रसे सरू दिखाई देनैबाले तिरस्कार पूर्ण वचनसे प्रभुने कहा कि — 'ओ एंडिल! तुमने क्या यह भी नहीं पढ़ा कि विशेषणका प्रयोग पहुंले किया जाना चाहिए। अब से 'सेवड-हेमड' ऐसा कहना (हेमड-सेवड) नहीं !सेवकोंने [यह सुन कर] उसे मोलको नोंकसे घोदा कर छोड़ दिया। राजा कुमार पालक स्वयमें राख्यम नहीं किया जाता या, इस लिये उसकी बुलिक छेद कर दिया गया। इसके बाद, कण-कणकी भीख माँग कर अपना प्राण घरण करता हुआ वह प्रभुक्ते पीयवशालके सामने आ कर बैठा। उस समय वहाँ पर लाना दि भूप कि नामक मठके सपरिवर्ष हारा लवीयमान योग हा काका श्राण करके, उसने किर सबे इदयसे यह काव्य कहा कि —

२०१. जिन अकारण दारण मनुष्योंके बुँहसे आतंकका कारण ऐसा गाळा-रूपी गरल (विप ) निकला है उन जटा घारण करने वाले फटायरों (सर्पी) के मंडळका, यह यो गशा खका वक्तापन अब उद्धार कर रहा है।

ऐसे अबूतके समान भीठे उसके बचनसे, प्रमुका वह उपवाप शान्त हुआ और उसकी इति फिर हुगुनी कर उसे प्रशादित किया।

## इस मकार यह बामराशि-मबंघ समाप्त हुआ।

# सौरडके दो चारणोंकी कविताविषयक स्पर्दा ।

१६१) फिर कमी, एक बार, झराष्ट्र मंडल्के रहने वाले दो चारणा, परसर दृहा-विचार्ने (दोहा छन्दकी रचना फरोनें) रफ्टीं करते हुए यह प्रतिज्ञा करके लगा हि छ पुरमें पहुँचे कि - 'हेमचंद्राचार्य जिसके दोहाकी सराहना करेंगे, उसे दूसरा हर्जाना देगा। ' किर उनमेंसे एकने, प्रशुकी समामें आ कर यह दोहा कहा --

२०२. हे है मस्रि! भैं तुन्हारे सुँह पर वारी जाऊं। उदमी और वाणी (सरस्वती) का जो सापल्य (बैर) मान था वह, इसने वष्ट कर दिया। क्यों कि हेम चंद्र स्रिकी सभामें तो जो पण्डित है वे ही एउमीवान है।

ऐसा फह कर, उसके खुए हो जाने पर, फिर श्री कुमार विहार में आरतीके अनसर पर राजा जम भणाम कर रहा था और प्रमुने उसकी पीठ पर हाम रखा हुआ था, उसी सनय वहाँ प्रवेश करके दूसरे चारणते यह कहा --

२०३. हे हे मसूरि ! मैं सुम्हारे इस हाथ पर वारी जार्ज - जिसमें अद्भुत ऋदि रही हुई है । भीचे नमे हुए जिस मुख ऊपर यह पडता है उतके ऊपर सिद्धि आ बैठती है ।

इस प्रकारके अनुन्दिष्ट (मीजिक) भाववाजे उसके बचनसे मनमें चमरहत हो कर राजा इसी दोहेको बार बार बुटाने छगा ! तीन बार बोनेने बार उसने कहा कि—क्या एक एक बार बोटने पर एक एक छाछ दोंगे! 1—इस पर राजाने उसे है छाख दिलाया।

#### इस शकार यह दो चारणींका प्रबंध समाप्त हुआ।

#### कुमारपालका तीर्थयात्रा करना।

१६४) एक बार, राजा श्री कुमारपा छने संघाधिपति हो कर तीर्धयात्राके लिये महोत्सवपूर्वक संघ निकालना निश्चित किया और उसके देवालयका प्रस्थान-महर्त साधित किया । इतनेमें देशान्तरसे आये हुए चर यगछने कहा कि - ' डाइ छ देश का राजा कर्ण आप पर चढ़ाई करके आ रहा है।' [इसको सुन कर] राजांके छ्छाट देश पर [पसीनेके ] स्वेद बिंदु झल्कने लगे । संघाधिपत्यके पदकी प्राप्तिका मनोरथ नष्ट हो जानेके भवसे वाग्मट मंत्रीके साथ आ कर प्रमुक्ते चरणों पर गिर पड़ा और अपनी निंदा करने छगा। राजाके आगे इस प्रकार महाभयका उपस्थित होना जान कर, प्रमुने कुछ सोच कर कहा कि - 'बारह पहरमें ही इस भयकी निवृत्ति हो जायगी [ इस लिये कुछ चिन्ता न करो ]। राजा विदा हो कर. कि -कर्तव्यविमुद्रसा बना हुआ ज्यों ही बैठा या स्थों ही निर्णात समय पर आये हुए दूसरे चरयुगटने समाचार दिया कि - 'श्री कर्ण राज का [ अकस्भात् ] स्वर्गवास हो गया । 'राजाने मुँहसे पानका त्याग करते हर पछा -मो कैसे ! ' उन्होंने कहा — ' हाथीके होदे पर बैठ कर राजा क र्ण रातको प्रवास कर रहा था तब उसकी भीड़ में अाँखें बन्द हो गई। गुलेमें लटकता हुआ सोनेका हार एक बरगदके दरस्तकी डालीमें उलझ गया और उससे खींचा जा कर राजा मर गया । हम दोनों उसके अग्निर्शकारके अनन्तर वहाँसे चले हैं । उनके ऐसा कहने पर, राजा तरकाल पीपधशालामें आया और सुरिकी अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगा जिसकी किसी तरह उन्होंने रोका । फिर, ७२ सामंत और संपूर्ण संघके साथ, प्रसक्ते बताये हुए [धर्म और प्रवासके ] दोनों प्रकारके मार्गसे धुन्धु कान गर में आया। वहाँ पर प्रसुक्ते जन्मस्थानमें स्वयं बनाये हर १७ हाथ ऊँचे को छि का वि हा र में उत्सवादिका विधान करने पर जातिपिशन बाह्यणोंने विश्व किया तो. उन्हें देश निकाला दिया गया और फिर श में ज य की उपासना की। नहीं ' दुनखखओ कम्मनखओ ' ( दु:खक्षयः, कर्मक्षयः ) इस प्रकारके प्रणिधान दण्डक ( सत्रपाठ ) का उच्चारण करता हुआ देवके पास विविध प्रार्थना करनेके अवसर पर किसी चारणके सुँहसे यह कथन सुना-

२०४. अहो यह जिनदेवका कितना मोलापन है ! जो एक फ्रूटके बदलेमें मुक्तिका सुख दे देता है । इसके साथ किस बातका सोडा किया जाय ।

उसके मी बार इस दोहे के पढ़ने पर, राजाने उसे नी हजारका दान किया। इसके बाद जब यह उज यन्त (गिरनार) के पास आया तो अकस्मात् पर्यतमें कंप हुआ देखा। तब श्री हे मा चा ये ने राजाते कहा — ' इस्तें की यह परंपरागत बात है कि, एक ही साथ दो पुण्यवन्त पुरुप इस पर चढ़ते हैं तो यह छश्रीराजा गिर पड़ती है। यि यह बात कहीं सत्य हो तो छोकापवाद होगा, क्यों कि हम दोनों ही [एक से ] पुण्यवात हैं। इस छिये आप ही [पर्वत पर ] नमस्कार करने जॉय, हम नहीं। ' पर राजाने आशह करके प्रभुक्ती ही संपर्वत उपरि के पर पर वहीं गया। श्री वायन टदेव को छश्रीराजके उस रास्तेको छोड़ कर जी प्रांत कार (जूना गढ़) के रास्तेसे नई पया (पर्यायकी सीदी) बनवानेके छिये आदेश दिया। प्याके मनानेमें ६३ छाल दाम छो।

#### इस मकार तीर्थयात्रामवंघ समाप्त हुआ।

#### क्रमारपालका खर्णसिद्धिकी प्राप्तिकी इच्छा करना ।

१६५) एक बार, पृथ्वीको अन्तण करनेकी इच्छासे, राजाने स्वर्णसिद्धिकी प्राप्तिके लिये श्री है म चंद्रा चार्य के उपदेशसे उनके गुरु श्री देव चन्द्रा चार्यको, श्री संघ और राजाकी विश्वति मिजवा कर वहां बुलवाये । वे उस समय तीन नतमें छो हुए ये तो भी यह समझ कर कि समका कोई वहा कार्य होगा, िनिपूर्क विहार करते हुए और रास्तेमें किसीसे झाल न हो कर अपनी ही [पुरानी] पीप नशालमें आ कर ठहर गये। राजा तो उनकी आगानों करनेके लिय सानट करा रहा यह नामें सूरिने उसे सूचित किया तो वह वहाँ पर आगा। तब राजा प्रमृति समस्त आवकों के साथ प्रमुने हादसान्त पूर्वक उन गुरु को प्रणाम किया। उन्होंने जो उपदेश-यचन कहे वे उन दोनोंने ( राजा और सूरिने ) छने। किर गुरु ने सबका कार्य पूछा। इस पर सभा निर्मान करके पर्देकी ओटमें श्री हे मा चार्य और सालाने उनके चरणों पर भिर कर हाम में निर्मित कर वाल नीम से किया जो उनके देश वाल नीम से सालान की। श्री है मा चार्य में कहा कि — जब में नाल्क था तन आपने किसी काठ दोन नाल ने पाससे एक यही ( हता ) छी थी और आगके आदेशसे, अश्रिमें जलाए हुए तावेक हुक हेको उसके राने में निर्माने पर, वह सोना हो गया था। उस उताका नाम और संजीन कोई किए जा निर्मित के पान में हो गया था। उस उताका नाम और सोन कोई कि कि उस साली निर्मित के तुम ( मूं मूं निर्मित काठ के पान को है पान को है कि से पान के हो । परले में मान के तुम ( मूं मूं निर्मित काठ के पान को हो से साल के तुम के पान के तुम के पान के ति किर हुए सालेक पान के हो । परले में मान है, तो किर हुस से पान के तुम में वर्ज के ति किर हुम से साल के ति हिम करके, राजासे कहा कि हुम से हिम से साल के ति किर हुम से साल हो है कि सतारको अल्ला करने वाल विद्या सि हुम्यार की ती किर, जीन-हिसाका निवारना और पुर मेको जिनमान्दिरोंसे मेंवित करना आदि पुण्यकार्योसे तुम्बर दोनों लेक सनक वन गये हैं, अब इससे अधिक और क्या चाहते हो? यह कर करके, उसी समय वे वहाँसे निवार कर गये हैं,

इस मकार सुवर्णसिद्धिक निपंधका यह मयंथ समाप्त हुआ ।

एक बार राजाके पूछनेपर प्रभूने उसके पूर्व जन्मका सारा वसान्त कहा।

## मंत्री चारहका दानी पना।

१६६) इसके बाद, किसी समय, राजाने सपाद छ क्ष के राजा पर चढाई छे जानेके छिए सेना सिजत की। श्री बारम ट मंत्रीके छोटे माई चाह ह मंत्रीको, अव्यधिक दान करते रहनेके कारण दीय-युक्त होने पर भी उसे जुन सिखामन दे कर, सेनापति बनाया। वह प्रयाण करके दोन्सीन पडाव दूर गया ही था कि बहुतसे याचक इकड़े हो कर उससे मांसी। पर राजाकी आजा न होनेसे जब वह नहीं देने छ्या, तो सेनापिते उसे चानुकके प्रहारोंसे मार कर सेनाते निवीसित कर दिया और तिवस प्रयाण करके प्रहारोंसे मार कर सेनाते निवीसित कर दिया और किस स्वयं यपेन्छ दान दे करके याचकीको प्रसन्न किया। चौरद सो सादिनयों पर चढे हुए २८०० सुमटोंको साथ छे कर रास्तेमें कुछ ही पहान करके व किया। चौरद सो सादिनयों पर चढे हुए २८०० सुमटोंको साथ छे कर रास्तेमें कुछ ही पहान करके व किया। चौर व नगर के किछने जा पेरा। वहाँ पर नागरिकोसे यह झन कर, कि उसी रातको सात सी कर्याओंके विवाद होने वाले हैं, उस रातको पेसा ही पढ़ा रहा। दूसरे दिन किछे पर दखन कर छिया। बहा गरास सात करोडका सोना सवा क्यार हच्या दोवांकोंकी प्राप्ति हुई निसकी सूचना दीप्रमामी आदिनियों हारा राजाके पास भिजवा दी। स्वयं उस देवने कुमार दाल राजाकी अणान किया। करी पत्र कि अपने सात्र करके राजवह के लाक राजाको प्राप्त करके। स्वयं सात्र स्वयं सात्र करके राजवह के लाक राजाको प्राप्त करने। स्वयं सात्र करके राजवह करने सात्र राजाको प्राप्त किया। करने प्रवेश करके राजवह के लाक राजाको प्राप्त किया। सात्र उसके ग्रंत सात्र होते हो कर भी, इस सरह कर हो कि

पूर्व जनमेक इत्तालवाला यह प्रस्य हल प्रत्यमें नहीं दिया मया । यह पनित एक ही पुरानी प्रतिमें लिखी हुई मिली है
नियका पूर्वन प्राप्ती रीनानापने अपनी उस पुरानी आहतिमें किया है । पुरानत प्रश्नसम्बद्धाह, प्रश्नमकीय, क्वमारतान्वारित समह
आदि प्रत्योंने यह प्रस्य मिलता है ।

 **११५** 

'तुममें जो यह स्थूच-टस्थता वाला वहा भारी दोष है वही एक प्रकारसे तुम्हारा रक्षामंत्र है। नहीं तो लोगोंकी नजर लग वर तुम खड़े ही खड़े फट पहों। तुम जो व्यय करते हो वह तो मैं भी कर सकतेमें समर्थ नहीं हूँ। राजाको यह बात सुन कर उसने कहा कि — 'महाराजने जो कहा वह यथार्थ ही है। ऐसा व्यय महाराज सचमुच नहीं कर सकते। क्यों कि 'महाराज पितृपरपरासे तो राजाके पुत्र हैं नहीं। और मैं तो खुद महाराजका पुत्र हूँ । अतः में इतना अधिक अर्थव्यय कर सकता हूँ।' उसकी इस बातसे चाहे राजा खुदा हुआ हो या नाराज, — वह तो कसीटी पर कसे हुए सुत्रर्णकों कान्तिको धारण करता हुआ, अनमोल हो कर, राजासे विदा ले कर अपने स्थान पर एहँच गया।

#### इस प्रकार यह राजधरट चाहडका प्रवंध समाप्त हुआ ।

१६७) उसी प्रकार उसका छोटा माई, जिसका नाम सो छा क था, उसने ' मण्डलीक सत्रागार' ऐसा बिरुद धारण किया था।

#### कमारपाल द्वारा राणा लवणप्रसादका भविष्य कथन ।

१६८) इसके बाद, एक बार, आ ना क नामक अपने मौसेरे आईके सेरागुणसे सन्तुष्ट हो कर राजाने उसे सामान्त-पद प्रदान किया। तो भी वह तो उसी तरह सेरा करता रहा। एक बार, दो पहरके समय, राजा जब चन्द्रशालामें पूलंग पर बैठा हुआ था तब वह भी उससे सामने बैठा था। उस समय सहसा किसी नीकरको वहाँ आते देख राजाने पूछा कि — 'यह कोन है है '। आ ना क ने देखा तो वह उसीका नीकर माखूम दिया। उस नीकरका इशारा था कर वह वहाँसे बाहर निकल कर कुशल समाचार पूठने ज्या, तो नीकरने उससे पुत्रनमानी चथाई माँगी। इस समाचारसे उसका चेहरा सूर्य जैसा चमक उठा और फिर उसे विदा करके अपने स्थान पर आ बेठा। राजाके यह पूछने पर कि क्या बात है है तो उसने कहा कि —'महाराजके [सेरकको] घर पुत्र हुआ है '। यह हुन, राजा अपने मनमें कुछ सोच कर, प्रकाश मानसे बोला —'प्रजाम निवेदन करने के प्रवेध च चात को विद्या सह सिसे जाना नाता है कि कर पुत्रके प्रमानसे यह गुजर देश का राजा होगा, पर इस नगरमें और इस चन्छाहमें ( राजमहल्डमें ) नहीं। क्यों कि तम्ह हुन स्थानसे उठा कर इसने पुत्रविद्या वथाई वी है उस चन्द्रकार पाता नहीं होगा। '

### इस मकार विचार चतुर्मुल श्री कुमारपाल देवदारा विर्णीत लवणमसाद राणाका गर्वध समाप्त हुआ।

- २०५. अपने आज्ञानतीं ऐसे अठारह बढ़े देशोंमें, सपूर्ण चौहद वर्ष तक जीनहायाका निवारण करके, और अपनी कोर्तिके स्तंमके समान १४ सी जैन निहारोंका निर्माण करके जैन राजा कुमार पाछ ने अपने सब पार्पोको सप कर दिया।
- [ १२५-७] कर्नाटक, गूर्वर, छाट, सीराष्ट्र, कच्छ, सिन्धु, उच, मंभेरी, महदेश, माटन, कोंकण, कीर, जागटक, सपादच्य, मेवाइ, ढांडी ( रिष्ठी ) और जालंबर इतने देशोमें कुमारपा छ राजाने प्राणियोंको अमयदान दिया और सातों ज्यसनोंका निषेध किया। इदतीयन ( अपुत्र कुटुम्बके घन) का महण मना किया और न्यायपण्टा बजा कर प्रजाको संतुष्ट किया।

# हेमचन्द्र सुरिको छुना रोग लगना।

१६९) अब एक बार, के च्छा राज कक्ष राज को महासती माताने जो मूं छराज को शाप दिया या कि उसके बशजोंको छ्ता रोग हो नाया करेगा, तदनुसार, कुमार पाळ ने जब गृहस्य धर्म (श्राम्कपन) के ब्रत प्रहण किये तब उसने अपना राज्य गुरु जो है मचन्द्र को समर्पण कर दिया था, इसिंज्ये उसी जिदमें (इस राज्यसम्बन्धके छळते) सुरिको भी वह छ्ता रोग सक्ताभित हुआ। इसे देख सभी राज्ञाकके साथ राजा दु खित हुआ, तब प्रसुने प्रणिपानने अपनी आधु प्रवळ समछ कर अधाङ्ग योगाम्यासके हारा, छीला (क्रीडा) के साथ उस रोगको नष्ट कर दिया।

१७०) किसी समय, करली पर पर आकृष्ट किसी योगीको देख कर शिक्षित वने हुए राजाको प्रसुने सुमिसे चार अगुल ऊपर अधर रह कर अझर प्रमे निकल्या हुआ तेल पुत्र दिखाया।

हेमचन्द्रसृरि और कुमारपालका खर्गवास।

१७१) चौरासी वर्षको अवस्थाने अतमें प्रभुते अपना आतिम दिन सभीप आया समझ कर, अनशन पूर्वत अन्याराधन किया प्रारम की । उसे देख कर दु खित हुए राजाको प्रभुते कहा कि — ' तुम्हारी आयु मी अब ६ महीना ही बाकी है । सातानामारको कारण अपने वर्तमान रहते ही अपनी सब उत्तर किया कर-करा छेना ।' यह आदेश दे कर दशम हारसे उन्होंने अपना प्राणस्थाय कर दिया। किर इतने बाद प्रभुक्ते सस्कार स्थान पर, यह समझ कर कि, उनके देहकी अस्म भी पत्रित्र है, राजाने तिलक करके नमस्कार किया। इसके बाद सभी सामत और नागरिक छोनोंने वहाँ की भिक्षों ल छे कर लिलक करना छुन्य किया जितसे वहां पर गहा हो गया। यह गहा आज भी 'है म ल इ' नामसे प्रसिद्ध है।

१७२) अब फिर, राजा प्रभुक्ते शोकमें जिक्क हो कर आँखोंमें आँसू भर भर रोने उगा जिस पर मिनियोंने उसे देमा न करनेकी जिइसि की, सो वह बोटा — 'मैं उन प्रभुक्ते दिने साक नहीं कर रहा हूँ कि होने अपने पुण्यसे उत्तम छोक अर्जित किया है, मैं तो अपने इस सर्वधा स्थावय ऐसे सताझ राज्यके छिथे शोक कर रहा हूँ, कि राज्यपिण्ड दोपसे दूपित होनेके कारण मेरा पानी भी इन जगड़क्के अगर्मे नहीं उगा — ' इस प्रकार प्रभुक्ते गुण्योंको स्मरण करता हुआ किरकाल तक रिखा करते रहा और अन्दर्भ प्रभुक्ते कहे हुए दिन पर उन्हींकी उपदिए निधिसे समाणि पूर्वक मर कर जस राजाने स्मर्गेकोक अधकृत किया।

यहाँ पर P मतिमें निम्नोद्धृत श्लोक अधिक नाप्त होते हैं-जो सोमेश्वरको फीर्तिकीप्दरीके हैं-

- [ १२८ ] प्रश्च आदि पूर्व राजाओंने स्तर्ग जाते समय जिस राजाने पास अपने गुणरूपी राजीको मानों न्यासेक रूपमें रख दिया था ]
- [ १२९ ] इस राजाने न केउल युदक्षेत्रमें अपने बाणोंसे मात्र शतुओं हो बीत क्षिया था, किंतु अपने छोकपीतिकर गुणोंसे इसने पूर्राओंको भी जीत क्षिया |
- [ १३० ] राम और रितेष्के रहित, ऐसे ( अयन बीतरागर्ने प्रीतिवाले ) इस चूरेवकी, मृतीके धनको छोद देनेके कारण, देवताकी नाई अमृतार्थता सिद्ध हुई। (क्यों कि देवता अमृतके अर्थी दोते हैं, और यह मृतका अर्थ नहीं हेता था।)

[ १३१ ] इस राजाने तट्यास्की धारमें नहाई हुई वीरोंकी श्री ( उस्मी ) ही महण की, किंतु ऑस्की धारासे गुड़ी हुई कावरोंकी ( और निरक्षय जनोंकी ) श्री नहीं छी ।

- [ १३२ ] इसने उन्होंनें तो बीरोंके भी सामने अपने पैर उठाये, पर उनकी क्षियोंके सामने तो बह अपना मुख ही नीचा कर छेता था।
- [ १३३ ] इदय ( छाती ) में छगे दूए बिसके बणसे क्वान्त हो कर, जॉ गछ के राजाने तो अपना सिर चुमाया ही पर उसकी प्रशंसा करने वार्खें दूसरोंने भी अपना सिर चुमाया।
- [ १३९ ] की क्रूण देश का नरेश, जो मारे गर्कि रत्नमय मुकुटकी प्रमासे चक्रचकित ऐसे अपने सिरको न नवाना चाहा तो इस राजाने अपने बाणोंसे उसके सिरको दुकडे दुकडे कर दिया 1
- [ १३५ ] रागवश हो कर जिस राजार्ने सुद्धमें ब छा छ और म ঠি का र्श्वन राजाओं के सिरोंको, जयग्रीके दोनों कुचोंकी तरह ग्रहण किया।
- [ॅर्१३६] जिस राजाने दक्षिण देश के राजाको जीत कर उससे दें। द्विप (हाथी) प्रदण किये। मानों वे इस छिप कि उसके यशसे हम इस विस्प्रको नष्ट-निषद् बनावेंगे।
- [ १३७ ] हातुओंकी पारिनयोंके कुचमण्डलको निहार (निगत हार) बनाते हुए जिस राजाने मही-भण्डलको जरुण्डनिहार (जैनमन्दिर) बाला बनाया |
- [ १३८ ] ितसने पादजन्न महीपाकों और तृणको मुंहमें दवाने वाले पशुओं के द्वारा मानों प्रार्थित हो कर ही उत्तम अहिंसा त्रतको महण किया ।
- १७३) सं० ११९९ से [ १२३० तक ] ३१ वर्ष तक श्री कुमार पाछ ने राज्य किया।

#### अजयपालका राज्याभिषेक ।

- १७४) सं० १२३० वर्षमें अजय देव का राज्याभियेक हुआ।( इस राजाने वर्णनके कुछ विशिष्ट स्त्रोक मी p आदर्शने इस प्रकार पाये जाते हैं—)
  - [ १३९ ] इत [कुमारपाछ] के बाद कल्पद्रुमके समान अजयपाछ नामक राजा इक्षा जिसने यसुन्धराको सोनेसे भर दिया।
  - [ १४० ] जिसने जों ग छ देश (के राजा ) के गर्छ पर पैर रख कर उससे दण्डमें सोनेकी मण्डिपका ( मॉडयी=पाछकी जैसी ) और कई मत्त हाथी महण किया ।
  - [ १४१ ] उद्दाम तेजसे सूर्येकी भी भरतीना करने बाठे जिस राजाने, परछरामको तरह, क्षत्रियोंके रक्तसे धोई हुई पृथ्यीको श्रीत्रयोंकी रक्षाका पात्र बनाया।
  - [ १९२ ] जिस राजाके तीनों गण (=धर्म, अर्घ, काम) नित्यदान देनेसे, नित्य राजाओंको दण्ड देनेसे और नित्य खियोंसे निगह करनेसे, समान हो कर रहे।
  - [१४६] राजाओं के नेपष्यको धारण करने वाले [जस राज्य नाटकर्मे] शतकृत (इंट्र) [का श्रमित्रय करने वाले इस राजा] के चले जाने (मर जाने) पर इसके पुत्र मृत्यराज ने जयन्तका अभिनय किया।

#### अजयपालका जैन मन्दिरोंका नाहा करना ।

१७५) यह अजय देव जब पूर्विको बनाये मंदिरोंको तुस्ताने छमा तो सीछण नामक कौतुक्षा, -रिजाके सामने नाटकका प्रसंग उपस्थित कर, उसमें, अपनेको कृषिम रोमी कञ्तिक कर, तृमके बने हुए होच् देवसंदिर पुत्रोंके हवाले किये और यह कहा कि — 'भेरे मरे बाद मिक्तपूर्वक इनकी खुव रेख माल रखना' — ऐसा कह कर ज्यों ही वह अन्तिम दशाकी मुतीक्षा करता है त्यों ही उसके छोटे लडकने उन मन्दिरोंको तोड-फोड डाला । तब उसका शब्द धुन कर वह बोला — 'और पुत्राधम, श्रीमान् अ ज यदे व ने भी पिताके परलेक जानेके बाद, उनके बनाये धर्मस्थानोंको तुष्काखा, और त् तो अभी मेरे जांते ही इन्हें तोड़ रहा है; इस लिये द् तो अपसे भी अदम हुआ '। उसका यह प्रसद्धोचित आलाप सुन कर राजा लिलत हुआ और उस तुकार्यसे निवृत्त हुआ । उस दिनके बाद बचे हुए श्री कुमार पाल के [ कुछ ] विहार आज भी दिखाई देते हैं । श्री तार क हु गै में (तारंगा प्रकाड) के अजिसनायको अजय पाल के नामसे लंकित कर धूर्तोंने (!) इस उपायरे बचाया।

# अजयपालका कपदीं मंत्रीको मरवा डालना।

१७६) बारमें अजय देवने कपदीं मनी की महामात्यका पर छेनेके छिये अत्यन्त प्रार्थना की । उसने यह कह कर कि — ' प्रासःकाछ शहुन देख कर उसकी अनुमतिसे प्रमुक्ते आदेशका पाछन करूँना।' यह शहुन गृहमें गया। किर दुर्गोदेवीसे मींगे सतिये शकुनको पा कर पुष्प अक्षत आदिसे देनीकी पूना की । अपने आपनो कतहत्य समझ कर जब नगरके दरयागेके पास आया तो ईशान-कीणी युपमको नाद करते देखा। यह देख कर मनमें अव्यन्त प्रसन्न इक्षा और अपने निमस स्थान पर आया। मीजन करने वाद, उसके मरुदेशीय इद अगरक्षमते शकुनका स्वरूप पूँछा। इस पर कपदाँने उन शकुनोंकर सक्ष्य कहा और उनकी प्रशंसा की। तब मरुद्धने कहा—

२०६. नदीको उत्तरते समय, जिपम मार्गमें चलते समय, दुर्गमें, आसन भयके अवसर पर; सी जिपसक कार्यमें, लक्ष्मेंमें और स्थाविमें शक्तमोंकी जिपरीवता श्रेष्ट कही जाती है!

इस प्रमाणसे, आसन सकटके कारण मतिस्नदा हो कर आप प्रतिकृष्कों भी अनुकृष्ठ समझ रहे हैं। इपमको आपने द्यान सान लिया है, पर वह भी, आपनी मृत्युसे शिप्त [धर्म ] का अन्युद्ध होना समझ कर उनका वाहन होनेने कारण गर्जा है। उसकी इस [सव] वातकी उसने उपेक्षा की तो वह [खिन हो कर] उससे विदा छे कर तीर्धपात्राके छिये चला गया। फिर कपदी राजाकी दी हुई [महामाय परकी] मुद्रा मृद्रण करके महान् उससे काथ अपने घर आया। राजाने रातको विश्रास करते हुए उसे गिरफ्तार किया और समानप्रतिश बाटोंने उसका अपमान करना दाक किया।

२०७. जो सिंह फभी हापीके दुमस्यत्र पर पाँउ दे कर गजमुकाओंका दटन करता या, वही त्रिपियश काम समाजोंकी टार्वोका अपनान सहता है।

मह सीचता हुआ, [तप्त टोहके] कड़ाहमें डाले जाने पर यह पंडित इस प्रकार काव्य पड़ते पड़ते गर डाला गया-

२०८. माचकोंको करोडोंको कोमतके, दीपकके समान कपिश वर्णताठे सुवर्णका दान दिया; प्रतिग्रारियोंकी शायके कपेसे गर्भित ऐसी वाणीको भावताओंमें जीत लिया; तखाइ कर किरसे राज्य पर पिठाये हुए राजाओंसे शतरज्ञती तरह श्रीहा क्षी—[इस सरह ] मेंने अपना कर्तन्य कर लिया है। अब अगर शियकों [ऐसी ] याचना है तो उसके लिये में हम तैयार हैं !

इस महार यह मंत्री थी कपदीका भवन्य समाप्त हुआ ।

ि ११९

## महाकवि रामचन्द्रकी हत्या।

१७७) इसके बाद, सो प्रवन्योंका कर्ता [महाकाि ] राम च द्र उस नीच राजाके द्वारा [मार डालनेके टिये ] जलती हुई ताप्रपृष्ठिका पर विठाया जाने ल्या तो उसी असस्यामें वह यह कहता हुआ कि—

२०९. जिसने सचराचर पृथ्योपीठके सिर पर पैर रखा उस मूर्यका अब अस्तगमन होता है तो बह चिरकाङके छिये हो ।

अपने दाँतोंसे जीम काट कर पृख्य प्राम हुआ और फिर उस मरे हुएको ही उसने मार डाळा | इस मकार रामचंद्रका मवन्य समाप्त हुआ ।

# मंत्री आग्रभटका छटते हुए मरना।

१७८) इसके बाद, राजि ता मह श्री मान् आश्र म ट के तेजको न सह सक्ते बाले सामन्तोंने अनसर पा कर उसकी निन्दा करते हुए राजाको उससे प्रणाम करनानेके लिये बाधित किया तो उसने यों कहा कि— 'देन-बुद्धिसे श्री बीसराग निनंदको, गुरु-बुद्धिसे श्री हे मा चार्य महर्षिको, और स्वामि-बुद्धिसे श्री कुमार पा ल को ही इस जन्ममें मेरा नमस्कार हो सकता है।' उस [थीरके], जिसके शारीरके सातों धातु जैन अमेसे बासित थे, ऐसा कहने पर, राजा रष्ट हुआ और उसने कहा कि—स्लाहने लिये तैत्यार हो जाओ'! उसकी यह बात सुन कर, मत्रोने जिनदेनकी पूचा करके [यनमें] अनशन वत प्रहण किया और समामर्शक्षाका स्वीकार करने थोनाओं के साथ मकानसे बाहर निकला। किर राजोक आदिपियों मुसेकी तरह उडाता हुआ इिकान्यह (राजदार) तक आया और उन पापियों के समर्गसे जनित कन्मपको धारातीर्थम थो कर सर्थ जीक सिधार गया। उस समय वहाँ उसकी देखनेके लिये आई हुई असरायें 'भैं पहले बहराती, मैं पहले '— इन तरह कह रही यीं।

२१०. धन पानेके िटये—माट होना अच्छा है, रहीवाज होना केच्छा है, वेश्वाचार्य होना अच्छा है और पूरा दगावाज होना भी अच्छा है, पर दानके समुद्र उदयन के पुत्र (आम्र मट) भी मृत्युके बाद चतुर आदिमयोंको भूमण्डल पर किसी तरह भी विद्यान होना अच्छा नहीं।

२११. मनुष्य अपने अखुम पुण्य और पोपका फल, यहीं पर, तीन वर्षमें, तीन मासमें, तीन पक्षमें या सीन दिनमें ही प्राप्त कर लेता है।

इस पुराणके प्रमाणानुसार उस दुष्ट राजाको [एक दिन] व यज छ देव नामक प्रतीहारने छुरा मॉक कर मार डाछा | यह धर्मस्थानोको गिराने वाळा पापी कीडे मकोहों द्वारा मक्षित हो कर प्रायक्ष नरकका अनुभन करके मर गया ।

स॰ १२३० से छे कर [ १२३३ तक ] तीन वर्ष इस अजयदेव ने राज्य किया।

१७९) स॰ १२३२ से छे कर [१२३५ तक] २ वर्ष बाल मूल्याज ने राज्य किया। इसकी . माता नाइकि देवी ने, जो परमर्शी राजाकी लड़की थी, गोर्स्से अपने पुत्र—शिल राजा—को, छे कर 'गांद रार घट' नामक घाट पर म्लेच्छ राजासे युद्ध किया और सौधाम्य वस अकालमें ही आकासमें बादल हो आनेके कारण उसको देवी सहायता मिल गई जिससे सनु पराजित हो गया।

[१४४] समर-मूर्मिमें रेंकते हुए जिस राजाने मानों वान्य काउकी चपठतासे ही नुरुकराजकी मेताको टिज-भिना कर दिया।

- ि १९५ ] जिसके काटे हुए म्लेच्छ कवारके स्थलको ऊचाईको देखता हुआ अवेद ागि रि अपने पिता प्रालेयगिरि ( हिमालय ) की याद भल जाता है ।
- ि १४६ | दिवाताके, उस कल्पद्रमके अञ्चरको शीघ ही नष्ट करनेके बाद, उसका छोटा भाई श्री भी म नामक ( नया ] पौधा उगा ।

१८०) स० १२३३ से छे कर [ १२९६ तक ] ६३ वर्ष श्री माम देव ने राज्य किया।

ि १५७ ने यह भी म राजा, जो राजहसोंका दमन करने वाला है कदापि उस भी मसे न के समान नहीं कहा जाता जो बकापकारी (दशाहरका नाश करने वाला ) था ।

यह राजा जब राज्य कर रहा था तो सोह द नामक माल व देश का राजा गर्जर देश को निश्वस करनेके छिये सीमात पर आया । तब इसके प्रधानने सामने जा कर इस प्रकार कहा-

२१२. हे राज-सूर्य (सुरहारा) प्रताप पूर्व [दिशा ] में ही शोभित होता है । पश्चिम दिशामें आने पर तुम्हारा वह प्रताप अस्त हो जाता है \*।

इस निरुद्ध वाणीको छन कर वह बापस छोड गया । इसके बाद उसने अपने छड़केसे, जिसका नाम श्रीमान् अर्जुन देव था, गुर्जर देश का मग कराया।

# वीरघवलका प्राद्धभाव ।

१८१) श्री भी म दे वं के राज्यकी चिता करने राज्य (राज्य व्यवस्था समानने बाला ) ज्या प्र प छी प नामसे प्रसिद्ध श्रीमान् आना क का पुत्र लंबण मसाद विस्कान तक राज्य करता रहा । साम्राज्यके भारको धारण करने वाटा उसका पुत्र हुआ श्री बीर धवल । उसकी बाता मदन राझीने, अपनी बहनकी मृत्युके बाद यह सुनकर कि-अपने देव राज नामक पह केल (पटल) बड़नोई जिसकी बड़ी भारी आमदनी है लेकिन अब जिसका निमाय नहीं हो रहा है, राजा ल व जब साद से पुत्र कर अपने शिदापत्र बीर ध य ल को साय छे कर वहाँ गई । उस बहनाईने उसके गुण और आङ्गतिको स्पृहणीय देख कर, उसे अपनी ही गृहिणी बना छिया। छवण प्रसाद ने जो यह बता त सुना, तो उसे मार डालनके छिये रातको उसके घरमें बसा और एका तमें जिन कर जब वह अनसर खोज रहा था, तम वह पटेल मोजन करनेक लिये बेटा और [पासमें थीरपबलको न देल कर अपनी मृश्मिस । यह कहने लगा कि बीर घवल के विना में नहीं खाऊगा। इस सरह खब आग्रहके बाद उसे छे आ कर एक ही थानीवें उसके साथ खाने छगा । तब अकरमात् , साक्षाद शतातकी तरह सामने उपरियत उस आदमाँको देख अपसे उसका मह काला हो गया। पर उस (लगणप्रसाद) ने यहा कि - मत डरो, में तुन्हीं को मारने आया था पर इस मेरे वीर घव छ छड़के पर, तुन्हारी ऐसी यराखता अपनी साक्षात ऑखोंसे देख कर, उस आप्रहकी मैंने स्वाग दिया है। ' ऐसा कह वर उसके द्वारा सकत हो कर जैस आया था वैसे ही चटा गया।

१८२) बीर धवछ के उस अपर पितासे उत्पन, साँगण, चामुण्डराज आदि राष्ट्रस्थाय माई इए जो अपने बीर प्रवसे भुवनतरूपे विष्यास इए ।

भारति गुजरत पश्चिम दिशाम है इस लिये इस नवेदमें यह सचित दिया गया है कि मालवाका राज्य मेदि गम्पतमें भाषमा है। उसका क्षेत्र जब हो आवता ।

ि १२१

१८३) इसके बाद, वह वीर घव छ क्षत्रिय, जब कुळ कुछ समझने लायक हुआ तो अपनी माताका यह ब्रुचान्त जान कर लिकत हुआ और अपने ही पिताकी सेनामें आं कर रहा। वह जन्मसे ही उदारता, गंभारता, स्थिरता, नांति, विनय, भौचित्य, दया, दान और चतुरता आदि गुणोंसे युक्त था। उसने अपनी शालीनतासे किसी फंटक अस्त मूमिको अपने अधिकारमें किया और किर पिताने भी कुपा करके कुछ देश दे दिया। चाह ड मामक आक्षणको मंत्री वना कर वह राजकारमार चलाने लगा। वहाँ पर, उस समय, आये हए प्राप्ता द्वेशी पचन निवासी मंत्री ते जपा ल के साथ उसकी मितता हुई।

# मंत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपालका प्रवन्ध ।

१८४) अब इस प्रकरणमें मंत्री-ते ज पाछ के जन्म इतान्तका प्रतंत्र मस्तुत किया जाता है। एक बार, पण न में भद्रारक थी हिर मद स्रि का ज्याख्यान हो रहा था। वहीं पर मंत्री आ दा रा ज बैठा हुआ था। उस समय एक कुमार दे यी नामकी अतीव रूपनती वाछविधवा की वहा पर आई त्रिसको थे आंचार्य बारंबार देखने छगे। इससे आद्वाराजका चित्त उस पर आकर्षित हुआ। व्याख्यानके निसर्जन होनेके अन्तर मंत्रीकी प्रार्थना पर गुरुने इट देयताके आदेशसे कहा कि — 'इसके गर्भसे स्र्यं ओर चंद्रमाने भावी अवतारको देखता हूं, इस छिये इसके सामृदिकको बारंबार देख रहा था। ' गुरुसे इस तत्त्वको जान कर मंत्रीने उसका अपहरण करके उसे अपनी प्रेयसी (पनी) बनाया। कमशः उसके पेटसे ज्योतिपेन्द्र (स्र्यं और चंद्र) जैसे ब स्तुपाछ और ते जपाछ नामक वे दोनों मंत्री अवतीर्ण हुए।

#### घीरघवळका तेजपाळको अपना मंत्री यनाना ।

१८५) किसी समय श्री धीर घ य छ ने अपने राजकीय ज्यापारके भारको ग्रहण करनेके छिये उस ते ज पा छ की अन्यर्थना की, तो उसने पहन्छे राजाको उसकी पत्नीके साथ अपने मकान पर मोजनके छिये निर्माप्त किया; और उस समय ज तु प मा ने राजपत्नी ज य त छ दे वो को कर्पूरके बने हुए अपने दोनों तांडह (कर्णकूछ) तथा सोनेके बने हुए और बीच बीचमें मोती और मणियोंसे जहे हुए कर्पूरम्य, एकारछी हारको उरहार रूपमें दिया। मंत्री जय उपहार देने छगा तो उसका निषेत्र करके, थीर घ य छ अपना राज्यकायिमार उसके हायोंमें समर्पण करता हुआ बोज कि — 'इस समय तुम्हारे पास जो अन है उसे, कुर्पित होने पर मी, में विस्तास पूर्यक कहता हूं कि कभी ग्रहण न कर्पणा। ' इस प्रकार पत्र पर प्रतिहालेख लिख कर ते ज पा छ को राज्यक्यायार संत्रेणी पद्राह्न-समार प्रदान किया।

२१३. जो निना सरके खनाना बढ़ाने, निना मनुष्य-यथ किये देश-रक्षा करे और निना युद्ध किये देश-रक्षा करे और निना युद्ध किये देशन्त्रक्षि करे बढ़ी मंत्री सुद्धिमान् कहलाता है।

#### मंत्री तेजपालका धर्ममावसम्मुख होना ।

१८६) संपूर्ण नीतिसास और उपनिषद्धें बुद्धिको निरिष्ट रखने वाट्य वह मन्त्री अपने स्वामीकी यसोशृद्धि करता हुआ, सूर्योदय काटमें निष्पूर्वक श्री जिनको पूजा करता, और किर पंदन और कर्यूसे गुरुको पूजा करता । अनन्तर द्वादस आवर्तन करके यदाउत्तर प्रत्यास्थान छे कर रोज गुरुसे एक एक अपूर्व स्टीक पदा करता । राजकार्य करनेके बाद ताजी बनी हुई रहोईका आदार करता । एक बार, मुखा छ नामक महोपासक, जो उसका निजी छेखक (गुमास्ता) था, एकान्तमें यूछने छमा कि म स्वामी संबेर क्या टंडी रखेई खाते हैं या ताजी ! ' उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह मंत्री समक्षा कि यह मैंवार है । दो तीन बार उसके ऐसा यूछने पर यह स्वामीक स्वामी

एक बार वहें क्रोधिस 'पञ्चपाल ' कह कर उसे अपमानित किया । यह धैर्ष घारण करके बोला— 'दोनोंमेंसे कोई एक तो होगा ही । (अर्थात या तो में मँकार हूं या भेरी बातको नहीं समझने बाले आप गॅबार होंगे) उसकी वन्तनातुरीसे चित्तमें चमरकत हो कर मंत्रीने कहा — 'बिज ! हुम्हारे उपदेशकी व्यनिकों में समस नहीं सकता । अब यंपार्थ बात बताओं ।' ऐसा आहेज पा कर वह बाग्यी बोला कि — 'जिस समयी ताजी रसोहेको आप खाते हैं वह पूर्वजनमके पुण्यका फल है जताएव में उसे अर्थन्य दीतक समझता हूं। जो हो, ये तो में मुहके संदेश बावय ही कहे हैं। तरा तो वे ही जानते हैं, अतः वहीं पथारिये!' उसकी यह बात हुन कर ते जपाल मंत्री अर्थने कुल्युक महारक श्री निजय सेन स्वरित्त देवपूजा, आरश्यक किया, विदित्ताल प्रक्तिया पुणा । उन्होंने उपासक दशा नाक सम्बाहकी विमक्तियत देवपूजा, आरश्यक किया, विदित्ताल प्रक्तिया पूजा । उन्होंने उपासक दशा नाक सम्बाहको विमक्तियत देवपूजा, आरश्यक किया, व्यतिदान आदि गृहस्थ घर्मका उपरेश दिया। तब असने विशेषतापूर्वक देवपूजा, जैत सुनियोंको दान आदि देवाल पर्यक्तम आर्थन किया। पूजाके समय चढाये हुए तीन वर्षतकके हब्बको निकाला तो १६ हजार इस अर्थन भी नेमीनाथका प्रासाद बनवाया।

( वहाँ p प्रतिमें, निम्न डिखित, विशेष श्लोक डिखे हुए पापे जाते हैं-- )

- [ १४८ ] मञुर्योका अपहरण 'करने वार्ड समुद्रप्रयासी जर्नोका निपेध करके जिसने पृथ्वी पर अपने धर्मका उदाहरण उपस्थित किया ।
- [ १४९ ] छुआ-छुतको निवारणके लिये अलग अलग अलग हदवाली देदी बना कर जिस ( मंत्री ) ने इस ( स्तं म ती थें ) नगरमें छाछके बेंचनेका विद्वत दूर किया |
- [१५०] जिसने, जहाँ पर जी फुछ भी म्यून और जो कुळ भी नष्ट या उसे वहाँ पर पूरा किया ! क्यों कि उत्तम पुरुषोंका जन्म रिक्त स्थानोंको पूरा करनेके किये ही तो होता है ।
- [ १५१ ] देवताओं के लिये जिसने ऐसे अनेक उपयन दान कर दिये थे जहाँ पर कानदेवको शिवके नैजींको अधिका ताप स्मरण नहीं होता था ।
- [ १५२ ] रंमा ( १ केटा, २ अप्सरा विशेष ) से संगावित, ब्रुप्से निषेतित तथा मनोह ( १ इंटर, २ मनको जाननेवाटे ) सुमनें ( १ इटरें, २ देवताओं ) के वर्गसे सुशोभित जिसकें करोंने स्वर्गेंक सीन्टर्यको प्रदण किया था ।
- [१५६] हारीत (१ पक्षी विशेष, २ स्पृतिकार ऋषि विशेष) शुक्त (१ तोता, २ मागवर्तका ऋषि) चित्र-शिखण्डी (१ गोर, २ महामारतका एक शीर) हारा संगृहीत जिसके उपान पर्यशासके संपर्धी हो कर सुशोभित हुए।
- [ १५४ ] इसने खुमनोमाव ( १ झुंदर मनोमाव, २ फूडका भार ) तथा अनुडतीय श्रीमताको दिखाते इए, स्वयंपुके वर्नोको ( बन्धुकनातिके धुम्पेकि वर्नोको ) अपने बन्धुजोंको नाई कर दिया ।
- [ १५५ ] जिसके बनाये हुए तालावोसेंस पानी अहण करते हुए कासारगण ( अंसे बेल आदि पद्म ) समुदर्भेसे पानी लेते हुए बादलकी नाई शोधा देते थे ।
- [ १५६ ] जिस क्रियानिष्ठ पुण्यासाने ऐसी कितनी ही वावहियाँ बनवाई जिनके मीठे जर्जेने अमृतको भी तिस्स्कृत कर दिया |
- [ १५७ ] उसने पानी पीनेके छिये ऐसे प्याच्य बनवाये कि जिनका जल पी कर परिकॉर्फ मुख तो सुप्त हो जाते थे किंतु उनकी शोमा देख कर ऑस्ट्रें कभी सुप्त नहीं होती थीं।

- [ १५८ ] जिसने यहाँ पर (स्थमतीर्थर्म ) मन्सागरको पार करनेके लिये नौकारूप ब्रह्मपुरी बनर्वाई जिसमें पुरुष तो सामगान करते थे और नारियाँ उसका यशोगान करती थी।
- [ १५९ ] अपने छुम्र ऐसे सीर्तिकूट रूप पटसे, दसों दिशाओंका नेष्टन करते हुए स्पष्ट रूपसे, इसने मानों दसों दिशाओंको खेतावर प्रती बनाया !
- [ १६० ] जिस तारितात्माने ऐसी पीपनशाळायें वनाईं जो मीतरसे तो श्वेतावरोंसे (श्वेताम्बर यतियोंके निराससे ) और वाहर सुधा ( चूनापोती ) से त्रिशुद्ध थी ।
- [ १६१ ] जिसकी पीपथशाळाओंमें कीनिरहित ऐसे यति वास करते हैं जिनको आत्मम् ( पुनजन्म तथा पुनर्जन्म ) की कोई समानना ही नहीं है ।
- [ १६२ ] बार्देशीने प्रसन्ततापूर्वक जिस संत्रीको ज्ञानकी ऐसी आख दी यी कि जिससे यह धर्मकी सूक्ष्म गतिको भी नित्य ही देखा करता या ।

# वस्तुपालकी तीर्थयात्राका वर्णन।

१८७) इसके बाद, सं० १२७७ सालमें सरस्वतीकण्ठामरण, लघुमोजराज, महाक्रिन, महाऽमान्य श्री व स्तुपा छ ने महायात्रा प्रारम की । गुरुके बताये हुए छन्नमें, उन्होंके द्वारा संघाविपति रूपसे अभिपिक्त हो कर वह जब देगालयके प्रस्थानका उपक्रम कर रहा था, तब दाहिनी ओरसे दुर्गादेवीका स्वर सनाई दिया, जिसे स्वय क्छ समझ कर, शतन शालको जानकारसे उसका निचार पूछा। मरुदेश के एक बृद्ध ( शातुनिक ) ने कहा कि ' शक्त तो वहा भारी हुआ है '। ' शकुलसे भी शब्द बळ्यान होता है ' यह विचार करके नगरके बाहर आवास ( तबू ) में देवाल्यको स्थापित किया । फिर उससे शतुनका निचार पूछने पर उस बृद्धने बताया कि, मार्गिकी वियमतामें निपरीत शकुन श्रेष्ठ कहा जाता है ! [वर्तमानमें ] राजकीय अन्याधुन्दीके कारण तीर्ध सात्राका मार्ग निपम हो रहा है। तथा जहां पर यह दुर्गा देख पड़ी थी, वहाँ किसी चतुर पुरुपको भेज कर उस प्रदेशको दिखगाइये । वैसा ही करने पर उस पुरुपने बताया कि - यह जो वडी (बाडेकी भीत) नई बनाई जा रही है उसके १३॥ हवें थर पर यह दुर्गा बैठी थी। ' यह सुन कर उस मरुवृद्धने कहा कि - ' देवी आपको सादी तेरह यात्रा करनेकी सूचना करती है। अतिम आधी यात्राका कारणपुउने पर उसने कहा कि - 'इस अत्वनीय मगडके अनसर पर वह कहना टीक नहीं है । यथा समय सब निनेदन करूँगा । ' इस वाक्यके अनन्तर संघक्ते साथ मर्जाने आगे प्रयाण किया । उस संघक्ती सब संत्या यों थी - ४॥ इजार बाहन, २१ सी श्रीतादर, तीन सी दिगम्बर, संयक्ती रक्षाके छिये १ इजार घोड़े, सात सी ठाछ सांद्रिनया और संघरक्षाके अधिकारी चार महासामन्त थे। इस प्रकार सारी सामग्रीके साथ मार्ग ते करके, श्रीपाद छित्तपुर के अपने ही बनाये हुए श्रीमन महानीर देवके चैत्यसे अलंहत ल लिता सरोब र के मैदानमें देश दिया । उस तीर्य पर यशात्रिवि तीर्थराधना करके मूळ प्रासादमें सोनेका कळश, दो प्रौड जिन मूर्तियाँ, श्री मोडेरपुराजतार श्री मन्य-हानार चीत्य तथा उसके आराधक (यक्ष ) की मूर्ति और देवतु टिका, मूळ मण्डपके दोनों ओर दो दो चौकीकी कतार, शकनिका निहार तथा स यपुरानतार चैत्यके सामने चाँदीके तोरण, श्रीसंघके योग्य कई मठ, सात बहनोंकी ७ देन किलियांमें, नन्दीसराजतार-प्रासाद, इन्द्र मण्डप और उसमें हाथी पर चढ़े हुए छवण प्रसाद और वी र ध व छ की मर्तियाँ, वहीं पर घोड़े पर चड़ी सात पूर्वजेंकी मूर्तियाँ, सात गुरुवृतियाँ, उसीके निकटकी चौकीमें अपने दो बहे मार्ड महं मा छदे व और खिण ग की आराधक मूर्वियों, मतोली, अनुपमा सरोवर, कपर्द पक्ष-मण्डप और सोरण आदि बहतसे धर्मस्थान बनवाये । इसी तरह नन्दीश्वरके कमठाने (कारखाने ) के छिये कंटेडिया

पापाणके बने हुए सोल्ह खंबे पा वक पर्वत परसे जलमार्ग द्वारा मेंगाये । जब ये खंबे समुद्रके किनारे उतारे जाने छंगे तो उनमेंसे एक स्तंम इस प्रकार कीचडमें हुव गया कि खोजने पर भी न मिछा। उसके बदछे अन्य पापाणका स्तंभ लगा कर वह प्रासाद परा किया गया । दूसरे साल समुद्रके पानीकी भरतीके सवत्रसे वहीं खंबा की चडसे बाहर निकल आया । मंत्रीकी आज़ांसे वह संबा उसकी जगह पर लागाया जाने लगा तो किसी पुरुषने आ कर कहा कि - ' प्राप्ताद फट गया है '। यह निवेदन करनेकी आये हुए पुरुषको भी उस मंत्रीने सोनेकी जीम इनाममें दी। चत्र आदमियोंने पूछा कि 'यह क्या बात है ? ' इस पर मंत्रीने कहा कि 'इसके बाद अब धर्मस्थान ऐसे दृह बनवाऊँगा कि युगान्तमें भी सनका पतन नहीं होगा । इसी हिये इसे परितोपिक टिया गया है। ' फिर तीसरी बार मूल समेत उखाड कर यह प्रासाद बनाया गया जो । अब भी ] वर्तमान है। श्री पा ही ता णा में भी उसने एक निशाल पीयधशाला बनवाई। फिर श्रीसंबके साथ वह मंत्री उज्जयन्त (गिरनार) पहुँचा। यहा उसकी उपस्पकामें ते ज छ पुर में स्वयं एक नया वज्र (परकोटा) बनवाया और उसीमें श्रीमद् आशाराज निहार नामका मन्दिर तथा कुमार देवी नामका सरोगर भी वनवाया। उस निरुपम सरीवरको देखने बाद, जब नियुक्त पुरुषोंने कहा कि 'धवलगृह (महल) में प्रधारिये 'तो मंत्रीने कहा कि थी गुरुमहाराजके योग्य पैपपपताला भी है या नहीं है ' यह सुन कर कि वह बनाई जा रही है, तो वह विनयके अतिक्रमणमें मीरु गुरुके साथ, बाहर ही दिये गये आयास (हेरे) में ठहरा । प्रातःकाळ उज्जयन्त पर आरोहण करके थ्री रैविय ( नेमिनाथ ) के चरणयगलको यली आँति पूजा कर, स्वयं बनाये हुए श्री रार्त्र-े ज या व ता र तीर्थमें खब प्रमावनायें कर, तथा क ल्या ण त्र य चेत्यमें श्रेष्ट पजी०चारसे अचेना करके यह मंत्री जब नीचे उतरा तो इन दो दिनोंमें वह पीपधराखा तैयार हो चुकी थी। मंत्री गुरुको अपने साथ वहाँ छे आया। उन्होंने उन बनाने वालोंकी प्रशंसा की और पारितोषिक दान दे कर उनको अनुगृहीत किया। श्री पत्तन में प्रभास क्षेत्र में चन्द्रप्रभ देवको प्रणाम करके प्रभावनाके साथ यथोचित पूजा की । किर अपने बनाये हुए अष्टापद प्रासाद पर सोनेके कल्काका समारोपण करके, देवके पूजारियोंको दान दिया । वहाँके ११५ वर्षकी अवस्था वाले वृद्ध पुनारीके मुँहसे यह सन कर कि-' यहाँ पर प्रमुखी है मान्तार्थ ने कुमारपाल उपतिके सामने श्री सोमेहनर देवको जगद्विदित रूपसे प्रत्यक्ष किया था ' उन ( प्रमु ) के चरित्रसे मनमें चिकत हो कर वड़ोंसे ठीटा । रास्तेमें टिंगधारियोंके असदाचारको देख कर उन्हें अब देनेका निपेध किया । यह सन कर या यटी य ग च्छ के श्री जिन द च सूरि ने इस बातसे उसका अपयश समझ कर, अपने उपासक पाससे वन्हें अनदान दिछाया। यह सन कर यह मंत्री उनके दर्शन और अनुनयके छिपे आया तो उन्होंने वसे उपदेश दिया कि -

- २१४. क्षार जरुके समान इन हिंगधारियोंकी परिपूर्णतासे ही तो यह शासन ( धर्म ) रूप समुद्र राभारताको धारण कर रहा है ।
- २१५, संवित्र साधु मी इन लिंगधारियोंकी अनुवन्दना करते য় तो फिर धार्मिक और अवमीठ पुरुपको उनकी पूजाकी चर्चा कर्यो करनी चाहिए ।
- २१६. प्रतिभागारी ( त्रावक ) भी इनके सामने निषमका त्याग करते हैं इस किये विषयवाले इन विभागरियोंकी पूनाका मना करना तो निरोधवाणी बात है !
- २१७. जो छोग, छिगोपनीवियोंकी व्यवधीरणा (तिरस्कार) करते हैं वे दुरासप दर्शन (संप्रदाय) के सच्छेदके पापसे छित होते हैं।

आवस्यक - वंदना निर्यक्तिमें कहा है कि -

- २१८. तीर्थकरोंके गुण उनकी प्रतिमा ( मूर्ति ) में नहीं हैं, यह निःशंसय जानता हुआ भी यह तीर्थकर है ऐसा मान कर उसको नमस्कार करने वाला विपुल कर्मनिर्वास ( कर्मका नाश ) प्राप्त करता है।
- २१९. इसी प्रकार, जिन देवके प्रज्ञापन किये हुए हिंग (वेय ) को नमस्कार करना मी विपुछ निर्नराका हेतु है । यथिप यह गुणहीन होता है तथापि अध्यास्य झुद्धिके हिये उसे वन्दन करना उचित है। इस प्रकार उनके उपदेशसे अपने सम्यक्त रूप दर्पणको मांज कर विशेष रूपसे दर्शन ( संप्रदाय ) की पुजामें परायण हो, स्वस्थान पर आ कर ठहरा।

## मंत्री तेजपालका आयू पर मन्दिर यनवाना ।

- १८८) ज्येष्ठ आता मं० ख्रिय न परलोक प्रयाणके अवसर पर यह धर्मन्यय मोंगा या कि —' अर्थु द गिरि पर विमल व सिह का में मेरे योग्य एक देवेंकुलिका वनवाना ।' उसके मरने पर, वहाँके गोटियों ( पुनारियों ) से उस मेरिदर्से भूमि न पा कर, विमल व सिह का के समीर ही चन्द्रा व ती के स्वामीसे नई भूमि क कर वहाँ पर तीनों मुबनके चैत्योंमें ( मन्दिरोंमें ) रालाका ( अप्रगण्य ) जैसा ख्रिण ग व सिह का प्रास्त्र वनवाया । उसमें श्री नेमिनाथके निवकी स्थापना करके उस ती प्रतिष्ठा कराई । उस मन्दिरके गुण-देपक्षी विचारणा करनेके लिये जा वा लियु र से श्री य शो वीर मंत्रीको बुला कर मंत्री ते ज पाल ने प्रासादके विपयमें अभिप्राय पूछा। उसने प्रासादके बनानेवाले स्थवसी ( कार्यगर ) शो म न दे व से कहा ' रंगमण्डियमें शालमंत्रिका ( पुतली ) की जोड़ीकी बिलास-घटना, तीर्थकरके प्रासादमें सर्वया अद्यचित और वास्तुशावसे निषिद है । इसी तरह मंत्रिय पुत्र प्रकेष प्रवेश हारामें सिहांका यह तोरण देवताकी विशेष पूजाका विनाश करने वाल है । साय पूर्वज पुरुपोंकी मूर्तेनिय सुक्त हारामें सिन्धिक सम्युख प्रासादका होना, वनाने वालेक मिरियके विनाशका सुचक, होता है । इस विह कार्यगर्स सुक्त हारामें भी जो इस प्रकारके अप्रतक्तियं ये तीन दोष ही गये, यह मार्या करिका स्थित है। देश परिकार करने वह लेशे आया था वैसे ही चला गया । उसकी स्वरिको सिन्धके वे क्षेक हैं
  - २२०. हे यहोत्रार, यह जो चंद्रमा है वह तुम्हारे पशरूपी भोतियोंका मानों शिखर है; और इसेंद्र जो छाउन है वह इस यहाकी रक्षाके छिये (किसीको नजर न छग जाय इस छिये) किया गथा रक्षा (राख) का 'शी' कार है।
  - २२१. हे यहोत्रीर, इत्य जिनके मध्यमें हैं ऐसे ये किन्दु यों तो निर्धिक ही हैं; पर तुम रूप एक ( अंक ) के साथ हो जानेंसे ये संख्यानान बन जाते हैं।
  - २२२, हे यहोत्रीर, जब विधाताने चंद्रमार्थे तुम्हारा नाम लिखना आरंग किया तो उसके पहलेकं दो अक्षर ( यहाः ) ही सुवनमें नहीं समा सके।
  - [ १६६ ] यशोधीरके निकट न कोई [कवि] माध की प्रशंसा करता है न कोई अभिनंद का अभिनंदन करता है; और का তিহা स भी उसके पास कछाड़ीन ( निस्तेज ) माउम देता है।
  - [ १६९ ] यशोशीर मंत्रीने सजनोंने साक्षात् (सम्पुख), मुसमें वहीं दार्तोकी ज्योतिक बहाने जाती, (सरस्वती) को और हापमें वहीं हुई सोनेकी मुदाके बहाने श्री (ट्स्मी) की प्रकाशित किया।
  - [ १६५ ] इस चौ हान नरेन्द्रके मंत्रीने वैसे गुण अर्जन किये जिनसे मंद्रा और समुद्रका पुत्रियों ( उदमी और सरखती ) को भी नियंत्रित कर दिया।

- [१६६] जहाँ छश्मी है वहाँ सरस्तती नहीं है, जहाँ ये दोनों हैं वहाँ विनय नहीं हैं। पर है यदोबोर, यह बड़ा आर्थार्थ है कि तुमर्पे ये तीनों विवासन हैं।
- [ १६७ ] व स्तुपाल और य जोवीर ये दोनों सचमुच ही वान्देवता (सरस्रती ) के पुत्र हैं, नहीं तो फिर इन दोनोंका दान करनेमें एक ही जैसा समाव कैसे होता ।

इस मकार श्री शञ्जेनयादि तीथोंकी यात्राका मबंघ समाप्त हुआ !

१२६ ]

# चस्तुपालका शंखराजके साथ युद्ध करना।

१८९ ) स्तं भ ती थें भें, स इ द (सय्यद ) नामक नीविकिक (जहानी व्यापायी) से श्री व स्तु पा छ की छहाई होने पर उसने र गु पु र से शंख नामक महा-सावनिकको व स्तु पा छ के विरुद्ध वाठरूप काछको चुछाया। वह समुद्रके किनारे डेरा डाछ कर रहा। उसने देखा कि नगरका प्रवेशमार्ग शंकुसे (जन समृद्रसे ) संकीर्ण है और व्यापायिंके जहाज धनसे भरे हुए हैं। अपने बंदी (दृत ) को भेज कर व स्तु पा छ के साथ छहाईक दिनका निखय किया। जब उसने चतुरंग सेना सजाई तो य स्तु पा छ ने गु ड जातिके भूण पा छ नामक सुभटको अगो किया। भूण पा छ ने प्रतिक्षा की कि - 'शंख के सिका यदि दूसरे पर प्रहार करते तो में उसे किया विरा । भूण पा छ ने प्रतिक्षा की कि - 'शंख के सिका यदि दूसरे पर प्रहार करते तो में उसे किया गीपर ही प्रहार करना मार्नुगा '। किर बोछा कि 'श्री शंख कीन है !' इस वचनके उत्तरमें प्रतिकट ( राष्ट्रके सीन भी निर्म देने के बाद बोछा कि - 'श्रमुद्रके नजदीक श्रासे आर गिराया। किर इसी गीतिसे दूसरे और तीवरंकी भी गिरा देने बाद बोछा कि - 'श्रमुद्रके नजदीक श्रोमें शार गार्विक्षों संख्या वह महित श्रमुद्रक सिका सिका कि साथ गार्विक अपमागासे उस पर प्रहार करते हुए एक ही प्रहार प्रो शेक साथ उसे मार डाछा । इसके बाद, समरभूविक श्रेमी श्री ब स्तु पा छ ने, सिहकिशोर के से प्रहार मीवित्रक की मार डाछा गया। ] किर भूणपा छ जो मृत्रु के स्थान पर भंगति भार दिया। है परि स्वा वार्य सीवित्रक की मार बाहा में भार डाछा गया। ] किर भूणपा छ जो मृत्रु के स्थान पर भंगति भार साथ हमार प्रहार ने सिंद का नाथ स्तु सीवित्रक की मार बाहा गया। ] किर भूणपा छ जो मृत्रु के स्थान पर भंगति भार साथ सार सार सार स्वावार वार सार सार सार वनवाया।

#### ( यहाँ P प्रतिमें निम्निखिखित श्लोक अधिक पाये जाते हैं - )

[ १६८ ] धनुपक्षा प्रत्यक्षारे काण्डों ( बाणों ) की तो सिन्ध ( सुजद और योग ) हुई पर उन वीरप्रकाण्डोंमें परस्पर विग्रद हुआ।

[१६९] बाणोंने सपट ही दुर्ननोंकी सी बेहा की | क्यों कि वे कानमें तो दूसरेके छगते थे और जीवननाश दूसरेका करते थे |

[ १७० ] तरकसकी छोड़ कर बाण बेगसे धनुष पर था जाते थे । यही तो सपसींका ( १ अपने पराचार्योका, २ पश्चरहितों ⊶बाणींका ) विद्व है कि विपन्कार्जे आगे रहते हैं ।

[१७१] विपक्षीय वैरियोंके बद्धारपड़में उम कर बाण पार निकड गये। [सो ठीक छी है] क्यों कि परिषेक्ष हृदगों निर्मुणोंको बिर अवस्थान नहीं प्राप्त होता।

[ १७२ ] भंत्रीशके हायके संसमेंसे तल्यार भी मानों दानके लिय वचत हो करे, बहुमृष्टि होते हुए मी, क्षण मर्स्स कोश (१ व्यान, २ खजाना) का तस्समें (१ त्याम, २ दान) किया।

[ १७३ ] बीरोंके बरण और हाय रूपी कमल्डे पूजित हो कर रणभूमि भी मानों दूर्वारूपी फेरोंके साथ शिररूपी फलेंका दान करने लगी । ं १९०) इसके बाद, एक दूसरे अवसर पर, श्री सो मे ब र कानि ने यह कान्य कहा -

२२३. हे सचिव 1 आन्का [बनाया हुआ] तहाग जिसमें चक्रवाक पश्ची चळ रहे हैं और आति (एक प्रकारके पश्ची जिसको देशमायामें आड कहते हैं ) भीडा कर रहे हैं, वह, अत्यन्त प्रशंसित ऐसे हंसांसे, कमळ को छू कर हिछोड़े छेती हुई तरंगोंसे, अन्तर्गंभीर जर्छोसे, और चंचळ वकांके ग्रास होने के मयसे छिये हुए मत्स्योंसे, तथा किनारे पर उगे हुए वृक्षोंक नीचे सुखपूर्वक शयन किये हुई क्षियोंके गाये हुए गीलोसे शोभित हो रहा है।

इसमें प्रयुक्त ' आति ' शन्दके पारितोधिकमें भेजीने कविको सोख्ह हजार दम्मका दान दिया । कभी किर ( किसी समय ) मंत्री चिन्तातुर हो कर नीचे जमीनकी और देख रहे थे तब सो मे खरने यह समयोचित पथ पढ़ा —

२२४. वार्यवीके सुक्कमल्के तिल्कसमान है वस्तुपाल 1 'तुन्ही एक मात्र सुवनके उपकारक हैं। '—ऐसी सजनोंकी बात सुन कर जो लजाते सिर झुका कर तुम एब्बीतलकी और देख रहे हो, सो में मानता हूं कि, अब स्वर्य पातालसे बल्कित उद्धार करनेके लिये कोई नागे हुंड रहे हैं। मंत्रीने इस काव्यके पारितोपिकमें आठ हजार दिया। इसी तरह पंडितोंके बार बार इस खोकके ये क्षीन चरण पढ़ने पर कि—

२,२५. ' कर्णने दानमें चर्म दिया, शिविने मांस दिया, जीमतबाहनने जीव और दर्घाचि ने अस्पि दिये भू इस पिँर पण्डित ज यदे व ने समस्या पदकी नाई.[चौधा पद ] कहा—'और वस्तु पाउने वस्नु (धनः) दिया।' रेसा कहने पर उसने ४ सहस्र पाया। १ "

इसी प्रकार सूरि (अपने धर्मगुरु ) के शिष्योंकी प्रतिलामनाके अवसर पर, किसी दिद बाह्यणूने याचना की, तो उसके नियुक्त आदिमियोंसे उसे एक वल मिला; निसे पा कर उसने मंत्रीके आगे यह समयोिक्त पर्य पंजा-

२२६. हे देव ! कहीं रुई, कहीं स्त, बीर कहीं कपासके बीज लगी हुई यह इमारी पटी (पिछोडी ) गुजरोर शूल्लोंकी कियोंकी कटीकी तरह दिखाई दे रही है .!

कविके ऐसा कहने पर अंत्रीने उसके आचार्य एदकी स्थापनाके छिये चार हजार द्रम्य उर्चे किया । मंत्रीका ससलसान सलतानके साथ सैन्नी संयन्ध यांचना।

१९१) किसी समय म्हेन्छराज (मुसल्यान) मुलतानके गुरु मालिम (मीज्यी) को मख (मका) तीर्धकी - यात्राके िच्ये वहीं आया हुजा जान कर उसे एकड़नेके इन्छुक श्री छ वण प्रसाद और वीर घव छ ने मंत्री - से जपाछ से सलाह पूर्वी। उसने इस प्रकार बताया—

१ यह आति शब्द प्रायः संस्कृत साहित्यमें कहीं नहीं प्रयुक्त हुआ है इस लिये इसका अभिनंत प्रयोग किया गया देल करं भंत्रीन यह दान दिया मात्तम देता है।

२२८ धर्म छलका प्रयोग करके जो राजालोक ऋदि प्राप्त करते हैं, वह मार्क शरीरको बेंच कर पैसा कमानेक समान होती है।

अन्पमाकी दानजीलता ।

१९२) किसी पिक अनक्षर पर, अनुष मा देनी मुनियों में येच्छ निरुपम दान दे रही थी। तन किसी राजकार्यकी उस्कताके कारण स्त्रय थीर अव छ दे न छस समय नहा आ पहचा तो उसने देखा कि मैतावर साधु-यतियों भी में से मकानका दरावाजा मानों दटा हुआ है। तच दिस्मयसे मनमें चिक्तित हो कर नह मन्नीसे बोछा 'है मनी, जिममत देमताजी माँति, सदा हो इन साधुओं का इस तरह सक्कार क्यों नहीं किया करते 'अगर सुमसे न हो सकता हो तो आधा हिस्सा में ए रहे। ने पर हो सदा दिया जाय — ऐसा तो इस फाएएसे नहीं कहता कि वैसा करन पर तो किर तुमको यह हथा ही परिश्रम करने जीता छो।' उसने मुखचदसे इस प्रकार पाणीकर निरुपने निक्छने पर मनीके मनका सताय दर हुआ और नह बोछा—'स्वासिका खाधा हिस्सा क्या ह सव दुछ तो आप ही भा है।' यह कह कर उसने वक निरुपन स्वास्ता

१९३) एक दूसरा बार, यितदानके अंतर पर, अनेक मुनियोंको भीडके कारण नमन करती हुई प्रीमती अनुपमाकी पीठ पर धीमे भरा हुआ एक पात गिर पढ़ा। यह देख कर मत्री त जपा व यहा सुपित हुआ। उसे सुपित देख कर अनुपमाने यह कह कर साल्यना की कि-ध्याप जैसे स्वामीके प्रमास ही तो सुनिजन द्वारा गिराये गये पातके धीसे मेरा यह अस्पक्ष ( पृतस्तान ) हुआ। रे इस प्रकार उसकी पूर्णदानकी निधित चिकल्य है कर, मत्रीने प्याह्म प्रसाद प्रकार प्रकार विकार विकार साम की —

२२९. प्रिय वाणीपूर्वक दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त श्रुरता और स्वागसहित धन, ये चार मह

( मले ) कार्य दुर्खम हैं। स प्रकारकी अनेक दान गतीओंने प्रमिद्धी वाने वाली जम दे:

इस प्रकारकी अनेक दानमार्ताओंसे प्रिसिद्दी पाने बाड़ी उस देनीकी जैनाचार्योने इन तरह स्तृति की-२२०. छत्रभी चच्छा है, शिवा चण्डी (कोपना ) है, राची सीतदोषसे दृषित है, गया निस्तामिनी है और सरस्वती बाचाञ है। इन छिये अन्य पानो से सब सरहसे अनगमा है है।

> # चीरघषस्की रणञ्हता ।

१९४) एक दूसरी बार, छत्रणमसाद और बीरचवछ पंचामके [स्वागोंके ] साथ समाम करने पर सुछे। तब भी पीरध यह की फुजी जयत छदेशी सीधित्यातकी इन्छास अपने रिता मतीहार सरीय औ शो मन देव के पास गई तो उसने कहा कि क्या—' वैष्वयसे डर कर सन्यि कराने आई हो !' तब अपने विर्मृत्यानि पति बी र ध व छ को उनत बनाती हुई वह बोडी—'केवछ पितृकु छेक विनायको आशंकासे में बारंबार ऐसा कह रही हूं। जब वह बीर घोड़े पर चढ़ेगा तो ऐसा कौन सुमट है जो उसके सामने खड़ा रहेगा!' यह कह कर यह सक्तोध चर्छा गई। छड़ाई छिड़ने पर बी र ध व छ को [ एक सख्त ] प्रहार छग गया और उसकी ज्यासो व्याकुछ हो कर वह जमीन पर गिर पड़ा। तब सुमटोंका दिछ कुछ हिम्मत हारता हुआ देख, छ व ण-प्रसाद ने अपनी सेनाको यह कह कर उत्साहित किया कि—'अरे! यह तो केवछ एक ही सैनिक गिरा है' ऐसा कह कर समस्त शतुसेनाका खेळमें ही समूछ खंस कर दिया। सच्यागुणसे दीप्त वह बी र ध व छ [ इस प्रकार ] रागसिकताके बश हो कर उक्कोस बार अपने पिताके आगे गिरा था।

## बीरघवलकी मृत्यू।

२३१. बह भीम जैसा पराक्रमशाली ( वीरधवल ) प च मा म की समरमूमिमें घावींके लगने पर घोड़ेकी पीठ परसे गिरा, पर गर्वसे नहीं ।

(९५) यो रध व छ की आयुक्ते अन्तर्में, प्रतितीर्ध (परलोक ) को प्रस्थान करने वालेको दान करनेसि एकका हजार गुणा निल्ता है, इस क्षिके अनुसार तेज पा छ ने अपने सारे जन्मका पुण्य दान कर दिया। किर जब वह स्वामी च्छ वसा तो उसके सीमाग्यके अतिशयि १२० सेक्कोंने सहगमन किया। तब तेज पा छ ने प्रेतवनमें पहरेदारोंको विठा कर लोगोंको उस आफ्रद्देसे निषिद्ध किया।

२२२. कम्पान्य ऋतु तो आसी-जाती रहती हैं पर ये दो ऋतु आ कर फिर वहीं गई। वीरधवळ बीरके विना प्रजाओंकी आंखोंने वर्षा और हृदयमें ग्रीम [सदाके लिये रह गई। ]

१९६) इसके बाद, मंत्रीने चीरध वल के पुत्र वीसल देवको राजपद पर अभिपिक्त किया।

# अनुपमाकी मृत्य ।

श्री अ तु प मा दे वी भी शृद्ध के बाद श्री ते ज पा छ के हर्यमें जो शोककी गांठ बंध गई यह किसी तरह छूटती नहीं जान कर, वहां पर आपे हुए श्री वि ज य से न स्रिसम समर्थ पुरुषके द्वारा वह विपत्ति शान्त कराई गई। कुछ चेतना होने पर छीजत ते ज पा छ से स्रिने कहा—' हम इस अवसर पर तुम्हारी छीछा देखने आपे थे। तो व स्तु पा छ ने पूछा कि—' वह बचा १' इस पर गुरुने कहा—' हमने शिशु ते ज पा छ को घ्याहने के छिये जब घर िंग ग के पासीस उसकी कन्या इस अ छु प मा को मेगानी की थी, तब रिपरपत्र-दानके पश्चाद् एकान्तमें उस कन्यामी विरुपताओं बात सुन कर, इसने उसका संबंध मंग होनेके छिये चन्द्रममके मन्दिरके आहातें मं प्रतिष्ठित क्षेत्राधिपतिको आठ दम्म का मोग चढाना माना था। और इस समय उसके वियोगमें पागछ हो गये हैं। इन दोनों इतान्तोंग्रेस कोनसी बात सची है।' इस प्रकार उस पुराने संकेतस ते ज पा छ ने अपने हरदको रह किया।

#### वस्तपालकी मृत्य ।

१९७) फिर दूसरी बार, जब मंत्री व स्तुपा ठ पूर्णायु इए तो शत्रुं ज य की यात्राकी इच्छा की । यह जान कर पुरोहित सो में स र देव वहाँ आया। अमृत्य आसन देने पर भी जब वह नहीं बैठना चाहा तो कारण पूछने पर बोजा- २३३ थ्री व स्तुपा छ के जलन्दान, जरू-पान, और पर्यस्थानोंसे तो पृष्यांतछ, और यशसे सारा आकारा-मंदछ दंक गया है। इसछिय स्थानामावके कारण नहीं बैठ रहा हूं।

उसकी इस वाणीके निर्मित्त जीवत पारितोषिक दे कर, उससे जिदा गोग कर, मंत्रीने रास्तेमें प्रस्थान किया। आंके वा छी या प्रामको एक गंवारु झींपडीमें दामकी चटाई पर बैठा हुआ, गुरुद्वारा आराधना करता हुआ आहारका त्याग करके, अन्तिम आराधनासे कळिमळका प्यंस किया और अन्तमें सुमादिदेवका ही जाप करता हुआ—

२३४. सझनोंके स्मरण करने छायक ऐसा कुछ मी शुक्रत नहीं किया । केवल मनोरथ ही करते हुए हमारी यह आय चली गई ।

इस वाक्यके अन्तर्मे ' नमोऽर्डर्न्यः नमोऽर्डर्न्यः ' ( अर्डतीको नमस्कार ) इन असरीके उच्चारणके साथ ही सक्तधातुबद इस शरीरका त्याग करके, स्वकृत उत्तम पुण्यक्रकको भोगनेके लिये, उसने स्वर्ग लोकको अर्थकृत किया । उसके संस्कार स्थान पर छोटे माई ते जवा छ और पुत्र जैत्र सिंहने श्री सुगादि देवको दीक्षावस्थाको मृतिसे अर्थकृत स्वर्गारोहण प्रासाद बनवाया ।

२३५. आज, मेरे पिताकी आशा फलाती हुई, माताके आशीर्वादका बंकुर उगा, जो मैं इस प्रकार अधिक्रभावसे युगादि देवकी पात्रा कालेवाले लोगोंकी [अपनी शक्ति-आकिसे] संतुष्ट कर रहा हूं। २३६. जिस लोगोंने राजाकी सेवाके पापसे कुल गी पुण्यार्जन नहीं किया उन्हें हम घूलिघावक ( धुलके ढोहनेवाले ) लोगोंसे भी अधमतर समझते हैं।

ये तथा अन्य काव्य स्वयं वस्त पाछ महाकविके रचित है।

२३७. स्वामिक गुणाँसे पूर्ण वह भी र घ व छ एक निस्सीम प्रसु हुवा, विद्वानों द्वारा भोजराजका विरुद्ध प्राप्त करने वाला व स्तुपाल एक अदिसीय कवि हुआ, प्रभाववर्षकों वह से जपाल अदिसीय मंत्रीश्वर हुआ और गुणोंसे अनुपन्न ऐसी अनुपन्ना उसकी की एक साक्षात् लक्ष्मी हुई |

इस प्रकार थी मेरुर्तुगाचार्यविराचित प्रवंधविन्तामणिषै थी कुमारपाल भूपाल प्रमुख- मंत्रीहबर यस्तुपाल और तेजःपालतकके महापुक्येंक बदाका वर्षम करनेवाला यह चौथा प्रकारा समाप्त हुआ।

# ११. प्रकीर्णक प्रवन्ध ।

अत्र, यहाँपर पूर्वोक्त महापुरुपोंके चित्रिके वर्णनमें जो रह गये हैं उन तथा [वैसे हो ] अन्य चीरत्रोंका वर्णन इस प्रकीर्णक-प्रकाशमें प्रारंग किया जाता है ! वे इस प्रकार हैं —

### विक्रमादित्यकी पात्रपरीक्षा।

१९८) उस अब न्ती पु री में, जिसके निकट ही सि प्रा नदी वह रही है, प्राचीन काल में श्री निक्र मा दि स्य राजा राज्य करता था। उसने सुना कि उसके सजागार निदेशों लोग मोजनके अनन्तर जो सो जाते हैं वे किर नहीं उठ पाते (अर्घाल् यर जाते हैं); इससे विस्मयसे मनमें चिकत हो कर राजाने कारण जानना चाहा। उन समी पियकों को दूसरे दिन अससे ढँक ग्रा दिया और उस चिरिनेदाकी वातको गुम रखनेकी आहा दी। किर दूसरे दिन आये हुए अन्य पिथकों को उसी तरह मोजन कराया और सार्यकाल उनको उत्पा जल तथा चरणों में लगानेके लिये तेल दिया गया। जब वे सब सो गये तो, महानिदान राजा अपने हायमें हुयाण ले कर स्वयं एकान्त जगहमें दिया कर खहा रहा। वहाँ कोनेमें पहले चुजाँ निकला, किर आगको लयर और किर प्रकाशित फणाकी रानप्रमासे लंदन सहक्कण ऐसे नागकों निकलते देखा। आध्यस्ति चम इत हो कर राजा जब सिन्मप उसे देखता है। तो वह फणींद उस दिनके सीये हुए प्रत्या पिकती पुजने लगा के -- यह किस चीज़का पात्र है। उनमेंसे प्रत्येकने, किसीने अपनेको धर्म-पात्र, गुण-पात्र, सप.पात्र, रूप-पात्र, काम-पात्र या कीर्त-पात्र इत्यादि खताया। अज्ञान और यहन्त्रावर उसके शायसे उन्हें मरते देख श्री रिक्र म ने आगे वह कर हाय लेह कर कहा --

२३८. हे मोगीन्द्र (नागराज), पृथ्मीपर बहुया गुणके योगसे पात्र हुआ करते हैं। किन्तु शुद्ध श्रद्धा-से जो पनित्र बना हुआ मन है वही परम पात्र है।

इस प्रकार नागराजने अपने ही आरायको कहनेवाले निकाम दिखाके प्रति कहा कि 'वर माँगों '। श्री निकाम दिखाने कहा कि 'इन पथिकोंको जीनित बनाओं '। इस प्रकारका वरदान माँगने पर उसने किर निशेष भारते उसे संतुष्ट किया ।

इस मकार श्री विकमकी पानपरीक्षाका यह गर्वच समाप्त हुआ ।

### मरे हुए नंदका पुनर्जीवन ।

१९९) एक बार, पाट छी पुत्र नगरमें, अत्यन्त आनन्दपरायण ऐसे नंद राजाकी मृत्यु होनेपर, उसी समय एक कोई मासण बहाँ आया और दूसरेके हारीरमें प्रनेश करनेनाछी विवाके हारा राजाके शरीरमें प्रनेश कर गया। उसीके संकेतसे एक दूसरा आजण राजाके हारार आ कर वेदोबार करने छगा, जिसमें राजा जी उठा और किर उसने अपने कोजण्यक्षीं उसको एक छाख सर्ण दिखाया। इस चूनान्तको जान कर महानंत्रीने सोचा कि यह नंद पहुछे तो वहा प्रणण और इस समय बहा उदार हो रहा है सो यह बात जितनाय है। ऐसा जान कर उस मासणकी एकड़मा छिया और पर-काय-प्रनेशकारी निदेशीको संत्र दुँडराया तो यह मासण की एकड़मा छिया और पर-काय-प्रनेशकारी निदेशीको संत्र दुँडराया तो यह मास कि सहा कि पर एक सुर्देकी, कोई एक आदमी रखनाड़ी कर रहा है। तो उसे चितानर चड़ना कर सस्क करवादिया। अपने अतुकनीय मतिनैमवसे उस पूर्व नंदको हो अपने महान् साम्रायमें किर निमा छिया।

इस तरह यह नंद प्रवंध समाप्त हुआ।

## राजा शिलादित्य और मछवादी सुरिका प्रवन्ध।

२००) खे क्षा जामक महास्थानमं, दे चा दि त्य नामक महास्थानमं, वे चा दि त्य नामक पुजी, प्रातःकाल सूर्यको अर्थाको अञ्चलित दान किया करती थी। तन, अञ्चलक्यसे सूर्यसे उसका संयोग हो गया और वह भोगरूप हो कर उससे उसके गर्भ रह गया। याँ वापने किसी तरह इस असमंजस कार्यको जव जाना तो उसे कुछ कह-सुन कर अपने स्वजनेंद्वारा व ल भी नगरीके पास खुड़वा दिया। यहाँ उसको पुत्र पेदा हुआ, जो कमदाः बदा हो कर, समज्यस्क विश्व खोके साथ खेळते समय, इस प्रकार अपमानित किया जाने क्या कि, यह विना वापका है। तन, मैंके पास आ कर उसने अपने विनाक बारेमें पूछा तो उसने कहा कि भी कुछ नहीं जातती। इससे अपने जोननसे रिरक्त हो कर उसने भएना चाहा, तो किर सूर्यने प्रपट्ट हो कर हाथमें कंकड़ दे कर उसकी साम्यन को। उन्होंने कहा कि भी हाथस्री मातासे सम्यक्त करोनाला में सूर्य तुष्टारा पिता हूं। यह कंकड़ अगर अपने किसी परामन-कारीपर केंकीमें तो शिलक्ष्य हो गये। किर अपने कितने एक परामकामियोंको मारता हुआ वह 'हि ला दि य' इस सार्यक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस मगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी विलासे उसे सार्यक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस मगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी विलासे उसे सार्यक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस मगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी विलासे उसे सार कर वह स्व स्व सार्यक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस मगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी विलासे उसे सार कर वह स्व राज्य करके, जैन सुनियोंके सरती हुआ अपने पराजनसे दिगन्तको आस ऐसे अस्वपर चढ़ कर वह सेदेश आजाश-चारीकी नाई खेल्ड्या विहार करता हुआ अपने पराजनसे दिगन्तको आस परी अस्वपर चढ़ वा वा वीर्यकी अपरिवित महिमाको जान कर उसका जीवाँहार किया।

#### धौद्धों और जैनोंमें बाद-विदाद।

२०१) एक बार, उस दि छ। दि त्य के समापतित्वमें, बौद्धों और [जैन ] खेतावरोंने परस्पर इस शर्तपर शासार्थ किया कि - जो [ पक्ष ] पराजित होगा उसको देश-स्थाग करना पडेगा । स्वेतावरोंके पराजित होनेपर हि। छा दि त्य ने उन सबको अपने देशसे निकाछ दिया, पर अपरिमित गुणगान् ऐसे उसके भानजे म छ ना म क क्षछकको उपेक्षा दृष्टिसे देखते हुए बोर्झोने उसे वहीं रहने दिया । और इस प्रकार अपनेको निजयी मानते हुए ये श तंज य तीर्थपरके श्रीयुगादि देवको बीद्ध रूपसे पूजने छगे। क्षत्रिय कुछमें उत्पन्न होनेके कारण उस म छ के दिलमें वह वैरमाव बस रहा, और वह उसका प्रतीकार सोचता रहा । जैन दर्शन (आचार्यों) के अभावमें उन्होंके पास यह अध्ययन करने लगा और दिन रात उसीमें चित्त छन्नलीन रखने लगा । एक बार, बड़ी गर्मीकी अर्डे रात्रिको. जब समस्त नागरिक छोग नींदसे ऑंखें बद किये हुए थे, वह दिनमें अम्पस्त शास्त्रको जोर-जोरसे याद करने लगा । उसी समय आकारामार्गसे जाती। हुई श्री मारती देवीने पूछा कि- भीठे क्या है ? ' उसने चारी और देख कर. बोटनेपाटेको न पा कर उत्तर दिया ' बहु '। फिर ६ महीनेक बाद उसी समय छोटती हुई थारदेवीने फिर पूछा ' किसके साथ ! ": तब परानी बादकी स्मरण करके तसने प्रत्यक्तर दिया कि ' घी और गडके साप '। उसकी सरण रखनेकी इस अद्धत शकिसे चमत्कृत हो कर [ भारतीने ] आदेश दिया कि ' बर माँगो '। उसने इस व्यारायको याचना की कि 'सीगतों ( बीढों ) को पराजित करनेके छिपे किसी प्रमाण दाालके देनेकी कृपा करो । ' इसपर भारतीने 'नय-चक्र ' प्रन्थ अर्पण करके उसे अनुगृहीत किया । इसके बाद भारतीके मसादसे तत्त्व समझ कर शिकादित्व की अनुझासे, बीढ़ोंके मठमें ' तृणोदक ' फेंक कर, राजसमार्गे पूर्वेक शर्तिके साथ उनसे शासर्थ किया । जिसके कण्ठपीठमें बाग्देवता अन्तीर्ण हुई थी ऐसे उस श्री म छ ने क्रीप ही उन्हें निरुवर कर दिया । बादमें राजाबारे उन सब बीढोंको देशमेरे निकाल गया और जैनाचार्योंको बुटाया गया । इस प्रकार बीदोंको जीतनेके बाद वह मुझ 'वादी ' कहटाने छगा और फिर राजकी प्रार्थनापर

सुरेन उसे स्रिप्ट दिया। तबसे उनका नाम इआ श्री मछवादी स्रिर। गणस्तके समान वे प्रमारक हुए। अतएर श्री संयने, नवाङ्गश्रीतकार श्री अभवदेव स्रिरेन जिसको प्रकट किया उस स्तम्भन क सीर्धकी निरोप उन्नतिके छिये, उनको चिन्तायक (न्यरस्थापक) स्त्यमें निशुक्त किया।

इस मकार यह मछवादि प्रवंध समाप्त हुआ ।

# यळभी नगरीके विनाशकी कथा।

२०२) मरुमण्डल के पछा प्राममें काकृऔर पाताक नामक दो भाई रहते थे। उनमें जो छोटा था यह धनरान था और जेठा उसीके घर नौकर था । किसी समय, वर्षा ऋतुके निशीय कालमें, दिनमरमें किये हुए कामसे थक कर का कु सोया हुआ था। छोटेने कहा - ' मैया, अपनी िवतकी नियारियों में पानी भर गया है, उनकी मेंड टूट गई है और तुम निश्चित बैठे हो ' यह कह कर उसे फटकारा। वह उसी समय, बिठीना छोड़ कर और कॅघेपर बुदाउ रख कर, अपने नसीयकी निंदा करता हुआ जब यहाँ पहुँचा, तो देखा कि फई मजदूर टूटी हुई मेंडोंकी मरम्मत कर रहे हैं। उन्हें ऐसा करते देख उसने पूछा कि ' तुम छोग कीन हो !' उन्होंने कहा कि ' आपके भाईके चाकर हैं । ' इसपर उसने पूछा कि ' मला मेरे भी कोई चाकर कहीं है ! ' ती उन्होंने कहा कि 'वल भी नगरी में हैं '। वह किर अनसर पा कर अपने सर्नस्यको गट्टबर्मे बाँग कर. उसे सिरपर उठा कर, य छ भी में आया। वहाँ सदर दरगाजे के समीपनतीं आभीरों के पास निवास करने छगा । उन्होंने अरवन्त गरीन समझ कर उसे 'रंक' कहना अन्य किया । रंक घासकी झोंगडी बना कर, और घासडीसे उसे छा कर रहने छगा । उसी समय कोई कार्पटिक ( जोगी ) कल्प-पुस्तकके आ गरसे, रैव त दी हो एक तुंगेमें सिद्धरस छै कर, मार्ग अतिक्रम करता हुआ। चला आ रहा था। अचानक । उस तुंश्रेमेंमे ' काकृप तुम्पडी ' ( काकृकी तुम्बद्दी ) इम प्रकारकी अशरीरिणी बाणी हुई: जिसे सन कर यह बदा रिग्नित हुआ: और किर दरता हुआ इस डिपे हुए विनिधेके घरमें, यह सन कर कि वह एक रक है, निश्चाह-मार्ग उस रसराले तरेको धातीके रूपमें रख दिया। वहाँसे यह सो मे स्वर की बागके लिये चला गया। एक दिन ( रंकने ) किमी पर्न के अगसरपर देखा कि, पाफ फरनेके डिये चून्हेपर चढ़ाई हुई कहाड़ीमें, तुरेभे निकले हुए रसके गिरनेमे यह सीनेकी हो गई है। इससे उम बनियेने मनमें निर्णय किया कि यह सिद्धरस है। तर उसने उस तीरे के साथ अपने घरका सब कुछ सामान अन्यत्र पहुँचा कर घरको आग छगा कर भस्म कर दिया । नगरके दमरे दरवानेवर बद्दा मजान बनना कर वहीं रहने लगा। एक बार, किसी घी बेंचने ग्रालीसे घी गरीद रहा था। सद ही तील करते हुए उसने देखा कि उसमेंसे थी खटता ही नहीं है। नीचे देखा तो यीके पानके नीचे ए ध्याचित्रक िटता | की कुण्डिटका नजर आई । किर किमी प्रकार छट करके उसे उठा टिया और इस प्रकार उसे िन न कि दि प्राप हो गई। इसी तरह अगणित पुण्यके प्रमारसे उसे सुर्गणुक्यकी निादि भी प्राप हुई। इस प्रकार तीनों प्रकारकी सिद्धिसे कोटि-कोटि संत्याधन एकत्र करके भी, उसने अयन्त कृत्यानावश, किसी सन्याप या तार्थमें उदारता पूर्वक उसका रार्च करना तो दर रहा. बन्कि सर्व होगाँके सर्वन्यके हरण करनेकी इच्छाने. वस टरनीको सकड विराके टिये काटरात्रिके समान प्रशट किया ।

२०३) ऐमेमें, राजाने अपनी टहरीके दिये, उसकी टहरीको राजानिय सुवर्षकी वंगीको जबरेली उससे दिनमा टी। इससे निरोधी हो कर वह हार्य म्टेन्ट मण्डटमें गया और व उभीके राज्यका नारा स्रानेके हिये, करोडोंका सीना दें कर, वहाँके बजान राजाको देशपर चढा टाया। उस (रॅक) के हारा अनुस्टन, उस राजाके एक एकररने, रात्रिके होप मागमें, जब कि राजा सुम-नामन अवस्थानें या, पहटेसे ही टीक किये हुए, किसी पुरुषके साथ इस प्रकार बात-बीत करने छमा कि-' हमारे खामी की अच्छी सछाह देनेमें कोई चूहां भी नहीं दिखाई देसा; जिससे यह अव्यपित बहीमहेन्द्र ( राजा ) एक मामूछा बतियेके कहनेसे—जिसका न तो कोई छुछ-शीछ ही मादम है और न यही मादम है कि वह कोई अच्छा आदमी है या बुरा; और फिर को नामसे भी और कमेंसे भी रंक बना हुआ है—स्थिपुत्र शि छादि त्य के प्रति चछ पढ़े हैं 1' उसकी इस ययार्थ पथ्य बातको मुन कर, चित्तमें छुछ विचार करके, राजाने उस दिन आगे प्रयाण करनेमें विछंब किया। तब, उस सशंक रंकने, इस बातको निपुणमायसे जान कर, उस छज्यरको कावन-दान दे कर सन्तुष्ट किया। तब फिर स्सै दिस [ यहां छत्रधर बोछा ] चोहे विचार करके या बिना बिचारे ही यह राजा प्रयाण करके चछ पदा हो; पर अब ' सिहके उठाये हुए पैरकी नाई 'इस कहावतके अनुसार आगे चळनेपर ही इसकी शोमा है। बसों कि—

२३९, खेळ हो में जिसने हाथियोंका दलन किया है उस सिंहको, लोग चाहै मुगेन्द्र कई चाहै मुगारि, ये दोनों बातें सिंहके लिये हो लजाजनक ही हैं।

और फिर इस पराक्रमशालों के सामने ठहर मी कील सकेगा ! ' उसकी ऐसी बातों से उस्ताहित हो फर, मेरीके निनादसे पूर्या और आकाशके अंतरालको बनिर करते हुए उस न्लेल्झरावेन आगे प्रयाण किया ! इयर उस अवस्वरपर व ल भी स्थित चन्द्रप्रभक्ता विंव, अन्या और क्षेत्रपालके साथ, अधिष्ठायक देवताके बलसे आकाश मार्ग हारा शि व प त न ( सो म नाथ ) की भूमिको प्राप्त हुला । रयपर अधिक्त और वर्षमानकी अनुरम प्रतिमाने, अध्यय मावसे, अधिष्ठात देवताके बलसे रास्तेम चलसे हुए आधिनी ( आदिन प्राप्तकी ) पूर्णिमाके दिन श्री माल प्रदर मावसे, अधिष्ठात किया । अन्य अविद्यायाली देवत् विंतिने भी वयोचित भूभागको अल्कृत किया । उस नगरकी अधिष्ठात देवताने श्री व र्षमान स्थिक साथ, उत्पातकापनके समय [ इस तरहकी बातें की ]—

२५०. ' है देवीके सदस सुंदरि, तुम किस कारणसे से रही हो सो बताओ '; ' हे भगवन, मैं व छ भी पुरका अंग देख रही हूँ। इसका प्रमाण यह है कि आपके सासु छोग भिक्षामें जो दूध पार्पेगे वह तब रक्त हो जायगा। [ किर यहाँसे जा कर ] मुनियों को उसी स्थानपर रहना चाहिये जहाँ पानी भी दघ हो जाय '।

इसके बाद, जब बहु उत्पात हुआ और नगरीके वास म्हेन्छ सेना आ गई, तो देशभंगके पारपंकों फर्से हुए र क ने धन दे कर, पंच शब्दवार्थ धार्योके बनानेवार्थोंको अच्छी तरह फोड छिया। जब शि छा दिख धोडे-पर चदने छगा तो उन्होंने ऐसा प्रतिशम्द किया, जिससे वह घोड़ा, गरुइकी भाँति आकाशमें उड़ गया। यह देख कर राजा शि छा दिख फिर तो म्हेन्छोंने खेळ हों में घट भी शहरको तहस-नहस कर दिया।

२४१. विक्रमादित्यके सम्यसे २७५ वर्ष भद, वळची नगरीका यह संग्रह्मा । इस प्रकार शिलादित्य राजाकी लत्पचि, रेककी लत्पिक और लसके द्वारा किये गये बलमी-भंगका यह प्रवन्य समाप्त हुआ ।

#### श्रीपुंजराजकी उत्पत्ति।

२०४) श्रीरान मा छ न ग र में रान दी खर नामक राजा हुआ। वह किसी समय, दिखितयसंबंधी यात्रासे बायस छीट कर अपने नगरमें आया। प्रवेशके महोत्सरके समयमें, वाजारकी शोधाकी सजावट देखता हुआ जब ना रहा था, तब एक हाटमें कारके पान (करीत) साहित कुदालको रखे हुए देखा। महरूमें प्रवेश करने बाद जब महाजन छोग उपहार छे कर आये तो उनसे पूछा कि 'आप सब छोग सुखी तो हैं !' तो उन्होंने कहा—  नहीं मीहाराज, हम छोग सुखी नहीं हैं। उनके ऐसा कहनेपर विश्रमसे श्रान्तचित्त हो कर उनको बिदा किया; और फिर कमी किसी बातकी विचारणाके समय नगरके प्रमान जनोंको बुळा कर पूछा कि 'आप छोग क्यों सुखी नहीं हैं ! रे और साथ ही काठके पात्रके साथ उस कुरालको ऊचा करके वैसे रखनेका कारण भी पूछा । उन्होंने कहा कि-' जहाँपर खामीने काष्ट्रपात आदि देखा है वह धर्मा, अपने धनकी गिनती न जान कर, कठौतसे ही तमकी नापको जतानेका सकेत करता है। और हम छोग सखी नहीं हैं सो तो आपके सन्तानामाउसे। यह नगर कोटिष्यजोंसे भरा है। आपने चिर कालतक इसका लालन किया है, पर अब कीन इसे तलत बनारेगा !' यह सन कर राजाने अपने अंत:पुरकी पुरानी रानियोंकी बंच्या समझ कर नई रानीके करनेकी इच्छा की। तब उसकी अनुमृति पा कर वे होग. प्रय्य नक्षत्र महे रविवारके दिन.पुष्यार्क योगमें, किसी बंदे शक्न शास्त्र के साथ शक्तागारमें गये। वहाँ पर, एक मात्र छकड़ीका बोश तठा कर अपना पेट भरनेवाछी ऐसी कंगाछिन स्त्रीको देखी जिसके सिरपर दुर्गा वैठी थी और जो आसन्त्रप्रस्पार्थ स्थितिमें थी । शकुनइने उसकी अक्षतादिसे पूजा की । उन छोगोंने कारण पूछा तो उसने कहा कि- अगर ब्रहरपतिका मंतन्य सच है, तो इनके गर्भमें जो कोई छड़ना है वहीं यहाँ का भागी राजा होगा। इस बातको असंभग समझ कर उन्होंने छीट कर मानोचन उस राजाको. यो की त्यों, वह सब बात कह सुनाई । राजाने इससे मनमें खिल हो कर, अपने निजी मनुष्योंको भेज कर, उस स्त्रीको जमीनमें गाड देनेकी आजा की। उन्होंने जा कर उससे कहा कि ' इट देगताका स्मरण कर छी ' ! उनके ऐसा कहनेपर यह मरणमयसे व्यात्रल हो उठी । इतनेमें संध्यांक हो जानेसे उनकी अनुद्धा ले कर वह शीच जानेके लिये गई. तो बड़ी उसकी पत्रका प्रस्त हो गया। वह उसे वहीं छोड़ कर छीट आई। फिर उसकी जमीनमें गाड़ कर उन मनुष्यांने राजाको उसकी सूचना दी । इनर एक हिस्ती उस बालकको, नित्य दोनों शाम दूध पिला कर, बहा करने लगी । उस समय, महालक्ष्मी 'देवीके सामनेकी टकशालामें जो नया शिका पडने लगा उसमें हिरनीके चार पैरके नीचे एक बालककी प्रतिकृति पडती हुई देखी गई, जिसके कारण होगोंमें यह बात फैलने हमी कि कोई नया राजा उत्पन्न हुआ है। इससे उस राज दोख रने पता उगरा कर उस बहेको भरवा डाउनेके छिये चारों और अपने सैनिक भेजे । उन्होंने प्रयत्न करके उस बालकको प्राप्त किया। लेकिन बाल-हत्याके भयसे स्वयं उसे न मार कर, नगरके सदर दराजिके रास्तेमें इस तरह रख दिया. कि जिससे सार्यकालके समयमें. उस मार्गसे निकल्ने गली गायों की खरीकी चोटोंसे आप ही आप वह मर जाय और लोकों कोई अपगढ़ न हो। वसे वहाँ छोड़ कर, कुछ दूर खड़े हुए, वे जब देखने छंगे तो उत्तमेंमें वहाँ गायोंका एक झंड आता उन्हें दिखाई दिया । पर, मानों मूर्तिमंत पुण्यके पुँजकी नाई उस बालकको देख कर ने सब गायें, पैरोंसे स्तंभितकी नाई, खड़ी रह गई । इसके बाद, प्रीटेसे आगे आ कर एक सींडने, अपम जैसे ही तेजस्वी उस बालकको, अपने पैरोंके बीचमें रख कर, सब गायोंको आगे चलनेके लिये प्रेरित किया । बादमें, इस बुचान्तको सुन कर, राजा उन सामन्त और नगर टोकोंके द्वारा, उस बाटकको मेंगा कर, अपने पत्रकी नाई उसका पाटन करने छगा। <sup>6</sup> श्री प डा <sup>7</sup> ऐसा उसका नाम रखा गया ।

#### श्रीमाताकी उत्पत्तिका वर्णन ।

२०५) इसके बाद, जब बह राज हो बार राजा स्वर्गमामी हुआ तो औ पु अका अभिषेक हुआ। कुउ दिन राज्य करनेपर उसके एक पुजी पैदा हुई। यथपि वह सर्जाम सुन्दर थी पर मुँह उसका बानरका-सा था। इससे बह विषयिश्वित हो कर बैराम्यके साथ रहने उसी और श्रीमा सा के नामसे प्रसिद्ध हुई। एक बार उसे अएने पूर्व जनमका स्मरण हो आया। पिताके सामने उसने उसे निवेदन किया कि—"मैं पूर्व जनममें अर्धुद

िपचम प्रकाश

मिरि पर बानरकी की थी । वहां पर किसी एक वृक्षकी, एक शाखासे दूसरी शाखापर कुदते हुए, कोई अगम्य शल्यसे तालमें विद्व हो कर में मर गई। उसीके नीचे कामिक नामक तीर्थका कुण्ड था जिसमें मेरा धड़ गिर पड़ा । उस तीर्घके पुण्य-प्रमावसे मेरा यह शरीर तो मनुष्यका ही गया: किन्तु वह मेरा मस्तक अभी तक वैसे ही पड़ा है इसलिये में बानरके मुखबाली हुई हू । श्री पुज ने यह द्युन कर अपने विश्वसतीय आदिग्योंको [वहाँ भेत्र कर] उसके शिरको तुण्डमें ढाल देनेक लिये आदेश दिया । उन्होंने जा कर चिर काल्से उसी प्रकार पड़े हर मखको वैसा ही देखा और फिर उसे कुएडमें डाळा । तब वह श्री माता मनुष्यके मुखनाली हो गई। किर माता-विताको अनुझा से कर अर्बद्रजितनी संख्यामाने गुणोकी घारक वह, उस सर्वेद पर्वेत पर जा कर तपस्या करने छता । एक बार, एक आकाशचारी योगीने उसे देखा ती यह उसके सी-दर्यसे इत-इदय हो कर आकाराने नीचे उतरा और प्रेमालाप-पर्वन उससे कहने लगा कि 'तुम मुन्नसे न्याह क्यों नहीं कर लेती र'। उसके ऐसा पुछनेपर वह बोली फि-- इस समय रात्रिका पहला पहर व्यतीत हुआ है, चीधे पहरमें-जब तक मुर्गा न बोल वठे तब तक्तें-अगर किसी नियांके बलसे तम बड़ी सदर ऐसी बारह पद्या ( पत्थरकी सीदियाँ ) बनना दी तो में तमको वर हैंगी। उसके ऐसा कहनेपर, तरन्त ही उस कार्यके लिये उसने अपने चेटकों के झडको नियक्त किया और दो ही वहरमें वे सब प्रचार्य बनवा दीं। पर इपर श्री मा सा ने उतनेहींमें मर्गेकी बनापदी आवाज कर दी। उसने आ कर कहा कि पिया तैयार है इससे अबो 'तिगहके छिये तैयार हो जांओ' तो इसपर श्री मा ता ने कहा कि 'जब ने बन रही थीं। तमी मुर्गेकी आपाज हो गई थी <sup>3</sup>। तो उसने कहा 'वह तो तुम्हारी मापाआलके बनाये हुए बनावडी मुगेंको ज्वित थी। सो इसको कीन नहीं जानता '। ऐसा उत्तर देते हुए, नदीके किनारे अपनी बहनके हारा विपाहका उपहार उपिथत कराया। श्री माताने 'सन विद्याओका मूछ जो यह निशुङ है इसे यहीं ठोड़ कर • विवाहके लिये तैयार रही ' ऐसा कह कर उसे वहा बलाया। प्रेमके वडामें हतन्त्रित हो कर वह वैसा ही करके उसके समीप आया। श्री मा ता ने बनावटी करते बना कर उसके पैरें। पर छोड़ दिये और हदयमें त्रिशलका आयात करके उसे गार डाळा । इस प्रकार नि सीम शीलके साथ उसने अपनी सारी जिन्दगी जिताई । उस अखण्ड शीलाकी मृत्युके बाद, श्री पु छ राजाने वहाँपर शिलरके विनाका एक प्रासाद बनवाया । क्यों कि ६-६ महीनेके बाद, उस पर्यतके अधीमार्गमें रहनेवाला अर्थद नाग जब हिलता है तो यह पहाड काँग्रेन लगता है। इसालिये वहाँके सभी पासाद शिखर रहित [ बनाये जाते ] हैं।

इस मकार श्री पुञ्जराज और उसकी पुत्री श्रीमाताका यह मवन्य समाप्त हुआ।

चीडदेशके गोवर्धन राजाकी न्यायप्रियताका उदाहरण।

२०६) ची ड दे श में एक गो व धें न नामक राजा डुआ | उसके वहाँ, समामक्रयके सामनेके खमें गाय घटा वधी डुई थी जो ग्याय करानेके प्रार्थाननीके द्वारा बाजाई जा कर निनाद किया करती । एकबार उसके इकटीते दुमारके स्थाल्ड हो कर कही जाते सामय, रास्तेमें अज्ञातमावसे एक गीका बढ़ाइ। मर गया । उसकी माता गायने, ऑखोसे अजक ऑस् वर्षाते हुए, अपने परामवके प्रतीकारार्थ सींगींसे वह न्याय-घटा बजाई। अगर्जन समान कींतिगले उस राजाने, घटाका आक्रार सुन कर, गायका समूछ चुनान्त जाना और अपने न्यायका प्रतिकार किये प्रातःकाल स्थाल्ड हो कर, उस अपने एकमान प्रिम पुत्रको, उसी रास्तेमें रख कर, उस थेनुके समझ उसपर अपना रय पुत्राया। उस राजाके ऐसे सन्त और परम मायसे रथका चक्र (पिट्या) उत्तर हो उस भी कह समार नहीं मरा।

इस मकार यह गोवर्धननृपपवंध समाप्त हुआ ।

#### प्रण्यसार राजाका वृत्तांत ।

२०७) का न्ती पू री में, प्राचीन कार्टमें, कोई पुराण नृपति, निरिममान भावसे राज्य कर रहा था। एक बार यह राजपाटिकामें जानेके लिये निकला, तो उसके पाँछे पीँछ उसका परम-मित्र मिति साग र नामक महामात्य मी चला। रास्तेमें घोड़ा विगड़ उठा और वह राजाको दूर ले मगा। सायकी चतुरंग सेना कमजा: दूर दूर रह जाने छगी । पर अत्यंत नेगनाले घोड़ेपर चढ़ कर यह मंत्री उसके पाँछे पीछे बहुत दूर तक चेखा गया । कितनी ही दूर चले जानेपर, राजा मार्ग लाँधनेके प्रमसे किल्वुल थक गया और सुकुमारताके कारण किंधरके दबाउसे वहीं मर गया। मंत्रीने उसका अन्तकृत्य करके, उसके घोडेको और उसके वेशको साथ के क्षा कर सार्यकाल नगरमें प्रवेश किया | सीमान्तमें रहे हुए शत्रु राजाओं के भयसे राज्यकी निर्वित्र रखनेकी इच्छासे, उस राजा-ही-की उन्नके और रूपके जैसे एक कुम्हारको राजाका वह पोशाक पहना कर और उसी घोहेपर चदा कर महलमें प्रवेश कराया । फिर रानीशे सारा हाल बता कर, सचितने पुण्य सार नाम दे कर उसी को राजा बनाया । इस प्रकार कितनाक काछ बीत जानेपर, वह मत्री सेनाका वंडा समृह छे कर किसी शत्र राकाके ऊपर चढ़ाई छ गया और अपने एक खुब निस्तरित सहायकको राजाकी •से गर्मे रख गया । बादमें यह राजा निरंकरा हो कर, वेश्यापतिकी तरह, स्वैर निहार करता हुंआ समस्त कुम्हारोंको अपने पास बुला और मिहाके हाथी. घोडे. बैठ आदि बना कर उनके साथ चिर काठ तक खेळा करने छगा। ऐसा करनेपर समस्त राजछो क ' उसकी अउहेलना करने लगे जिसको सुन कर स्कंपागरसे ( ल्डाईके मैदानसे ) कुळ नौकरोंको साथ ले कर मंत्री वहाँ आया और राजासे इस प्रकार बीटा कि — यदि अपने स्वमायकी चट-निचटताके कारण, तुन देस वम्हारपनकी नातको न भूछ कर किसी मर्यादाको नहीं मानोंगे तो में तुन्हें देशसे निकाल कर किसी अन्य इन्हारके बाटकको राजा बना दूँगा '। उसकी इस उक्तिस कुद हो कर राजा बीटा - ' अरे, कीन है यहाँ !' : उसके ऐसा कहते ही वे मिटीके पुतळे सर्जान हो उठे और मन्नीको चिपट पड़े। इस असंमन जैसे महान आधर्षको देख कर और राजाके प्रकट प्रमानसे निस्मित हो कर मंत्री उसके चरणोंपर गिर पक्षा और अपनेकी छडानेकी अम्पर्थना करने ट्या । फिर राजाके वैसा ही करने (छुड़ा देने ) पर भक्ति-पूर्वक मंत्रीने कहा \_ । आपकी साम्राज्य देनेमें में निभित्त मान हूँ। आपके पुण्यप्रमानसे पुतले सचेतन हो कर इस प्रकार आहाकारी हो रहे हैं, सो इसमें पूर्यजन्मके कर्म ही कारण हैं; और इसलिये आपका यह जो पुण्य सार नाम है यह सार्थक हैं।

इस महार यह प्रण्यसारका मर्वध समाप्त हुआ ।"

## कभैसार राजाका प्रयन्ध।

२०८) प्राचीन काल्में, कुछ मपुर नगरका नं दिवर्धन नामक राजकुमार, देशान्तर अनगर्ने कीतुन्ति माता-पितासे त्रिमा पूछे ही अपने छत्रधरके साथ चल पड़ा । यहच्छासे घूमता हुआ, एक प्रातः कालने, हिमी गाँउमें जा पहुँचा। वहाँ, पुत्रहीन राजा मर गया था, इमसे संचित्रोंने अभिरिक्त करके पहहस्तीको क्रिमी नमे राजाका तटाहामें सारे नगरमें घुमाया । संयोगनका वह बहापर आया और उस निकटस्य दुन हुमास्क्री, दः स्वमकी नाई मूछ कर, ससंभ्रम उस हाथीने छन्नारका अभिषेक किया । प्रधानोंने बड़े महो सबके साथ उसको नगरमें प्रवेश कराया। उसने राजकुमारको भी वैक्षे ही ठाठके साथ अपने साथ छे कर , महट्से प्रकेश किया । बादमें-' मैं राजटोकका स्तामी हूं; टेकिन तुम मेरे स्वामी हो ' इस प्रकारके अन्तरंग वचनोंने वह टक् पानुसारको आराधना करता रहा । पर यह राजा राजगुणीके लयोग्य या और बेहद बेनकूक या । वर्नायन राजुदुनाएको आराधना करता एक। पर पट एका उपादुकार में धर्मके पण्डनके परिप्रमर्मे अनिमञ्ज और प्रजाका पीइक हो कर ग्यों उसों वह राज्य करता था रही रहें, छेहरहे

शिरमें रहे हुए चद्रमाकी तरह, वह प्रतिदिन क्षीण होता जाता था । उस कुमारको वैसा देख कर, किसी समय राजाने दुर्बेडताका कारण पूछा तो उसने कहा कि- दूर्बुद्धिके कारण तुम जो प्रजाको पीड़ा दे रहे हो यह अत्यन्त अनुचित कर्म है और इस कारण में कुश होता जा रहा हूं '।

२४२. जिसे मूर्खोंक बीच वास करना पड़े तथा जिसके स्त्रामिके कार्नोंके पास दुर्जनोंकी जीम लगती हो. उसका यदि जीवन बना रहे तो उसे ही लामदायक समझना चाहिए, क्षीण

होतेर्ये सो विस्मय ही काहेका।

सो मैंने इस गाथाके अर्थको सत्य कर बताया है । उसके इस कथनके अनन्तर राजाने कहा कि-' इस पापनिरत प्रजाके अपूण्योदयमें ही तो, निश्चय करके भविष्यमें इसकी पीड़ित करनेके लिये. मुझे राजा बनाया है । यदि विधाता इस प्रजाके भाग्यमें परिपालना लिखता तो उस समय पट्ट हस्ती तुम्हारा ही अभियेक करता । जमकी इस उक्ति और यक्ति रूप औपर्योंसे उस कुमारका वह रोग दूर हो गया और वह शरीरसे पुष्ट होने लगा।

# इस प्रकार यह कर्मसार प्रवंध समाप्त हुआ !

#### राजा लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका प्रयंध ।

- २०९) मोढदेशकी छखणावसी नगरीमें छ स्मण से न नामक राजा अपने उमाप ति घर नामक सर्वश्रद्धिनिधान ऐसे सन्तियके साथ, सारी राज्य व्यवस्थाका विचार करते हुए, राज्य करता था। बादमें वह, मानों अनेक मातग (हायी) के सैन्यके सगसे मदा वता धारण करके, किसी वेश्यारे सगरूप कल्ड्यक्तमें हुव गया । उ मा प ति घ र ने यह व्यतिकर जाना तो, प्रकृतिसे कृर होनेके कारण स्नामीको ने नावू समझ कर, प्रकारा-न्तरसे उसे सममानेके लिय, उसने समामद्रपके भारपद्रपर, ग्रुप्त भारसे इन करिताओंको लिख दिया -
  - २ ६ ३, हे जल । शीतलता तो तम्हारा हो गण है, और फिर तम्हारी स्वामाविकी स्वय्क्रताकी तो बात ही क्या फही जाय -सुरहारे ही स्पर्शेस अन्य अपवित्र वस्तुये पित्र होती हैं । इससे बढकर और तम्हारी स्तति क्या हो सकती है कि तम्हीं सी शरीरधारियोंके जीव हो । किर अगर तम्हीं मीच पथसे जाते हो तो तुम्हें रोकनेमें कीन समर्थ है ब
  - २४४. हे शिव 1 तुन अगर छोटे बैछ पर चढते हो तो उससे दिग्गजोंकी क्या हानि है ! तुन आगर साँपोंका आभूषण पहनते ही तो इससे सीनेका क्या नकसान है ? अगर अपने शिरपर इस जड़ किरण चडमाकी बारण करते हो तो उससे त्रैछोक्यके दीपक सर्थका क्या विगइता है है तम जगदके ईश हो तो फिर हम तम्हें क्या कहें ?
  - २४५. यपपि कटे हुए ब्रह्मशिरको वह घारण करता है. यचपि प्रेतोंसे उसकी मित्रता है. यद्यपि रक्ताक्ष हो कर मातृकाओंके साथ वह श्रीडा करता है, यदापि स्पशानमें वह प्रीति रखता है और यदापि सृष्टि करके वह उसका सहार कर देता है, तो भी, में उसमें मन छगा कर भक्ति-पूर्वक सेवा करता हैं। क्यों कि त्रिलोक शू य है और वह जगतका एक-मात्र ईसर है।
  - २४६. इस महान् प्रदीपकालमें तुम्हीं एक मात्र राजा ( चद्र ) हो, और इमी लिये तो क्या कमलोंकी ख्यभीको बद करके कुमुदोंकी श्रीको बढ़ा नहीं रहे हो है पर इसमें जो बहाका निवास है और पुष्पोंकी पिकमें इसकी जो प्रतिष्य है उसकी दूर करनेवाले तम कीन हो र क्यों कि यह तो स्वय निधाता भी करनेमें समर्थ नहीं है ।

२१७. हे हार ! तुम सद्वृतं, सहुण, महार्ह, और अमून्य हो कर प्रियाके घन ऐसे स्तनतटके चयुक्त तुम्हारी सुंदर मूर्ति हैं । किन्तु हाय, पामरीके कठोर कंठमें छग कर टूट जानेसे तुमने अपनी वह गुणिता खो दो है ।

किसी राजासमाके अवसरपर आये हुए राजाने इन कविताओंको देखा और उनका अर्थ समझ कर मीतर ही भीतर मंत्रीसे देख घारण करने छगा । क्यों कि—

२४८. आजकल प्रायः सन्मार्गका उपदेश करना, उसी तरह कोपका कारण होता है, जैसे नकटेको दर्पण दिखाना ।

इस न्यायसे दुपित हो कर राजाने उसे पदश्रष्ट कर दिया ! इसके बाद उस राजाने, एक बार, राज-पाटिकासे छोटते हुए रास्तेमें दुर्गीतप्रस्त, निरुपाय और एकाकी ऐसे उस उमाप तिथर को देखा, तो नोधपूर्यक उसे मार डाळनेके छिये, हस्तिपाळके द्वारा उस पर हायी चळ्या दिया । तब उसने महानतसे कहा कि—' जब तक, मैं राजाने सामने कुळ कह पाऊँ तम तक, तुम बेगसे हायीको जरा याम रखे।' । उसकी बात सुन कर उसने वैसा ही किया; तो फिर यह उमाप तिथर बोळा—

२४९. जिसको, सजन ऐसे गुरु छोग उपदेश नहीं देते उस शिनका कैसा हाछ हो रहा है !--नगा किरता है, शर्रारमें घूछ छमाता है, बैठको पीठपर चढ़ता है, धाँगोंसे खेळा करता है, और जिसमेंसे छोट्ट टपकता है ऐसे हाथींके चनडेको पहन कर नाचता है। इस प्रकारफे आचारबाद्य तथा अन्य कई प्रकारके [ निष ] आचरणोंसे यह प्रेम रखे करता है।

इस मकार उसके निवानरूपी बचनानुशसे उस राजाका मनरूपी हार्यी वश हुआ, और वह अपने चिटिको निययमें पक्षाचाप करता हुआ अपनी खूब निदा करने छगा। धीरे धीरे उस वासनासे मुक्त हो कर उसने किरसे उसे खपना प्रधान बनावा।

इस प्रकार लक्ष्मणसेन और उमापतिघरका यह प्रवंध समाप्त हुआ।

### काशीके जयचन्द्र राजाका प्रयन्थ ।

२१०) का शीन गरी में ज य च न्द्र नामक राजा, महती सामाज्य टक्सीका पाठन करता हुआ, पगु ( टंगहा ) इस निहदकी धारण करता था। कारण यह था कि वह आरी सैन्य समृहसे ब्यानुष्टित होनेके कारण, यह गंगा-यमुना नदीरूप छाठीके सहारे बिना कही आ-जा नहीं सकता था। यहाँ रहनेवाछे किसी शालपारिकी सह मामक पनी, जिसने अपने सीन्दर्शसे तीनों छोकके कोजनों को छिया था, किमी समय मामक श्रीम ऋनुमें जठकेछि करके गंगाके किमो सक्ये थी। तब उस खबननपनाने देखा कि एक सींपके शिवप खंजन पदी बेटच है। वहां पर महानेके छिए आये हुए किसी शालणके पैरों पह कर उसने उस असंम शतुनका निचार पूछा। उस नैमितिकने कहा कि-'अगर से सादा आदेश मानना मनूर करें में मुस्ता विचार मिनेदन कहें, नहीं तो नहीं ' । उसने नैसा करनेकी प्रतिश्वा की, तो शादणने कहा कि-'अनसे सातमें दिन तुम इस साना पूर परो । उसने वैसा करनेकी प्रतिश्व की, तो शादणने कहा कि-'अनसे सातमें दिन तुम इस सानारी पटरानी होंगी '-ऐसा कह-सुन कर वे दोनों पया-स्यान चर्छे यथे। जिस दिनके छिये निनिचजने निर्णय दिया था उसी दिन रामगाटिकासे छोटते हुए रामाने, किसी एक गादीने अभाग्य है। अभाग्य हम सुमग अंग गादी उस शाहरातिका होंकी लोई देगा। उसे अपने विचनता मर्नस्य चेरिनेवाड़ी अभाग्य है। यम पाने अपने विचनता मर्नस्य चेरिनेवाड़ी आगप्य है। सार्विक अपने विचनता मर्नस्य चेरिनेवाड़ी

१ इव वदने प्रयुक्त करूनत, बहुन और गुनिल ये शब्द प्राप्ति अपेरी आदित्क केनेथे इतहे वधने इन अपेरी पायक ई-कश्युक्त-अप्योगी मेटाईवाल; बहुण-अप्यो योगाला, गुनिल-वागेशी बनारवाला।

समझ कर उसने अपने पास रख लिया और पटरानी बनाया । इसके वाद उस कृतझाने आहाणके प्रति की हुई अपनी प्रतिज्ञाक स्मरण करके राजासे उस निवाध र नामक आहाणको झुठानेके लिये प्रार्थना की । राजाने झुग्गी पिट्रग कर निवाध र नामक आहाणको झुठानेके लिये प्रार्थना की । राजाने झुग्गी पिट्रग कर निवाध र नामक आहाणको सुल्याया तो उस नामके सात सी आहाण आ कर उपस्थित हुए । उनमेंसे उस एकको पिट्रियान कर अलग नैठाया और बाकी सक्की यथोलित सत्कारके साथ बिदा किया गया । अहमें उस निविक्तसत निवाध र से राजाने कहा कि—' जो इच्छा हो गाँगों '। राजाके आदेशसे प्रमुदित हो कर उस निवाध ने ' संदेव उसकी अंगरोना ' की प्रार्थना की। राजाने सोकार करके, उसके असीन चारुपंकी प्रार्थना करने साथ अपने अलगत करने सम्परिवाली कन गया। अपने अलगत पुर्वि स्वीत सुंदरियोंके लिये कुँची जातिक कुँग्र के हुए नित्य नये आमरण बनजाता और यह कह कि पुराने आमरण बनजाता और यह कह कि कुँगोने साथ हमाने हैं उन्हें एक छोटी कुईमें उड़्या देता। इस प्रकार साक्षात् दैयता-व्याख्त स्वय भोजन के तता।

२११) इसके बाद, विद्वारी राजाके उत्पर चहाई करने के छिये राजाकी आजासे, चतुरंश विधाओं के ज्ञात विधाय र ने नाना देशोंने घूमते हुए, एकबार एक ऐसे देशमें जा कर देश दिया जहाँ ज्ञाने के छिये इन्तर (ज कडी आदि) नहीं था। तब उन बाहाणीकी रसोइंके समय, रसीईसींके वक ते उसे थियो। कर उन्होंको इन्यन बना कर निरंपकी माँति ही उनको भीजन कराया। इस तरह शतुओंको जीत कर जब बह छोट कर बायस नगरके समीप आवा तो माछम हुआ कि, विष्णाक (भीजन) के बनानेकी इन्जासे जी दुक्ज जछाये गये, उससे राजा दुवित हो गया है। इससे उसने अपने कर को तो याचकोंकि हारा छुटता दिया और स्वयं तीर्थयात्राके छिये निकल पड़ा राजा मी किर पीछ जा कर उसका अनुनय करने छगा, पर उसने राधिमानवरा, अपनी उस दे भोजन बनानेकी ) इन्छाके कारण राजाकों बेसा आहाय (कोच्यक मात्र) हो गया था यह बता कर, जैसे तीर उसनी अनुनित छे कर अपनी अस राजाकों किया आहाय (कोच्यक मात्र) हो गया था यह बता कर, जैसे तीर उसनी अनुनित छे कर अपना अन्त साथन किया।

२१२) अनन्तर, सृहच दे वी ने राजासे अपने पुत्रके लिये युरास पदयी माँगी। राजाने कहा कि—
' रखेलिनके जहकेकी हमारे पंत्रमें राज्य नहीं दिया जाता '। इससे उसने राजाको मारनेके लिये म्डेण्डोंको 
बुल्याया। उस स्थान पर रहने गले पुरुषें (राजदूर्तों) से इस बायका हाल जान कर, राजाने एक दिगंबर 
भिश्चकते, निसने पापानतीने वर मात किया हुआ या, सादर निमित्त (कोई मानिक उपाय) पूछा। 
उसने राजाको निहसास पूर्वक कहा कि—'प्याप्ततीका आदेश म्डेण्डागमनके निरुद्ध है '। इसके अनन्तर 
इसने द्वार, यह सुन कर कि म्डेण्ड नजदीक आ गये हैं, राजाने उस दिगान्यरि किर पूछा
कि यह 'क्या बात है!' तो उसने उसी राजको राजाको सापने ही प्रधारतीको होभादि देना
आरम किया। तब उसकी उस उत्तन आर्थण-निवाको बल्छी, होमकुण्डको ज्वालाओंमें प्रत्यक्ष हो 
कर, पूपारतीने तुरुष्कों (तुर्जों) के आगमनका निदेश ही बताया। तब फिर उस सुद्ध दिगन्वरने उसके 
कान पेकड कर अरमन को से कहा कि—'स्टेण्ड सेनाके निकट आ जानेपर भी तु ऐसी सिप्या बात बले रही है'। 
इस तद फटकारी जानेपर उसने कहा कि—'तु निस पद्यानतीको अति मिकिके साथ यह पुछ रहा है वह तो 
हमार प्रतापके करसे करही माग गई है। मैं तो उस म्डेण्डरानकी कुल्डरेनी हैं। विषया बोल कर लोगोंमें 
निभात पदा करके, उनरें म्डेण्डरोंके द्वारा निरमस (प्राण-विदेश ) करती रहती हैं। ऐसा कह कर वह 
तिरोदित हो गई। वादमें प्रताकलमें ही म्डेण्ड सेना हारा वाणा रही नगरीका दिरा जाना राजाने जान 
पाया। उनके पत्रप्रीके टंकारोमें, राजाके चीदह सी तगाडोंकी आवाज कही हुव गई की स्टप्स हैन्गई सेनाई मयसे म्वयं

मनमें व्याक्त हो कर उस सूह व देवी के पुत्रको अपने हायीपर बैठा कर ( उसके साथ ) राजा गंगाके जलमें इब मरा।

# इस प्रकार यह जयचन्द्रका प्रवंध समाप्त हुआ ।

## जगदेव क्षत्रियका प्रवंध ।

२१३) त्रितिघ वीरश्रेष्ठत्यको धारण करने नाला जग देव नामक एक क्षत्रिय वीर हुआ । वह श्री सिद्धराजके द्वारा खुव सन्मानित होता था । फिर भी उसके गुणरूप मनके वशीमूत हो कर शत्रमर्दन ऐसे राजा परमर्दीन जब उसे आमहपूर्वक अपने यहा युळाया, तो पृथ्मीरूप रमणीके केशकळापके समान उस कुन्त छ देश में वह गया। दरताजेपर पहुँच कर जब उसने राजाको अपने आनेकी खबर भिजविंड उस समय िराजांके आगे | एक वेदया, नंगी हो कर 'पुष्प बलन ' च्य कर रही थी। वह तत्काल ही लिबत हो कर अपनी चादर ओड कर वहीं बैठ गई। जब राजाके द्वारपाछने जगदेवकी प्रदेश कराया तो राजाने उठकर आहिंगन दिया और प्रिय आछाप आदि किया। इस मन्मानके बाद, फिर उसे प्रधान परिधानदुकुछ और छाखोंकी कीमतके अतल्लीय ऐसे दो अन्य यक्ष भेंट स्वरूप दिये । बादमें जगदेव के महामूल्याम आसन पर बैट जानेपर सभाका संभ्रम जब दूर हुआ, तो राजाने उस वेश्यको नाचनेका आदेश किया । तब उस उचितजा चतर नारीने कहा कि- संसारके एकमात्र पुरुप श्री जगदेव नामक अब यहापर विद्यमान है इस्टिये इनके सामने बिना बखके नाचते में छजाती हू । जिया जियों के सामने ही यथेष्ट चेष्टा कर सकती हैं '। उसकी इस छोकोत्तर प्रशंसासे मनमें प्रमुदित हो कर जगदेवने राजाके दिये हुए उन दोनों बलोंकी उसे दे डाला।

इसके बाद, जब पर मदीं के प्रासादसे जगदेवको किसी एक देशका आधिपाय मिला तो उसे सन-

कर उसका ऋगमस्त उपाध्याय उससे मिलने आया । उसने यह कान्य भेंट किया-

२५०. हम दो आदमीके पुण्यको मानते हैं-एक तो अक्षत्रिय विविधे याठिको मारनेवाछे किसी भगवान ( रामचद ) के, और दूसरे संगीतमें आसक कुन्त छ प ति के । इनमेंसे एक ( रामचंद्र ) ने तो महत्तनय (हतुमान् ) की दीनों संदर मुजाओं न्यप कामधेनुका दौहन किया और इसरे (बुन्तलपति ) ने, हे प्रतिपक्ष (श्र. ) के लिये प्रत्यक्ष परश्रापन, आप जैसे चिन्तामणिको प्राप्त किया ।

इस कान्यके पारितोपिकमें उस स्यूटट्स ( टक्षण-सम्पन्न ) ने आधा छाख दिया ।

२५१, चकरेने पाथ (मुसाफिर) से पूछा कि ' है मिन ! बताओ पृथ्मीमें बसने लायकं वह कीनसा देश है जहाँपर चिर काठतक रात्रि नहीं होती है ' (इसपर पायने कहा कि ) ' श्री जगरेय नामक पुरुष जो सुनर्णदान कर रहा है उससे थोड़े ही दिनोंमें भेर पर्रत समाप्त हो जायगा । . और फिर सर्यका डिपना बंद हो कर एक मात्र अहैत ऐमा (बिना सरिका) दिन ही बना रहेगा।

२५२. प्रयोक्ती रक्षा करनेमें दक्ष ऐसे दाहिना हायनाले, दाक्षिण्यकी शिक्षा देनेमें गुरुके समान. कन्याणके स्थान और धन्यजन्म ऐसे जगहाना ज ग दे न के विधमान होनेपर, विद्वानों के घर भी वेसे बन गये हैं कि जिनमें प्रतिदिन, मतवाले हाथी और घोड़ोंके बांवने योग्य पृक्षोंकी रहिनयां टट जानेके कारण, नौकर टोग न्याकुछ बने रहते 🕻 l

२५३. तुःहारे जीरित रहते बिंड, कर्ण और दर्धाचि जीते हैं और हमारे जीरित रहते दादिन जीनाहै।

- २५९. हे ज ग देव ! हम नहीं जानते कि किसका हाय थक जामगा—दिस्तिको रचते रचते महाका.' या उन्हें कृतार्थ करते करते तम्हारा ।
- २५५, हे ज ग दे व । इस जगदूरूप देवमेदिरों प्रतिष्ठित तुम्हारे यशरूपी शिवर्लिंगके ऊपर [आकाशके] नक्षजेंभे अक्षतका रूप धारण किया है ।
- [ १७४ ] हे जगदेव ! चारों समुद्रोंमें डुक्सी मारनेके कारण तुम्हारी कीर्ति मानों ठंडीसे जकड गई है, इस्टिये अब ताप ठेनेके निमित्त वह सूर्य-मण्डळको चटी है !
- [ १७५ ] क्षत्रियदेव श्री ज ग देव मूपाळका कल्याण हो । जिसके यहारूपी कमटमें आफाहाने अमरका रूप थारण किया ।
- [ १७६ ] पृष्टीमण्डलपर सुवर्ण वितरण करनेवाला तो एकमात्र ज ग है व ही है और उसमें मांगनेवालोंकी संख्या हजारोंकी है—ऐसा सोच कर, ऐ मेरे मन विधाद मत करी। सूर्य कितने हैं और प्रमण अन्यकारराशिमें ह्वते हुए जन-समृहकी प्राणरक्षांके लिये यात्रामें प्रवृत्त उनके घोडोंके खुरसे ख़ुदा हुआ यह रिकाण्डल कितना विस्तृत है !

ज म देव की दी हुई ' न नवम् ' ( नया नहीं है ) इस समस्याकी पूर्ति एक पंडितने इस प्रकार की-

२५६. समुद्र अगाप है, पृथ्वीमण्डल विशाल है, आकाश विसु है, मेरु पर्वत ऊँचा है, विष्णु प्रियत-प्रहिमा है, कलपञ्चल उदार है, गंगा पनित्र है, चंदमा अमृतवर्षा है और जगरेव बौर है—मे सब (विशेषण-सक्त विशेष्य) मेरो नहीं हैं।

- [ १७७ ] तुझ समान जगहाता जगहेन के विद्यान होनेपर, अब लोक साहसांक राजाने वरितके आश्चरोंने भी मन्दादर हो गये हैं तो फिर पार्यकी उस सजी कथाका कहना तो हुया ही है। यह पूजिंगे बेलि है, यह भूचर शक्ष है। कुणाको किसीने देखा नहीं, पृष्वीमंडल कल्पहृक्षसे शृत्य है। कामदेवका शोच व करना चाहिए। (—इस प्रथम भाव कुछ स्पष्ट मही आत होता.)
- [१७८] है ज ग हे व ! तुम्हारा यशोरूप दुर्गार चंद्रमा जब निरंतर ही अपनी किरणश्रेणीको दतों दिशाओंने पिकीण करने छमा, तब सारे भुवनको राकाके छिये भयका स्थान समझ कर, 'कुहूं' शस्द है सो एक मात्र कोकिछके कंठका शरणभूत हो कर रहा । ('कुहूं' का एक अर्थे अमावस्थाको रात्रि है, और दूसरा कोकिछका शस्द है। जगदेवके पशरूपो चंद्रमाका निरंतर प्रकाश बना रहनेते अमावस्थाका अभाव हो गया, इसिंध्ये कुहू शब्दका ज्यवहार केषछ, कोकिछके शस्दों रह गया।)
- [ १७९ ] हे ग्रम्र ज म हे व ! तुम्हारे रूपमें मुग्ध हो कर, वातायन पर स्थित सुधू ( सुंदर भुवों वाडी ) रमणियोंकी कमळदळसे दोह करनेवाळी नाचती हुई आँखें समय, साळस, सगर्व, सार्द, तिराठी, चिकित, धान्त और आर्त की नाईं, कहा नहीं पड़ती हैं ]

इस प्रकारके बहुतसे कान्य हैं जो यथायुत जानने चाहिये।

**१**४२ ]

राजा श्री पर मर्दी राज की पहरेबीको ज ग देव ने अपनी भीगनी माना था। एक बार, राजाने सीमान भूगालको हरानेके थिए श्री ज ग देव को भेजा। वह, वहाँ जब देवाचँन कर रहा था उसी समय छल करके आघात फरनेवाले शहुने उसकी सेनामें उपदय मचापा। इसका हाल हुन कर भी वह ज ग देव उस देवगुजासे बाहर नहीं निकला। प्रणिधि पुरुषेके मुँहसे राजाने ज ग देव का पराजय हुआ सुना तो यह अशुतपूर्व बात सुन कर अपनी रामीसे पर म दीं ने [ ब्यंग्य करते दूर ] कहा कि—' तुम्हारा माई समर्शिरताका तो वडा अइंकार घारण करता है लेकिन शतुओं हारा आकान्त हो कर यह वहाँसे साग भी नहीं सका '। राजाकी इस मर्गमेदिनी परिहास वाणीको सुन कर रामीने प्रातःकाल्में पश्चिमकी ओर देखा । राजाने पृद्धा ' क्या देखती हो !' देस पर रामीने कहा कि ' स्पेंदिय '। तब राजाने कहा ' पगली, क्या कभी पश्चिम दिशामें भी स्पेंदिय होता है!' इसपर वह बोली — 'पश्चिममें स्पेंदियका होना अर्धमत्र हो कर भी, कभी विधिक विधानके विरुद्धका होना सेमत्र है; पर क्षित्रयोंने देख जैसे जग दे य का पराजय होना तो संमत्र ही नहीं '। इस प्रकार उस दम्पतीका प्रिय आलाप हो रहा था। इसपर, देवप्जाके बाद जग देव ने ५०० सुमहोंने साथ उठ कर, उस शतु राजाजी सेनाका जीडागात्र-ही-में इस तरह दलन कर हाला, जिस तरह स्पें अन्यकारके समृहका, सिंह-शाव गजयूयका और प्रचण्ड अन्यक्ष धनाचेर नेवमालाका दलन करता है।

् २१४) वह पर मर्दी राजा, जगतमें एक उदाहरणमून ऐसे परम ऐवर्षका अनुमय करता हुआ, एक निद्राक्षे अवसरको छोड कर, दिनरात अपने ओजके प्रकारका करनेवाला छुरिका-अम्पास ( छुरी चलानेकी कलाका परिश्रम ) किये करता था। भोजनके अवसर पर रसीई परीसनेमें व्यस्त ऐसे एक एक रसीईयेकी नित्य ही निर्दय मावसे उस छुरिकासे काट डालता था। इस प्रकार साल्में ३६० रसीईयोंका वह संहार करता हुआ कीप-कालानल के विकटसे प्रसिद्ध हो गया।

२५७. हे आकारा, तुम फैल जाओ; दिशाओ, तुम आगे वहो; हे पृथ्वी, तुम और मी चौड़ा हो जाओ; आदिकालके राजाओंके यशका उल्लेमण तो तुम लोगोंने प्रत्यक्ष किया ही है। अब परमदी राजाके यशोराशिका विकाश होनेसे देखों कि यह ब्रह्माण्ड, प्रस्कृदित बीजोंके कारण, फटें हुए दाहिमकी दशाको प्राप्त हो रहा है।

ह्मारि स्तुतिर्योसे स्तृत हो कर वह राजा चिर काळतक साम्राज्यके झुखका अनुमय करता रहा। २१५) उसका, सपाद छक्ष के राजा पृथ्वी राजके साथ युद्ध हुआ और संग्रामाङ्गणेर्मे यह अपने

र् १५) उसका, सपाद छक्षक राजा पृथ्वारा जक साथ युद्ध हुआ आर समामाहभाग वह अपन सैन्यफे पराजित होने पर, दिग्निगृह हो कर, किसी एक दिशासे मागता हुआ अपनी राजधानीमें आया। उस पर मदी राजाके द्वारा पूर्वमें अपमानित कोई सेवक, देश निकालेकी सजा पा कर पृथ्वी राजाकी समामें आया। वसके प्रणाम करनेके बाद राजाने उससे यूछा कि-' पर मदीं के नगरमें सुकृती लोग विशेष करके किस देवताकी पूजा करते रहते हैं! १ इस प्रकार स्थामिक पूलनेपर उसने शीम ही यह तत्कालीचित पप पड़ा—

२५८. शिवकी पूजा करनेमें वह मंद है, इच्याचिन करनेकी उसे कोई तृष्णा नहीं है, दुर्गाकी प्रणाम करनेमें वह स्तच्य रहता है, विधाता रूपी ग्रह [ उसके यहाँ पूजा न पानेसे ] ज्यम रहता है। 'हमारा स्वामी परमर्दी इसीको मुंहमें रख कर पृथ्वीराज नत्पतिसे रक्षा पा सका है '

इस बातको सोच कर वहाँकी प्रजा तृण ही की प्रजा किये करती है।

इस स्तुतिसे प्रसन्न हो कर राजाने उसे यथेष्ट पारितीषिक दे कर अनुगृहीत किया! उसने ( पृणीराज) इक्कीस बार म्डेण्डराजाको हराया था। तब बाईसर्जी बार बही म्डेण्डराज अपनी दुर्भर सेनाके साथ चढ़ कर पृण्वी राज की राजधानीके पास आ कर ठहरा। मक्खीकी तरह बारबार उदा देनेपर मी, इस प्रकार, इसुको किर किर आते देख उसको तरफ राजाको उपेडाका होना जाना, तो स्वामीकी अक्षीण कपाका पात्र और उसके दूसरे शारीको जीसा वह तुंग नामक क्षाजतेजवारी बीरश्रेष्ठ, अपनी ड्यामो की सेस पुत्र से साथ म्डेण्डराजको सेनामें जा पुता। रातके समय उसने देखा कि उस शहुके तंतुके चारों और एक खाई खुदी हुई है कि जिससे सेराको उक्कांको जाग घषक रही है। यह देख वह अपने पुत्रसे बोटा — में इस खाईमें कूट पहता हूं:

तम भें। पंठार पेर रख कर जा कर स्वेच्छराजको गार डाकें। । पिताके ऐसा आदेश कार्नपर उसने कहा कि—
'यह काम भेरे छिप साध्य नहीं है कि अपने जीउनको आकाक्षासे में पिताको मृत्यु देखू ।; सो में ही इसमें पहता
हूं और आउ ही मेरी पंठार पेर रख कर उसका अन्त कर डाकें। उसके वैसा करनेपर, शामीके कार्यको सिदप्राय हुआ मान कर आसानीसे उसने शामो मार डाका और फिर जैसे आया था वैसे ही घर छोट गया। जब
प्रभात होनेको आया तो अपने सामीको बरा देख कर वह स्वेच्छ सेना दीन हो कर माग गई। गंभीरप्रकृति
होनेके कारण उस तुम सुभटने राजाको वह कुछ भी हाल नहीं बताया। किसी समय, राजमान्य होनेके कारण
अयत परिचित ऐसी उस वा सुभटने राजाको वह कुछ भी हाल नहीं बताया। किसी समय, राजमान्य होनेके कारण
अयत परिचित ऐसी उस वा सुमटकी पुत्रम्भूको मंगलदर्शक हस्तक्के मार्थ रहित देख कर, राजाने संसम्भानसे
उसका कारण पूछा। समुदकी नाई गंभीर होनेके कारण, मीनमर्यादाके साथ प्रथम तो उसने कुछ भी नहीं
बताया। तब राजाने अपनी शपथ दे कर पूछा। इस पर उसने यह कह कर कि—' ययि अपना गुण कथन
करना मेरे छिये दुष्कर कार्य है तथापि आजा होने नियदन करना पडता है 'ऐसा कह कर प्रस्तुपकारमीर हो कर
उसने वह हुनान्त जैसा घटा था पैसा ही निवेदन करना ।

२५९, उच युद्धियाले मनुष्योंके चित्तको यह कोई बड़ी क्षी अलीकिक कठोरता है कि किसीका उपकार करके किर वे दूसोरेसे प्रश्रुपकार पानेके भयसे उनसे निःस्पृह हो रहते हैं।

#### इस मकार यह तुंगलुभट मबंध समाप्त हुआ।

#### पृथ्वीराजका स्टेच्छोंके हाथ मारा जाना ।

२१६) इसके अनन्तर, फिर कमी, उस म्हेन्डराजका पत्र विताका वेर स्मरण करके सपादलक्षके राजा पूर्णी राजके साथ यद करनेकी इच्छासे बडी तैयारीके सहित चढ कर आया। प्रधी राजकी सेनाके बीर धनुर्भरोंके, वर्णकालकी मूसलबार कृष्टिकी नाई बरसंते हुए, बार्णोकी मारसे वह स-सैन्य भगा दिया गया और किर पृथ्वीराजने उसका पीछा किया। इस समय भोजन-विभागके अधिकारी पश्चकलने कहा कि-'सात सी साउनियां जो भोजनकी सामग्री दोती हैं ने पर्याप नहीं हैं, इसिक्टिय महाराज कुछ और साउनिया देनेकी छपा करें '। राजा यह सन कर बीला कि - ' ग्लेक्सराजको मार कर उसके ऊँटींका छुंड करने किया जायगा, और फिर तुन्हें माँगी हुई सादनिया देनेका प्रबन्ध किया जायगा '। ऐसा कह कर उसे समझा दिया और फिर जब आगे प्रयाण करने छगा तो सो मे इव र नामक प्रधानने बारगर निपेश किया। राजाने इस अमसे कि वह उस ( व्हेच्छ ) के पक्षमें है. उसके कान काट छिये । इस अत्यन्त पराभवके कारण. वह अपने खानीते क्षित हो कर उस म्डेम्डपतिके पास चला गया। उसको अपना पराभव-बृत्तान्त कह कर, उसके मनमें नित्रास बिठाया और उसको प्रस्ती राज के पडाबके पास है आया । प्रधी राज एकादशीके पारणाके परचात जब सीपा हुआ था तो उसकी सेनाके बीरोंके साथ म्छेन्डोंकी छडाई छिड़ना दी। राजा गाढी नॉडर्मे सो रहा था । उसी अवस्थामें तुर्कीने उसे केंद्र कर लिया और वे अपने स्थानमें ले गये। फिर दूसरी एकादशीके पारणाके अपसरपर, जब वह राजा किंदीकी हालतमें 1 देव-पना कर रहा था. उस समय म्डेन्डराजने रेंघा हुआ मास, पत्रके पात्रमें ( दोनेमें ) रखना कर उसके तुनुमें भिजनाया । उसके देवपुत्रामें स्वस्त होनेके कारण, प्क कुत्ता आ कर उस मासको उठा है गया । सब पहरेदार्शन कहा कि 'इसकी रक्षा क्यों नहीं करते !' इसपर राजाने कहा कि - ' मेरी जिस मोजनसामग्रीको कभी सात सी सादनिया भी ठाँक तरह नहीं दो सकती थीं. उसी मोजनकी आज यह दुर्दशा है-इस बातको में अनावल हो कर कीतकसे देख रहा है '। उन्होंने कहा ाफे-'क्या तुममें अब भी कुछ उत्साह शक्ति बाकी है! 'सो उसने कहा 'यटि में अपने स्थानपर जा पहुँचूं

तो अपनी द्वार्यिक ताकात कैसी है सो दिखा हूँ । पहरेदायेंने यह वात उस स्वेच्छराजको जा कर कहां तो वह उसके साहसको देखनेको इच्छाने, उसे उसकी राजधानीमें छे आया और राज-भवनमें छे जा कर उसको गादीपर विठाय। बादमें ज्यों ही उन्होंने देखा तो उसके महल्की चित्रसालामें ऐसे चित्र बने हुए मजर आये जिनमें सूअर म्लेच्छोंको मार रहे हैं। यह दृश्य देख वह तुर्कोंका राजा अपने मनमें अत्यन्त पीड़ित हुआ और वहीं पर उसने कुठार द्वारा पृथ्वीराजका सिर काट कर उसका संहार कर डाला।

इस प्रकार नृपति परमर्दी, जगदेव और पृथ्वीराज इन तीनींका यह प्रबंध समाप्त हुआ !

# . काँकण देशकी उत्पत्ति कैसे हुई।

२१७) जहाँ सुग्र ही जिसकी परिखा (खाई) है ऐसे शता न न्युर में म हा नंद नामक राजा हुआ | उसकी रानीका नाम था मद न रेखा | अन्तःपुर [ में क्षियों ] की प्रचुरता होनेसे राजा उसके प्रति विरक्त रहता था | इसिंग्यें पतिको बशीभृत करनेकी इच्छासे वह नानाविच विदेशी जनों क्षेत कछाविदोंसे इस बारेके पूछा करती | तब एक' यथार्थवादी विश्वसनीय तात्रिकने उसे चुछ सिद्धयोग बताया | उसके प्रयोग करनेके अवस्तपर उसे इस वाक्यका अनुस्तरण हो आया कि ' मंत्रपूर्को अरुपर की हुई प्रीतिको पतिबोह कहते हैं ' ! तो उस योगचूर्णको समुद्रमें फॅक दिया। कहा है कि ' मंत्र और विषय प्राप्त अविनय होता है ' म्हा जिये औपथेके माहाल्यसे वशीभूत इथा समुद्र हो उसका वशवर्ता हो कर, मूर्तकर ( भृत्यस्वरूप ) बना कर उसके साथ रात्रमें आ कर रितरण करने छाना | इससे वह गर्भवती हो गई। तब उसके ऐसे चिन्होंको देख कर राज्य हिति हो कर उसे किसी प्रयास आपना परिचय देते हुए बोळा कि—' में समुद्रका अधिग्राता देव हूँ, इसिंग्रें देख रान। नत ' | किर वह राजांसे बोळा—

२६०. शीख्यती कुळीन कन्याको, विवाह करके, जो सम-दृष्टिसे नहीं देखता, वह बड़ा भारी पापिष्ठ कहा गया है।

इसिडिये इस स्रीकी अवका करनेवाड़े ऐसे तुझको मैं अन्तापुर और परिवारके साथ अगाध जड़में हुने।
दूँगा '। यह सुन कर यह अध्यक्षाता रानी उसका अनुनय करने छगी। इस पर समुद्रने यह कह कर कि ⊷
'यह नेरा ही उदका होगा और इसिडिये में ही कहीं कहींका बड़ हटा कर इसे साम्राज्यके योग्य नई भूमि
दूँगा '-ऐसा कह कर फिर उसने कहीं कहींकि जड़ हटा कर अन्तरीप (बेट) बना दिये जो छोगोंमें सब
'कींक ण 'नामसे प्रसिद्ध हुए ।

इस प्रकार यह कौंकण-प्रवंध समाप्त हुआ ।

### ज्योतिषी वराहमिहिरका प्रवन्ध ।

२१८) पाट छीपुत्र नगरमें व राह नामक एक प्रावणका छड़का था जो जनमें ही शकुन झानमें श्रवालु था। गरीब होनेके कारण पश्च चरा कर अपना निर्वाह किये करता था। एक दिन [ जंगछमें ] किसी एक परयर पर छम छिछ कर उसे बिना मिटाये ही घर छीट आया। यथासमय उचित कृत्य कर छेनेके बार रातमें भोजन करनेको बैठा तो उस छमके विसर्जन न करनेका समरण हो आया। तब उसी समय निर्भव भावसे बहाँ गया तो देखा कि उसपर एक सिंह बैठा है। उसने इसकी भी परवा न की और उसके पेटके नीचे

हाथ डाल कर उम्र निटाने लगा। तब इसके अनन्तर वह सिंहका रूप त्याग करके स्विरूपमें प्रयक्ष हुआ और कहने लगा 'वर मॉगो '। तब उसने मॉगा कि — 'मुझे समस्त नक्षत्र प्रह महल्को [ प्रयक्ष ] दिला दो '। यह सुन स्पृं उसे अपने नियानपर चढ़ा कर ले गया और [ सारा ग्रहचार बता कर ] एक वर्ष बाद वहीं ले ला कर लोड़ गया। इस तरह वह महाँके वक, अतिचार, उदय, अस्त आदिकी प्रयक्ष परीक्षा करके पुन अपने स्थानमें आया। मिहिर (सूर्य ) का प्रसाद प्राप्त होनेसे व राह विहिर इस नामसे प्रसिद्ध हो कर वह ब्री नन्द नामक सुपतिका परम माय हुआ और उसने 'वा राही सहिता' नामक एक नया ज्योतियशाल बनाया।

२१९) एक बार, अपने पुत्र जन्मके अवसरपर, उसने अपने घरमें घटिका रख कर उससे जन्मकालका ग्रुख छप्र हे कर जातक प्रथके प्रमाणसे ज्योतिय (जन्मपत्र) बनाया। स्वय प्रथम् किये हुए प्रहचकके हानके बहुपर उस पुत्रनी आयु एक सी वर्षकी निर्णात की। उस महीलनमें, श्री मह वा ह नामक एक जैनाचार्य- जो उसके छोटे भाई थे-को छोड़ कर, राजाते हे कर रक तक कोई ऐसा नहीं रहा था जो कुछ उपहार हाथमें हे कर उसके बहा नहीं गया हो। तब उस नैमितिकने जिनमक शकटाल मंत्री के आगे, उन सुरिकेन आनेके बारेमें उलाइतेके तीरपर कहा । तब उस मन्नीते, उन महात्माको, जो सपूर्ण शाखके हाला थे और त्रिकालके भागोंकी हथेठीपर रखे हुए ऑपठेके फ़ल्की तरह जानते थे, यह बात कह सुनाई। तो उन्होंने कहा कि - 'आजसे बीसरें दिन उस रुडफेकी, बिल्लीके निमित्तसे, परंप होगी इसलिये यह समझ कर हम नहीं आये '। उनकी यह उपदेश-माणी व राह मिहिर से कही गई। तब उसने अपने कुटुबकी, उस बाळककी भागी निपदसे आरस्पक रक्षा करनेके लिय कहा और जिल्लोंसे बचा रखनेके लिये सी सी उपाय करने लगा । फिर भी निर्णात दिनकी रातको उस वाठकके सिरपर अर्गछा ( दरवाजेको बद करनेके लिये छकडी या छोहेकी बनी हुई एक पत्री ) गिर जानेसे अचानक वह मर गया । फिर उस शोकशकसे उसका उद्वार करनेकी उच्छासे श्री भद्र बाह्र उसके घर आपे। वहाँ उन्होंने देखा कि उसके घरके ऑगनमें ज्योतियकी सभी प्रस्तकें इकडी करके जलानेके लिये रखीं पड़ी हैं। तब उन्होंने पूछा कि ' यह क्या बात है व' तो उस सींकलर (ज्योतियी) ने बद्दे दु खके साथ, उन जैनमुनिको उपालम देते हुए कहा - 'ये पुस्तके वह भारी मोहान्यकारको उरपन करनेवाला है इसालिये अब निध्य दाहाँ जला देंगा, क्यों कि हाहोंने मुझे धोकेंगे खाला है '। उसके ऐसा कहनेपर अपने शासदानके बलसे बालकका जन्मलम ठीक तरह निकाल कर उन्होंने सूक्ष्म दृष्टिसे उसका ग्रह-बल बताया तो वह बीस ही दिनका आया। इस प्रकार उसकी शास्त्रिशक्ति जब दर की गई तो वह वयोतियो बोला कि - आपने जो बिडालसे मृत्य बताई यह तो ठीक नहीं साबीत हुई '। तब उन्होंने उस अगैळाको वहाँ मेंगवाई, जिसके गिरनेसे मृत्य हुई थी, तो उसमें बिद्दालकी आरुति ख़दी हुई पाई गई। ' क्या भित्रत्वयतामें भी कभी क्या प्राप्तित हो सकता है " ' ऐसे उस महापेने कहते हुए कहा कि-

२६१. किस बातके लिये रोया जाय " यह झरीर क्या चीज है " ये परमाणु तो अविज्ञाशी हैं ! यदि सस्यान-निशेषके लिये ही शोक करना है, तब तो कभी भी प्रसल ही नहीं होना चाहिये !
२६२. यह सब भाष ( अस्तित्व ) अमानित्वन है और मायाके निमवसे सभानित है । इसका अत भी अभाव ही में सरियत है । इस बातके आजसे मजनोंको अस नहीं केल होता !

~इत प्रशास्त्री युक्तितपूर्वक विकास वसे समझा कर वे महाँवें अपने स्थानपर आये। इस तरह समझाये जाने-पर भी बह, मिष्यारा रूप घत्तुरके प्रभावसे सम्रे छुवर्णमें च्यातिगाटा हो कर, उनके प्रति द्वेपमान घारण कर रहा। अत [ईर्योग्स ] अभिचार कमेंसे, उनके मर्को और उपासकोंमेंसे किसीको कष्ट पहुचाने छगा और किसीको मारने छगा । अपने प्रीव्न ज्ञानके द्वारा इन छोगोंका यह ज्ञुचन्त चान कर उन्होंने निप्तकी शान्तिकेखिये ' उदसम्महर्र पासं ' इस नृतन स्तोत्रकी रचना की ।

इस तरह यह बराइमिहिर प्रवंध समाप्त हुआ।

# सिद्धयोगी नागार्जनका बत्तान्त ।

२२०) ढ क नामक पर्रत पर रहनेताले र ण सिंह नामक राजपुतको एक मूप छ नामकी पुत्री थी जिसने अपने सीन्दर्मसे नागछोजकी बाछाओंको भी जीत छिया था। उसे देख कर बासु कि नागका उस पर अनुसान हो गया । उसने उसके साथ समीग किया और उसमे नागा ईन नामक पत्र पैदा हुआ । उस पाता छ पाल (नाग) ने पुत्रक्षेद्रसे मोहित हो कर उसे सभी औषवियोंके फल, मूल और पत्रोंका मक्षण कराया। इन औष्टियोंके प्रमापसे वह महासिदियोंसे अडक्कृत हुआ । सिद्धपुरुप होनेके कारण पृथ्यी पर्यटन करता हुआ वह शात वाह न नुपतिके पास गया, जहाँ उसे राजाके कछागुरु होनेकी भारी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । तो भी वह गगन-गामिनो नियाका अध्ययन करनेकेलिये श्री पाद ि सा चार्य के पास पाद ित पुर गया। निरिममान हो कर उनकी सेवा करने छगा । मोननके समय, पादलेपके द्वारा आजाशमें जड कर अप्रापद आदि तीधीको नमस्कार करके के आचार्य वापस आये. तो उनके चरण थो कर रस.वर्ण और गन्थकी परीक्षासे उसमें १०७ महीपधियोंका होना उसने जाना। बादमें गुरुकी आजाकी परवा न करके उसने स्वय वैसा हो पादछेप किया। इससे मर्गे और मीरकी नाई मुळ बुळ उइता हुआ वह एक खड़ेमें गिर पडा और चीट लगनेसे उसका सारा शरीर जर्भरित हो गया। तब गुरुने पुछा कि 'यह क्या बात है ?' तो फिर उसने वह सब ब्रुचान्त यथानत निनेदन किया । उसकी इस चतरतासे चित्रत हो कर उसके सिरपर अपना करकमल रखते हुए उन्होंने कहा कि-4 साठी चानलके पानीमें उन ओपधोंको मिलाकर पादलेप करो और इस तरह आकाश गामी बनो '। इस तरह उनके अनुप्रहसे उसे यह सिाई प्राप्त हुई। उन्होंके मुहसे यह भी सुना कि श्री पार्श्वनाथ की मूर्तिके सामने समस्त-खीटक्षणयुक्त पतित्रनाके हायसे निर्नार्देत हो कर जो रस सिद्ध किया जाता है वह कोटिनेनी होता है। [ उसने उस मूर्तिकी गनेपणा करते हुए जाना कि- 1 पूर्व कालमें सुमुद्र निजय दशाई (यादन ) ने निकालनेदी श्री नोमेनायके मुखसे सुन कर, महातिशायी श्री पार्श्वनाथका एक रत्नमय विव निर्माण करके द्वा रावती के प्रासादमें स्थापित किया था। हा राव ती के जलनेके बाद, जबसे वह पुरी समुद्रमें इब गई तबसे, वह बिंव समुद्रमें वैसे ही विद्यमान रहा। बादमें देनताके प्रमानसे थ न पति नामक जहाजी व्यापारीका जहान टकराया। 'यहाँ पर एक जिनवित्र है ' ऐसी देनताकी वाणी सन कर ध न प ति ने वहाँ नाविकोंको उसे निकालनेको कहा । उन्होंने सात कर्ने धार्गोसे बान कर उसे बाहर निकाला और उसके प्रभावसे चिन्तितसे भी अधिक लाग पात हुआ जान, उसे अपनी नगरांमें ले आ कर अपने बनाये हुए प्रासादमें स्थापित किया । ना गा र्जु न ने उस सर्वातिशायी विवक्तो, अपने सिद्धरसकी सिद्धिके छिये चुरा कर, से ढीन दी के किनोरे टाकर रखा। उस विवके सामने, श्री रातवाहन राजाकी एक मात्र पनी चद्र छे खा की, सिद्धस्यन्तरके द्वारा उडना कर रोज उससे रसमर्दन करनाता । इस प्रकार वहाँ वारवार आने-जानेके कारण उसके साथ धनिष्ठ बधुभार पैदा हो गया ! इससे उसने ना गार् न से इस रस-मईनका हैत पूछा । उसने भी अपनी कल्पनासे कोटिनेप रसका वह यथानत् बृतान्त कहा और वर्णनातीत रूपसे उसका सम्मान वरके उसके प्रति अनन्यसामान्य सीजन्य बताया। इसके बाद एक दिन उसने अपने पुत्रोंसे यह वृचान्त कहा। वे दोनों इसके लोमी हो कर राज्यत्याग करके ना गार्जु न द्वारा अल्हत उस मूमिमें जा कर ग्रुप वेश बना कर रहे। वस रसके महण करनेकी इच्छासे, जिसके वहाँ नागार्जुन मोजन किये करता था, वसे अर्पदान करके अपने

नशर्म कर, उसकी बात पूछने छो। यह मी इस बातके जाननेकी इच्छासे, ना गार्जुन के छिये प्रमक ज्यादा दे कर स्सोई बनाती। इस तरह ६ महीना बीत जानेपर स्सोईमें खारापनका अनुमन करते हुए नागार्जुनने उसका दोप निकाला। तब उसने इशारेसे उन्हें स्वित किया कि अब रस सिद्ध हा गया है। मानजे बने हुए इन लड़कोंने उस स्रको उदा है के कि लालासे, प्रस्पाय द्वारा यह जान कर कि वासुकिने इसका छुख जुशके शक्से होना बतावा है, उसी शक्से उसे मार डाला। पर वह रस तो सुप्रतिष्ट देवताविष्टत होनेके कारण तिरोहित हो गया। जहाँ यह रस स्तंभित किया गया था वहाँ पर स्तंभ न का नामक श्री पार्श्वनायका तीर्थ प्रसिद्ध हुआ, जो रसको भी नात करनेवाला, सकल लोकका अभिल्पित कल्दाता है। बादमें कुछ कालके ल्यतीत होनेपर यह मूर्ति, मुख्यात्र जितने भागको छोड़ कर बाको भूमिके अंदर दब गई।

स्तंभनक पार्श्वनाथका प्रादुर्भाव ।

२२१) इसके अमन्तर, श्री अ अ य य दे व सू रि में शासन देवता के आदेशसे, ६ महीनेतक माया रहित हो फर आचाण्डका नत करके, खड़िया (पट्टीपर लिखनेकी घोणी मिट्टीकी डिज्या) के प्रयोगसे जब नवाझ बृतिकी रचना समाप्त की तो उनके शरीरमें आधी कुछ रोग प्रादुर्भूत हो गया। सब पाताज्का पालक परिणद्र नामक नागराज सफेद सर्पका कर जन्म का कर आया और उनके शरीरको बीमसे चाट कर उन्हें शीरोग किया। फिर श्रीमान अ म य दे व सूरिको उस तीर्यकी यात्राका उपदेश दिया। उन्होंने श्रीसंघके साथ वहाँ जा कर गोपाज बाणकों के हारा उस भूमिका पता लगाया, जहाँ एक माय रोज दूपकी धारा छोड़े करती थी। वहाँ जा कर एक उत्तम ऐसे नये हार्यहार्यक्री समस्त की। उसके ३३ वें प्रवक्षी रचना होनेपर श्री प्रित्तायका वह बिंव प्रकट हुआ। किर देवताके कथनसे उन्होंने उस प्रवक्षी ग्रुस रखा।

र६६. जो स्वामी, अपने जम्मके चार सहस्र वर्ष पूर्व ही इंद्र, भाइदेव और यहणके द्वारा अपने मास स्थानपर पूर्व गये, इसके बाद का ग्ली के घनिक घने इब र द्वारा सथा फिर महान् ना गाई न द्वारा किनको पूजा की गई, वे स्तंभन के पुरमें स्थित श्री पहर्वनाथ जिन तुम्हारी रक्षा करें ! इस मकार नागाईनकी जस्पचि नथा स्लेभनक त्रिकें अवतारका यह मबंध समान्न हथा !

कवि भर्तृहरिकी उत्पत्तिका वर्णन ।

२२२) प्राचीन कालमें, अ व निता में में कोई ब्राह्मण पा णि नि ब्या कर ण के अध्यापनका कार्य करता था। यह नियमसे नित्य सि प्रा न दो के तटपर स्थित चिन्तामणि गणेशको प्रणाम किये करता था। किसी समय विधा- पियोने फिक्स नियम अधिक प्रश्नीस उसे उद्धिप्र कर दिया था, इसिल्ये वर्षाकालमें जब यह नदी भर कर बह रही थी ती यह उसमें कृद पद्मा। देवयोगसे एक उल्ले हुए इक्षका मूठ उसके हायमें था गया जिसका सहारा पा कर वह तीरपर पहुँच गया। बहाँपर सामात् परश्चरामको देख कर प्रणाम किया। वे उसके उत्साहके ऐसे अनुष्ठानसे प्रस्त हो कर बोले कि इन्छा हो सो गांगो १ । उसने पाणि नि के ब्या कर पद्म संपूर्ण रहस्वकान मांगा। उन्होंने उसका देना स्थीकार किया और उसे 'खिल्या ' प्रदान की। उससे उसने प्रतिदिन व्यवस्त्रणादी व्यास्या बनानी शुरू को जो छह महिनेके अतमें समात्र हुई। किर शीश हो गणेशको अनुजा ले कर, उस प्रथम सावराम नानी शुरू को जो छह महिनेके अतमें समाप्त हुई। किर शीश हो गणेशको अनुजा ले कर, उस प्रथम सावराम वनानी शुरू को जो छह आ। [ सतको ] नगरके किसी एक महिनेके जीवमें वेठा ही बठा सी गया। सत्त सेथे रेज वर्षों वर्षों उसता सह पड़ा देख किसी एक बेशमार्ज दासियोने, बेशमों उसका हाल कहा। उसने उन्होंसे उसे मेंगवा कर अपने हिंदोलेकी खारपर प्रयाम। सीन दिन और रातके बाद व असको नींद हुछ कुछ छुछ। ते उस सि पालको स्थालोको अस्ता हाल कहा। उसने उन्होंसे उसे मेंगवा कर अपने हिंदोलेकी खारपर प्रयाम चित्रकार वह अपने ह्या सामात्र ता उस

थेस्पाने सब बुन्तान्त कहा और स्थान-पान-भोजन आदिसे उसे सन्तुष्ट किया । फिर वह राजसभामें गया । वहा पर पाणि नि न्या करण की यथागरियत व्यास्या कर बर्तानेषर राजा तथा अन्य पडितोंने उसका बढ़ा सत्कार किया । वहाँ जो कुछ पुरस्कार रूपमें उसे मिळा वह सत्र उसने उस वेस्याको समर्पण कर दिया ।

२२३) फिर उसके कमश चारों वर्णोंकी चार क्षियाँ हुईँ । इनमेंसे क्षत्रियाणीके गर्मसे निक्र मादि त्य सपा इद्वाके गर्मसे भर्त ह रि पुत्र हुआ । हीनचातिका होनेके कारण भर्त्वहरिको रुज्जुके सकेतसे भूमिगृहमें बैठा कर ) पृत्राया जाता था । अ य तीनों छड़कोंको प्रत्यक्ष ( पासमें बैठा कर ) पृत्राया जाता था । उन्हें इस तरह पढ़ाते हुए —

२६४. दान भोग और नाश — इच्यकी थे तीन गति हैं। [और जो न देता है न भोग करता है उसके इच्यकी तीसरी ही गति ( नाश ) होती है। ]

यह जब पद्मापा नया तो भ र्तृ हरि ने एंजुना सकेत नहीं किया और उन तानों प्रत्यक्ष छात्रोंने आगेके उत्तरार्थका पाठ पूछा। तब कुपित होकर उस उपाध्यायने कहा — ' ओ देश्यापुत्र, असी तक रस्टीको क्यों नहीं हिछाता ' ' तब यह प्रस्यक्ष आ कर कुढ़ कर शास्त्रकी निंदा करता हुआ कहने छमा —

२६५. ही सी प्रयास करक प्राप्त किये हुए और प्राणींसे भी अधिक मृत्यवान् ऐसे धनकी एक दान ही गति हो सकती है। अप तो [ गति नहीं ] निपत्ति है।

इस पाठसे [ उन सबने ] निचकी फिर एक ही गति मानी । उस म हैं हरिने वैशा ग्या तकः आदि अनेक प्रवध बनाये ।

# इस प्रकार भर्तृहरिकी उत्पत्तिका यह प्रवेध समाप्त हुआ ।

#### वारभट वैद्यका प्रयंघ।

२२१) धारान गरी में, मालब मण्डल के भूपणहरूप श्री भोजराज का एक आयुर्नेदश वैष वास ह मामक या। उसने आयुर्नेदोक कुपच्य करके, उसके प्रभारते पहले रोग उत्पन्न किया और किर सुश्चत किया प्रध्य औपभाँते उसका निम्रह किया। पानीके बिना कितने समय तक जिया जा सकता है इस बातकी परीक्षाणें लिये जल छोइ दिया। तीन दिनके बाद प्याससे तालु और ओठ स्ख गये। तम उसने इस प्रकार कहा∽

२६६. कहा गर्म, कहाँ ठहा, कहाँ गर्म करके ठडा किया हुआ और कहाँ औपयके साथ [इस प्रकार पानी सब हालतमें दिया जाता है ] पानी कहाँ भी मना नहीं किया गया है !

इस प्रकार पानीके सकारका उसने यह बाक्य पड़ा । उसने अपना असुन्य 'बारम दो नामफ प्रयं बनाया । उसका जामाता जो उच्च बाह ब कहळाता था यह भी एक समय, अपने खसुर ऐसे उस इह बाह ब के साथ राजमंदिरमें गया । समेरे ही श्री मोज राज के शरीरको देख माळ कर वृद्ध बाह ड (याम्मट) ने कहा कि—' आज आपका शरीर जीरोग है '। तो यह सुन कर छच्च बाह ड ने मुह मरोडा । तब श्री मोज के उसका कारण पूछनेपर उसने कहा कि—' आज स्वामीके शरीरमें, प्रात्रिके शेपमें राजप्रस्ताफ प्रशेश हुआ है, जो हण्ण्हणारी स्वित होता है'। इस प्रकार देशके कारर राजा अरोहर अरोजिय माज देशके कारण राजा उसके कथ-कछारसे चमकृत हुआ और ज्याधिका उससे कछा-कछारसे चमकृत हुआ और ज्याधिका उससे प्रताक्ष प्रयु । तब उसने तीन छातके मृत्यसे चननेवाले रसायनका प्रयोग बताया । इ महीनेके बाद उतना हव्य क्या करने वह स्सायन मित्र दिया । सोरे देवतार्चनके बार सायनका कारणे मुच्यो मर कर उस स्थायनका राजाने निस्तरके पास रख दिया । सारे देवतार्चनके बार राजाने जब बह स्थायन खाना चाहा तो उस स्थायनकी यूजा-सरकार आदि स्व सामग्री तैयार की गई।

पर उस ट्यु वेदाने, किसी कारणपश, उस काचकी दुष्पीको मूमिपर पटक कर तोह दिया। राजाके यह सहनेपर कि 'अ: यह क्या किया है' उसने कहा-' रसायनकी संगधिसे ही न्याधि भाग गई है। अब व्याधिके अभावमें इस वातुक्षयकारी औषपका रखना व्यर्थ है । आज रात्रिके अंतमें वह कृष्णण्छाया महाराजके हारीरको छोड कर कहीं दूर चर्छा गई दिखाई दी है और इसमें खुद आप ही प्रमाण हैं '। उसके इस मत्यय ( निश्वास ) से सन्तर हो कर राजाने दरिवताको दूर करने वाटा [ भारी ] पारितोषिक उसे दिया।

२२५) इसके बाद, उन सभी व्याधियों को उस यैदाने मृतल्से नष्ट कर दिया। तब उन्होंने जा कर स्वर्ग लोकके वैच अस्विनी-इमारेंसि अपना यह परामत्र बुचान्त कहा । वे दोनों इस बुचान्तसे मनमें आधर्य-चिकत हो कर नील गर्फी पक्षीका रूप बना कर, व्याधियोंके लिये प्रतिभट जैसे छचु वास्म ट के धवलगृह (मजान) की खिडकों के नीचे घळमा (टांडे) पर बैठ कर कांडक्फ़ '(कीन नीरोग है ') ऐसा शस्द बोले । उस आयर्बेरहाने अपने महीपडीमें सने जानेपाले इस शब्दको सामित्राय समझ कर चिर कालतक उसका विचार करके कहा-

२६७. अस्प शाक खानेपाला, चायलके साथ घी छेनेवाला, दूधके रसोंका व्यवहार करनेवाला, पानी ज्यादह नहीं पीनेपाला, प्रकृतिके पिरुद्ध - वातकारक और विदाही ( ज्यक्त पैदा करनेवाले ) पदार्घोंको न खानेपाला. अस्थिर मायसे न खानेपाला, खार्च हुएके जीर्ण होने ( पच जाने ) पर खानेवाला और अन्य भीजन करनेवाला " अरुक " अर्थात नीरोग होता है ।

ऐसा सुन कर मनमें कुछ चिकत हो कर वे चले गये । किर दुमर दिन, दूसरी वेलामें, उसी प्रकारका पक्षीका रूप बना कर, वैसा ही पुराना शब्द करते हुए, वे वेबके घर पर आये । फिर उनकी बातके सत्तरमें वैधने कहा-

२६८. वर्षामें जो श्थिर रहता है (अर्थात् यात्रा नहीं करता ), रारत्कालमें वेय पदार्थीका सेवन करता है, हेमन्त और शिशिरमें खब मोजन करता है, बसन्तमें मदमस्त बनुदा है और प्रीध्ममें िदिनकी । शयन करता है, हे पक्षी, वही प्ररूप नीरोग होता है।

देशा कहनेपर वे फिर चड़े गये। तीसरे दान, योगीका रूप बना कर उसके घर गये और वे बीड़े -२६९. हे वैच. वह फीनसी ऐसी औपधि है जो न प्रयोगें उत्पन्न होती है. न आकाशमें. न बाजाएंगें

मिलती है. न पानीमें पैदा होती है: और फिर सर्व शाखोंको सम्मत है !

इसपर वैचने यहा-

२७०. पूम्री या आकाशमें न होनेनाली, पम्य तथा रसनाजित ऐसी महीपधि पूर्वाचायी द्वारा बताई हुई रूपन ( उपनास ) रूप है।

इस प्रकार अपने अभिप्रायके टीक अनुकूछ प्रयुक्तर पा कर वे दोनों वैद्य चमरहत हुए और किर प्रायक्ष ही कर यथाभितम वर प्रदान कर अपने स्थानपर चले गये।

इस मरार वैद्य वाग्भटका यह मर्बप समाप्त हुआ।

# गिरनार तीर्थके निमित्त श्वेताम्यर - दिगम्परमं छड़ाई।

२२६) धामण उठि माममें बसनेताता धारा नामक कोई नैगम ( व्यवहारी ), जी अपनी टरमीमे वैसरण देवनी भी राही बरने गटा था, सवाबिपनि हो कर, प्रचुर दव्यका व्यव करके जीरटोकको निराता हुआ, अपने पाँच पुत्रीके साथ, और बत क गिरिकी उपत्यका (तटहरी) में जा कर नियान किया। दिगवर सप्रदायके मक ऐने निरिनगरके राजाने, उसे ही तांबर मक समझ कर यात्रासे अटकाना

चाहा । इस पर दोनोंके सैनिकोंमें छड़ाई छिड़ गई। असीम युद्धसे जुझते हुए, अतिप्रिय ऐसी देवमिक्से उत्साहित हो कर उसके पाँचों पुत्र, वहा मारे गये और वे मर कर पाँच क्षेत्रपाछ हुए। उनके क्रमशः ये नाम हुए – १ काछमेद्य, २ मेवनाद, ३ भैरव, ४ एकपद, और ५ त्रैष्टोक्यणाद। तीर्थके विरोधियोंको मृखुके मुँह पहुँचाते हुए वे पाँचों विजयी हो कर पर्वतके चारों और वर्तमान हैं।

२२७) किर उनका घारा नामक विता जो अकेला दी वच रहा था, उसने का न्य कुटन देशमें जा कर श्री व प्य भट्ट सूरि के व्याह्यानके अन्नसरपर श्री संबक्षी आन दे कर यह कहा कि—' रै व त क तीर्धमें दिगंत्ररोंने अपनी वसित वना छो है और मेतान्यरोंको पाखंडों कह कर पर्वतपर चढ़ने नहीं देते हैं। इस छिये उनकी जीतकर उस तीर्धका उद्धार कीजिय और अपने दर्शनकी प्रतिष्ठा करके तब फिर ये ध्याह्याम दीजिए '। उसके ऐसे बचन रूप इंथनसे जिनकी कोअरूप अग्नि प्रश्चित हो उठी वेसे वे आचार्य उस आम राजाको साथ छे कर, उसी श्रेष्टांके साथ, पर्वतकी उपस्थकामें पहुँचे। सात दिनोंमें, वादस्थानमें दिगंबरोंको पराजित करके संघने सामने श्री अध्वक्षकाना प्रत्यक्ष किया। 'इक्कीव नमुक्कारों' और 'जिज्जनतसेलिसिहरें 'ये दो गाधार्ये अध्वक्षकाने मुख्से सुन कर सिताबर दर्शनकी प्रतिष्ठा सिह हुई और किर वे पराजित दिगंबर 'बलानक मंडरसे ' क्षम्यापात करके नीचे गिर पहें।

इस मकार यह क्षेत्राधिपोत्पत्तिका मबंध समाप्त हुआ।

#### सोमेश्वरका अपने भक्तांकी परीक्षा करना।

२२८) एक बार, अवानीने शिवसे पृष्ठा कि- 'तुम कित्तेन कार्षिटकों को राज्य देते रहते हो? '-उसके ऐसा पृष्ठनेपर [ शिवने कहा-] 'इन छाखों यात्रियोंमें जो कोई एक पूरा अकि-परापण होता है उसीको मैं राज्य देता हूं' । इस बातकी परीक्षाके छिये, गीरी (पार्वती)को पंक्रमग्न बूढ़ी गाय बना कर और स्वयं मनुष्यरूप धारण कर, शिराजी तटरप खड़े रहे और कांचकोंसे गायका उदार करनेके छिय पियकोंको बुखाने छगे। वे सब छोक ती सोमेक्स नजदीक होने उसके दर्शनके छिये बड़े उत्कंतित थे, इसखिय उन्होंने उसका उपहास किया। पर पियकोंका कोई एक दछ छुपाछ हो कर उसके उदारका प्रयत्न करना तो शिवाजी सिहरूप धारण करके उन्हें इसाने छगे। तब उनमेंसे एक ही ऐसा पियक निकला जो मुखुकों भी परवा न करके उस गायके समीर पहुँचा। उसीकों करना वता करके शिवने पार्वतीको बताया कि बही एक राज्यके योग्य है।

इस मकार यह वासनाका मर्वध समाप्त हुआ ।

## पूर्वजन्मका किया भोगना।

२२९) सो मे श्रा रक्षी यात्राको जाता हुआ एक कार्पटिक सलीमें किसी छोदारके घर सोगा। उस छोदारकी साते अपने पतिको मार कर ह्याणिकाको उस कार्पटिक से सिरहाने रख दो और किर बिद्धाने छगा। असराक ( राग्यके सिपादी ) ने यहाँ आ कर उस अपरायिक द्वारा काट हा है। इसमे यह सदेव उस देवको उपांजम दिया करता। एक सतको देव प्रश्यक है यह बोडा — 'तुम अपने पूर्र-जनकी बात सुना। एक सर्वा प्रदे मार्योमेंसे एकने एक बकरीके दोनों हायोसे कान पकड़े और दूमरेंगे उसे मार बाडा। उसने बाद यह कसी मर कर यह जी हुई। जिसने इसे मारा धा यह इस समय इसका पति हुआ। तुनने जो इसके कान पकड़े थे, इससे सुन्दारा समामाम होनेपर, तुग्हारे हाय काटे गये। सो इसमें सुक्षे क्यों उपाजन देते हो। '

#### जिनपूजाका माहात्म्य ।

२३०) प्राचीन काळमें, हा ख पु र नामक नगरमें हा ख नामका राजा था। नहीं पर, नाम और कर्म दोनोहीस 'धनद' (धन देने वाटा ) नामका एक सेठ था । उसने एक बार सोचा कि छश्मी द्वायीके समान चचछ है, अत वह हाथमें उपहार के कर राजांके पास आया और उसे सतुष्ट किया । राजांकी दी हुई मुनिमें, अपने चार पुत्रोंके साथ सटाह करके, शुमलप्रमें उसने एक जिनमदिर बनगया। उसमें, प्रतिष्ठित विशेकी स्थापना करके तम प्रामादके व्यय-निर्याहके लिये आमदनाके अनेक मद कायम किये। उसकी पूजाके लिये अनेक पुष्प, बृक्ष, लता आदिसे अलकृत एक सुंदर बागीचा बनवा दिया और उसके कार्यचिन्तक गोधिक नियक्त किये। इसके अन्तर, पूर्वकृत दुम्क्रमेके फुलके उदयसे कमराः उसकी छहमी घट गई और वह कर्जदार हो गया । मान-प्रतिप्राक्ते म्हान हो जानेके कारण वह किसी गाँवमें जा कर रहने छगा । नगरमें जा-आ कर छहके जो दूछ पैदा करते उसीपर गुजर करता हुआ वह काळ ज्यतीत करने छगा । एक बार, जब चानुर्मासिक पर्व निकट आया हो यहाँ जानेवाले प्रत्रोंके साथ वह धन द भी शखपुर पहुँचा । वहाँ अपने बनाये हर प्राप्तादकी सीढियों पर चढते. उसके उद्यानकी पुष्प चुननेवाली (मालिन) ने उसे फूलोंकी डाली मेंट की । परमानंद निर्मर हो कर उसीसे उसने जिनेंद्रकी पूजा की । रातमें गुरुके सामने अपनी द्रायस्थाकी वही निंदा करने छा। । तब उन्होंने उसे कपरी यक्षका आराधन करनेके िये मत्र दिया। फिर एक कृष्ण चतुर्दशीकी रातको उस मत्रकी आराधना करके कपदी यक्षको प्रत्यक्ष किया । शुरुके अपदेशाससार उससे. चातुर्गासिक दिनके अवसर पर जो प्रथ-चत सरिका ( फ़लकी चौसरी लग्नी ) से जिनेशकी पूजा की थी उसके पुण्यफलकी याचना की । उसने कहा कि-'एक फूटकी पूजाका पुष्पक्त भी, बिना सर्वेंडके, मैं देनेमें असमर्थ ह '। फिर भी उस कपदी यक्षने उस साथमिकके प्रति अतुल्य बासल्यभाग धारण करके, उसके घरके चारों कोनोमें, सुवर्णपूर्ण चार कडरा निविस्तमें रख दिये, और यह तिरोहित हो गया । प्रात काठ वह अपने घर आया और धर्मकी निंदा करनेताळे उन प्रवेशने वह घन समर्पण किया । वे भी आप्रदेने साथ पितासे उस धनलामका कारण पूछने टगे । इसपर, उनके इदयमें धर्मके प्रभानका आविभवि करनेके छिये, जिनपुत्राके प्रमावसे सनुष्ट हुए कपदी यक्ष द्वारा, इस सपत्तिके प्राप्त होनेकी बात कह सुनाई । वे भी सन्पत्ति पा कर फिर उसी जन्मस्थानमें जा कर रहे और अपने धर्मस्थानींका ज्ययनिर्वाह करने छगे । फिर विविध भाँति जिन शासनकी प्रमायना करते हए ये विश्वविद्योंके मनोंमें भी जैन धर्मके प्रभावको स्थापित करते रहे ।

इस मकार जिनपूजा सेवंधी यह धनदका मबंध समाप्त हुआ ।

थी मेहतुंगाचार्य विराचित प्रवचनिन्तामणिमें. विक्रमादित्यके कहे हुए पात्रविवेचनसे छे कर जिनपूजासंबधी धनदके प्रबंध तकका धर्मनवाला यह प्रकी जैना मक पाँचवाँ प्रकाश समर्थित हुमा।

[ इस प्रकाशकी प्रयसस्या ७७४ है | समप्र प्रयक्ती क्षोक सस्या ३१५० है ]

# प्रन्थकारकी प्रशस्ति ।

बहुशुत और गुणवान् ऐसे बृद्ध जर्नोकी प्राप्ति प्रायः दुर्लम हो रही है और शिष्पोंमें भी प्रतिभाका वैसा योग न होनेसे शास्त्र प्रायः नष्ट हो रहे हैं । इस कारणसे, तथा भावी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इन्छासे, सुपासत्रके जैसा, सपुरुपोंके प्रवन्धोंका संघटनरूप यह प्रन्य मैंने बनाया है ॥ १ ॥

यह, प्रवच्धसंप्रहफा चिन्तामणि, चिरकाल तक हाथपर रहनेसे स्यमन्तक मणिका श्रम पैदा करता है और हृदयमें स्थापन करनेपर प्रशंसनीय ऐसे विमल कौस्तुन मणिकी कलाका सुजन करता है। सो इस प्रन्यके अध्ययनसे विद्वान् लोग श्रीपति (विष्णु ) की नाई शोभित होते हैं ॥ २ ॥

मन्दबुद्धि हो कर भी, मैंने जैसा सुना वैसा ही, प्रवन्धोंका संकटन करके यह प्रत्य बनाया है। पण्डित छोग मसरताका त्याग करके, अपनी प्रहाके उन्मेपसे इसकी उन्नति हो करें ॥ ३ ॥

प्रहों रूपी कोड़ियोंसे जब तक पुछोर्कों सूर्य और चन्द्रमा, जुआड़ीको तरह कीड़ा करते रहें तब तक आचार्यों द्वारा उपिट्ट होता हुआ यह प्रन्य निषमान रहो ॥ ४ ॥

विक्रमादित्य संवत्के १३६१ वर्ष बीतनेपर, वैशाख मासकी पूर्णिमाके दिन यह प्रत्य समाप हुवा॥ ५ ।।
[ गयमें फिर यहो कथन ] राजा श्री विक्रमके समयसे १३६१ वर्ष बीतनेपर वैशाख सुदि १५
रिव वारको, आज यहाँ श्री वर्द्समान (काठियाबाडके आधुनिक यह वान नगर ) में यह प्रवन्धांचेन्तामिक प्रत्य समाग्र किया गया।

# प रि शिष्ट

# कुमारपाल राजाका अहिंसाके साथ विवाह-संबन्धका रूपकात्मक प्रयन्ध\*

श्रीमान् हेम चन्द्रके समान तो गुरु और श्रीमान् कुमारपाछके समान जिनमक राजा न तो हुआ और न [अब फर्मा] होगा॥ १॥

प्रमु श्री हेमाचार्यके पास कान-दान प्राप्त करके उसके पश्चात् श्री चीलुक्यचक्रवर्ती कुमारपाळने जो हिंसाका निवारण किया या उसका [ रूपकायक] प्रवन्ध इस प्रकार है – एक अवसर पर, अणहिल्लपुरमें, श्री कुमारपाल नामक राजाने, पुददीहकी झीहा करनेके लिये जाते समय, एक ऐसी बाल्फिको देखा निसने अपने सीन्दर्यसे सुरसुन्दरियोंको मी मात कर दिया या और जिसका मुख बाल-चन्द्रमाके समान मनोहर या। यपि वह

<sup>\*</sup> टिप्पणी-यह परिधिशासक प्रयम, इस अन्यकी बहुछस्यक पोरियोमें दिली हुआ मिन्दा है। इसमें अति होता के अपने परिवार के प्रयम्भ सिन्दा है। इसमें रचना की है—यह परिवार न हो कर यह एक रूपकासक प्रयम्प है हिस्स एको परिवार के परिवार के अपने परिवार करने के अहि दिया आदूस देता है। कुआरवाल में अपने परिवार करने हैं। अन्य दिश्व होता के अपने परिवार करने पान के परिवार करने पान के परिवार करने पान के परिवार करने परिवार करने प्रयम्भ होता है। इसमें अरिवार करने प्रयम्भ होता के प्रयम्भ होता है। इसमें अरिवारो एक प्रमुख्य बनाई में अरिवार करने प्रयम्भ हिसा गया है। इसमें अरिवारो एक प्रमुख्य बनाई वें आवार्ष हैमचन्द्रके आधार्म परुष्ठ की अर्थार्थ है। इसमें अर्थार्थ के प्रयम्भ परुष्ठ के अर्थार्थ करने हैं। उसमें परुष्ठ के प्रयम्भ है। इसमें अर्थार्थ करने हैं। अर्थ है। इसमें अर्थ के प्रयम्भ है। इसमें अर्थ के प्रमान है। इसमें अर्थ के अर्थ के प्रमान है। इसमें अर्थ

सदाचार-प्रसरण-शोला थी फिर भी धीमी चालसे चलनेवाली थी । वह मुनियोंक साथ कीड़ा किया करती थी । अपनी सक्तीमळ वाणीके प्रपञ्चसे उसने त्रैळीक्यको चमरकृत कर दिया था, और उसकी आकृति मन्द सरकानसे खुव मधर हो रही थी। इस वालिकाको देख कर उसके रूपसे हत-चित्त हो कर राजाने किसी निकटस्थ प्रसत्तिच्त (सायजन) से पूछा कि-' मला यह लड़की कीन है १3 उसने कहा कि-' अपार ऐसे शाल-सागरके पार को देख छेनेके कारण जिन्होंने 'किछकाल सर्वेड 'की प्रसिद्धि प्राप्त की है; हादश भेदीं नाली तपस्याकी आरायमाने द्वारा, अष्ट महासिद्धियोंको जिन्होंने बदामें कर लिया है; समग्र भूपालोंके शिर प्रदेशकी भणियोंने जिनके चरणोंका जुदन किया है; उन्हीं महर्षि मगवान् आचार्य श्री हेमचद्रके आश्रममें रहनेवाली यह अहिंसा नामक कत्या है । इसके यथार्थ रूपका निरूपण करनेमें स्मृति और पुराणके वचन तो पर्धात नहीं है, किन्त ममस्त जतओंके वित-स्वरूप श्री जिनेन्द्र देवके उपदिष्ठ स्पष्ट सिद्धान्तों और उपनिपदों द्वारा आगसित हृदयनाले किसी मनिश्रेष्टने इसकी स्थितिकी शीतका पूरा निरूपण किया है - अन्य फिसीने वैसा नहीं किया। यह यचन मत कर राजा अपने आवासमें छोट आया । पर उस कत्याका खरूप जान कर, उसका अगीकार करनेके लिये परम असक वह राजा, उसके पाणिप्रहणके द्वारा अपनी भाग्य-सम्पद आदिको कुतार्थ करनेकी कामनासे. अपने 4 विश्वे क ' नामक परम मित्रके बताये हुए मार्गसे उन मुनियोंके आग्रपमें जा पहचा । उस कत्वाके सामने जमीज 'सदा चार' नामक भाई खेल रहा था। उसीने जा कर सम-चित्रशतिवाल महर्षि श्री हे म च द्व सारि को राजाके आगमनका बतान्त बतलाया। राजाने पृथ्यीतलपर मस्तक देक कर, उन्हें मिक और हर्पके साथ, प्रणाम किया और फिर उस फत्याका स्वरूप पूछा। इस पर वे बोले—' हे नरपग्य! सनो, जेलोज्यके एकमात्र सम्राट श्री अईद्धर्मकी पर महादेगी श्रीमती अनुकंपा देगीन कुक्षि सरोवरकी राजहसी जैसी, नि सीम सुन्दरी यह ' अहिंसा ' नामक काया है। जिस लग्नमें यह क-या पैदा हुई थी उस लग्ने प्रश्वलको इसके सर्वह पिताने इस प्रकार निर्दिष्ट किया था-' यह अतीन पुण्यनती, सुद्रतियोंकी शिरोवणि कन्या है। पुत्रजन्मोत्सनसे भी अधिक प्रशसनीय इसका जन्म है । क्यों कि-

ङ्शी [ रूप कन्पाते ] समुरको और पार्देशी [ रूप कन्पाते ] ब्रह्मको दिश्वत देख कर, कुपुत्रके दू हासे सूर्य और चन्द्रमा ताप और कडकका त्याग मही करते हैं ॥ २ ॥

इस लिय कमश नहती हुई यह कन्या अपने असुरूप वर न पानेके कारण वृद्ध-तुमारी हो जाने पर किसी अनुरूप राजासे साम्रह विवाहित होगी। इस प्रकार सितयों में श्रेष्ठ यह कन्या अपने पति और पिता दोनोंको उन्नतिकी पराकाष्टापर पहुँचा देगी। और इससे विवाह करनेवाला वह पुरुप भी खेल्ड्रेशि महा-मोह नामक राजाको जीत कर परमानन्दका भाजन बनेगा।' यह सुन कर राजा बोला —'प्रमो! यह अईद्ध्येत्री पुत्री इस समय आपके हो चरण कमलेकी उपासना करती है, अत इसका विवाह आपहीके कहनेसे होगा, अन्य किसीसे नहीं। सो पून्य-पाद सुद्धपर प्रसन हों, विपादगण विकाल हों, महामोहका विजय करना प्रारम हों, और [उससे ] मैं प्रमान द प्रसा कर ।' उसले इस कथनके बाद गुरु बोले—'यह इहा कुमारी है, इसका सकल्य दुन्युणीय है। वह सकल्य इसीके मुँदिस सुन ति विवाह करना वाहिये, अन्यपा नहीं।' इस प्रकार उनजी अहतकी जैसी वह वाणों सुन कर, वेन कन्याके पास सु बहि नामक दासी थेल कर उसे बुल्याचा। यह दासी उस कन्याने पास जा कर पति बुल्याचा। यह दासी उस कन्याने पास जा कर पति बुल्याचा। वह दासी उस कन्याने पास जा कर पति बुल्याचा। वह दासी जो तुन्हें, कुमार देशीके सम्राट्, और समस्त सामन्तीके मरनकन्यके, किरण मालाने विनक्त माण अल्वहत है वह चेल्याच-कर्सी सुम्हरे साथ विराह करना चाहते हैं।' उसकी इस वातने तुन्त मुँह वना कर, उपहासने उद्धासके साथ, असने कहा—' सर्वि, विस महान साम्राप्यका अस तनते हैं विदेश लोभकी बातका विस्तार

करना रहने दे ! में तो अनुकृष्ठ प्रेमीको चाहती हूँ । पुरुप प्रायः परुप आश्ययान्ने, और नाना प्रकारके अनुरागवान्ने होते हैं; उनसे मेरा क्या काम है । क्यों कि--

रूप यौरन सम्पना कत्यामा अविगाहित भी रहना वरन् अच्छा है, किन्तु कछाहोन, अननुकूछ, कु-पतिसे विडंबित होना [ अच्छा ] नहीं !! ३ !!

पर सुनो,-अगर दरिद्र हो कर भी पति जो प्रियकारी हो तो उससे निवाहित खीको जैसा सुख होता है वैसा सुख ईश्वर ( वहे घनसंपत्र ) से भी नहीं प्राप होता ! [ देखो न ] भागीरपी ( गंगा ) को शिव तो शिरपर घारण करते हैं, पर उस्मीके पति ( विष्णु ) उसे पैरसे भी नहीं छुने !

सी मुझे बरण करने की अभिव्यापा तो ह्या ही समझो। क्यों िक मेरी प्रतिहाका किसी महाराजांसे भी पूरा होना कटिन है। ' ऐसा कहने गावी उस युवतीसे वह (दासी) बोडी-'साखि! में तुम्हारी प्रिपकारिणी साक्षी हूँ, कुछ अपवाप तो करने की नहीं; सो तुन अपना अभिनत मुझे सप्ट कह बताओ। मेरा भी नाम सुयुद्धि है, में तुम्हारी प्रतिज्ञा उस कुमारपाल राजासे पूरी कराऊंगी। ' ऐसा कहनेपर वह बोडी-

सन्यवक्ता, परव्हमीका त्यामी, समस्त जीगेको अभयन्दाता, और सदा अपनी ही कीसे सन्तुष्ट, [ऐसा जो पुरुप होगा ी नहीं मेरा पति होगा ॥ ५ ॥

दुर्गितिके बच्छु जैमे दूत स्थागमाने सात पुरुमों (अर्थाल्, सात व्यसनों ) को जो अपने विचासे दूर निकाल फेंक देगा वहीं मेरा पति होगा ॥ ६ ॥

मेरे सहोदर माई सदाचारको अपने हरवासनपर बैठा कर एक चिचले जो उसकी सेरा करेगा बही , मेरा पति होगा ॥ ७ ॥

उसकी इम बातको सुन कर यह बोर्डा—' ऐ सुङोचने ! सुनो, मैं यथार्थनामा ( सुनुद्वि ) तब हूँगी जब तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूरा करनेके लिये, श्री हेम पूरिको आमे कर, समस्त लेकिके सामने, तुम्हारे इन प्रतिज्ञान अर्थोका समर्थन करा कर, तुम्हें परिणीत कराऊँगी। और तभी, तुम मुखे अपनी चतुर सखी मानना, नहीं तो तिनकेसे भी गायी बीति समझना।' यह कह कर, फिर राजाकी समर्थेन का कर उसने उसकी वह कठिन प्रतिज्ञा कह सुनाई। उसकी इस अवज्ञानरी प्रतिज्ञाके कठीर मारसे हर्रायों सन्तन हो कर राजा बडी बेचेनी धारण करने लगा। तब सुनुद्विन कहा—' हे श्रीनिधे! धारा चरो, पीरूप-शाल्योंको हुप्कर कथा है! और इस बाबाके दूर करनेके उपाय मी तो हैं। महर्पि हैसचन्द्रका अनुस्तराण करो और उनका उपदेश सुनो।' इस प्रकार उसकी बात सुन कर विनय का सहारा पा कर यह राजा मृरिके पाय गया। उनके पर-पागें प्रणाम कर उनकी कन्याकी उस प्रतिज्ञाका इत्तर्यक हा। [ सूरि बोले—] ' यस। यदि परिणयनकी चाइ है तो किर उसकी प्रतिज्ञा पूरी करी। यह कन्या अपने पतिक्षी निःसीम उजितके लिये होगी। क्यों कि—

डक्स वंशीपन, धन्य और गुणाधिका सतो कत्यासे निग्रह करके कोन प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त करता ! डक्सी और पार्नेतीके साथ निग्रह कर गोप (इच्या) और उप्र (शिव) ने जिस तरह प्रतिष्ठा । पार्ट यो । ॥ ८ ॥

उनकी यह बात सुन कर, दुरित समृहको दूर कर देनेताछी ऐसी इल्लाख्छी किये हुए उस राजाने, अनेक अकारके अमिग्रह धारण करके, उस कन्याका बाग्दान प्राप किया और वह वहा प्रमुदित हुआ। सं० १२१६ मार्गदापि सुदि दितीयाको, बल्यान् छम्नमें, संबेग नामक हायीपर आष्ट्य हो, रनजयसे अळकृत, सुममनरूप यल धारण करके, दक्षिण हस्तमें केकण बाँच कर, वह [हेमन्रिकी] पीपनशालाके द्वारपर आया। उस समय सेतच्छ्य द्वारा उसका आतप निवारण किया जा रहा था; ग्रद्धा नामक बहन उसकी ल्यण-आरती उतार रही थी;

गुरुभक्ति, देशविरति, समिति, गुप्ति आदि सिखर्पें वरातिन वन कर मंगळ गान कर रहीं थीं; अमारि-घोपणाके पटड बज रहे थे: परिप्रह-परिमाणरूप ब्रतके मिपसे याचक जनोंको यथेष्ट दान दिया जा रहा था; पापरूप कचरेको दूर हठाया जा रहा था; सङ्कोष पुष्पोंसे सन्न्यायकी राजवीथियाँ सुर्गाधित की जा रही थाँ; तब कत्याकी माँ अनुकृषा महादेवी ने श्री अर्हन् के साक्षी रहते प्रौक्षण किया। इस प्रकार उस राजाने अहिंसाका -पाणित्रहण किया । उस समय, तारामेलक पर्वमें परमानन्द हुआ । इसके बाद, नवांगवेदी महोत्सवके स्थानमें, ३६ इजार खोक प्रत्यपरिमाण, हे मसूरि कत त्रिपष्टिशलाकापुरुपचरित्र नामक शाल स्थापित किया गया । वैदीके पात्र-स्थापन और पाँच कपर्दक ( कोडियों ) के स्थापनकी जगह; बीस-संख्यक वीतरागस्तव स्थापित किये गये । दानी काष्ट्रके स्थानपर द्वादश प्रकाशात्मक योगशास्त्र प्रन्थ स्थापित किया गया । उसके परिकरके ह्रपमें, हे म सु रि के अन्यान्य उक्षण, साहित्य, तर्क और इतिहास प्रमुख शाखोंकी रचना हुई । मूळगुण और उत्तर गुजोंसे इस बेदिकाको दद करके, उसमें ज्ञानरूप अग्नि जलाई गई, और ' चलारिमंगल ' रूप इस मांगलिक मनके उज्ञारणसे मंगळ किया गया । उस समय उस कन्याके मुखमण्डनके लिये. राजाने ७२ लाख रुपयोंकी आमदनीवाळा ' रुदती कर ' ( अर्थात् निःसन्तान विधवा सियोंके राज्यवाहा धन ) का त्याम करने रूप दान किया । उसी समय उसका पश्चम्य किया गया (-उसे पह महादेश बनाया गया ), और उसके पिताके निवास-योग्य १४४४ विद्वार बनवाये गये। फिर हिंसा ( जो राजाकी पूर्वपर्ता थी ) अपनी सौत आहेंसाफी इस प्रकारकी उन्नतिको देख कर, अपना पराभव निवेदन करनेके लिये, अपने पिता विधाताके पास गई। बहुत दिन बाद देखनेके कारण तथा पराभवके दु:खसे विरूपसी बनी हुई उसको न पहचान, पिताने उससे पूंछा कि-

' बुंदरी ! तुम कीन हो ! '—' हे तात विधाता ! मैं तुम्हारी त्रिय पुत्री हिसा हूं ! '—' तूं ऐसी दीनकी तरह क्यों है ! '—' पराभवके कारण । '—' वह ( पराभव ) किससे हुआ ! '—' वमा बताऊं ! ' कहें। न '—' हैमाचार्यके कहनेसे, उस परम गुणवान् कुमारपाळ नुपारिने मुझे अपने हृदय, मुंह, हाथ और उदरसे उतार कर, पृथ्वतिळसे निकाल दिया ॥ ९ ॥

उसकी यह बात सुन कर बहा। बोठे कि—'सत्यप्रतिश्च ऐसा हुमारपाछ देव जो पहले तुझमें अनुरक्त हो कर मी, उस भेपभारी साधुके कथनको सुन कर, अब विस्ता हो गया है; सो किर मैं अब तेरे छिये कोई ऐसा अच्छा पति हूंढ़ निकाईंगा जो तेरा हो एक-एळ राज्य कर देगा। इसिक्टिये तुम धीर धरों '—यह कह कर उसे अपने समीप स्वा। अहिंसा देवीके साथ श्री कुमारपाछ द्रमति अपने इस जीवन-हो-में अनुक्तित बहानन्दका अनुभव करता हुआ, चौदह वर्ष तक, सुख पूर्वक राज्य करता रहा। इसके बाद उसकी एक पहड़ी प्रिया जो कांति थी उसको देशान्तरमें एठा कर, जब उसने स्वर्योको अखंडत किया, तो उसी समय उसके प्रेमको प्रसादपूर्ण ओड़ा-कोंका समरण करती हुई यह अहिंसा देवी भी, कठिमिटन जनोंके पायस्पर्शका एरिहार करनेकी इस्छोते, उसके साथ 'सहगमन ' कर गई।

> इस मकार श्री कुमारपालका अहिंसाके साथ विवाह-संबन्ध वतानेवाला यह परिशिष्टात्मक भवन्य समाप्त हुआ।

> > -:0:----